वेद प्रकाश

वेदोऽखिलो धर्म-मूलम्

ं १६ | ङ्क ६

संस्थापक—गोविन्दराम हासानन्द

चैत्र २०२५, अप्रैल १९६८

वार्षिक मूल्य ५-००

इस अङ्क का ३ रुपये

व० रामचन्द्र देहलवी लेखावली अंक

महात्मा आनन्द स्वामी जी की नई पुस्तकें

सुखी गृहस्थ

मूल्य एक रुपया

'नवभारत टाइम्स' लिखता है :—

"महात्मा आनन्द स्वामी ने सामान्य परिवारों के सम्बन्ध में यह महत्वपूर्ण पुस्तक अपने अनुभव के आधार पर लिखी है। किस तरह से परिवार के व्यक्ति आपस में अपने-अपने कार्य करके परिवार को सुख और शान्ति का केन्द्र बना सकते हैं, विवाह के अधिकारी कौन हैं, गृहस्थ में जो कलह है उसका क्या कारण है ? स्वामी जी का कहना है कि सारे परिवारों में दुःख स्वार्थ उत्पन्न होने पर पैदा होता है। यदि हम स्वार्थ त्याग दें तो जीवन सुखी बना सकते हैं। पुस्तक जनसाधारण के उपयोग और महत्व की है।"

आनन्द बोध कथाएँ

प्रथम भाग	मूल्य डेढ़ रुपया
द्वितीय भाग	मूल्य डेढ़ रुपया
दोनों भाग एक ही जिल्द में	मूल्य साढ़े तीन रुपये

दैनिक 'हिन्दुस्तान' लिखता है :—

"श्री आनन्द स्वामी संन्यासी होने के साथ-साथ कुशल वक्ता और लोकप्रिय लेखक भी हैं। उन्होंने वेद और उपनिषद आदि धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर आध्यात्मिक विषय से सम्बन्धित अनेक पुस्तकें लिखी हैं। इन पुस्तकों में आई कथाओं को प्रस्तुत बोध-कथाओं में संग्रहीत किया गया है। सरस और शिक्षाप्रद इन कथाओं में गूढ़ आध्यात्मिक तत्व को अत्यन्त सरल ढंग से प्रस्तुत किया गया है। केवल आत्म-विद्या के जिज्ञासुओं के लिए ही नहीं, प्रत्युत प्रत्येक परिवार के लिए ये कथाएँ पठनीय हैं। निस्संदेह, अपनी रोचक शैली के कारण ये पुस्तकें सभी वर्गों द्वारा, यहाँ तक कि बालक-बालिकाओं द्वारा भी पसन्द की जाएँगी।"

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली।

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

सम्पादक—विजयकुमार
फो० नं० २६२७६५

आदरी सहसम्पादक—ब्र० जगदीश विद्यार्थी
फो० नं० २२१३२८

लेखक के सम्बन्ध में

प्रस्तावना

पं० रामचन्द्र जी देहलवी, जो प्रायः देहलवी जी के नाम से सम्बोधित किये जाते थे, आर्य जगत् ही क्या, सारे भारत में अपनी विद्वत्ता, तार्किक-शैली, शीरींज़बानी, अथक परिश्रम व धुन के धनी आदि गुणों के लिए प्रसिद्ध थे।

वे अंग्रेज़ी, हिन्दी, संस्कृत के साथ-साथ अरबी व फ़ारसी के भी पूर्ण विद्वान् थे। जहाँ उन्होंने अपने वैदिक साहित्य का अपूर्व मंथन किया था वहाँ उन्होंने हिन्दू व जैन, बौद्ध, सनातनी तथा मुस्लिम व ईसाई धर्म का भी पूर्ण व विश्लेषणात्मक अध्ययन किया था।

जिन सज्जनों व वैदिक धर्म-प्रेमियों ने उनके व्याख्यान व शास्त्रार्थ सुने थे उनके तरीक़े-बयान से बेहद प्रभावित होते थे। ग़ैर लोग जो उनके विरोधी कहलाते थे, उनके व्याख्यानों व तर्कयुक्त भाषणों से इतने प्रभावित होते थे कि बजाय उनका प्रतिरोध या मुक़ाबिला करने के वे लोग पानी-पानी हो जाते थे और उनकी प्रशंसा करते हुए लौटते थे।

ऐसे प्रतिभावान् पुरुष के व्यक्तित्व से सक्ते में पड़े हुए लोग प्रायः मुझसे उनके जीवन के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछते हैं, कुछ लोग उनके सम्पूर्ण जीवन की झाँकी भी देखना चाहते हैं।

अतः उनके जीवन की कहानी यहाँ मैं प्रस्तुत करता हूँ।

मूल-निवासी

देहलवी जी के दादा दिल्ली के ही मूल-निवासी थे। प्रथम स्वतन्त्रता-युद्ध अर्थात् १८५७ के ग़दर से कुछ दिन पूर्व ही उनके दादा परिवार-सहित मालवा की एक छावनी नीमच में जाकर बस गये थे।

परिवार-परिचय

पं० जी के पिता जी का नाम मुन्शी छोटेलाल जी था। वे बड़े तेज-मिज़ाज थे। वे अंग्रेज़ अफ़सरों को उर्दू व फ़ारसी पढ़ाने जाया करते थे। आपके पिता धार्मिक विचारों से 'गंगा गये गंगादास और जमना गये जमना-दास' अर्थात् न पक्के सनाननी थे न आर्य। वे दोनों ही जगह (मन्दिर व आर्य-समाज में) जाया करते थे और कहा करते थे कि न जाने कहाँ से कुछ मिल जाये।

पं० जी की माता का नाम श्रीमती रामदेई था। यह मालवा में स्थित किसी भीलगाँव में पैदा हुई थीं। भील लोगों के गाँव में रहने के कारण वे बड़ी निडर स्त्री थीं।

मुंशी छोटेलाल जी के सब से बड़े बेटे का नाम श्री शिवकरण जी था। यह देहलवी जी के सबसे बड़े भाई थे। पं० जी का नम्बर अपने भाइयों में दूसरा था किन्तु इनसे पूर्व तीन बच्चे मर चुके थे। इनकी माता बच्चों की मृत्यु से बड़ी दुःखी थीं। बच्चा होकर मर न जाए इसके लिए इन्होंने विभिन्न प्रकार के जप-तप किये, यहाँ तक कि अपने हाथ से कते-बुने नीले कपड़े पहने व अनेक देवी-देवताओं को मनाया।

सन् १८८१ की रामनवमी को पं० जी का जन्म हुआ था। क्योंकि राम-नवमी को उनका जन्म हुआ इसलिए प्रफुल्लित माता-पिता ने आपका नाम रामचन्द्र रख दिया। बड़े लाड़-प्यार से पं० जी का पालन-पोषण प्रारम्भ हुआ। धीरे-धीरे यह माँ का लाल शिशु से बच्चा बन गया। माँ का इन पर अत्यधिक प्रेम था। जब कभी मुन्शी जी पं० जी को अपने स्वभाव की तेज़ी के कारण पीटना चाहते थे तो उनकी माता बलपूर्वक अपने पति को ऐसा करने से रोक देती थीं और कहती थीं कि "मैं इसे हाथ नहीं लगाने दूंगी चाहे कुछ भी हो।"

पं० जी के जन्म के पश्चात् दो भाई और उत्पन्न हुए जो श्री शिवलाल जी व श्री जियालाल जी के नाम से जाने जाते हैं।

पं० जी की माता का देहान्त उनकी छोटी अवस्था में (लगभग ७ वर्ष की आयु में) ही हो गया था। सारे घर का भार पं० जी पर आ पड़ा था। उन्होंने इस छोटी अवस्था में ही लगभग १० महीने तक अपने छोटे भाइयों को खाना बनाकर खिलाया था। देहलवी जी के पिता (मुन्शी छोटेलाल जी) ने फिर दूसरी शादी कर ली थी। देहलवी जी कहा करते थे कि "लाडी (मौसी) अत्यन्त सुशील व सुन्दर थीं किन्तु मैंने कभी भी उन्हें मौसी कहकर नहीं पुकारा, मैं उन्हें हमेशा लाडी ही कहता था।"

इस (सौतेली माता) लाडी से पं० जी के दो भाई और उत्पन्न हुए थे। एक का नाम था श्री मगनलाल (जो जल्दी ही मर गये थे) व दूसरे थे श्री-छगनलाल जी (जो अभी जीवित हैं)।

विद्याध्ययन

पं० जी घर के कार्य के साथ पढ़ाई का भी कार्य भी मन लगाकर किया करते थे। नीमच में ही एक प्राइमरी स्कूल था जिसमें वे पढ़ने जाया करते थे।

प्रारम्भ से ही पंडित जी बड़े कुशाग्रबुद्धि थे। वे स्वयं सुनाया करते थे कि कक्षा में एक बालक और था जिसका नाम आबिद अली था। ये दो ही अपनी कक्षाओं में प्रथम व द्वितीय रहते थे। कभी पं० जी फ़र्स्ट तो कभी जनाब आबिद अली साहब फ़र्स्ट।

यहाँ पर पंडित जी ने अंग्रेजी के अध्ययन के साथ-साथ फ़ारसी के भी पहले पाठ पढ़े थे। आपने अजमेर के डी० ए० वी० स्कूल से मिडिल की परीक्षा पास की थी। उस परीक्षा में भी आप पहली श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे।

अपनी मुश्किल का बयान करते हुए उन्होंने एक बार हमें बताया था कि "मैं अजमेर में अपने मित्र के घर में एक कोठरी में ठहरा था। प्रश्नपत्र देकर जब लौटता था तब अपने हाथ से खाना बनाता था और वे रोटियाँ दही से खाता था। कई दिन तक लगातार दही से रोटी खाने के कारण मुझे तेज़ बुख़ार हो गया किन्तु मैं फिर भी बुख़ार की अवस्था में ही परीक्षा में बैठता रहा।"

जब आपने मिडिल की परीक्षा पास कर ली तब आपके पिता जी ने आगे पढ़ाने से इन्कार कर दिया और दुकान पर अपने साथ काम करने के लिए कहा। वे आगे पढ़ना चाहते थे, पिता पढ़ाने को तैयार न थे ता पडित जी ने एक दिन रात में भाग जाने की योजना बना ली। आपके बड़े भाई श्री-शिवकरण जी नीमच के निकट ही कहीं रेलवे मुलाज़िम थे। आपने उन्हीं के पास भाग जाने का निर्णय कर लिया। उस रास्ते में पड़ने वाले सभी रेलवे-स्टेशनों के नाम आपने रट लिये ताकि अपने गन्तव्य स्थान से आगे न निकल जाएं। और फिर एक रात को दुकान से कुछ पैसे लेकर आप धीरे से खिसक गये। गाड़ी में सवार हो गये। रात का समय था, गाड़ी में आपको नींद आ गई; बच्चे तो थे ही। जब आँखें खुलीं तो घबराहट में गाड़ी से नीचे उतरने चले। किन्तु स्टेशन का नाम पढ़ कर वापस गाड़ी में ही रुक गये। आपको घर से भागने के शक में पकड़ लिया गया। पुलिस ने मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया किन्तु आपने निर्भीकतापूर्वक भाग जाने का खण्डन किया व कहा कि मैं अपने भाई के पास जा रहा हूँ। आपने अपना टिकट भी दिखा दिया। मजिस्ट्रेट आपके वार्तालाप से अत्यन्त प्रभावित हुआ व उन्हें आगे जाने का अनुमतिपत्र दे दिया। अपने बड़े भाई से मिलकर आपने अपने पढ़ने का प्रबन्ध करा लिया। इन्दौर कालिज से आपने एण्ट्रेन्स की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। बस, स्कूली पढ़ाई का यहीं अन्त हो गया।

विवाह व धनोपार्जन

पं० जी की (मौसी) लाडी उनके पिता जी से आयु में बहुत छोटी थी। इस कारण सन्तानोत्पत्ति के समय उन्हें बड़े कष्ट का सामना करना पड़ता था। इसी कष्ट के कारण उनकी मृत्यु तीसरे बच्चे की उत्पत्ति के समय हो गई थी। घर की व्यवस्था बिल्कुल छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। घर की व्यवस्था ठीक करने का एक ही मार्ग था कि पं० जी का विवाह कर दिया जाए। और उनका विवाह बहुत छोटी अवस्था में ही (लगभग १८ वर्ष में) कर दिया गया। उनकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती कमला देवी था। वे दिल्ली की कन्या थीं।

क्योंकि पं० जी के ऊपर अब एक परिवार की ज़िम्मेदारी आ पड़ी थी, इसलिए उन्होंने नीमच के उसी स्कूल में नौकरी कर ली जहाँ वे स्वयं पढ़े थे।

बच्चे जैसा कि सभी जानते हैं, नये अध्यापक की पूरी परीक्षा लेते हैं। उन्होंने इनको भी न छोड़ा। वे इन से नित नये-नये प्रश्न व समस्याएँ पूछते और वे अपनी प्रखर बुद्धि, अपार ज्ञान व आत्मविश्वास के आधार पर उनकी सभी समस्याओं का पूर्ण समाधान हँसते-हँसते कर देते थे। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे उन छात्रों में अत्यन्त लोकप्रिय हो गये।

धीरे-धीरे पारिवारिक समस्याओं का समाधान होने लगा। पं० जी ने अपना वैवाहिक जीवन भी प्रारम्भ कर दिया। सब से पहली उनकी सन्तान एक पुत्री थी, जो अभी जीवित हैं।

राजस्थानी महिलाएँ अपने गृहकलह के लिए बड़ी मशहूर हैं। जली-कटी बातें, ताने-उलाहने, अदले-बदले, ये उनके शस्त्र हैं जो वे अपनी ही जाति के लिए बड़ी बेदर्दी से प्रयोग में लाती हैं। पं० जी की कुछ निकटतम पारिवारिक-स्त्रियों ने जब पं० जी की सहधर्मिणी के साथ भी उन्हीं ओछे हथियारों का प्रयोग किया और उन्हें इस बात का पता चल गया तो वे अपने परिवार समेत यानी अपनी पत्नी-पुत्री के साथ दिल्ली अपने श्वसुर के यहाँ चले आये।

दिल्ली आकर आपने रैली ब्रदर नामक एक इंगलिश फ़र्म में १५ रु० महीने की नौकरी कर ली। पं० जी प्रारम्भ से ही बड़े कर्मनिष्ठ व कर्त्तव्यपरायण थे। आपका हिन्दी व अंग्रेजी का लेख अत्यन्त सुन्दर था। इस कम्पनी का मालिक पं० जी के काम व लेख से अत्यन्त प्रभावित था। वह इन्हें इतवार के दिन भी अपने कार्यालय में बुलाता था। एक बार किसी कार्यवश पं० जी उस अफ़सर के बुलाने पर दफ़्तर में न जा सके। अगले दिन साहब ने अपने पास बुलाया व बुलाने पर न आने का कारण पूछा। पं० जी ने बड़ी निर्भीकता से कह दिया कि रविवार का दिन मेरी छुट्टी का दिन था ; मुझे काम था, मैं नहीं आया। Even God rested on the seventh day, मैं तो मनुष्य हूँ ईश्वर ने भी सातवें दिन आराम किया था, मुझे भी सातवें दिन छुट्टी करने का हक़ है। साहब इस उत्तर से बुरी तरह जल गया और बोला, "Well Mr. Ram Chandra, I want to do something but leave it now." (मैं आपके ख़िलाफ़ कुछ करना चाहता हूँ लेकिन अब छोड़ो) स्वाभिमानी जैसे कि वह थे, उन्होंने तुरन्त अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और अपने श्वसुर के साथ उनकी दुकान पर ही बैठकर अपना काम करने लग गए।

ईमानदारी उनकी ग़ज़ब की थी। उन्हें चीजें बनाने के लिए जो सोना मिलता था उसकी अलग-अलग पुड़ियाएँ बंधी रखी रहती थीं। यदि किसी सज्जन को अपना काम न बनवाना होता और वे अपना सोना वापस माँगते तो जब उन्हें वे वही पुड़िया और उतनी ही सोने की डलियाँ वापस मिलतीं जितनी उन्होंने दी थीं तो वे चकित रह जाते थे कि वैसी की वैसी पुड़िया रखी है। प्रायः, नहीं तो इसका उसमें और उसका इसमें लोग कर देते हैं। अपने काम के वे माहिर थे। जो चीज़ें भी वे बनाते थे, मज़बूती व पायदारी में लाजवाब होती थीं। उनके काम में बड़ी चुस्ती थी। सुस्ती से उन्हें बेहद नफ़रत थी।

उनके पाँच बच्चे दिल्ली आकर और हुए थे। ४ लड़की व एक लड़का, जिनमें में एक लड़का जो अत्यन्त ख़ूबसूरत था, बिल्कुल उनके जैसा, व तीन लड़कियाँ मृत्यु के मुख में चले गए। इस प्रकार उनके परिवार में बच्चों की संख्या केवल तीन (लड़कियाँ) ही रह गई।

उनको अपने बच्चों से बेहद प्रेम था। वे कभी भी अपने घर में पुत्रियों के जन्म से विचलित नहीं हुए। वे हमेशा उनके जन्म पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ करते थे। पुत्र के जन्म पर वे खुश नहीं हुए थे बल्कि उन्होंने यह कहा था कि इतना खूबसूरत बच्चा उनके परिवार में रहने योग्य नहीं है। और उनका यह वाक्य सत्य सिद्ध हुआ। जन्म के १८ ही दिन बाद उस सपूत की मृत्यु हो गई। पुत्र की मृत्यु का धक्का उनकी माता (कमला जी को) बड़ा ज़बरदस्त लगा (वे डेढ़ वर्ष तक बीमार रहीं। उस समय पंडित जी ने उनकी खूब सेवा की) पुत्रियों की मृत्यु पर वे चार-चार आँसू बहाते थे, बच्चों की तरह रोते थे। अपनी पुत्रियों पर ही नहीं, मुहल्ले में भी किसी बच्ची के मर जाने पर उन्हें बड़ा दुःख होता था।

अन्तिम पुत्री के जन्म के समय उनकी धर्मपत्नी को इन्फलूएञ्जा हो गया था और वे उसी में राम की प्यारी हो गईं। पंडित जी ने उनकी सेवा प्राणपन से की किन्तु वे अपनी अर्द्धांगिनी को मृत्यु के क्रूर हाथों से न बचा पाए।

पुनर्विवाह ?

अपनी धर्मपत्नी के शव पर हाथ रखकर उन्होंने क़सम खाई थी कि देवि जिस दृष्टि से मैंने तुम्हें देखा है अब वह दृष्टि और किसी शरीर पर नहीं पड़ेगी।

यह रिश्ता अब दुनिया में तुम्हारे शरीर के साथ समाप्त हो गया। अब तो केवल माँ, बहिन और बेटी के रिश्ते ही मेरे लिए दुनिया में होंगे।

पं० जी की आयु इस समय केवल ३६ वर्ष की थी। धार्मिक क्षेत्र में पदार्पण के कारण आपकी ख्याति बड़ी दूर तक फैल चुकी थी। स्वयं अपने हाथ से कई लड़कियों ने जो अत्यन्त रूपवती, गुणवती व सर्व ऐश्वर्य-सम्पन्न थीं, पंडित जी के साथ अपने विवाह के लिए पत्र लिखे किन्तु वे अपनी प्रतिज्ञा पर अडिग थे चट्टान की तरह। उन्होंने उन्हें बेटी से सम्बोधित किया और किसी भी भाँति अपने निश्चय से न टले। हालाँकि पुर्नविवाह करने के समर्थन में उनके पास यह आड़ थी कि उनके कोई पुत्र नहीं है।

आर्थिक अवस्था

पं० जी की आर्थिक अवस्था कभी भी अच्छी नहीं रही। एक बार तो उनके घर में ऐसा भी समय आया कि जब किसी अन्य धर्मावलम्बी थानेदार ने उनके घर में चोरी करवा दी थी (शाहदरे में) और उन्हें शाक के पैसे जुटाने के लिए घर में रखी अखबार की रद्दी बेचनी पड़ी, तब कहीं खाना बना।

इसके अनन्तर उन पर ऐसा भी समय आया, जब वे दो समय भरपेट भोजन भी न कर पाते थे। प्रातः घर से एक लड्डू खाकर व आधा सेर दूध पाकर निकलते थे व सारे दिन भूखे रहकर दूकान पर काम करते थे; शाम को ही आकर खाना खाते थे। इन सब मुश्किलों के होते हुए भी वह धर्म-प्रचार के लिए जब कहीं जाते थे तो किराया अपनी जेब से खर्चते थे। यह उन्होंने तब ही बन्द किया जबकि कई संन्यासी-महात्माओं ने उनसे ऐसा न करने का प्रस्ताव किया व उन पर अपना दबाव डाला।

धार्मिक क्षेत्र में पदार्पण

पं० जी अपने इस कंटकमय पारिवारिक जीवन से ज़रा भी परेशान न हुए और अपने इन अत्यन्त मुश्किलों के दिनों में भी धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लगे रहे। इस अध्ययन में ईश्वर ने विघ्न डालना चाहा। नहीं-नहीं, विघ्न डालना नहीं बल्कि उन्हें आज़माना चाहा, उनके पथ से उन्हें विचलित करना चाहा। लगातार छः महीने तक उनकी आँखें दुखती रहीं किन्तु उन्होंने अपना अध्ययन छोड़ा नहीं। स्वयं अपनी आँखों पर पट्टी बांधे बैठे रहते थे व

अपने साले साहब से उन पुस्तकों को पढ़वाते रहते थे। यूं उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा।

दिल्ली के फ़व्वारे पर सप्ताह में दो दिन मुसलमान साहबान व दो दिन ईसाई साहबान अपने धर्म का प्रचार किया करते थे। यूं सप्ताह के दो दिन अभी भी ख़ाली पड़े थे। पं० जी (देहलवी जी) उन व्याख्यानों को रोज़ सुनने के लिए जाया करते थे। वहाँ हिन्दू धर्म पर किये जाने वाले बेसिर-पैर के घातक हमलों को उन्होंने सुना। उन्हें सुनकर वे तड़प उठे। अपने मन में उन्होंने कहा कि 'अरे तेरे स्वाध्याय का क्या लाभ! यह तो बेकार जा रहा है!' इस ख़याल ने उन्हें बेचैन कर दिया। उन्होंने पुलिस को सूचना दे दी; उनसे आज्ञा नहीं माँगी, कि सप्ताह के दो दिनों में वे व्याख्यान देंगे। जिस रात उन्होंने अगले दिन व्याख्यान देने का निश्चय किया था उस रात वे चैन से सो न सके। उनकी धर्मपत्नी जो उस समय तक ज़िन्दा थीं, उनकी बेचैनी को भाँप गईं। उन्होंने पं० जी से उनकी परेशानी का कारण पूछा। पण्डित जी ने उनको भी अपना निर्णय बता दिया। वे बिचारी भोली-भाली देवी इस निर्णय का अर्थ न समझ सकीं किन्तु वे उनके प्रयत्न में सहायक ज़रूर रहीं। अगले दिन पण्डित जी ने फ़व्वारे पर अपना पहला व्याख्यान दिया। व्याख्यान से पूर्व आधा घंटा भजन भी गाया करते थे। बस, यह सिलसिला चालू हो गया। पण्डित जी रोज़ ट्राम में बैठकर फ़व्वारे पर आते थे। ईसाई व मुसलमान साहबान के आक्षेपों को अंग्रेज़ी भाषा में नोट करके लाते थे व अपनी बारी के दिनों में उनका उत्तर दिया करते थे। धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती गई और उन दोनों साहबानों की महफ़िल उजड़ती गई। आख़िर उन लोगों ने अपनी बेढब की बहक बन्द कर दी; बन्द स्वय नहीं की किन्तु उन्हें वह बन्द करनी पड़ी क्योंकि उन्हें अब कोई सुनता ही न था।

पण्डित जी के व्याख्यानों में भीड़ इतनी बढ़ गई कि चाँदनी चौक का आवागमन ठप्प होने लगा इसीलिए पुलिस ने अब व्याख्यानों के लिए गाँधी ग्राउण्ड में स्थान दे दिया।

यह व्याख्यानों का कार्यक्रम (सप्ताह के छः दिनों तक) फ़व्वारे व गांधी ग्राउण्ड में पूरे १५ वर्ष तक चलता रहा (सन् १९१० से १९२५ तक)। कमाल की बात यह है कि इस लम्बी अवधि में व्याख्यानों के क्रम में एक भी नागा

नहीं है जबकि उनके पुत्र व उनकी कर्त्तव्यपरायण धर्मपत्नी की मृत्यु भी व्याख्यान के दिनों में ही हुई थी।

इस काल में पण्डित जी की तार्किक शैली, तुरतबुद्धि व अनुपम कार्य-प्रणाली का बोल-बाला सारे भारत में हो गया। भारत के सभी कोनों से आपके पास धर्म-प्रचारार्थ बुलावे आने लगे। आपने देश व समय की पुकार को दृष्टि में रखकर धर्म-प्रचारार्थ जाना प्रारम्भ कर दिया।

अन्य धर्मों का अध्ययन

पण्डित जी ने फ़व्वारे पर व्याख्यान देने के दिनों में अपने धर्म के अध्ययन के साथ-साथ कुर्आन व बाइबल का भी अध्ययन किया था।

क़ुर्आन पढ़ने की कहानी बड़ी दिलचस्प है। पं० जी ने जब अपने श्वसुर के सामने कुर्आन पढ़ने की इच्छा व्यक्त की तो उन्होंने अपने एक परिचित हाफ़िज जी से उनकी मुलाक़ात करवा दी। वे हाफ़िज जी लूले थे तथा दिल्ली के ही रहने वाले थे। हाफ़िज जी ने पण्डित जी से क़ुर्आन पढ़ने का सबब पूछा तो उन्होंने उन्हें जवाब दिया कि हक़ की तलाश के लिए, सचाई की तलाश के लिए मैं कुर्आन पढ़ना चाहता हूँ। हाफिज़जी यह उत्तर सुनकर बड़े खुश हुए व क़ुर्आन पढ़ाना स्वीकार कर लिया। उन्हें छिपकर पढ़ाते थे। पण्डित जी हाफ़िज़जी को अपनी गोद में उठाकर उनके घर से अपने घर लाते थे व पढ़ चुकने के बाद उनके घर गोद में उठा कर पहुंचाते थे। पण्डित जी ने उनका नाम कभी नहीं पूछा क्योंकि वे जानते थे कि ऐसा करने से उन पर कभी भी कोई मुसीबत आ सकती थी। क्योंकि मुसलमान साहिबान क़ाफ़िर को क़लमा सिखाने से हक़ में नहीं थे। कई बार ऐसा हुआ भी कि मोमिनों ने किसी हाफ़िज को ताक में पकड़ लिया व उससे ईमान धर्म उठवाया कि बताओ तुम ही देहलवी को कुर्आन शरीफ़ पढ़ाते हो। जब उसने धर्म व ईमान की क़सम खाई तब कहीं उसे छोड़ा।

पण्डित जी ने इन हाफ़िज़ जी से पूरे दो महीने में कुर्आन शरीफ़ पढ़ लिया था। इनके उस्ताद हाफ़िज़ जी पण्डित जी के आयत पढ़ने पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ करते थे। वे कहा करते थे कि मुझे बड़े शिष्य मिले किन्तु तुम जैसा सच्चा व सही तलफ़्फ़ुज़ वाला नहीं मिला। उन्होंने पण्डित जी का पहला मुबाहिसा जो बाड़ा हिन्दूराव में हुआ था उसे छिप कर सुना था व

उनकी बाँछें खिल गई थीं ; उनका दिल बाग़-बाग़ हो उठा था क़ुर्आन की आयतें सुनकर। पण्डित जी ने क़ुर्आन पढ़ने पर केवल १०) खर्च किये थे।

बाइबिल का अध्ययन उन्होंने स्वयं किया था। उनके पुस्तकालय में बाइबिल की अनेक प्रतियाँ हिन्दी व अंग्रेज़ी में विद्यमान हैं। उन सब में से उन्होंने खूब अध्ययन किया था।

शास्त्रार्थों की धूम

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है, बाड़ा हिन्दूराव में पंडित जी ने पहला शास्त्रार्थ मौलाना से किया। Well begun is half done उक्ति के आधार पर पंडित जी को जहाँ अपनी सफलता पर प्रसन्नता थी, वहाँ उनका आत्मविश्वास और दृढ़ हो गया। इसके साथ ही जनता में भी एक अजीबो-ग़रीब जोशोखरोश था। उन्हें अब धर्म के क्षेत्र में पंडित जी के रूप में भीम मिल गया जिसके पास अपने अकाट्य तर्कों की गदा थी जिससे वे मुक़ाबिले में आने वाले प्रत्येक पहलवान को पछाड़ सकते थे।

न जाने कितने अखाड़े जमे जिनमें पंडित जी ने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को चारों खाने चित किया। इन अखाड़ों में से एक का दृश्य देखिये ज़रा।

बात मुज़फ़्फ़रपुर की है। शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया। मुसलमान साहबान मुक़ाबिले में थे। विपक्षियों की ओर से यह प्रस्ताव आया कि एक जज इस शास्त्रार्थ की हार-जीत के फ़ैसले के लिए निश्चित किया जाना चाहिए। पंडित जी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तथा जज चुनने का काम भी विरोधियों को ही सौंप दिया गया। वे अगले दिन अपने ही एक रेवरेण्ड जुडाहसाहब को जज बनाकर ले आए। वे मुसलमान साहब के साथ ही बैठ गए।

पंडित जी से जब यह कहा गया कि जज महोदय मिस्टर जुडाह साहब तशरीफ़ ले आए हैं और मुसलमान साहब के पास बैठे हैं तो पंडित जी ने एक चुटकी ली, एक मीठी चुटकी, जैसा कि वे समयानुसार प्रायः किया करते थे। उन्होंने कहा, "जनाब जुडाह साहब आप तो अभी से एक ओर झुकने लगे जितने आप उनके हैं उतने मेरे भी तो हैं आपको तो बीच में बैठना चाहिए।"

रेवेरेन्ड जुडाह ने अपनी भूल स्वीकार की व मध्य में आकर (दोनों के मध्य में) बैठ गए। तदनन्तर दोनों साहबान से जुडाह साहब ने इस आशय

के काग़ज़ पर हस्ताक्षर करवाए कि वे दोनों पक्ष उन्हें जज स्वीकार करते हैं व दोनों ही पक्षों को दिया गया फ़ैसला मंज़ूर होगा। हस्ताक्षर हो गए।

दृश्य देखने योग्य था। अपार भीड़ थी। जिधर देखिये, उधर सिर ही सिर नज़र आते थे। एक अजीब खलबली-सी मची हुई थी। लोग प्रतीक्षा में थे कि कब घात-प्रतिघात होंगे, उत्तर-प्रत्युत्तर होंगे। आख़िर वह घड़ी आ ही गई। फुसफुसाहट बन्द हो गई। जैसे शेर अपने शिकार को देख कर प्रसन्न होता है और उसे सामने देख कर मन में फूला नहीं समाता, यही हाल पंडित जी का था। वह अपने विरोधी की चालों की प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब यह वार करे और कब मैं इसकी चालों को नाकामयाब करूँ।

शास्त्रार्थ शुरू हुआ, पहले विरोधी को आक्षेप करने का समय दिया गया। जो भी आक्षेप किये गए, उनका तर्कयुक्त प्रबल उत्तर दिया गया जो क़ुर्आन-शरीफ़ व वेदों के सन्दर्भ वाक्यों से सजे व सबल थे। पंडित जी को अपने मुक़ाबिले में आए हुए के ज्ञान की थाह मिल गई। अब पंडित जी की बारी आई। उन्होंने अपने प्रश्नों की बौछार से उस मौलाना का रूह बिगाड़ दी। वह बिचारे घबरा कर उखड़ गए। प्रश्नों का उत्तर दे न सके, न कोई उद्धरण दे सके।

अब बारी थी रेवरेण्ड जुडाह साहब की। इससे पहले कि वे अपना निर्णय दें, जनसमूह अपना निर्णय दे चुका था। उनमें एक अजीब-सी हलचल थी, रोमांच था, उत्सुकता थी। वे जज का निर्णय भी सुनना चाहते थे।

जुडाह साहब के खड़े होते ही खुसफुस बन्द हो गई Pin drop silence. फ़ैसले की घड़ी, बड़ी नाज़ुक घड़ी, फ़ैसला इधर या उधर, धड़कन रुकने को हो गई।

बोलना शुरू किया, "मैंने शास्त्रार्थ सुना, मेरे आर्य पंडित ने जिस ख़ूबी से अपना पक्ष प्रस्तुत किया, क्या ख़ूब था वह! आयतों की उसमें भरमार था। बड़े अच्छे ढंग से उन्होंने उत्तर दिये। (तालियों की गड़गड़ाहट) मेरे मुसलमान भाई तो नमूने के तौर पर भी एक आयत न पढ़ सके ('वैदिक धर्म की जय' के गगनभेदी नारे)।

मैं निर्णय देता हूँ, आर्य जीत गए व मुसलमान हार गए। ('पं० रामचन्द्र देहलवी की जय, ऋषि दयानन्द की जय, वैदिक धर्म की जय' के गगनभेदी

नारे लगाए गए) लोगों ने अपनी टोपियाँ उछालीं, कुर्सियाँ उछालीं। लोगों ने पंडित जी को अपने सिरों पर उठा लिया। मारे खुशी के लोग दीवाने हो गए। मैं समझता हूँ पंडित जी भी उस दिन अवश्य अपनी जीत पर मन ही मन प्रसन्न हुए होंगे। इस जीत की ख़ुशी में पंडित जी को एक सोने का पदक किसी धनिक ने भेंट किया।

इनाम की बात पर मुझे एक और घटना भी याद आ गई। जब पंडित जी फ़ीरोज़पुर आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में भाग लेने गए तो वहाँ भी अखाड़ा जमा। शास्त्रार्थ को सुनने वालों में एक पठान नवयुवती भी थी जो 'अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय' में पढ़ती थी। पंडित जी क़ुर्आन शरीफ़ की आयतें ऐसे अच्छे व सही ढंग से पढ़ते थे कि बड़े-बड़े हाफ़िज़ व मौलवी भी दाँतों तले अँगली दबाते थे। यह पठान लड़की भी पंडित जी की वाणी से अत्यन्त प्रभावित हुई। उसे उनका आयतें पढ़ना बेहद पसन्द आया और उसने वहाँ के मंत्री को दस रुपये का नोट दिया और कहा कि "साडे मौलवी पंडित नू ए दस रुपये मेरे वल्लों देईं"। पंडित जी हँसते-हँसते यह घटना सुनाने के बाद कहा करते थे कि "मुझे अरबी पढ़ने की फ़ीस मुसलमान साहब ने ही दी। मैंने अपनी जेब से कुछ खर्च नहीं किया।" आपको याद होगा कि पण्डित जी ने क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ने के लिए हाफ़िज़ को १०) ही दिये थे।

जब पंडित जी ने मौलवी को कान पकड़वाए

बात कहाँ की है यह मुझे अब विस्मृत हो गया है, किन्तु घटना इस प्रकार है कि आयत पढ़ने में कहीं ज़बर व ज़ेर के ऊपर विवाद खड़ा हो गया। पण्डित जी ने विवाद की समाप्ति के लिए क़ुर्आन शरीफ़ जो उनके पास ही थी खोलकर दिखा दी। मौलाना ने अपनी भूल स्वीकार की और अपने कान भरी सभा में पकड़े। लोगों ने उस सभा में शोर मचा दिया और कहा कि "पण्डित जी ने मौलाना के कान पकड़वा दिये।"

तूफ़ानी आदमी

पण्डित जी काम करने में शैतान को भी मात देते थे। उनके स्वभाव में प्रत्येक कार्य को आवश्यकता व समयानुसार चटपट करने की आदत थी। अपने साधारण कार्यों में जहाँ उनको जल्दी रहती थी, वहाँ उन्होंने अपना प्रचार-कार्य भी इसी धुआँधार गति से किया था। न रात का फ़िकर था न

दिन का। धूप-छाया से उन्हें क्या मतलब था! भूखे हों या प्यासे, वे इन सब छोटी-छोटी बातों की परवाह कभी भी नहीं करते थे। आप उनके प्रचार की गति का अनुमान इससे लगा सकते हैं कि उन्होंने अकेले हैदराबाद में ७ बार में १२५ व्याख्यान दिये थे।

सत्याग्रह का नेतृत्व

जहाँ पण्डित जी ने आर्यसमाज के क्षेत्र में धार्मिक प्रचार स्वतन्त्र रूप से किया, वहाँ उन्होंने इस संस्था द्वारा प्रत्येक आन्दोलन में सैनिक की भाँति काम किया। वे वहाँ सेनानी नहीं बने हालाँकि वे चाहते तो ऐसा कर सकते।

आर्यसमाज द्वारा कैरोंशाही के खिलाफ़ हिन्दी आन्दोलन छेड़ने पर वे उस आग में कूद पड़े थे और एक बड़ा जत्था लेकर वे पंजाब में सत्याग्रह के लिए गये थे।

पंडित जी का खान-पान व रहन-सहन

अत्यन्त सादा जीवन वे बिताते थे। खाने-पीने के सम्बन्ध में बड़े सन्तुलन से काम लेते थे। घर में वे प्रातः प्रायः केवल एक दाल व रोटी खाते थे; सायंकाल केवल एक शाक व रोटी से अपना पेट भर लेते। वे पूर्णतः शाकाहारी थे। भोजन उनका पूर्णतः सात्विक था। घर में प्याज तक भी नहीं खाई जाती है।

चाय, पान-बीड़ी-सिगरेट से वे बहुत दूर थे। सिनेमा उन्होंने अपने जीवन में कभी देखा नहीं था। कपड़े बड़े सादा किन्तु अपने हाथ से धुले अत्यन्त साफ़-सुथरे पहनते थे। केवल शेरवानी पर ही लोहा करवाते थे।

स्वभाव से वे अत्यन्त सादा व शान्त थे किन्तु झूठ व चक्करदार बात उनके जज्बे को भड़का देती थी। कुपित हो जाने पर वे दोषी व्यक्ति को पूरी तरह दण्डित किये बग़ैर छोड़ते नहीं थे। मन के वे कोमल भी बहुत थे। दोषी व्यक्ति यदि अपनी भूल को उनके सामने सच्चे मन से स्वीकार कर लेता था तो वे पानी-पानी हो जाते थे और उसको तुरन्त क्षमा कर देते थे।

वे बड़े दूरदर्शी व गम्भीर विचारक थे। समस्या के हर पहलू पर भली प्रकार विचार करने के बाद वे कोई निर्णय लेते थे और फिर निर्णय लेने के बाद उसे बदलते नहीं थे, चाहे कुछ भी हो।

बच्चों को अत्यन्त प्यार करते थे। वे अपने बच्चों की मुरझाई शक्ल कभी भी देख नहीं सकते थे। वे बच्चों के दुःख से स्वयं ज़्यादा दुःखी हो जाते थे। उनका दुःख दूर करने के लिए वे कुछ भी उठा न रखते थे।

सेवा करना, जो कहना बड़ा आसान है, करना बड़ा मुश्किल है, उसमें वे सिद्धहस्त थे। किसी भी गन्दे से गन्दे कार्य से वे घृणा नहीं करते थे। उन्हें जहाँ भी मौक़ा मिला, उन्होंने सेवा में कसर नहीं की। वे कहा करते थे कि "Every opportunity to help is a duty"—हमारा कर्त्तव्य है कि अवसर मिलने पर हम सेवा करें।

धार्मिक क्षेत्र में अपूर्व सफलता का राज़

यूँ तो पण्डित जी से अधिक पढ़े लिखे व वेदों के कई-गुणा अधिक विद्वान् आर्यसमाज में थे व हैं भी, किन्तु उन लोगों का क्यों इतना सम्मान जन-साधारण में नहीं है यह बात मैंने कई बार विचारी है और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि पण्डित जी में निम्न विशेषताएँ थीं जिनके कारण वे अत्यन्त लोकप्रिय हुए—

(१) सभी सिद्धान्तों का गम्भीर व सही अध्ययन।

(२) अपने समझे हुए सिद्धान्तों को जन-साधारण तक उनके बुद्धि-स्तर के अनुसार ही उनकी भाषा में भली-भाँति समझा देने की क्षमता।

(३) विधर्मियों को उनके सिद्धान्तों की कमी तर्क द्वारा समझाई न कि उनसे झगड़ा मोल लिया। न उन्हें कोई उलाहना या ताना दिया, न उन्हें लज्जित किया।

(४) दूसरे धर्मावलम्बियों के आलिमों व नेताओं के लिए कभी अपशब्द नहीं कहे। उनका नाम पूर्ण सम्मान के साथ लिया।

(५) उनका ज्ञान असीमित व एकदम सही था। उन्होंने कभी भी कोई सन्देहात्मक बात नहीं की। वे अपनी बात पूर्ण विश्वास के साथ कहते थे।

(६) वैदिक-जीवन-सिद्धान्तों को उन्होंने स्वयं अपने जीवन में धारण किया हुआ था और उन पर चलते हुए ही वे दूसरों को सिखाते थे इसलिए उनकी ओर अंगुली उठाने का कोई अवसर ही न था।

इसी से लोग उनकी बात तुरन्त मान जाते थे। मैं स्वयं भी उनके उपदेशों से प्रभावित न होकर उनके जीवन से प्रभावित हुआ हूँ जितना भी हुआ हूँ।

रुग्णावस्था

आज से लगभग पाँच वर्ष पूर्व ही उन्होंने बाहर आना-जाना बन्द कर दिया था। एक बार दिल्ली में सदर बाज़ार जाते हुए उनकी रिक्शा को पीछे से एक टैक्सी वाले ने ज़ोर की टक्कर लगाई। वे रिक्शा में से उछल कर दूर जा गिरे। बड़ी चोट आई। उस समय उनकी रीढ़ की हड्डी पर भी चोट लग गई थी। तभी से उनके बाँयें हाथ में राशा (कम्पन) हो गया था।

शुरू-शुरू में उनके ऊपर कोई ध्यान नहीं गया किन्तु वह बढ़ता ही गया। धीरे-धीरे स्नायु-दुर्बलता बढ़ती गई। बाद में इलाज कराने पर भी कुछ न बना। वे इतने कमज़ोर हो गये कि चलना-फिरना भी मुश्किल हो गया। घर में जगह-जगह रस्सियाँ बाँध लीं; उन्हीं को पकड़ कर उठते थे वे। चलते भी उन्हीं के सहारे थे।

इस कमज़ोरी की अवस्था की तेज़ी से बढ़ोतरी इसलिए भी हुई कि वे हापुड़ में अपने को अकेला महसूस करते थे। मेरे परिवार में अधिक व्यक्ति नहीं हैं। मैं (विमलचन्द्रार्य), मेरी माता जी (श्रीमती लीलावती देवी), मेरी बहिन (कुमारी सरला आर्य जो हापुड़ में पढ़ाती हैं), मेरी दूसरी छोटी बहिन (कुमारी सुवीरा आर्य जो दिल्ली में पढ़ाती हैं), मेरी धर्मपत्नी (श्रीमती मूर्ति-देवी) व पंडित जी के दो पोते (अतुलचन्द्र व विपिनचन्द्रार्य), यह, पूज्य नाना जी समेत कुल ८ व्यक्तियों का परिवार था जिनमें से मैं व मेरी छोटी बहिन दिल्ली में कार्य करने के कारण उनसे दूर थे। बच्चे पढ़ने चले जाते थे। मेरी दूसरी बहिन भी हापुड़ में पढ़ाने स्कूल में चली जाती थीं और यूँ घर में केवल तीन ही व्यक्ति रह जाते थे। माता जी व धर्मपत्नी घर के काम में लगी रहती थीं या पूज्य नाना जी की सेवा में लग जाने के कारण उनके सामने न होती थीं और यूँ वे अपने को अकेला समझते थे।

समय मिलने पर उनकी बड़ी बेटी (श्रीमती कस्तूरी देवी जी) भी सप्ताह में एक या दो बार आ जाती थीं।

अकेले बैठे-बैठे वे थक चुके थे। वे मुझसे कई बार अपना मन भारी करके आँखों में आँसू भर कर कहा करते थे कि बेटा मेरा दिल नहीं लगता, मेरा दिन नहीं कटता। मैं यथासम्भव उनकी इच्छानुसार कुर्सी पर बिठा कर घुमाने ले जाता था। उनका मन बहलाने का प्रयत्न किया करता था, किन्तु उन्हें अकेलापन हमेशा खटकता ही था। हापुड़ इस सम्बन्ध में कुछ रूखा था।

धीरे-धीरे उनकी अवस्था व शरीर इतना कमज़ोर हो गया कि उन्हें मेरी माता जी उठाती-बिठाती थीं, चलाती-फिराती थीं। वे एक जगह घंटे-घंटे खड़े रह जाते थे, चल नहीं पाते थे किन्तु माता जी उन्हें चलाती थीं। हर समय उनके साथ रहती थीं।

दीवान नर्सिंग होम दिल्ली में

अक्तूबर १९६७ में उन्हें बुखार चढ़ा। वे अत्यन्त कमज़ोर हो गए। उन्हें ग़फ़लत-सी होने लगी।

मैंने दिल्ली में आदरणीय लाला रामगोपाल जी शालवालों से पूज्य नानाजी की तबीयत का हाल बताया। वे एकदम चिन्तित हो गए उनका हाल सुनकर। उसी दिन वे, श्री ओम् प्रकाश जी त्यागी व श्री वैद्य प्रह्लाद जी को अपने साथ लेकर हापुड़ पहुंच गये। उनको (पण्डित जी) उस समय होश था। वे इन सब को आया देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

लाला जी पण्डित जी की अवस्था देख कर दिल्ली लौट गए थे उन सब महानुभावों ने पण्डित जी के इलाज की व्यवस्था दीवान नर्सिङ्ग होम में की। वहाँ पर डाक्टर एम० एल० शर्मा साहब की देखरेख में इलाज होने लगा। यहाँ जल्दी ही उनका बुखार उतर गया और वे स्वास्थ्य-लाभ करने लगे। यहाँ वे हमारी मदद से चलने लगे। पूरे दो महीने यहाँ वे रहे। यहाँ से भी उनका मन उचट गया। उन्हें बच्चों की याद आने लगी। घर के आदमियों के बीच में जाने के लिए वे छटपटाने लगे। उनकी इच्छानुसार उन्हें नर्सिङ्ग होम से दीवान हाल लाया गया।

दीवान हाल में नीचे के एक कमरे में उनके रहने की व्यवस्था की गई। यहाँ वे प्रसन्न थे, स्वस्थ नहीं। यहाँ अचानक उन्हें छठे दिन १०६ डिग्री बुखार हो गया। वे यहाँ पूर्णतया अचेतनावस्था में हो गये।

इर्विन अस्पताल में

सभी डाक्टरों ने जो उन्हें यहाँ देखने आये, उन्हें अस्पताल में भर्ती करने की बात कही। तुरन्त एम्बुलेंस में लिटा कर उन्हें इर्विन अस्पताल में रात में ही पहुँचाया गया।

जैसे कि लापरवाही से यहाँ काम किया जाता है, उन्हें एमर्जेन्सी वार्ड में में ले-जाकर डाल दिया। रातभर उन्होंने कुछ नहीं किया। कमर में रीढ़ की हड्डी के पास एक सीखने वाले डाक्टर ने पंक्चर किया। मैं रातभर बेचैनी की हालत में वहीं घूमता रहा। लाला रामगोपाल जी शाल वाले व श्री वैद्य प्रह्लाद जी पण्डित जी के उपचार-प्रयत्नों में जी-जान से जुटे रहे।

अगले दिन प्रातः पौने पाँच उनकी बेहोशी टूट गई। जैसे ही मैंने उन्हें आवाज लगाई 'नाना जी साहब', ऐसी आवाज़ें मैं रात भर लगाता रहा था, किन्तु तब वे बोले नहीं। प्रातःकाल उन्होंने फ़ौरन आँखें खोल दीं और अपनी उसी प्रेमभरी आवाज़ में बोले, "हाँ बेटा !" मैं मरे से ज़िन्दा-सा हो गया। मेरा गला भर आया। नाना जी की आँखों से आँसू गिर रहे थे। वे बोले कि मुझे दूध ने खराब किया था। ख़ैर, दिन निकलते ही उन्हें मेडिकल वार्ड में स्थानान्तरित कर दिया गया।

फिर दीवान हाल में

इर्विन अस्पताल का प्रबंध बिल्कुल निकम्मा था। न दवाई न दारू; कोई यहाँ किसी को नहीं पूछता। डाक्टर भी परेशान हैं, मरीज़ भी परेशान हैं। मैंने इस प्रवन्ध को देखा, तुरन्त ही उन्हें दीवान हाल में ले जाने का निश्चय कर लिया।

दीवान हाल के अधिकारियों ने पण्डित जी के रहने की व्यवस्था अब और भी अच्छे स्थान पर ऊपर कर दी। उनकी सेवा में मैं व मेरे मौसा जी रहते थे। क्योंकि मैं स्कूल में पढ़ाने भी जाता था इसलिए दिन में वे वहाँ रहते थे। रात में मैं रहता था। मेरी बहिन भी रोज वहाँ आती थीं।

मौत का साया

दीवान हाल में आने के बाद उन्होंने खाया कुछ नहीं। उनकी भूख अस्पताल में ही मर गई थी। डाक्टर शर्मा के इलाज में उन्हें रखा गया।

किन्तु उन्हें भूख बिल्कुल लगी ही नहीं। हम उन्हें बहला-फुसला कर कुछ न कुछ खिला ही देते थे।

कुछ दिन स्वस्थ रहने के बाद वे फिर अर्द्ध-चेतनावस्था में हो गए। मृत्यु से चार दिन पूर्व उन्हें अजीब तरह की घबराहट हुई ऐसा क्यों हुआ कुछ समझ में नहीं आया। उसी दिन से उनका बोलना भी मेरी समझ में आना बन्द हो गया। मेरे मित्र भाई गोपाल (रामगोपाल) व कन्हैयालाल भी पिछले दिनों में मेरी मदद के लिए आ गए। उन्होंने भी उस घबराहट को देखा किन्तु समझ में कुछ भी न आया।

मैं अपनी माताजी को भी ले आया था। उनके ऊपर यहीं से मृत्यु का साया पड़ने लगा था। वे बहुत बोलने की कोशिश करते थे, बोलते भी थे, किन्तु मेरी कुछ भी समझ में न आता था।

उन्हें बुखार हो गया था। कमर में रीढ़ की हड्डी पर तथा कूल्हों की हड्डियों पर ज़ख्म हो गए थे जिससे उनका खाट पर लेटना भी दुश्वार हो गया था।

हमारे परिवार के सभी लोग (मेरी मौसी जी, उनकी बड़ी लड़की, उनके पति व उनके बच्चे) वहाँ मौजूद थे। डाक्टर ने उनकी जाँच की व बताया कि उन्हें नमूनिया हो गया जो उनके जीवन के लिए घातक है।

२ फ़रवरी की रात से उनकी तकलीफ़ बढ़ गई। उनके पेट पर अफारा भी आ गया। पेट में उन्हें बेहद दर्द था जिसके कारण वे कराहते थे। जिन्दगी में कभी वे कराहे नहीं थे। हम उन्हें कराहता देखते रहे किन्तु कुछ भी न कर सके।

मौत के मुंह में

मृत्यु आज उन पर हावी हो चुकी थी। वे कभी न हारने वाले आज भी मौत से जूझ रहे थे। इसी रात से उनके शरीर से प्राण निकलने शुरू हो गए थे। शरीर का एक-एक अंग फड़कता था। हमारा सरपरस्त आज हमसे छिन रहा था। सब लोग शोक के सागर में डूबने लगे। कराहना पेट के सेंकने से कुछ शान्त होता था किन्तु तकलीफ़ कम नहीं हुई। अगली शाम भी आ गई। यह मनहूस शाम धीरे-धीरे काली होती गई और पण्डित जी के जीवित

रहने की आशा भी उस अँधेरे में लीन होने लगी। बसन्तपंचमी की यह रात हमारे महान् दुःख की रात थी।

न टलने वाली घड़ी आ ही पहुँची

पण्डित जी की साँस की गति क्रमहीन हो गई। डाक्टर को बुलाया गया। उन्होंने उन्हें देखा। उनका सब कुछ देखा किन्तु उन्हें कुछ दिखाई न दिया। केवल उनकी मौत दिखाई दी। "बस अब सब कुछ बन्द कर दो इन्हें जाने दो, इन्हें रोको मत, इनकी आत्मा को कष्ट मत पहुँचाओ" यह शब्द डाक्टर ने कहे और वह भी हमारे दुःख में दुःखी बच्चों की तरह रोने लग गए। 'केवल एक सांस कहीं अटकी है। डाक्टर बोले। ठीक ६-३० बजे वह अन्तिम साँस भी निकल गई।

चीत्कार ! चारों ओर भयंकर चीत्कार !

शव-यात्रा

तीन फ़रवरी १९६८ को इस मृत्यु का समाचार सारी दिल्ली में जंगल की आग की तरह फैल गया। ४ फ़रवरी को प्रातःकाल यह समाचार रेडियो पर भी प्रसारित किया गया।

आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल में प्रातः ८-३० बजे ही पण्डित जी का शव लोगों के दर्शनार्थ रख दिया गया था। हज़ारों व्यक्ति उनके अन्तिम दर्शनों के लिए वहाँ एकत्रित हो गए थे।

साढ़े ग्यारह बजे से कुछ पूर्व ही उनकी शव-यात्रा प्रारम्भ हुई। दिल्ली के बड़े-बड़े सामाजिक कार्यकर्त्ता, संसद सदस्य, कांग्रेसी व जनसंघी नेता इस शव-यात्रा में सम्मिलित हुए। समाजों ने अपने साप्ताहिक सत्संगों का कार्यक्रम रद्द कर दिया व शव-यात्रा में सम्मिलित होने दीवान हाल पहुँचे।

पण्डित जी के शव को एक केसरिया कपड़े से ढक दिया गया था। उनका मुँह खुला था। केसरिया कपड़े के ऊपर 'ओ३म्' (जिसे वे जीवन भर उच्चारते रहे थे, बेहोशी में भी कभी-कभी बोलते थे) का झंडा रख दिया गया था। सारा शव फूल-मालाओं से लद गया था।

शव दीवान हाल से चाँदनी चौक, एस्प्लेनेड रोड, दरीबा, फ़व्वारा, कौड़िया पुल के निकट से होता हुआ कश्मीरी गेट, बड़े डाकखाने के सामने

से गुज़र कर निगमबोध घाट पर पहुँचा ।

शव-यात्रा के साथ जहाँ हज़ारों दिल्लीवासी थे, वहाँ निगमबोध घाट पर तो तिल रखने को जगह नहीं थी । हज़ारों व्यक्ति वहाँ भी अन्तिम दर्शनार्थ दिल्ली के आस-पास के स्थानों से आए हुए थे ।

निगमबोध घाट पर भीड़ को सँभालना मुश्किल हो गया था ।

पण्डित जी अपनी मृत्यु से कई वर्ष पूर्व ही अपनी पुत्री (श्रीमती लीलावती देवी) को अपने अन्तिम संस्कार के लिए ५००) पाँच सौ रुपये दे गए थे ।

यह राशि लाला रामगोपाल जी शालवालों के आदेश पर श्री वैद्य प्रह्लाद दत्त जी को शव-यात्रा से पूर्व ही सौंप दी गई थी ।

ठीक डेढ़ बजे पण्डित जी के शव को वेदी के अन्दर रख दिया गया । हज़ारों आदमियों की आँखें उस समय गीली हो गईं जब पण्डित जी के भौतिक शरीर को अग्नि की ज्वाला के हवाले किया गया ।

दिल्ली के मूर्धन्य पण्डितों के एक बड़े समुदाय ने पूर्ण वैदिक पद्धति से उनकी दाह-क्रिया सम्पन्न कराई ।

विमलचन्द्रार्य

ईश्वर-सिद्धि

ओ३म् । सपर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर ँ शुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ ॥ यजु० ४० । ८ ॥

ओ३म् । य ऽआत्मदा बलदा यस्य विश्वऽ उपासते प्रशिषं यस्य देवाः । यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

यजु० २५ । १३ ॥

हम जो कुछ भी कार्य करते हैं, वह परमात्मा के कार्यों की नकल है । अपने कार्यों से ही हम उसे पहचान सकते हैं । कई सज्जन शंका करते हैं कि

भगवान् हमारी शंकाओं का समाधान क्यों नहीं करता। किन्तु उन्हें समझना चाहिये कि भगवान् के कार्यों पर शंका-समाधान, हमारे अपने ही कार्यों से होता है। आप जगत् का कोई भी पदार्थ लीजिये, उसका बनाने वाला कोई अवश्य है, मकान, कपड़ा, पुस्तक आदि सब किसी न किसी ने बनाये हैं। रूमाल को ही देखिये—इसको सीने वाला और इसके बनाने वाला कोई अवश्य है। यह बात विचारणीय है कि क्या जड़ पदार्थ स्वयं क्रिया कर सकता है ? यह देखिये—यह पुस्तक दायें हाथ में रखी है। यह स्वयं बायें हाथ नहीं आ सकती। आपकी पुस्तक यदि एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान पर कोई रखदे, तो आप पूछेंगे कि मेरी पुस्तक यहाँ किसने रखी है ? इन बातों से सिद्ध होता है कि जड़ पदार्थ परतन्त्र हैं—दूसरे के तन्त्र अर्थात् प्रबन्ध के आधीन हैं, वे स्वतन्त्र नहीं। रेलवे स्टेशन पर यदि एक बच्चा अपने पिता से बिछुड़ जाता है, तो पिता के पुकारने पर वह बोल उठता है, किन्तु यदि किसी का ट्रङ्क रेलगाड़ी से छूट गया हो तो उस ट्रंक को कोई भी पुरुष आवाज़ देकर नहीं पुकारेगा कि हे ट्रंक ! तू कहाँ है ?

अपने दैनिक व्यवहारों से ही हम भगवान् के कार्यों को पहचानते हैं। एक बार मैं रात्रि के समय आर्यसमाज की अन्तरंग सभा के अधिवेशन में गया। जाते समय अपनी छड़ी मुझे नहीं मिली। मैं बिना छड़ी के ही चला गया। अन्तरंग सभा की बैठक से वापस आया तो सब बच्चे सो गये थे। प्रातःकाल होने पर मैंने अपने दौहित्र से पूछा कि मेरी छड़ी तुमने कहीं रक्खी है क्या ? वह बोला—नहीं। उसकी छोटी बहिन से भी पूछा। उसने भी कहा कि मैंने भी नहीं उठाई। फिर इन दोनों बच्चों की माता से पूछा। वह बोली—मुझे भी मालूम नहीं। अब चौथा मैं ही रह गया हूँ। मैं भी सत्य कहता हूँ कि मैंने भी उठा कर कहीं नहीं रखी है। इसके पश्चात् मैं बच्चों से बोला—मेरी छड़ी की आदत कुछ खराब हो गई है। वह बिना कहे ही कहीं चली जाती है। यह सुन कर छोटी लड़की बोल उठी—नाना जी ! ऐसा कभी नहीं हो सकता। छड़ी अपने-आप कहीं नहीं जा सकती ; भैया ही छड़ी से बन्दरों को भगाया करते हैं, इन्होंने ही उठाई होगी। छड़ी अपने-आप नहीं जा सकती। देखिये छोटा बच्चा भी जानता है कि जड़ पदार्थ स्वयं कोई क्रिया नहीं कर सकता। वह परतन्त्र है। इसी प्रकार के अपने दैनिक व्यवहार

के कार्यों से हम परमात्मा के कार्यों को पहचानते हैं। संसार के जड़ पदार्थ स्वयं नहीं बने, किसी बनाने वाले ने ही बनाये हैं। जगत् का रचयिता भगवान् ही है।

सोते समय हम इतने बेसुध होते हैं कि चाहे कोई हमें जान से मार जाये या घर का सामान चुराकर ले जाये, हमें कुछ मालूम नहीं होता। उस समय हम आनन्दस्वरूप परमात्मा के समीप पहुँच जाते हैं। जागते हुए कई प्रकार की चिन्तायें हमें घेर लेती हैं। हम श्वास लेते हैं, किन्तु वह भी स्वयं नहीं लेते, इसमें भी किसी का इन्तजाम होता है। जिसने इस समस्त भवन का निर्माण किया है, उसी के इन्तजाम से यह सब कुछ हो रहा है।

कहते हैं कि प्रकृति, सूर्य, चाँद, समुद्र, नदी, पर्वत, वायु, अग्नि आदि को स्वयं बना लेती है। यदि ऐसा है, तो वह जमीन बनाने के बाद क्यों रुक जाती है ? घड़ा, तश्तरी आदि क्यों नहीं बना देती ? नहीं, ज्ञानी परमात्मा यह सब बनाता है। जिस प्रकार स्कूल का मास्टर बच्चों को आरम्भ में एक लाइन लिखकर देता है और फिर उसे देख कर बच्चा उसी प्रकार लिखता है, इसी तरह मनुष्य की सामर्थ्य जहाँ तक नहीं पहुंच सकती थी, वहाँ तक उस ज्ञानी भगवान् ने बनाया और उसके बाद मनुष्य बनाता है। परमात्मा अणु-अणु में व्याप्त है।

हर गुल में हर शजर में, हर शै में, हर बशर में।
गर तू न देखे उसको, तो है कसूर तेरा ॥

हम मनुष्यों के ही पक्षपाती हैं। एक चित्रकार मोर या कौवे का चित्र बनाता है, उसे देखकर हम उसकी प्रशंसा करने लगते हैं कि कितना सुन्दर बनाया है मानो सचमुच का हो। दीवाली के अवसर पर मिट्टी के खिलौने, खरबूजे, केले आदि बनाये जाते हैं, उन्हें देख कर हम बहुत प्रसन्न होते हैं और बनाने वाले की प्रशंसा करते हैं। किन्तु यह नहीं सोचते कि बिना प्राण के उस कौवे और मोर में कुछ नहीं और बिना मिठास और गूदे के उस केले और खरबूजे में भी कुछ नहीं होता। जिसने प्राणों वाले पक्षी बनाये और मधुर रस वाले फल बनाये उसके लिये हम एक शब्द भी नहीं कहते।

परमात्मा के अस्तित्व के सम्बन्ध में भी कई लोग शंका करते हैं। परमात्मा दयालु और न्यायकारी है, वह सब की प्रार्थना सुनता है। एक सज्जन ने शंका

की कि एक कुतिया ने बच्चे उत्पन्न किये। उसके बाद कुतिया को किसी ने विष दे दिया और वह मर गई। परमात्मा ने बच्चों का खयाल नहीं किया और उनकी प्रार्थना नहीं सुनी। दूसरे सज्जन शंका करते हैं कि सब जीवात्मा परमात्मा के पुत्र हैं। उनकी इच्छाओं की पूर्ति करने में परमात्मा बुरी तरह फेल है; वह अपने काम में गाफिल है। इन शंकाओं का समाधान इस प्रकार हो सकता है—एक बच्चा अपने पिता के साथ बाजार जा रहा था। उसने रास्ते में कलमी बड़े देखे और पिता जी से बोला—पिता जी! मुझे एक पैसे के कलमी बड़े ले दीजिये। पिता ने कहा—तुझे खाँसी है, ये तेरे खाने के योग्य नहीं। थोड़ी दूर चल कर बालक ने फिर माँगे, पिता ने फिर मना कर दिया। तीसरी बार बालक ने फिर माँगे, तो पिता ने धमकाया और कहा कि तू नासमझ है, यह तेरे खाने योग्य नहीं हैं। बालक निराश होकर चुप रह गया। घर वापस जाकर उस बालक ने अपने-जैसे कुछ बालक इकट्ठे किये और बोला कि मेरे पिता जी मेरे लिये सब कुछ करते हैं; किन्तु कलमी बड़े दिलवाने में उन्होंने बड़ी कंजूसी दिखाई। दूसरे बालक ने कहा—हाँ, मेरे पिता जी भी ऐसे ही हैं। तीसरे ने भी इसका समर्थन किया। इस प्रकार वहाँ सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया कि हमारे पिता जी हमारी इच्छाओं की पूर्ति करने में बुरी तरह फेल हैं, वे अपने काम में गाफिल हैं। हमें बच्चों की तरह फैसला नहीं करना चाहिये। बड़ों की तरह सोचना चाहिये। हमने परमात्मा और मनुष्य के काम के बीच में एक लाइन खींच दी है।

शंका करने वाले यह भी शंका करते हैं कि परमात्मा अपने कार्य में गाफिल है; वह चोर को नहीं पकड़ सकता। जैसे लार्ड हार्डिंग पर गोली चलने की घटना के अवसर पर पुलिस ने गोली चलाने वाले को एक रात में ही गिरफ्तार कर लिया, किन्तु परमात्मा रात-रात में गिरफ्तार नहीं कर सकता। ऐसी बात नहीं है। परमात्मा का काम जहाँ समाप्त होता है, वहाँ वह अपना काम राजा के सुपुर्द कर देता है। जिस कार्य को राजा नहीं कर सकता, उसे परमात्मा स्वयं करता है और शेष राजा के द्वारा करवाता है। चोरों की गिरफ्तारी भी राजा के द्वारा परमात्मा ही करवाया करता है।

ईश्वर के सम्बन्ध में विश्वास का न होना तो क्या, हमें अपने कार्यों पर

भी विश्वास नहीं । अपने कार्यों से ही हम परमात्मा को पहचानते हैं । कई लोग शंका करते हैं कि परमात्मा पाप करते हुए मनुष्य को रोकता क्यों नहीं ? जिस प्रकार एक मास्टर जो विद्यार्थी को बड़े प्रेम से पढ़ाता है, कई बार उसे बताता है । उसके न पूछने पर भी उसे समझाता है । वही मास्टर परीक्षा के समय विद्यार्थी के पास खड़ा हुआ देख रहा है कि यह प्रश्न का उत्तर अशुद्ध लिख रहा है, किन्तु वह उसे न तो बताता है न ही रोकता है । इसी प्रकार परमात्मा मनुष्यों की परीक्षा लेता है और पाप करते हुए उन्हें रोकता नहीं । इसी प्रकार के हमारे काम परमात्मा के प्रति हमारी शँकाओं का निवारण करते हैं । अच्छा कार्य करने से हमें अच्छा फल मिलता है और पाप करने से हमें बुरा फल मिलता है ।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाँ सस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।
यजु० २५ । २१ ।।

कई कहते हैं प्रायः देखा जाता है कि पापी मनुष्य सुखी रहते हैं और पुण्यात्मा दुःखी होते हैं । यदि ध्यान से देखा जाये तो बात ऐसी नहीं होती है । कर्म थोड़ी देर तक किया जाता है और उसका फल बहुत देर तक मिलता रहता है । हम भोजन थोड़ी देर तक करते हैं, किन्तु उससे हमारा पेट सारा दिन के लिये भर जाता है । यदि ऐसा न होता तो कर्म करने में किसी की रुचि ही नहीं होती । झूठ या सत्य में भी किसी की प्रवृत्ति न होगी । यदि हम अच्छे कर्म करते हैं तो हमें फल बुरा मिलता है, ऐसा क्यों होता है ? विचार करके देखिये । कर्म करते-करते यदि हमें कुछ बुरा फल मिला हो तो वह फल हमारे इन कर्मों का नहीं, अपितु पिछले कर्मों का फल है । वर्तमान अच्छे कर्म कारण और वर्तमान बुरा फल उनका कार्य नहीं होता । मान लीजिये कि आपके घर कोई अतिथि आया, उसके आते ही आपको समाचार मिला कि आपकी स्त्री के पुत्र-जन्म हुआ है । तब आप अतिथि महाशय से कहेंगे कि आप का आना कैसा अच्छा है कि आपके आते ही पुत्र की उत्पत्ति हो गई । क्या उन अतिथि महाशय के आने के कारण ही पुत्र का जन्म हुआ है ? नहीं, वह तो नौ मास पूर्व किये हुए आपके कर्मों का फल है ।

हमारी दृष्टि दुःख की ओर अधिक जाती है, सुख को हम भूल जाते हैं ।

पिता जब तक जीवित रहता है, तब तक बालक सुख से रहते हैं, उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। उनकी सारी इच्छायें पूरी होती रहती हैं। किन्तु जब पिता की मृत्यु हो जाती है, तब बालक पिता के अभाव को अनुभव करता है, उसे बहुत कष्ट प्रतीत होता है। पहले दुःख की ओर उसकी दृष्टि बिलकुल नहीं जाती थी, किन्तु अब वह पग-पग पर दुःख को अनुभव कर रहा है। यदि ध्यान से देखें तो संसार में सुख अधिक है और दुःख कम। दुःख हमारे कर्मों का ही फल है। यदि कोई मनुष्य शुभ कर्म करता है और उस पर कोई विपत्ति आ जाय तो वह तो उस पर परमात्मा की कृपा समझनी चाहिये। वह विपत्ति उसके इन शुभ कर्मों से नहीं, किन्तु पूर्व के अशुभ कर्मों के कारण आई है। उस धर्मात्मा के प्रति सब की सहानुभूति हो जाती है कि देखो कैसा भला पुरुष है, इस पर भी विपत्ति आ पड़ी। सब उससे समवेदना प्रकट करते हैं। सोने से कुन्दन बन जाता है। इन बातों पर हम ध्यान ही नहीं देते। यहाँ का तो वातावरण ही खराब हो गया है।

कहते हैं कि भारत 'सेक्यूलर स्टेट' है। यहाँ धर्म के आधार पर किसी के साथ पक्षपात नहीं किया जाता। जो पाप करेगा, चाहे कोई भी हो, उसे पाप का फल मिलेगा। किन्तु इस 'सेक्यूलर स्टेट, की आड़ में तो यहाँ एक बीमारी फैल गई है। लोग कहते हैं कि स्कूलों में धर्म की शिक्षा ही नहीं देनी चाहिये। इस प्रकार की बात यदि रही तो यह स्वराज्य हानिकारक सिद्ध होगा। धर्म की शिक्षा तो देनी ही चाहिये।[1]

यहाँ शंका होती है कि भगवान् जब शक्ल-सूरत वाला नहीं है, तब वह जगत् को कैसे बनाता है? मुरादाबाद में एक देवसमाजी महाशय व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने अपने सामने कुछ गीली मिट्टी रख ली और बोले कि यदि परमात्मा में शक्ति है तो वह इस मिट्टी में से एक-एक इंच की गोलियाँ बना दे। मैंने उनसे पूछा—"महाशय, आपके मुँह में खाने की शक्ति है? यदि है तो जो पदार्थ मैं बताऊं उसे खालें! वह बोले—यदि वह पदार्थ न खाने योग्य

---

१. सेक्यूलर धर्म के लक्षण—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥ मनु०

हुआ तो ? फिर मैं बोला—क्या आप अपनी बहिन से शादी कर सकते हैं ? और फिर उससे सन्तान भी उत्पन्न कर सकते हैं ? वह कहने लगा कि यह तो सभ्यता के विरुद्ध है। मैंने कहा—जिस प्रकार आप सब जगह किसी न किसी बात का 'ब्रेक' लगा देते हैं, कोई शर्त रख देते हैं, उसी प्रकार परमात्मा भी गोलियाँ यहाँ नहीं बनाता। उसमें गोलियाँ बनाने की शक्ति है और वह इतनी सुन्दर गोलियाँ बनाता है कि देखकर आप चकित हो जाते हैं। ऊँट के पेट में देखिये परमात्मा कितनी सुन्दर गोलियाँ बनाया करता है। बकरी के पेट में कितनी सुन्दरता और चतुरता के साथ गोलियाँ बनाता है कि वे सब एक ही माप की और एक ही जैसी, एक के बाद एक करके सैकड़ों ही निकलती चली जाती हैं। इस प्रकार जगत् की वस्तु देखकर ही हम परमात्मा की सिद्धि करते हैं।

कोई कहते हैं कि परमात्मा के कार्यों में क्रम नहीं होता, कोई वस्तु कहीं है और कोई कहीं। ऐसा कहने वालों का विचार ठीक नहीं। परमात्मा का क्रम तो बड़ा ही सुन्दर है। यदि वह एक भाग में पहाड़ ही पहाड़ बना दे, एक भाग में जंगल ही जंगल बना दे, और एक भाग में नदियाँ ही नदियाँ बना दे तो काम कैसे चले ? जिस प्रकार एक बाग में एक कतार सेबों की होती है, एक कतार नारंगियों की होती है और एक कतार अनार की होती है, यह क्रम तो डिक्शनरी का क्रम है। उसमें पहले सब शब्द A से आरम्भ होते हैं, फिर B से और फिर C से, इसी प्रकार उसका क्रम चलता है, लेकिन आप किसी बड़े से बड़े विद्वान् की कोई पुस्तक देख लीजिये ! उसमें अक्षरों के क्रम से कोई पृष्ठ या पंक्ति नहीं होती। यदि उसकी पुस्तक में एक पृष्ठ पर A ही A हों और दूसरे पर B ही B हों, तो इससे क्या लाभ होगा और आप उनमें से क्या पढ़ सकेंगे ? देखिये आपके कामों से ही परमात्मा पर की गई शंकाओं का निवारण होता है। मकान को ही लीजिए ! क्या आप उसमें गुस्लखाना ही गुस्लखाना बनाते हैं, या रसोईघर ही सब कमरों को बना लेते हैं ? एक चींटी यदि आपके सिर के बालों में घुस जाये तो वह समझेगी कि मैं बड़े भारी जंगल में आ गई हूँ। उसके बाद माथे पर आकर वह कहे कि अब तो एक सपाट मैदान आ गया है। फिर भौहों में आकर वह कहने लगे कि अब फिर झाड़ियाँ आ गईं और फिर वह कहे कि अहो ! अब तो बड़ा भारी गड्ढा-सा

आ गया और फिर ऊँचा टीला आ गया। यह सब देख कर वह कहने लगे कि यह तो किसी बेवकूफ ने बताया है—क्या यह विचार ठीक होगा? इसी प्रकार भगवान् ने इस जगत् को उत्पन्न किया है और कहा है कि—"विजानीहि बिजानीहि, बिजानीहि।" इस पर बार-बार विचार करो। इस पुस्तक को आप उठाइये, किससे उठायेंगे ? हाथ से। अब अपने हाथ को उठाइये, किससे उठायेंगे दूसरे हाथ से ? नहीं, दूसरे हाथ से कभी नहीं ! इन सब का उत्तर यही है कि भगवान् अणु-अ मेंणु विद्यमान है और वह अपनी शक्ति से इस ब्रह्माण्ड को रचता है।

एक शंका यह भी उठती है कि किसी वस्तु को बनाने वाला शरीरधारी ही होता है। फिर इस जगत् को बनाने वाला परमात्मा शरीरधारी क्यों नहीं ? सुनिये शरीरधारी मनुष्य जो कुछ जानता है वह अपने से बाहर बनाता है और परमात्मा अपने अन्दर ही सब कुछ बनाता है। परमात्मा तो—

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः॥

ईशोपनिषद्

वह सब ब्रह्माण्ड के अन्दर भी है और इस सब के बाहर भी है। वह तो 'अोरणीयान् महतो महीयान्,' सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है और महान् से भी महान् है। इसलिए उसे शरीर धारण करने की आवश्यकता ही नहीं। वह बिना शरीर के ही सब ब्रह्माण्ड का निर्माण करता है॥ इति शम्॥

ईश्वरोपासना

(मूर्तिपूजा)

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा्ँसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

(यजु० २५। २१)

स्तुति किसकी करनी चाहिये और क्यों करनी चाहिये, यह प्रश्न आज

साधारण जनता के मस्तिष्क में उत्पन्न होता है। केवल इतना ही नहीं, इसके साथ अन्य अनेक प्रश्न भी वे करते हैं। किन्तु, प्राचीन काल के पुरुष यह शंका नहीं किया करते थे कि स्तुति, प्रार्थना और उपासना किसे कहते हैं और यह क्यों करनी चाहिये। उनका आचार ऊँचा था। आजकल के मनुष्यों में समझ कम और कुतर्क अधिक है, आचार नहीं है।

जो परमात्मा को नहीं मानते, उनसे तो हमें कुछ भी नहीं कहना है, लेकिन मानने वाले भी कई बार कहते हैं कि जब परमात्मा हमें कर्मों का फल देगा, तो उसकी स्तुति आदि हम क्यों करें? उसकी स्तुति आदि करना उसकी खुशामद ही तो है! यह भी देखने में आता है कि उपासना करने वाले झूठे और बेईमान हैं तथा उपासना न करने वाले अक्सर अच्छे होते हैं। फिर यह भी प्रश्न है कि भगवान् ने नास्तिक क्यों उत्पन्न किये? इसका भी कारण है। परमात्मा ने इस संसार में जो कुछ किया है, ठीक ही किया है। भगवान् को किसी काम से कोई हानि या लाभ नहीं। वह पूर्ण है। उसमें किसी भी प्रकार का कोई जोड़ या बाकी नहीं। मनुष्यों को शिक्षा देने के लिये ही उसने यह सब इन्तजाम किया है। नास्तिक लोगों को उत्पन्न करने का लाभ यह है कि जो मनुष्य अपने को ईश्वरभक्त कहते हैं, किन्तु उनके कर्म गिरे हुये हैं और नास्तिक का आचरण ऊँचा है, तो फिर ईश्वर को मानने से और उनकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना करने से क्या लाभ? भगवान् के गुणों का कोई प्रदर्शन नहीं होता। जो नाम के उपासक हैं, वे अपने काम से भगवान् को नहीं मानते हैं—लेकिन जो नाम के उपासक नहीं, वे काम से भगवान् को मानते हैं। यह शंका करने वालों ने उन्हें पेश किया।

भगवान् तो सदा भक्तों का साथी होता है। वह भक्त के वश में सदा से होता आया है। भगवान् हमें हमारे कर्मो का फल देगा, उपासना का फल देगा। भगवान् ने हमें बहुत-सी चीजें दी हैं, हमें उसको धन्यवाद देना चाहिए। शंका करने वाले कहते हैं कि यह बात तो है, लेकिन इतनी सन्ध्या करने की क्या आवश्यकता है? नहीं, इसका भी फल है। क्या? मन की दो वृत्तियाँ होती हैं, अन्तर्मुख और बहिर्मुख। वृत्तियों का केन्द्र नाभि है। वृत्तियाँ जितनी भी दूर जाती हैं, उनको कौन रोकता है? नाभि। जिस प्रकार कोई गधा या घोड़ा एक खूंटे में बँधी रस्सी से बँधा हुआ है; वह गधा या घोड़ा उस रस्सी

से बाहर नहीं जा सकता। जगत् में जहाँ तक लाभ लेना चाहिये वहाँ तक हमारी प्रवृत्ति जानी चाहिये, सीमा से बाहर नहीं। अति सब जगह बुरी होती है—'अति सर्वत्र वर्जयेत्।' जिस प्रकार 'आचार' तो ठीक है, यदि उसके साथ 'अति' लगा दें तो 'अत्याचार' हो जाता है। इसलिये जगत् में अति किसी काम में नहीं करनी चाहिये और मर्यादा में ही रहना चाहिये।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

(यजु० ४०। १)

इस संसार में जो कुछ भी है उसमें परमात्मा बसा हुआ है। इसलिये इस जगत् को त्यागभाव से ही भोगना चाहिये। इसमें फँसना नहीं चाहिये और लिप्त नहीं होना चाहिये, संसार की ओर खिंचना नहीं चाहिए लेकिन इसका मुकाबला करना चाहिये।

लार्ड वेम्ले की माता अपने पुत्र से कहती है कि यदि तुम यह मालूम करना चाहो कि कौन-सा आनन्द ग्राह्य है और कौन सा त्याज्य है, तो सदा इस नियम को याद रखो कि जो बात तुम्हारी विवेक-शक्ति को निर्बल कर दे, तुम्हारी कोमलता को बिगाड़ दे, ईश्वर सम्बन्धी विचारों को क्षीण कर दे, जो शरीर के प्रभाव और शक्ति को मन पर चढ़ा दे, वह तुम्हारे लिये पाप है! सन्ध्या में भी यही बात है! परमात्मा का चिन्तन करते हुए हम संसार की मर्यादा से बाहर न हो जायें, यही फल सन्ध्या का है! यदि कहें कि तब तो हर समय ही सन्ध्या करते रहना चाहिये, नहीं ऐसा करने से तो अव्यवस्था हो जायेगी। निरन्तर किसी काम के करने में कोई आनन्द नहीं है। यदि हम पेट भर कर हलवा खा लें, उसके बाद फिर कोई कहे कि हलवा और खा लो तो तुम्हारी इच्छा हलवा खाने के लिये बिल्कुल न होगी। एक विद्यार्थी परीक्षा में पास होने के लिये कितना परिश्रम करता है, लेकिन जब एक बार पास हो गया तो इस बात को सुन कर जो उसे आनन्द हुआ वह प्रतिक्षण घटता चला जाता है। इससे यह पता लगता है कि इष्ट पदार्थ की प्राप्ति में ही आनन्द है। एकाग्रता होने से ही आनन्द की प्राप्ति होती है। परमात्मा की लहर हम में दौड़ जाती है। परमात्मा आनन्दघन है, उसकी शरण में जाने से कोई भी दुःख शेष नहीं रहता। तो क्या बिना सन्ध्या किये परमात्मा हमारे दुःख दूर नहीं कर सकता?

नहीं ऐसी बात नहीं है ! मन में दुःख दूर करने की भावना तो रखनी ही पड़ेगी ! यदि आपके मन में न हो तो भला आप अपनी अँगुलियों को फैला कैसे सकते हैं ? जब अँगुलियों को फैलाने की बात मन में होगी तभी अँगुलियाँ फैलेंगी ! इसलिये यदि हम सदा परमात्मा का चिन्तन रखेंगे, तो मर्यादा से बाहर नहीं हो सकेंगे !

शंका करने वाले कहते हैं कि सन्ध्या एक समय ही पर्याप्त है, फिर प्रातः और सायं दो बार सन्ध्या करना क्यों बताया ? देखिये आप साफ कुर्ता पहनते हैं, आप यह नहीं चाहते कि यह मैला हो जाये ; बहुत सावधानी आप रखते हैं कि आपका कुर्ता साफ ही रहे, किन्तु फिर भी वह मैला हो ही जाता है। इसी प्रकार आप एक बार सन्ध्या करके अपना मन पवित्र बनाते हैं तो फिर उसको पवित्र रखने का प्रयत्न करते रहने से भी उसमें अपवित्रता आ ही जाती है। जब हमारा स्वार्थ दूसरे के स्वार्थ से टकराता है, तब मन में मलिनता का आ जाना भी स्वाभाविक हो जाता है।

प्रातःकाल की संध्या से रात के पाप नष्ट होते हैं और सायंकाल की सन्ध्या से दिन में किये हुए पाप नष्ट हो जाते हैं।

मुसलमानों ने भी पाँच बार की नमाज़ को महत्त्व दिया है। उनका कुरान कहता है कि अपनी नमाज़ों की हिफाजत करो और बीच की नमाज़ की भी हिफाजत करो। बीच की नमाज को विशेष रूप से इसलिये कहा कि बीच की नमाज़ का समय दिन के तीसरे पहर ४ बजे का होता है, उस समय सब मनुष्य अपने काम-धन्धे में जुटे रहते हैं। कुरान का अभिप्राय यह है कि जब तुम अपने सांसारिक कार्यों में उलझे हुए हो, उस समय भी परमात्मा का चिन्तन करते रहो। हम प्रातः-सायं भगवान् के गुणों से वंचित न हो जायें, इसलिए दोनों समय सन्ध्या करना आवश्यक है।

स्तुति का अर्थ प्रशंसा करना है। उस परमात्मा का परिचय प्राप्त करना स्तुति कहलाता है। जब परिचय हो गया तब उसके प्रति प्रेम भी उत्पन्न होगा। जब हमें यह मालूम होगा कि भगवान् ने हमें कैसे अच्छे पदार्थ दिये हैं, तभी उसके प्रति हमारा प्रेम उत्पन्न होगा। माता हमें अच्छे पदार्थ देती है, हमारे हित का काम करती है, इसलिये हम उससे प्रेम करते हैं। इसी प्रकार भगवान् का गुणानुवाद करके यदि हम उसका नाम लेंगे तभी तो हमें रस का

स्वाद मिलेगा और परमात्मा के प्रति हमारा प्रेम बढ़ेगा। स्तुति करने से परमात्मा के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है। आज जनता सुरैया से परिचित है, उसकी स्तुति करती है, इसलिए उसके प्रति जनता का प्रेम है। उसके देखने के लिए अपार जन-समूह एकत्र हो जाता है। किन्तु उस भगवान् की स्तुति आज जनता नहीं करती। उसकी प्रशंसा में तो यदि घण्टा व्यतीत हो जाये, तब भी कम है। परमात्मा के पास वह कौन-सी मशीन लगी है जिससे वह समुद्र के खारी जल को स्वच्छ और मधुर बना देता है, फिर उसे किस सुन्दरता से बरसाता है? उसे देखने में भी कितना आनन्द आता है। आपके बढ़िया फव्वारे को देखकर भी वह आनन्द प्राप्त नहीं होता।

ईश्वर की स्तुति करते हुए हमें मन में यह धारणा बनानी चाहिये कि मैं किस प्रकार उसके इन अमृतपुत्रों को आनन्द पहुँचा सकता हूँ? हम परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण करें। परमात्मा के गुणों का चिन्तन करते हुए हमें परमातमा की सोहबत में बैठना चाहिये। शैतान की सोहबत में हम न रहें, जो कि दुनिया को सन्मार्ग से भटकाने वाला है। पुलिस सुपरिंटेण्डेण्ट सदा यही सोचता है कि मैं अपराधी को किस प्रकार जेल भेजूं? हमें भगवान् की सोहबत में रहकर भगवान् के गुणों को धारण करना चाहिये। सन्ध्या करने से हम भगवान् की सोहबत में बैठते हैं। देखिये जब कोई सन्ध्या करने बैठता है, तब उसके आस-पास के सब मनुष्यों और बाल-बच्चों को भी चुप कर दिया जाता है कि देखो वे सन्ध्या कर रहे हैं, वे भगवान् की सोहबत में बैठे हैं, इस समय चुप रहो। ऐसा न हो कि तुम्हारे शोर मचाने से वे भगवान् की सोहबत में न रह सकें। सन्ध्या का तात्पर्य इसके सिवाय कुछ भी नहीं है कि आप परमात्मा-जैसा अपने-आप को बनाने का प्रयत्न करें। स्तुति से प्रेम उत्पन्न होने के बाद प्रार्थना की जाती है। उसका प्रकार यह है:—

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि, वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि, ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि, सहोऽसि सहो मयि धेहि॥

(यजु० १९।९)

हे भगवन्! आप तेजस्वी हैं, मुझे भी तेज प्रदान करो। आप उत्पादक शक्ति से युक्त हैं, मुझे भी उत्पादन-शक्ति प्रदान करो। आप बलवान् हैं, मुझे

भी बल प्रदान करो। आप दुष्टों को दण्ड देने वाले हैं, मुझे भी दुष्टों को दण्ड देने की सामर्थ्य प्रदान करो। आप सब से बढ़कर सहनशील हैं, मुझे भी सहनशीलता प्रदान करो।

प्रार्थना के बाद उपासना करनी चाहिये। उपासना का अर्थ है—निकट बैठना। परमात्मा के गुणों को धारण करके उसके समीप बैठना ही उपासना कहलाता है। जो सच्चा उपासक है, वह पहाड़ जैसा बड़े से बड़ा दुःख आने पर भी नहीं घबरायेगा और बड़े से बड़े सुख में भी इतरायेगा नहीं।

स्तुति से प्रेम उत्पन्न होता है, प्रार्थना से अभिमान का नाश होता है, उत्साह में वृद्धि होती हैं और सहायता मिलती है। उपासना करने वाले को कोई भी भय नहीं रहता।

लोग कहते हैं कि मूर्तिपूजा से क्या हानि है? मैं पूछता हूँ कि क्या मूर्ति कुछ अनुभव करती है? मैं मूर्ति के विरुद्ध नहीं, किन्तु आप तो उस मूर्ति के प्रति चेतनवत् व्यवहार करते हैं। आपके पिता जी की मृत्यु हो गई और उनका शव वहाँ पर पड़ा है; आप अपने मृत-पिता के मुख में दवाई डालें, तो क्या उससे उन्हें कुछ लाभ होता है? राम की मूर्ति आप रखें, फिर राम-राम कहते रहें, तो उससे क्या लाभ होगा? यदि राम की मूर्ति को देख-देखकर उनके चरित्र को याद करें और तदनुकूल व्यवहार करें, तो कुछ लाभ हो भी सकता है। किसी के चरित्र को जाने बिना उसके चरित्र से कोई लाभ नहीं। हम मूर्ति के सामने बैठ जाते हैं, किन्तु अपने चरित्र को नहीं बनाते। गुजरे हुए महापुरुषों के चित्रों को हम उनके चरित्र के आधार पर ही बनाते हैं, तो फिर उनके चित्र बनाने की कोई आवश्यकता ही नहीं। जब कि चरित्रों के आधार पर ही हम उनके चित्र की भी कल्पना कर सकते हैं, फिर चित्र बनाने की आवश्यकता ही क्या रही? हमने एक पत्थर को खुद ही काट-छाँट कर रख दिया और उसका नाम भगवान् रख लिया। यह बात उचित कैसे हो सकती है? हमें करना तो कुछ और था और हम करने लगे कुछ और।

बुतपरस्तों का है दस्तूर निराला देखो।
खुद तराशा है मगर नाम खुदा रखा है॥

धर्म और अधर्म

धर्म—जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात-रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यह ही एक मानने योग्य है ; उसको धर्म कहते हैं।

आइये, हम धर्म और अधर्म के स्वरूप पर विचार करें और सदैव धर्माचरण करने का निश्चय करें।

श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने धर्म का लक्षण करते हुए सब से पूर्व ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन करना आवश्यक समझा, जिससे ईश्वर का मानना स्वतःसिद्ध है। उस ईश्वर को न मानने वाला इस लक्षण के अनुकूल धर्मात्मा नहीं समझा जा सकता।

बहुधा ऐसे मनुष्य दुनिया में मिलेंगे, जिनका ईश्वर में विश्वास नहीं, परन्तु वे भी सृष्टि-नियमों को मानते और उन पर चलते हैं। ऐसे पुरुष पूर्ण धर्मात्मा नहीं कहे जा सकते, चूंकि उन्होंने नियामक के आवश्यक अंग को नहीं माना, जिसके बिना किसी भी नियम का निर्माण होना असम्भव है।

अनुमान-प्रमाण विशेष कर मनुष्य के लिए ही है, जो कारण से कार्य और कार्य से कारण का अनुमान करके अपने कार्यों की सिद्धि करता है। प्रत्येक समय यह आवश्यक नहीं कि कार्य और कारण दोनों की प्रतीति एक ही साथ हो। यदि दुनिया में कहीं ऐसा नियम होता कि दोनों एक ही साथ होते तो अनुमान-प्रमाण की आवश्यकता ही न होती। जैसे बादलों को देख कर होने वाली वर्षा का, और हुई वर्षा को देख कर उसके कारणरूप बादलों का अनु-मान होता है, इसी प्रकार दुःख को देख कर पाप-कर्मों का, और पाप-कर्मों को देख कर दुःखों का अनुमान होता है। यदि कोई दुःखों को देख कर पाप-कर्मों का अनुमान न करे, या सन्तान को देख कर माता-पिता का, तो उसको पूर्ण ज्ञानी नहीं कह सकते। इसी प्रकार यदि कोई सृष्टि-नियमों को देख कर और स्वीकार करके भी उनके नियामक को स्वीकार न करे, तो वह भी पूर्ण ज्ञानी न समझा जावेगा। और जो पूर्ण ज्ञानी ही नहीं, वह पूर्ण धर्मात्मा ही कैसे हो सकता है ? चूंकि धर्मात्मा के लिये ज्ञानपूर्वक कर्मों ही की तो प्रधानता है।

यदि कोई यह शंका करे कि ईश्वर ने कानून तो बना दिया, पर वह अब कुछ नहीं करता और न आगे करने की आवश्यकता है। प्रत्येक कार्य उस ही नियम के अनुसार होता चला आ रहा है। और आगे भी होता रहेगा, तो क्या हानि ? इसका उत्तर यह है कि कानून स्वयं कुछ नहीं कर सकता, जब तक कि चेतन कर्ता उसको अमल में न लावे, जैसे कि "ताज़ीरात हिन्द" किसी अपराधी का कुछ नहीं कर सकती, जब तक कि पुलिस उसको पकड़ कर जज के सामने पेश न करे और जज उसको उसके अपराध के अनुसार दण्ड न दे दे। इसी प्रकार परमात्मा का कानून भी ईश्वर के स्वयं अमल में लाये बिना कुछ नहीं कर सकता।

जो ईश्वर को कानून का बनाने वाला तो मानते हैं लेकिन चलाने वाला नहीं मानते, उनको यह विचारना चाहिये कि जिस बुद्धि ने कानून का निर्माण किया है, वह ही बुद्धि उसको चला सकती है। प्रकृति जड़ होने से स्वयं न कोई कानून (नियम) बना सकती है और न किसी के बनाये नियम पर स्वयं स्वतन्त्रता से चल सकती है। जीवात्मा भी अल्पज्ञ होने से बिना ईश्वर से शरीर तथा ज्ञान प्राप्त किये न कोई नियम बना सकता है, न चल तथा चला सकता है। जीवात्मा इस प्रकार की ईश्वरीय सहायता प्राप्त करके भी, जो नियम बनाता या चलाता है, उनको भी वह अन्य पुरुषों की सहायता से ही कार्यरूप में परिणत करता है। कई स्थानों पर स्वयं अल्पज्ञ और अल्प-शक्ति होने के कारण, अपनी इच्छा के विरुद्ध फल की प्राप्ति और असफलता का पात्र बनता है। जैसे आपने देखा होगा—कभी-कभी बिना किसी इच्छा के स्वयं ठोकर लग जाती, तथा भोजन करते समय दाँतों के तले जीभ आकर कष्ट देती है, जिससे कि यह सिद्ध है कि कभी-कभी जीवात्मा अपने शरीर पर भी पूर्ण अधिकार नहीं रख पाता। पर परमात्मा सर्वज्ञ और सर्व शक्ति-मान् होने के कारण इकला ही सब नियमों को बनाता, और स्वयं उन्हें चलाता है; यह हम में और परमात्मा में भेद है।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर की आज्ञा कौन-सी मानी जाय ? मुसल-मान भाई कहते हैं कि कुरान ईश्वर का हुक्म है। ईसाई बाइबिल को खुदा की पुस्तक बतलाते हैं; इस ही तरह अन्य मज़हब भी। परन्तु इन सब की पुस्तकों में परस्पर भेद और विरोध होने के कारण सब को ईश्वर की आज्ञा

नहीं कहा जा सकता। ईश्वरीय आज्ञा वह ही हो सकती है जो ईश्वर की भांति सार्वभौम हो, एकदेशी न हो। अर्थात् सब मनुष्यों के लिये हितकर हो, किसी विशेष देश या जाति का पक्षपात न हो, तथा उसके दया, न्यायादि गुणों के विरुद्ध न हो, अर्थात् वेदानुकूल हो।

पक्षपात-रहित न्याय

यह बहुत कम देखा जाता है कि मनुष्य न्याय करे, और वह पक्षपात-रहित हो। मनुष्य अल्पज्ञ और अल्प शक्तिमान् होने के कारण कई दोषों से युक्त होता है। धन का लालच, रिश्तेदारी, मित्रता, दूसरे का भय और मोह आदि उसको पूर्ण न्याय नहीं करने देते। ईश्वर इन त्रुटियों से रहित होने के कारण, पक्षपात-रहित न्याय करता है। अतः जो पुरुष ईश्वरीय गुणों के अनुकूल अपने गुण बना कर संसार में कार्य करता और अपने जीवन को व्यतीत करता है, वह एक समय पूर्वोक्त सम्पूर्ण दोषों से युक्त होकर पक्षपात-रहित न्याय करने लग जाता है। पक्षपाती पुरुष अपना दायरा अत्यन्त संकुचित रखता है। वह केवल अपने में या जिसके साथ वह पक्षपात करता है, उस ही तक सीमित रहता है। परन्तु पक्षपात-रहित कर्म करने वाला यजुर्वेद के—

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति ॥

(यजु० ४० मन्त्र ६)

अनुसार अपने को सब प्राणियों में और सब प्राणियों को अपने में समझता है। एक देशी जीवात्मा के लिए यह असम्भव है कि वह ईश्वर की तरह सब वस्तुओं में व्याप्त हो जाय। उसके लिए एक यह ही प्रकार है कि वह अपने को "सर्व प्रिय" "सर्व हितकारी" बना सके, यह ही इसकी सर्वव्यापकता है।

सर्वहित

जिस न्याय में किसी का अहित न हो, वह पक्षपात-रहित न्याय है। इसका दूसरा नाम सर्वहित है। ईश्वर इतना गम्भीर है कि दिन-रात सब का न्याय करता हुआ भी प्रत्येक जीव के हित को लक्ष्य में रख कर एक जीव के बुरे कर्मों को दूसरे पर प्रकट नहीं करता, चूंकि वह जानता है कि बुराई के छुड़ाने में ऐसी बात साधक नहीं होती, अपितु बाधक होती है। जो जीव धर्म

का आचरण करना चाहे, उसको "सर्व हितकारी" अवश्य होना चाहिए। प्राय: देखा जाता है कि मनुष्य एक-दूसरे की निन्दा करने के लिए, घर-घर मारे-मारे फिरते हैं, और उनको तब तक चैन नहीं पड़ता, जब तक दस-बीस स्थानों पर किसी की निन्दा न कर आवें। परन्तु वे यह नहीं विचारते कि ऐसा करने से किसी का भी कोई हित नहीं होता, बल्कि अपनी ही आदत खराब होती है, और परस्पर राग-द्वेष की वृद्धि हो कर वैमनस्य बढ़ता है।

स्वार्थी पुरुष भी पूर्ण न्याय या सर्वहित नहीं कर सकता। वह अन्यों के लाभ की अपेक्षा स्वार्थ को अधिक मूल्यवान समझता है, और दूसरों के बड़े-बड़े लाभ को अपने तुच्छ से तुच्छ लाभ पर कुर्बान कर देता है। बहुत-से मतों के प्रर्वतकों ने अपने मान और प्रतिष्ठा के, अपनी न्यूनताओं (कमजोरियों) को भी अपने अनुयायियों का एक धार्मिक नियम बना दिया और कौम की आगे होने वाली उन्नति में एक जबर्दस्त रोड़ा अटकाया, जिसके फलस्वरूप आज कुछ लोग 'शारदा एक्ट' जैसे आवश्यक और अत्युपयोगी कानून को भी अपने मजहब के विरुद्ध मान कर उसका विरोध करते और कहते हैं हमारे पूर्वज इस प्रकार की कम उम्र वाली कन्याओं से शादी कर गये हैं, अतः यह कानून उनके विरुद्ध होगा, इसलिये हम नहीं मान सकते। इसके विरुद्ध ऋषि लोग ईश्वरभाव से प्रेरित हो, तथा सर्वहित को लक्ष्य में रख कर जो शुछ कार्य कर गये, वह उन सम्पूर्ण दोषों से रहित था, जिनसे सामान्य पुरुष प्राय: शीघ्र मुक्त नहीं हो पाते।

प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित

प्रत्यक्षादि प्रमाण जो आगे आयेंगे, उनकी व्याख्या वहाँ की जावेगी। यहाँ केवल यह ध्यान रखना चाहिये कि किसी चीज के लिए परीक्षा का द्वार बन्द नहीं। किसी भी कार्य को खूब सोच-समझ और परीक्षा कर के करना चाहिये। यदि हम उन परीक्षाओं में ठीक और यथार्थ उतरे, तो धर्म और यदि न उतरे तो उसे अधर्म (अकर्तव्य) समझना चाहिये। इसलिये कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म का स्वयं उत्तरदाता हो, स्वयं परीक्षा करके ही प्रत्येक कार्य को करने की आज्ञा दी गई है। चाहे रेलवे (Railway) का प्रबन्ध इञ्जिनियरिंग (Engineerig Deptt.) के आधीन रक्खा गया है, और आदमी दिन-रात लाइन और पुलों की देखभाल करते रहते हैं, पर फिर भी ड्राइवर को सर्च-

लाइट और अपनी आँखों से देख कर चलने-चलाने की आज्ञा दी जाती है, ताकि उसका वैयक्तिक उत्तरदायित्व उसके कार्य के साथ रहे।

वेदोक्त

"वेद" जो कि "विद् सत्तायाम विद् ज्ञाने, विद्, विचारणे" तथा "विद्लृ लाभे" इन धातुओं से सिद्ध होता है, जिनका अर्थ हुआ कि जो सत्ता ज्ञान, विचार और लाभ के सहित हों अर्थात् सर्वप्रथम वेद द्वारा हमें प्रत्येक वस्तु की सत्ता का उपदेश होता है, तत्पश्चात् उन वस्तुओं, तथा उनके गुण और व्यवहारादि का ज्ञान होता है। ज्ञान होने के अनन्तर ही हम उसके सूक्ष्म विषयों पर विचार करने में समर्थ हो पाते हैं, अन्त में इसी क्रम से हमें उस ज्ञान और विचार के अनुरूप लाभ की प्राप्ति होती है। इस प्रकार उस वेद से उपदिष्ट कर्मों की जो कि मोटे शब्दों में ज्ञानानुकूल और विचारपूर्वक हो, उन्हें धर्म कहा जाता है। इस ही लिये महात्मा मनु ने अपनी स्मृति में…'वेदोऽखिलो धर्म मूलम् 'तथा' धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः' कहा अतएव प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार के वेदोक्त कर्मों का करना ही अपना धर्म समझना और उसका अनुष्ठान करना चाहिये।

अधर्म—जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा को छोड़ कर और पक्षपात-सहित अन्यायी होकर बिना परीक्षा करके अपना हित करना है जो अविद्या, हठ, अभिमान, क्रूरतादि दोषों से युक्त होने के कारण वेद-विद्या से विरुद्ध है, और सब मनुष्यों को छोड़ने के योग्य है। वह अधर्म कहाता है।

यद्यपि किसी विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं, चूंकि धर्म समझ लेने के बाद सिर्फ इतना विशेष याद रखना चाहिये कि जो धर्म से विपरीत अर्थात् उल्टा हो, उसे अधर्म कहते हैं। ऋषि दयानन्द ने मत-मतान्तरों को इसी कसौटी पर कस उन्हें मत-मतान्तर के नाम से निर्देश किया, या मज़हब बतलाया। चूंकि उन सम्पूर्ण मज़हबों में जो कि अपने को धर्म के नाम से पुकारते थे, उपर्युक्त दोष थे, जैसे कोई ईश्वर की सत्ता को ही न मानते थे, अर्थात् नास्तिक थे। जब वे ईश्वर ही को न मानते थे तो फिर ईश्वर की आज्ञा को ही कैसे मानते, लिहाज़ा ऋषि ने उन्हें भी कहा कि तुम्हारा मत धर्म नहीं कहा जा सकता, चूंकि वह धर्म के एक आवश्यक अंग से रहित है, अतः वह मज़हब है। इस ही प्रकार जो लोग ईश्वर की सत्ता को मानते थे पर उसकी आज्ञाओं

में पक्षपात मान कर, किसी एक देश या जाति के लोगों से पक्षपात या प्रेम, और दूसरों से नफरत प्रकट करते थे, या ईश्वर के नाम पर यज्ञों में, अथवा देवी-देवताओं के सामने, पशु-हत्या आदि करके अपनी क्रूरता और मूर्ति-पूजा आदि करके जड़ में चेतन को मान कर, अपनी अविद्याप्रियता का परिचय देते थे, उन्हें तथा जिनके ग्रन्थों में निरी असम्भव और विश्वास न करने लायक बातें भरी पाईं, ऋषि ने कहा कि तुम्हारा मत भी सिर्फ मत यानी मज़हब है। वह धर्म का स्थान नहीं ले सकता। इसी लिये वह सम्पूर्ण मनुष्य के लिये मान्य न होकर सिर्फ तुम लोगों ही की स्वार्थ-पूर्ति के लिये हो सकता है। अतः प्रत्येक समझदार मनुष्य को इस प्रकार मज़हबों या मत-मतान्तरों को दूर से ही प्रणाम करके छोड़ देना चाहिये जिससे कि उसका जीवन व्यर्थ बरबाद न हो।

ईश्वर में अविश्वास क्यों ?

यह भाषण पण्डित जी ने आर्य समाज बाजार सीताराम के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिया था। पाठकों के लाभार्थ उसे यहाँ दिया जा रहा है।

आजकल कुछ मित्रादि अथवा दूसरे व्यक्ति जब मुझसे मिलते हैं तो मुझसे प्रायः यह प्रश्न किया करते हैं, "क्या कारण है कि ईश्वर के अस्तित्व के विषय में इतने भाषण होते हैं फिर भी लोगों का ईश्वर में विश्वास समाप्त होता जा रहा है ?" बात सत्य है और मुझे यह स्वीकार करना पड़ता है कि लोगों का ईश्वर में अविश्वास बढ़ता जा रहा है। आज मैं ईश्वर में अविश्वास क्यों बढ़ता जा रहा है, इसके क्या कारण हैं, इसी विषय पर विचार रक्खूंगा।

(१) परिवार में ईश्वर-भक्ति या पूजा का न किया जाना—आजकल परिवारों में न ईश्वर-भक्ति है, न ईश्वर-आराधन किया जाता है, संध्या,

अग्निहोत्र आदि की ओर भी कोई ध्यान नहीं है। इनके न होने के कारण ईश्वर के अस्तित्व का विश्वास समाप्त होता जा रहा है। जहाँ हर समय रेडियो बजता है, सिनेमा के गाने गाये जाते हैं ? और अल्ला से ज्यादा नम्बर सुरैया का है, वहाँ ईश्वर को कौन पूछता है। जैसा घर का वातावरण होता है वैसा ही प्रभाव पड़ता है। घर में ईश्वर-भक्ति या पूजा न होने के कारण ईश्वर को भूल जाते है, ईश्वर का विचार ही नहीं रहता। ईश्वर में आस्था और विश्वास उत्पन्न करने के लिए ईश्वर-भक्ति और पूजा जारी रहनी चाहिये।

(२) ईश्वर को ऐसे रूप में रखना जो समझ में न आये—ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, सर्वव्यापक है, परन्तु साम्प्रदायी लोगों ने उसको साधारण जनता के सामने उल्टे ढंग से रक्खा है। साम्प्रदायी लोगों ने परमात्मा को गलत समझा और उसको उसी गलत रूप में लोगों के सामने रख दिया। इसमें परमात्मा का कोई दोष नहीं क्योंकि परमात्मा तो सब को ज्ञान देता है। जब भी कोई बुरा कर्म करने लगता है तो उसे उस कार्य के करने में भय, शंका और लज्जा होती है, परन्तु इस ज्ञान को लेता कोई-कोई है। जैसे मच्छर सारे में 'पिन-पिन' करता है परन्तु सुनाई उस समय देता है जब वह कान के पास आता है। साम्प्रदायी लोगों ने अपने अज्ञान के कारण मकान के एक आले में गणेश की मूर्ति रख कर ईश्वर घोषित कर दिया। परन्तु क्या गणेश ईश्वर हो सकता है ? कदापि नहीं। क्या हाथी का सिर कभी किसी बच्चे के सिर पर आ सकता है ? ऐसी बातों से अविश्वास तो होगा ही। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मूर्ति-पूजा को अवैदिक बताते हुए इसके खण्डनमें १६ युक्तियाँ दी हैं। मूर्ति-पूजकों ने मूर्तियों को ईश्वर का प्रतिनिधि बना दिया। मूर्ति ने भी इतनी ग़ैरत (शर्म) तो की कि ईश्वर नहीं खाता तो वह भी नहीं खाती क्योंकि वह ईश्वर का प्रतिनिधित्व कर रही है। आज सारी बातें उल्टी हो गई हैं। लोग ईश्वर को बना कर उसके मालिक हो गये हैं। जो सबका खयाल रखता है, लोग उसका खयाल रखने लगे हैं। उसको ताला लगा कर रखते हैं। उसे जगाने और खिलाने का ध्यान भी पुजारी रखता है। वास्तव में तो पुजारी लोगों को यह शिक्षा देता है कि मूर्ति जड़ है, चेतन नहीं है, इसकी पूजा नहीं करनी चाहिए परन्तु लोग छोड़ते नहीं

हैं। पुजारी का अर्थ है पूजा+अरि=पूजा का शत्रु। दिन के प्रकाश में बत्ती जला कर और घण्टी बजाता हुआ पुजारी लोगों को मूर्ति का एक-एक अवयव दिखाता है और उन्हें यह बताता है कि अच्छी प्रकार देख लो, यह पत्थर है, जड़ है, चेतन नहीं। इसी प्रकार एक बार नहीं, दो बार नहीं, सात बार ऊपर से नीचे तक दिखाता है कि पत्थर है। लोग फिर भी हाथ जोड़े ही खड़े रहते हैं तो वह हाथ में पानी लेकर उनके ऊपर फेंकता है कि अब भी समझ में नहीं आता तो एक चुल्लू पानी में डूब मरो। परमात्मा का वास्तविक स्वरूप तो वेद ही बताता है :—

सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳशुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वताभ्यः समाभ्यः॥ (यजु० ४०। ८)

वह प्रभु सर्वत्र व्यापक, सर्वोत्पादक, शरीर तथा नस-नाड़ी के बन्धन से मुक्त, शुद्ध और पाप-रहित है। वह क्रांतदर्शी, मन की बात जानने वाला, सर्वत्र प्रकट और स्वतन्त्र सत्ता है तथा ठीक-ठीक रचना करता है।

कुछ लोग कहते हैं कि ब्रह्म ही ब्रह्म है और सब कुछ मिथ्या है परन्तु यह भी गलत बात है। कोई भी वस्तु अकेली बेकार होती है चाहे डाक्टर हो या प्रोफेसर, दुकानदार हो या दस्तकार। एक डाक्टर है परन्तु न उसके पास दवाई हैं न औजार हैं तो उसका होना और न होना बराबर है। डाक्टर है, दवाई भी है परन्तु मरीज नहीं तब भी बेकार है। अतः सिद्धान्त यह निकला कि किसी भी कार्य के लिए तीन वस्तुओं का होना आवश्यक है। इसी प्रकार परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति तीनों का होना अत्यन्तावश्यक है। यह सिद्धान्त भी अशुद्ध है कि जीवात्मा परमात्मा बन जाता है। जीवात्मा परमात्मा कदापि नहीं बन सकता।

(३) बहुत प्रार्थना करने पर भी इच्छा की पूर्ति न होना—कभी-कभी ऐसा होता है कि बहुत बार प्रार्थना करने पर भी इच्छा पूरी नहीं होती। इससे ईश्वर में अविश्वास उत्पन्न होता है। जब लोगों की इच्छा पूरी नहीं होती तो वे कहते हैं कि परमात्मा अपने पुत्र जीवात्मा की इच्छा पूरी करने में (Miserably fail) बुरी तरह फेल हो गया। परन्तु यह बात ठीक नहीं।

इसका समाधान एक दृष्टान्त द्वारा बहुत अच्छी प्रकार समझ में आ जायेगा। एक पिता अपने बच्चे के साथ बाजार जा रहा है। बाजार में जाते हुए बच्चा बड़े-पकोड़े देखता है और पिता से कहता है दिलवा दो। पिता कहता है तुम्हें काली खाँसी (Hopping cough) है। यह हानि करेंगे। बच्चा दूसरी और तीसरी बार कहता है परन्तु पिता दिलवाता नहीं। घर आकर बच्चा अपने सब भाई-बहिनों को इकट्ठा करके कहे कि हमारे पिता जी हमारी इच्छा की पूर्ति में फेल (Miserably fail) हो गये हैं तो क्या यह ठीक है ? इसी प्रकार बच्चा पतंग उड़ाने जा रहा हो और पिता कहे कि नीचे चलो, तो क्या पिता बच्चों की इच्छा-पूर्ति करने में फेल हो गया ? ठीक यही दशा उस प्रार्थना की है। जब ईश्वर देखता है कि इस प्रार्थना से लाभ नहीं होगा तो वह इच्छा की पूर्ति नहीं करता। ईश्वर फेल नहीं होता।

प्रार्थना का फल इच्छा की पूर्ति नहीं अपितु प्रार्थना का फल है अभिमान का नाश, उत्साह की वृद्धि और सहाय का मिलना। कभी मनुष्य जब किसी कठिन कार्य को कर लेता है तो उसको अपनी शक्ति का अभिमान हो जाता है, परन्तु जब वह यह सोचता है कि ईश्वर अधिक शक्तिशाली है तो उसका अभिमान चूर हो जाता है। जब मनुष्य का ईश्वर में पूर्ण विश्वास होता है तो उसमें उत्साह की वृद्धि होती है और कार्य करते हुए उसमें सहायता भी प्राप्त होती है।

उपासना से पहाड़ के समान दुःख आने पर भी मनुष्य घबराता नहीं क्योंकि वह समझता है कि इस कष्ट में भी मेरी भलाई ही है। एक बच्चे को उसके माता-पिता नश्तर लगवाने के लिए ले गये। माता-पिता दोनों ने बच्चे के हाथ और पैरों को कसकर पकड़ लिया। बच्चा सोचता है कि यह क्या हो रहा है, जो माता-पिता मेरे लिए दूसरों से लड़ते थे, आज क्या कर रहे हैं ? परन्तु माता-पिता किसी बुरी भावना से ऐसा नहीं कर रहे अपितु अपने पुत्र की भलाई के लिए ऐसा कर रहे हैं। आपत्ति और कष्ट आने पर भी ईश्वर पर दृढ़ विश्वास होना चाहिए। ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है।

(४) भगवान् जागरूक नहीं, प्रमाद में पड़ा हुआ है। पुलिस कितनी सतर्क है। दिन का तो कहना ही क्या, रात में भी चोर और डाकुओं को पकड़ती है, किन्तु ईश्वर कुछ नहीं करता इसलिए प्रमादी है, और उसके

प्रमादी होने से ही लोगों में ईश्वर-अविश्वास बढ़ता जा रहा है ।

समाधान—यहाँ एक ही बात के दो हिस्से कर दिये हैं । गवर्नमेण्ट पर-मात्मा का ही प्रबन्ध है । वह ईश्वर के कार्य में सहायक है । ईश्वर सब कुछ देखता है परन्तु सब कुछ नहीं कर सकता और सब कुछ करना आवश्यक भी नहीं । परमात्मा कर्मों के अनुसार जीव को फल देता है, इसमें तनिक भी त्रुटि नहीं हो सकती । परमात्मा सदा जागरूक रहता है, वह प्रमादी कदापि नहीं हो सकता ।

(५) किसी प्रिय व्यक्ति का नाश हो जाना या मर जाना—जब किसी व्यक्ति का कोई प्रिय सम्बन्धी मर जाता है तो उसे ईश्वर में अविश्वास हो जाता है । एक पीर जी की घरवाली मर गई तो कहने लगा, "तेरा क्या गया, मेरा घर बिगड़ गया । इन बच्चों को तू पालेगा क्या ?"

समाधान—जब ईश्वर की ओर से विपत्ति आती है तो समझना चाहिये कि इसमें हमारी भलाई है क्योंकि Adversity makes man pure. विपत्तियाँ मनुष्य को ऊँचा उठाती हैं । संसार के महापुरुषों पर विपत्तियाँ आई हैं । विपत्तियाँ तो प्रभु की याद दिलाने के लिए आती हैं, परन्तु लोग फिर भी ईश्वर को भूल जाते हैं । मृत्यु क्या है ? प्रकृति और जीवात्मा के मिलाप का नाम जन्म और प्रकृति तथा जीवात्मा के वियोग का नाम मृत्यु है । जो उत्पन्न हुआ है, वह मरेगा अवश्य । योगेश्वर कृष्ण ने भी गीता में ऐसा ही कहा है :—

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ॥

(गीता० २ । २७)

जो उत्पन्न हुआ है वह अवश्य मरेगा और जो मरेगा उसका जन्म भी अवश्य होगा । जब जन्म के पीछे मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जन्म लगा हुआ है तो घबराहट और निराशा किस लिए ?

(६) पापियों को सुख में और पुण्यात्माओं को दुःख में देख कर ईश्वर में अविश्वास पैदा होता है ।

समाधान—पापियों को सुख में और पुण्यात्माओं को दुःख में देखकर लोग कारण और कार्य का सम्बन्ध लगा लेते हैं । इसी उल्टी धारणा से ईश्वर

में अविश्वास उत्पन्न होता है। एक व्यक्ति कर्म तो अच्छा कर रहा है और उसका फल उसे दुःख मिले, यह कदापि नहीं हो सकता। अच्छा कर्म करते हुए दुःख आ गया यह बात तो ठीक है, परन्तु यहाँ कार्य और कारण (cause and effect) का सम्बन्ध नहीं है। दूसरी ओर एक व्यक्ति कार्य बुरा कर रहा है और उसे फल अच्छा मिल जाये, यह भी ठीक नहीं। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायेगी। एक व्यक्ति ने चोरी की और फिर सन्ध्या करने लगा। पुलिस आई और उसे पकड़ कर ले गई। इस व्यक्ति को सन्ध्या के कारण नहीं पकड़ा गया। पापियों को सुख और पुण्यात्माओं को दुःख पूर्व-जन्म के कर्मों के कारण है।

(७) घातक का न पकड़ा जाना और निर्दोष का फँस जाना—कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कत्ल करने वाला बच जाता है और निर्दोष व्यक्ति फँस जाता है तो लोग कहते हैं कि यह क्या प्रबन्ध है ?

समाधान—यह ठीक है कि कभी-कभी निर्दोष व्यक्ति भी फँस जाते हैं। फँसने वाला व्यक्ति निर्दोष अवश्य है परन्तु उसका पहला कोई ऐसा कर्म हो सकता है जिसका दण्ड उसे भोगना शेष हो। और बहुत-से व्यक्ति पकड़े जाने के पश्चात् छूट भी जाते हैं।

(८) विद्वानों का निर्धन और भूखों का धनी होना—यह भी ईश्वर-अविश्वास का एक कारण है। परन्तु सभी विद्वान् निर्धन हों और सभी मूर्ख धनी हों यह बात गलत है। स्वामी दर्शनानन्द जी भूतपूर्व श्री कृपाराम जी अद्भुत तार्किक और विद्वान् होते हुए भी बहुत धनवान् थे। ऐसे अनेकों उदाहरण हैं।

(९) भगवन् के कामों में कोई व्यवस्था नहीं जैसी मनुष्य के कार्यों में है। भगवान् की रचना में कोई क्रम नहीं है। एक बाग और पहाड़ को लो। बाग में नींबू की लाइन एक ओर, सन्तरे की लाइन एक ओर, और आम के वृक्ष अलग लाईन में, प्रत्येक वस्तु एक नियम में होगी। इसके विपरीत पहाड़ पर एक वृक्ष, यहाँ एक क्ष वहाँ है, कोई कहीं और कोई कहीं, किसी प्रकार का कोई क्रम नहीं है।

समाधान—परमात्मा की सृष्टि में क्रम है और अत्यन्त उत्कृष्ट क्रम है। परमात्मा की सृष्टि-रचना में क्रम न मानना ऐसा ही है जैसे एक चींटी मनुष्य के

ऊपर चढ़ जाये और पेट तथा छाती के ऊपर जाकर सोचे, यह बड़ा अच्छा मैदान है, फिर ऊपर चलकर डाढ़ी और मूंछों में पहुँच जाये तो कहे, यहां तो बड़ा भारी जंगल है, नाक के छिद्रों पर आकर कहे कि यहां तो छिद्र हो रहे हैं और ऊपर चढ़कर आंखों के गढ़ों को देखकर कहे कि यहां तो बड़ी ऊबड़-खाबड़ जगह है। इस प्रकार एक चींटी की दृष्टि में यह शरीर बड़ा बेडंगा है। कहीं मैदान, कहीं जङ्गल है, कहीं छिद्र है और कहीं ऊबड़-खाबड़ है परन्तु किसी शरीर के विशेषज्ञ से पूछिये तो वह कहेगा कि यह तो प्रभु की सर्वोत्कृष्ट रचना है। एक और उदाहरण लीजिये, एक शब्दकोष में वर्णमाला के अनुसार क्रम होगा परन्तु एक विद्वान् की पुस्तक में शब्दकोष का क्रम नहीं होता अपितु विद्या-सम्बन्धी क्रम होता है। इसी प्रकार प्रभु की रचना में बाग का क्रम नहीं होता अपितु एक विशिष्ट प्रकार का क्रम होता है जो ईश्वर की बुद्धिमत्ता और सर्वोत्कृष्ट रचना का पूर्ण परिचायक होता है।

ईश्वर-अविश्वास के इन आक्षेपों पर तनिक विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर-अविश्वास के आक्षेप सर्वथा निराधार हैं। यदि ईश्वर को उसके वास्तविक रूप में लोगों के सामने रक्खा जाये और घर-घर में ईश्वर-भक्ति और ईश्वर-पूजा हो तो फिर वह दिन दूर नहीं जब भारत का बच्चा-बच्चा फिर आस्तिक होगा।

जीवन की समस्याओं का सच्चा समाधान

जीवन की समस्याओं का समाधान किस धर्म से हो सकता है, यह विषय आपके सम्मुख रखना चाहता हूँ। हर एक धर्म वाला यह जानना चाहता है कि जीवन की समस्यायें क्या हैं तथा उनका समाधान क्या है। इसके लिये एक पृष्ठभूमि की आवश्यकता है। जीवन क्या है, लोग यह समझते ही नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि अग्नि, जल, वायु आदि भूत इकट्ठे रखे और जीवन बन गया। जब जीवन समाप्त होगा तो ये सब भूत अलग-अलग हो जायेंगे। परन्तु

भूतों के इकट्ठा करने से जीवन नही बनता। जब जीवन ही नहीं तो समस्यायें भी नहीं और समाधान भी नहीं।

जीवन के लिये यह बात याद रखने की है—

",ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।"
(य० २५।१३)

जो आत्मज्ञान का दाता तथा बल-प्रदाता है, जिसकी उपासना सब करते हैं। मेरा अभिप्राय मन्त्र के इतने ही खण्ड से है। हम अपने-आप को नहीं जानते। हमने शरीर को ही आपा समझा हुआ है। भगवान् कहता है समझो। जिस दूकानदार को अपने गल्ले की रोकड़ का पता नहीं तो दिनभर बिक्री करने के पश्चात् उसे सायंकाल दिनभर की बिक्री का क्या पता ?

दर्शनशास्त्र-वेत्ताओं ने भूतों का अध्ययन करके यह समाधान किया है कि "न भूतचैतन्यं"—अग्नि, जल, वायु आदि भूत चेतन नहीं हैं, जड़ हैं। जब भूतों में ज्ञान नहीं है तो उनके मिलाने से भी उनमें जीवन नहीं आ सकता। अग्नि, वायु आदि जड़ हैं, आकाश भी जड़ है। यदि अग्नि अथवा वायु में आकाश मिलाया जाये तो उनमें जीवन नहीं आ सकता। जरा ध्यान दीजिये, एक उदाहरण से यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जायेगी। एक स्कूल में Entrance को पढ़ाने के लिये एक अध्यापक की आवश्यकता है। बहुत खोज करने पर भी Entrance को पढ़ाने के लिये अध्यापक नहीं मिलता। प्रबन्धक सोचते हैं १० मिडल पास अध्यापक ले आयें, परन्तु १० मिडल पास वालों के ज्ञान का Total मिडल ही होगा। इसी प्रकार जिनमें ज्ञान नहीं, उन दोनों को मिलाने से उनमें ज्ञान हो जाना असम्भव है।

जीवन क्या है ! जीवन की समस्यायें क्या हैं तथा उनका समाधान क्या है ? यह वैदिक धर्म से ही मालूम होता है। वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य मतावलम्बियों को जीवन का अर्थ ही पता नहीं। मुसलमानों से पूछा, जीवात्मा क्या है। उत्तर मिला, खुदा का हुक्म। मुजस्सम क्या कभी हुक्म हुआ करता है ? ईसाई कहते हैं "It is merely a breath"—प्राण ही जीवन है। परन्तु ये दोनों बातें ही अशुद्ध हैं।

जीवन प्राणों का प्राण है। जहाँ आत्मा है वहाँ परमात्मा है, परन्तु जहाँ परमात्मा है वहाँ आत्मा का होना आवश्यक नहीं। वैदिक धर्म में जब कोई

गृहस्थ नवजीवन को बुलाता है तो उसके लिये चेष्टा करता है। यहीं से जीवन आरम्भ होता है। जब गृहस्थ नया जीवन बुलाता है तो प्रार्थना करता है, हम देश की उन्नति करना चाहते हैं। हम शरीर से बलवान्, आत्मा से पवित्र तथा मेधावी पुत्र चाहते हैं। पुत्र बुद्धि में गावदुम न हो। हाँ, कुतुबमीनार की तरह हो सकता है, ऊपर से सुकड़ा तथा नीचे से चौड़ा। वह उन्नति की ओर जाये अवनति की ओर नहीं, अच्छे संस्कारों वाला हो।

नव जीवन आ गया। उसे पवित्रता से बुलाया गया। विवाह के मन्त्रों में सन्तान के लिये प्रजा शब्द आया है। ऐसा पुत्र आये जो खानदान का कल्याण करने वाला हो। Undesired न हो—अनिच्छित न हो। जो चाहा नहीं होता वहाँ जीवन उल्टा हो जाता हैतथा जीवन की समस्यायें भी उल्टी हो जाती हैं। उदाहरणत: कुछ लड़के गेंद खेल रहे थे। एक लड़के ने अपने साथी को गेंद मारी। गेंद गूलर में जा लगी और गूलर गिर पड़ी। यह गूलर अनिच्छित थी। विशेष उद्देश्य से बच्चों को बुलाएँ, खेल में बच्चे न आयें।

एक अंग्रेज लेखक ने लिखा है—"Indians donot know how to live and bring up their children." माता को गर्भाधान के पश्चात् विशेष कर सावधान रहना है। बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़कर बल, बुद्धि पराक्रम तथा आरोग्यता प्रदान करने वाले दूध, घृत, श्रेष्ठ अन्न आदि का सेवन करे। यदि माता ऐसा नहीं करती तो बुनियाद अच्छी नहीं बनती माता को ऐसे कार्य करने चाहियें जिससे बच्चे के संस्कारों में अच्छे गुणों की वृद्धि हो। श्रोत्रों से अच्छी बातें सुने तथा नेत्रों से अच्छे दृश्य देखे। परन्तु आज उल्टा हो रहा है। सिनेमा ने सर्वनाश कर दिया है। सिनेमाओं द्वारा गन्दे गाने गाये जाते हैं तथा गन्दे दृश्य दिखाये जाते हैं। यदि सिनेमाओं का सुधार होकर इनसे ऐसे दृश्य दिखायें जायें कि माता गर्भ के समय कैसे रहे, बच्चों का पालन किस प्रकार करे तथा बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा दे तो देश का बहुत कल्याण हो सकता है।

पहले ब्राह्मण की उत्पत्ति होती है। जिस समय बच्चा पैदा होता है तो शिर पहले आता है। यदि कहीं उल्टा हो जाये तो माता तथा बच्चा दोनों का जीवन संकट में पड़ जाता है। बच्चा बाहर आया। अब माता की गोद क्रीड़ा-स्थल बन गई। तब बच्चा कैसे पालना चालिए ? क्या सिखाना चाहिए ?

क्या शब्द उच्चारण कराने चाहियें। महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के दूसरे समुल्लास में यह बता दिया है कि माता बच्चों का पालन कैसे करे। वे लिखते हैं :—

"बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे जिससे सन्तान सभ्य हों और किसी अङ्ग से कुचेष्टा न करने पावें। जब बोलने लगे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके वैसा उपाय करे ·····। जब वह कुछ-कुछ बोलने और समझने लगे तब सुन्दर वाणी और बड़े, छोटे, मान्य, पिता, माता, राजा, विद्वान् आदि से भाषण, उनसे वर्तमान और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करे जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न होकर सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे। जैसे सन्तान जितेन्द्रिय, विद्याप्रिय और सत्संग में रुचि करे वैसा प्रयत्न करते रहें। व्यर्थ क्रीडा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या द्वेष आदि न करे।"

जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए ब्रह्मचर्य का पालन अत्यन्त आवश्यक है। एक बार मैंने एक मुसलमान से पूछा कि आपके यहाँ ब्रह्मचर्य-पालन है या नहीं। उसने कहा हमारे यहाँ जो शादी न करे वह आदमी नहीं। मैंने कहा कुरान में तो स्पष्ट आता है यहिया सय्यद थे, नेक थे, ब्रह्मचारी थे। मुसलमान चुप हो गया। जिस प्रकार गणित में जोड़, बाकी, गुणा और भागाकार होती है, इसी प्रकार हमारे वर्णाश्रम धर्म में भी इन चारों का समावेश है।

२५ वर्ष तक प्रत्येक बच्चे को जोड़ना पड़ता है। २५ वर्ष के ब्रह्मचर्य-काल में प्रत्येक बच्चे को अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। बच्चों को कुसंग से बचाना चाहिए। बहुत अधिक तड़कीले-भड़कीले वस्त्र धारण नहीं कराने चाहियें, वैसे सफाई से रहना अच्छा है। माता की गोद में कोई गलत चीज न हो, अन्यथा बच्चे पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। उदाहरणतः एक ज्येठानी तथा देवरानी में झगड़ा रहता था। दोनों में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या और द्वेष की भावनायें थीं। एक बार ज्येठानी का पति बीमार हो गया। देवरानी के बच्चे हर समय चिल्लाते रहते थे। ज्येठानी ने कहा अपने बच्चों को चुप कर लो। देवरानी ने कहा बच्चे चुप नहीं रहते, ये तो चिल्लाते ही रहते हैं। इसका परिणाम, बच्चे समझते हैं कि चिल्लाना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। माता ने अपने द्वेष की भावना से बच्चों को बिगाड़ दिया। बच्चे एक अच्छी तखती के

सदृश होते हैं। अच्छी तखती पर गलत चीज नहीं लिखनी चाहिए। यह माता का कर्तव्य है।

पहले बच्चे को दावत दी, उसके पश्चात् बच्च माता की गोद में आता है। माता की गोद से अब क्रीड़ा-स्थल में आता है। क्रीड़ा-स्थल ऐसी जगह होनी चाहिए जहाँ बच्चे गाली न देते हों, भद्दी बातें न करते हों, साथ ही उनमें चोरी करने और झूठ बोलने की आदत भी न हो। सिनेमा आदि न देखते हों। ऐसे बच्चों की संगत में न रहें जो सिनेमा के लिए पुस्तकें बेच देते हों। एक व्यक्ति सुना रहे थे कि जब से बच्चों को स्कूल से भेजना शुरू किया तब से वे अधिक झूठ बोलते हैं, चोरी भी करने लगे हैं, गन्दी गालियाँ भी देते हैं। कारण—शिक्षालय अच्छे नहीं रहे। शिक्षालयों की दशा आज बड़ी शोचनीय हो गई है। आज लड़का यह समझता है कि यदि स्कूल में मास्टर को दबा दिया तो जीवन सफल। उधर यदि मास्टर शाम को स्कूल से बच कर आ गये तो अच्छे। यदि लड़के को उचित बात पर दण्ड दे दिया जाये तो सब विद्यार्थी विरुद्ध हो जाते हैं। आज पाप की हिमायत हो रही है, धर्म को दबाया जा रहा है। यदि लड़का बिगड़ गया तो क्या कभी सोचा लड़का कैसे ठीक होगा ? इसके लिये व्यावहारिक शिक्षा देनी होगी। ईसाई व्यावहारिक शिक्षा बहुत अच्छी देते हैं। मैं हापुड़ में प्रातः सैर करने अपनी कोठी से एक पादरी के यहाँ तक जाया करता था। एक व्यक्ति ने एक दिन पूछा—आप यहाँ तक ही क्यों जाते हैं ? मैंने कहा—वहाँ से यहाँ तक ही सुधार करना है इसलिए यहाँ तक जाता हूँ।

ईसाई प्रति सप्ताह स्कूलों का निरीक्षण करते हैं। कमरे आदि की सफाई देखते हैं। विद्यार्थियों से ही पूछते हैं यहाँ धब्बा क्यों लगा है, यहाँ जाला क्यों है, फिर उसे साफ कराते हैं। चाहे उनके धर्म में त्रुटि है परन्तु व्यवहार से आदमी उनका बन जाता है। आज हमारा प्रचार उल्टे तरीके पर हो रहा है। जहाँ हम सोये हुए हैं वे जागे हुए हैं, जिनकी हम मदद नहीं करते वे उनसे सहानुभूति रखते हैं। हमारे यहाँ अनाथालय हैं परन्तु उनके प्रबन्धकर्ता स्वयं ही अनाथ बने हुए हैं।

अनाथों के लिए सच्चा अनाथालय, रोगियों के लिए मुफ्त औषधालय,

बालकों के लिए उत्तम पाठशालायें तथा असहायों की सहायता के लिए सेवा-केन्द्र, ये चार आवश्यक हैं। ये हों तो जीवन की समस्याओं का समाधान हो जाये। आज इन्हीं के बल पर ईसाई लोग समस्त संसार को ईसाई बनाना चाहते हैं। एक जगह से आर्यसमाज के मंत्री के पास एक पत्र आया। पत्र इस प्रकार था—

मन्त्री जी !

अब समस्त संसार में ईसा का संदेश फैलने वाला है। संसार की कोई शक्ति इसे रोक न सकेगी। सनातन धर्मियों और जैनियों यदि तुम में शक्ति है तो अपनी पुस्तकें लेकर शास्त्रार्थ के लिए आ जाओ।

यह है ईसाइयों का पत्र। ऊपर मन्त्री जी लिखा है, अन्दर सनातन धर्मियों और जैनियों को चुनौती दे रहे हैं।

आज का वातावरण बहुत ही बिगड़ गया है। आज जहाँ ढीला पाजामा और कमीज पहने किसी व्यक्ति को देखो तो समझ लो···है।

Co-education (सहशिक्षा) नहीं होनी चाहिए। रूस के सम्बन्ध में एक पुस्तक अध्ययन करते हुए पढ़ा था; "हमने लड़के और लड़कियों के स्कूल अलग-अलग कर दिये हैं। सहशिक्षा से लड़के और लड़कियाँ खराब हो गये।" इतना ही नहीं "वहाँ के विद्यार्थी प्रत्येक सिनेमा में नहीं जा सकते, किसी विशेष सिनेमा में ही जायेंगे और वह भी अपने अध्यापकों के साथ।"

जीवन की समस्याओं के समाधान के लिये क्रीड़ा-स्थल अच्छा होना चाहिये। यदि क्रीड़ा- स्थल अच्छा नहीं तो अपने बच्चों को घर में ही खेलने की सुविधायें दें। जब मैं देहली में रहता था तो हमारे बच्चे ऊपर ही खेला करते थे। एक दिन एक बच्चा आकर कहने लगा कि एक लड़का गाली बक रहा था। मैंने पूछा क्या कह रहा था, तो कहने लगा कि मुझे बताने में शर्म आती है। यदि क्रीड़ा-स्थल अच्छा हो तो बच्चों का स्वभाव उत्तम बन जाता है।

जीवन की समस्याओं का सच्चा समाधान वैदिक धर्म से ही हो सकता है। महर्षि दयानन्द कहते हैं कि पढ़ाने वाला परोपकारी तथा सदाचारी होना चाहिये। जब तक अध्यापक परोपकारी, सदाचारी तथा विद्यार्थियों के हितचिन्तक नहीं होंगे तब तक जीवन की समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता। हमारे

विद्यालय आदर्श विद्यालय होने चाहियें। मैं एक बार पूना के Seventh Day-Advents कालिज का निरीक्षण करने गया। प्रवेश द्वार पर वहाँ के विद्यार्थियों के रहन-सहन के सम्बन्ध में एक लिस्ट लगी हुई थी। उसकी कुछ बातें इस प्रकार थीं:—

यहाँ अध्ययन करने वाले समस्त विद्यार्थी Pure Vegiterian (निरामिष-भोजी) हैं।

यहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थी चाय, काफी, तथा पान का प्रयोग नहीं करते तथा चाय, कॉफी और पान-चर्वण करने वाले विद्यार्थी यहाँ प्रविष्ट नहीं हो सकते।

इन नियमों को देख कर मैं ने वहाँ के प्रबन्धकों से पूछा—Eggs (अण्डे) खाते हैं या नहीं? कहने लगे—Eggs तो हम खा लेते हैं। मैंने कहा—हम तो नहीं खाते, यह भी मांस में सम्मिलित है। यह सुन कर उन्होंने कहा—You are better than us. (आप हमसे अच्छे हैं)। मैंने फिर पूछा—What about onion (आप प्याज खाते हैं या नहीं) उन्होंने कहा—हम तो खाते हैं। मैंने कहा—हम तो यह भी नहीं खाते। उन्होंने उत्तर दिया–You are still better than us. (आप वास्तव में हमसे बहुत अच्छे हैं) मैंने फिर पूछा कि मैं एक ऐसे विद्यार्थी को प्रविष्ट कराना चाहता हूँ जो अण्डे और प्याज नहीं खाता, क्या आप उसके लिये प्रबन्ध कर सकेंगे? उन्होंने साफ कहा—जहाँ ३००-४०० बच्चे पढ़ते हों वहाँ एक विद्यार्थी के लिये ऐसा प्रबन्ध होना सम्भव नहीं।

ईसाई अब मांस खाने का निषेध करते हैं। एक जगह एक ईसाई मांस खाने के विरुद्ध दलील दे रहा था। मैंने पूछा कि क्या अब मांस के विरुद्ध दलील देकर ब्राह्मण, वैश्य आदि को भी ईसाई बनाना चाहते हैं? पादरी साहब कहने लगे – हाँ, इसका यह परिणाम हो सकता है। आज हमारा भोजन तो बिलकुल ही बिगड़ गया है। रात के दो बजे हैं। स्टेशनों पर चाय वाले Tea, Tea पुकार रहे हैं। यात्रा में नहाये नहीं, धोये नहीं, चाय पीने में लग जाते हैं।

आज स्कूल आदि में केवल पढ़ाया जाता है शिक्षा नहीं दी जाती। पठन पाठन और शिक्षा में भेद है। इसीलिये ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि पठन-

पाठन सफल नहीं हो सकता जब तक शिक्षा न हो। केला खाकर छिलका कहाँ फेंकना चाहिए, यह शिक्षा है। एक बार मैं रेल में यात्रा कर रहा था। कुछ व्यक्ति मूम्फली और नारंगी खाते जा रहे थे और उनके छिलके सीट के नीचे रखते जा रहे थे। अपने स्थान पर पहुँच कर जब वे लोग उतर कर जाने लगे तो मैंने कहा—आपका कुछ सामान रह गया है यह भी ले जायें। वे कहने लगे—हमारे पास तो थोड़ा-सा ही सामान था वह हमने ले लिया। मैंने कहा—नहीं जो सामान रह गया है वह उठा लें। उनके पूछने पर कि सामान कहाँ है मैंने सीट की ओर इशारा कर दिया। उधर देख कर वे बहुत लज्जित हुए। मैंने कहा—खिड़की आपके पास थी, आपने ये छिलके उधर नहीं फेंके, मैंने समझा शायद आप वैद्य हों, इसलिये आप को याद दिलाया था। उन्होंने उन छिलकों को उठाया और कहा—भविष्य में हम इसका ध्यान रक्खेंगे, आपने आज बड़ी अच्छी शिक्षा दी है। उनके जाने के पश्चात् रेल में बैठे एक प्रोफ़ैसर साहब ने अपने जीवन की एक घटना बताई जो इस प्रकार थी—"जब से ये बूट चले हैं इन्होंने हमें बहुत खराब किया है। हम अपने बूटों को जहाँ चाहें वहाँ रख देते हैं। एक बार मैं जर्मनी में रेल से यात्रा कर रहा था। मैं अपने बूट सामने वाली सीट के बराबर लगा कर आराम करने लगा। सामने जो आदमी बैठा था उसने यह देख कर अपनी जेब से एक कागज निकाला और कहने लगा—Let me put a piece of paper between the seat and your feet. अर्थात् मुझे आपके जूतों के तथा सीट के बीच में एक कागज रख देने दीजिये इस से आपके आराम में भी फरक नहीं पड़ेगा और लोगों के कपड़े भी गन्दे नहीं होंगे। मैं बहुत लज्जित हुआ तथा क्षमा माँगी। थोड़ी देर पश्चात् उसी व्यक्ति ने मूम्फली खाकर छिलके अपनी जेब में रख लिये। मैंने पूछा—Why have you put it in your pocket—आपने ये छिलके अपनी जेब में क्यों रख लिये हैं ? उसने कहा—I will put it at proper place because I do not want to make my country unclean अर्थात् मैं इन्हें उचित स्थान पर डालूँगा, क्योंकि मैं अपने देश को गन्दा नहीं करना चाहता। बच्चों का पालन करते समय उन्हें ऐसी बातों का अभ्यास कराना चाहिये। माता-पिता को बच्चों में बुरी आदतें नहीं डालनी चाहिये। अभी एक जगह सगाई थी। एक पिता भी अपने बच्चे को साथ लेकर गया। रस्म समाप्त होने के पश्चात् पान बँटने लगे। पिता पुत्र से कहने लगा एक पान तुम भी ले लो।—

ऐसी शिक्षा बच्चों को कदापि नहीं देनी चाहिये।

एक और भयंकर बीमारी फैली हुई है। लोग सड़कों पर तथा बाजारों में दांतुन करते हुए निकलते हैं और सड़कों पर तथा बाजारों में थूकते चलते हैं। एक बार मैंने एक व्यक्ति से पूछा—आप ऐसा क्यों करते हैं ? घर में एक स्थान पर बैठ कर दांतुन क्यों नहीं करते तो कहने लगे—चलते-चलते दांतुन करने से समय बचता है। मैंने कहा—यदि समय ही बचाना है तो परांवठे पाखाने में ले जाया करो। इस प्रकार पढ़ा-लिखा तभी सफल होगा जब शिक्षा होगी। जब क्रीड़ा स्थल और शिक्षालय से निवृत्त हो गया तो अब क्या करे ? हमारे यहाँ ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्यार्थी सदाचार, ज्ञान, शिक्षा, शारीरिक तथा आत्मिक बल आदि गुणों का सञ्चय किया करते थे। ब्रह्म के बहुत-से अर्थ हैं परन्तु मुख्य हैं अन्न, वेद और ईश्वर। ब्रह्मचारी का अर्थ हुआ अन्न खाने वाला। गुरुकुलों में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बनाये जाते थे। ब्राह्मण का काम था विद्वान् बनना। क्षत्रिय का कार्य था देश तथा देशवासियों की रक्षा करना। वैश्य का कार्य था चारों वर्णों का पालन करना। ये सब ब्रह्मचर्य आश्रम में तैयार होते थे। आजकल बिलकुल उल्टा है। जब एक बी० ए० उत्तीर्ण विद्यार्थी से पूछते हैं—What do you intend after that ? (अब तुम्हारा क्या करने का विचार है ?) तो कहता है—अभी सोचा नहीं। उनकी दशा ठीक उस आदमी की तरह है जो सड़क पर भागा जा रहा था। उससे पूछने पर कहाँ जा रहे हो, कहने लगा पता नहीं।

बालक ब्रह्मचर्य आश्रम समाप्त कर गृहस्थ आश्रम में आता है। गृहस्थ में आकर ब्राह्मण ने अविद्या दूर की, क्षत्रिय ने रक्षा की, वैश्य ने पालन किया और शूद्र ने सब की सहायता की। कुछ लोग कहते हैं—शूद्र ने सहायता कैसे की ? आप भागिये तो ब्राह्मण अर्थात् मुख, बाहु अर्थात् क्षत्रिय और उरु प्रदेश अर्थात् वैश्य ये तीनों भागते हैं। इसी प्रकार शूद्र ने सब की सहायता की।

मनुष्य का निर्माण मनुष्य की भाँति होना चाहिये। समाज के लिये चार ही वर्णों की आवश्यकता है शिक्षक, रक्षक, पोषक और सेवक। यदि आवश्यकता से अधिक हैं तो भी हानि और यदि कम हैं तो भी हानि। उदाहरणत: हाथ में पाँच अंगुलियाँ होती हैं। यदि एक कट जाये तो शक्ति कम हो जाती है। यदि छ: हो जायें तो भी ठीक नहीं। मेरे एक मिलने वाले के हाथों में

छः अंगुलियाँ थीं। मैंने एक दिन उनसे कहा—आपकी शक्ति तो और बढ़ गई होगी? वे कहने लगे—यह तो दुःखदाई है, कोट पहनते समय अटक जाती है।

जीवन की समस्याओं के समाधान के लिये तीन पैमाने हैं—माँ, बहन, बेटी। भाई बहन से वार्तालाप करता है, बाप बेटी से बात-चीत करता है तथा पुत्र माँ से। सब आनन्दपूर्वक रहते हैं, क्योंकि गृहस्थ आनन्दधाम है। बाजार में जाते हुए ये पैमाने हमें अपने सामने रखने चाहिये। बड़ी स्त्रियों को हम माता के समान समझें, बराबर वाली स्त्रियों को बहन के सदृश्य तथा छोटी कन्याओं को पुत्री के तुल्य समझें। वैदिक धर्म ने ये तीन कसौटियाँ दी हैं, परन्तु आज ये बिगड़ गई। सिनेमा ने सत्यानाश कर दिया। दो व्यक्ति सिनेमा का सामान ले जा रहे थे। और आपस में फिल्मों की बातें करते जा रहे थे—मैंने पूछा आपने इन सिनेमाओं से लोगों का क्या भला किया? वे कहने लगे—वैसे तो हम यह कार्य पेट भरने के लिये करते हैं परन्तु आपको सच्ची बात बताते हैं कि आज हमने लड़कों को भी घर में विश्वास के योग्य नहीं छोड़ा। जब ऐसी दशा है तो जीवन की समस्याओं का समाधान कैसे होगा?

ब्रह्मचर्य आश्रम, ज्ञान, बल, वीर्य की प्राप्ति के लिये है। इसी आश्रम में ब्रह्मचारी ज्ञान, वीर्य तथा बल का सञ्चय कर अपने को गृहस्थ आश्रम के योग्य अन्तःकरण वाला बनाता है।

गृहस्थ आश्रम अन्तःकरण की पवित्रता के लिये है। गृहस्थ आश्रम से अन्तःकरण की पवित्रता कैसे होगी। गृहस्थ बनेगा तो सन्तान होगी। सन्तान का अर्थ है जो सम्यक् प्रकार से खानदान को लम्बा करे। यदि माता की भावना अशुद्ध होगी तो भी वह दूसरों के बच्चों को गाली नहीं देगी, क्योंकि वह समझती है कि मेरे भी बच्चे हैं। अन्तःकरण की दुर्भावना बच्चों ने रोक दी। जितने बच्चे होंगे, माता अपने को बढ़ाती जायेगी। चार बच्चे होंगे तो माता चारों में व्यापक हो जायेगी। उसके हृदय में सबके लिये शुद्ध भावनायें होंगी। इस प्रकार गृहस्थ आश्रम में अन्तःकरण पवित्र हो जाता है।

वानप्रस्थ आश्रम में जो कुछ पढ़ा है और अपने अनुभव से प्राप्त किया है उससे दूसरों को लाभ पहुँचाता है। यहाँ गुणा है ३ × ३। वानप्रस्थी आज के अध्यापकों की तरह नहीं होते जिनका ध्यान वेतन की ओर रहता है, पढ़ने

पढ़ाने की ओर नहीं ।

संन्यास आश्रम में मोह त्याग है । संन्यासी के लिये 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् सारा संसार ही अपना घर बन जाता है । यह क्रम जीवन की समस्याओं को हल करने का समाधान है ।

जीवन की समस्याओं को हल करने के लिये हमें बुनियादी बातों पर ध्यान देना होगा, नहीं तो बिगाड़ होगा और होता ही रहेगा । ओ३म् शम् !

विद्यार्थी और सदाचार

ओ३म् । व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

यजु० १९ । ३० ॥

(व्रतेन) व्रत के द्वारा मनुष्य (दीक्षाम्) अधिकार को (आप्नोति) प्राप्त करता है और (दीक्षया) दीक्षा से (दक्षिणाम्) चतुरता को (आप्नोति) प्राप्त करता है और (दक्षिणा) दक्षिणा से (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (आप्नोति) प्राप्त करता है तथा (श्रद्धया) श्रद्धा से (सत्यम्) सत्य (आप्यते) प्राप्त किया जाता है । आर्य नवयुवको !

इस मन्त्र में एक बड़ी विचार की बात है कि व्रत से दीक्षा प्राप्त होती है । जब कोई भी मनुष्य किसी कार्य को करने के लिए हृदय से तैयार हो जाता है और निरन्तर विघ्न-बाधाओं के आने पर भी पीछे नहीं हटता तो उसे दीक्षा प्राप्त होती है, प्रवेश प्राप्त होता है । आजकल बच्चों में पढ़ने की रुचि नहीं है और इसका कारण है कि उन्होंने पढ़ने का व्रत नहीं लिया । यदि व्रत लेते तो पढ़ते और सीखते क्योंकि जिस बात का व्रत ले लेते हैं उसे बिना सिखाये सीख लेते हैं। उदाहरणतः व्यसनों का कोई स्कूल नहीं और न ही कोई अध्यापक है। इसी प्रकार गाली देना सिखाने का तथा चरस और भङ्ग पीना सिखाने का भी कोई विद्यालय नहीं है, बिना अध्यापक के सीख जाते हैं । हाँ

सिनेमा के लिए तो कह देंगे कि सीख कर आए हैं। परन्तु जितनी जल्दी वे सिनेमा की बातों को सीखते और याद कर लेते हैं, इतनी जल्दी विद्यालय के पाठ को नहीं सीखते। सिनेमा के गाने बहुत शीघ्र याद कर लेते हैं। एक बार रघुनन्दन जी एक विद्यालय में ले गये और एक विद्यार्थी से कहा कि गाना सुनाओ। एक छात्र खड़ा हुआ और गाना प्रारम्भ किया—

'मेरा मन डोले मेरा तन डोले'

मैंने कहा, "यह आप बच्चों को क्या सिखा रहे हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "मैं मीठी दवा देकर बलवान् बनाना चाहता हूँ।"

यह मीठी दवा नहीं, मीठा विष है। इससे हमारी पीढ़ियाँ उल्टी होती जा रही हैं। लड़कों की तो बात ही क्या, जब लड़कियों तक को यह गाना याद है तो इसका अर्थ यह हुआ कि माता-पिता और अध्यापक सब अन्धकार में हैं। स्कूलों और कालिजों में चले जाइये, आपको पता लग जायेगा कि बच्चों की प्रवृत्ति अपने सुधार में नहीं है। परन्तु कुछ बच्चे अपनी उन्नति का ध्यान रखते हैं। यदि ध्यान दिया जाय तो यह प्रवृत्ति उन्नति हो सकती है।

जब किसी भी कार्य के लिए व्रत लिया जाता है, दृढ़ संकल्प कर लिया जाता है तो उस कार्य में दीक्षा हो जाती है। फिर उस दीक्षा से दक्षिणा प्राप्त होती है। दक्षिणा का अर्थ चार आने वाली दक्षिणा नहीं है, अपितु दक्षिण का अर्थ है कि उसे चतुरता प्राप्त होती है, उस कार्य में उत्साह प्राप्त होता है। दीक्षा से कुछ न कुछ प्राप्त होता है और जब दक्षिणा मिल गई तो श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। श्रद्धा का अर्थ श्रद्+धा=सत्य का धारण करना, सचाई में धारणा—Maintenance in truth, settlement in truth. जब सत्य धारणा हो जाती है तो फिर असत्य भाषण समाप्त हो जाता है। आज विद्यार्थी की सत्य में धारणा नहीं है इसलिए बात-बात पर झूठ बोल जाता है। अध्यापक घर के लिए काम देता है। दूसरे दिन पूछता है, "काम कर लिया?" तो विद्यार्थी उत्तर देते हैं "हाँ कर लिया" परन्तु जब अध्यापक एक बच्चे से पूछता है कापी लाये? तो कहता है "घर भूल गया।" अध्यापक कहता है, "घर से लाओ।" तो विद्यार्थी तुरन्त बहाना बना देता है, माता जी "घर पर नहीं हैं।" सत्य के न होने से विद्यार्थियों में से सरलता और सादगी जाती रही है। हमारा अत्यन्त पतन हो गया है। सचाई को प्राप्त करने का

एक ही उपाय है—सत्य में धारणा। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायेगी। एक बच्चा खेलता हुआ लालटैन की चिमनी को हाथ लगाना चाहता है। एक बुद्धिमान् व्यक्ति वहाँ बैठा है। वह जानता है कि बच्चा हाथ लगा देगा तो उसका हाथ जल जायेगा, अतः वह उसे लालटैन के पास से हटा देता है। बच्चा पुनः खेलता हुआ हाथ लगाने के लिए वहाँ पहुँच जाता है और हाथ लगाना चाहता है वह व्यक्ति फिर हटा देता है। बच्चा तीसरी बार फिर हाथ लगाने पहुँचता है। क्योंकि उसे यह पता नहीं कि चिमनी को हाथ लगाने से हाथ जल जायेगा। वह चिमनी को हाथ लगा देता है। जब हाथ लगा दिया, तब श्रद्धा हो गई, सत्य में धारणा हो गई। अब यदि कोई व्यक्ति उस बच्चे का हाथ पकड़ कर चिमनी को लगाना चाहे तो वह पीछे हटेगा, क्योंकि अब उसकी सत्य में धारणा हो गई है। परन्तु जहाँ कोई बच्चा या बड़ा व्यक्ति शारीरिक कष्ट भोग कर मानता है, यह मानना अच्छा नहीं है। जैसा बुद्धिमान् बताए उसी प्रकार मान लेना ही श्रेष्ठ है। उदाहरण के लिए एक शराबी से कहें कि शराब पीना अच्छा नहीं, इसके पीने से मुँह से दुर्गन्ध आती है, फेफड़े खराब हो जाते हैं, धन नष्ट होता है, अतः इसका पीना छोड़ दो, तो वह कहता है—छूटती नहीं। उसे शराब की हानियाँ बताई जाती हैं और समझाया जाता है कि शराब के नशे में ऐसी अवस्था हो जाती है कि शराबी नालियों में गिर पड़ता है और उसके मुँह को कुत्ते चाटते हैं। तब शराबी कहता है—जब ऐसा अवस्था होगी तो छोड़ देंगे। परन्तु इसको शारीरिक कष्ट भोग कर छोड़ना बुद्धिमानी नहीं।

इसके साथ ही एक बात और भी स्मरण रखने की है। हम में श्रद्धा तो अवश्य होनी चाहिए, परन्तु श्रद्धा का अर्थ अन्धविश्वास नहीं है।

आप कुमार हैं और आपको सदाचार की शिक्षा देनी है। कुमार का अर्थ है 'कामयते भोगान् इति कुमारः—'जो भोगों की कामना करे उसे कुमार कहते हैं। छोटे बच्चों को, मेरे बाल ठीक हैं या नहीं, कुर्त्ते के बटन ठीक लगे हैं या नहीं, कपड़े अच्छी प्रकार साफ हैं या नहीं—इत्यादि बातों का विशेष पता नहीं होता। जब बच्चा बड़ा होकर कुमार बनता है, तो वह बालों की ओर भी ध्यान देता है, उनमें प्रतिदिन कंघी करता है। कपड़ों को भी स्वच्छ रखता है परन्तु आज कुमारों में अति हो गई है जो ठीक नहीं क्योंकि Excess

of every thing is bad—किसी भी बात में अति का होना बुरा है। आचार में भी यदि अति हो जाये तो अत्याचार हो जाता है। प्रत्येक कुमार को अपने दाँत स्वच्छ रखने चाहिएँ, नाखून भी ठीक हों बढ़े हुए न हों, कपड़े भी स्वच्छ हों, बालों में तेल भी डला हुआ हो। यह सब कुछ ठीक है क्योंकि 'कुत्सितं मारयति इति कुमारः'—जो बुराइयों को मारता है उसका नाम कुमार है। परन्तु ये सब बातें मर्यादा में रहनी चाहियें।

अब दो लाइन बन गईं। आप आँख, नाक, दाँत, वस्त्र आदि सब की स्वच्छता का ध्यान रखते हुए सफाई से रहें परन्तु कोई कुत्सित बात नहीं होनी चाहिए। आप स्वच्छता से रहें परन्तु स्वच्छता सजावट में नहीं आनी चाहिए अन्यथा गाड़ी का Derailment हो जायेगा—पटड़ी से नीचे उतर जायेगी।

संसार में सब भले बनना चाहते हैं परन्तु क्या भलाई स्वाभाविक वस्तु है ? एक व्यक्ति धर्मात्मा है तो इसीलिए कि वह धर्म का आचरण करता है। एक व्यक्ति धनी है तो इसलिए कि उसने धन का संचय किया है। एक व्यक्ति विद्वान् तो है इसलिए कि उसने विद्या इकट्ठी की है। ये सभी बातें स्वाभाविक नहीं हैं। यदि ये बातें स्वाभाविक होतीं तो धर्मात्मा व्यक्ति धर्मात्मा कहलाता ही नहीं, जैसे कुत्ता भी स्वामीभक्त है और नौकर भी—परन्तु नौकर का दर्जा कुत्ते की अपेक्षा ऊँचा है क्योंकि कुत्ते में स्वभाव से स्वामीभक्ति है। कुत्ते को डंडा मारो तो भी पूँछ हिलाता हुआ स्वामी के पास आ जाता है परन्तु मनुष्य अविश्वास को रोक कर विश्वास को बाहर लाया है इसलिये वह प्रशंसा के योग्य है।

जीवात्मा में धार्मिकता या विद्वत्ता स्वाभाविक नहीं है। एक और उदाहरण लीजिये। एक व्यक्ति एक सेठ के पास गया और जाकर कुछ रुपये जमा कर दिये कि मैं एक मास के पश्चात् आकर ले लूंगा। एक मास के पश्चात् आकर रुपये वापस माँगे तो सेठ जी ने पूरे रुपये दे दिये। वह व्यक्ति बड़ा प्रसन्न हुआ और सेठ जी की बड़ी प्रशंसा की। दूसरी ओर एक व्यक्ति एक सन्दूक में कुछ रुपये रखता है। कुछ समय के पश्चात् उन रुपयों को बाहर निकालता है और जितने रुपये रक्खे थे उतने ही रुपये पाकर उसकी प्रशंसा करता है तो लोग कहेंगे कि क्या सन्दूक भी बेईमान हो सकती थी और जब वह बेईमान नहीं हो सकती तो ईमानदार भी नहीं हो सकती। सेठ की प्रशंसा

हो सकती है क्योंकि वह उन रुपयों को खा सकता था अथवा वह कह सकता था कि मुझे कब दिये थे परन्तु सन्दूक न रुपयों को खा सकता है और न यह कह सकता है कि मुझे रुपये कब दिये थे।

हम भला बनना चाहते हैं परन्तु भलाई स्वाभाविक वस्तु नहीं है अतः जो स्वभाव से विद्वान् और धर्मात्मा है उससे सीखना होगा। वह परमात्मा है जिसको आजकल के कई लोग नहीं मानते। फिर प्रश्न होता है कि जो ईश्वर को नहीं मानते वे धर्मात्मा और विद्वान् कहाँ से हो गए ? इसका समाधान यह है कि ईश्वर की ओर से ज्ञान आया है परन्तु उन ज्ञान प्राप्त करने वालों ने बताया नहीं कि धर्म का मूल कारण क्या है। जैसे पिता ने अपने पुत्र को शिक्षा दी परन्तु जिससे उसने सीखी थी, लड़के को उसके दादा का नाम नहीं बताया तो वह दादा को क्या जाने। ठीक इसी प्रकार ज्ञान तो प्रभु से ही आता है परन्तु लोग उसको बताते नहीं इसलिए अन्य लोग उस को नहीं जानते। हमारे अन्दर उत्तम गुण आते हैं, इन गुणों को हम माता-पिता से सीखते हैं— यह बात तो ठीक है परन्तु माता-पिता स्वतन्त्र कारण नहीं हैं।

मुरादाबाद में मेरे व्याख्यान हो रहे थे। एक व्याख्यान के प्रधान एक सैशन जज बने। उनका एक शिक्षक था। उसके सामने वे व्याख्यान की चर्चा कर रहे थे। उन शिक्षक महोदय का एक मित्र भी सुन रहा था। वार्तालाप सुनकर उस मित्र ने कहा कि ईश्वर की आवश्यकता ही क्या है ? शिक्षक उन्हें मेरे पास ले आया और मुझसे कहा कि "ये हमारे मित्र हैं। ये कहते हैं कि ईश्वर की आवश्यकता ही क्या है ?" मैंने भी उन्हें बढ़ावा दिया और कहा, कि "इस खुदा को पहले दूर कोने में खड़ा कर दो फिर वार्तालाप करेंगे।" इतना बढ़ावा देकर मैंने कहा, 'कि आप बाप से उत्पन्न हुए हैं दादा की तो आवश्यकता ही नहीं है।" वह कुछ लज्जित हुआ। मैंने फिर पूछा, कि "आप कुछ मानते भी हैं।" उन्होंने कहा, "हाँ, गाँधी जी को मानता हूं।" मैंने कहा, "पूरा मानते हो या अधूरा।" उन्होंने कहा, "पूरा मानता हूं।" मैंने कहा, "गाँधी जी तो ईश्वर को मानते थे फिर आप उन्हें पूरा कहाँ मानते हैं आप उन्हें अधूरा मानते हैं।" मैंने फिर एक और प्रश्न किया कि "आप गाँधी जी को क्यों मानते हैं ?" उन्होंने कहा, "वे धर्मात्मा और विद्वान् थे इसलिये।" मैंने कहा, "गाँधी जी में यह बातें स्वाभाविक थीं या किसी से सीखी थीं ?"

उन्होंने कहा, "गुरु से सीखी थीं।" मैंने कहा, "उनके गुरु पैदा ही ऐसे हुए थे या उन्होंने भी किसी से सीखी थीं ?" उन्होंने कहा, "उन्होंने भी सीखी थी।" तो मैंने कहा, सृष्टि के आदि में भी कोई होना चाहिये जिससे उन्होंने सीखी थीं।" वे कहने लगे, "हाँ साहब कोई होना तो चाहिये।" मैंने कहा वही धर्म और विद्या का आदि स्रोत है। उसी का नाम ईश्वर है। यदि आपको ईश्वर अच्छा नहीं लगता तो कोई और नाम रख सकते हैं।" उन्होंने कहा, "जब ईश्वर को स्वीकार ही कर लिया तो नाम बदलने की क्या आवश्यकता है।" मैंने कहा, "तो उस कोने में खड़े ईश्वर को अब बुला लूँ।"

सदाचारी बनने के लिये ईश्वर का मानना आवश्यक है क्योंकि यदि एक व्यक्ति ईश्वर को न माने तो वह विद्वान् हो सकता है परन्तु उसे धर्मात्मा नहीं कह सकते। जो अच्छे मार्ग पर चले और बुरे मार्ग से दूर रहे, उसे धर्मात्मा कहते हैं। ईश्वर-विश्वासी बालक ही सदाचारी और धर्मात्मा हो सकते हैं। 'कुत्सित मारयति इति कुमारः' अर्थात् जो बुरी बातों का नाश करने वाला हो वह कुमार कहाता है।

अब देखना यह है कि बिगाड़ कहाँ से आरम्भ होता है। बिगाड़ घर से आरम्भ होता है। बच्चों में अपने कर्तव्य को भूल जाने का स्वभाव माता-पिता से आता है। बुरा चाल-चलन बाहर की अपेक्षा घर से अधिक आता है। जैसा घर का वातावरण होता है वैसा ही बच्चों का स्वभाव बन जाता है। माता-पिता का यह विचार कि जिस प्रकार वृक्ष और पौदे अपने-आप बन जाते हैं, इसी प्रकार बच्चे भी अपने-आप बनते हैं—बहुत ही भ्रमपूर्ण है। वृक्ष और पौदे ईश्वर के अधीन हैं बच्चे माता-पिता के अधीन होते हैं। उन्हें ठीक प्रकार शिक्षित करने के लिए कभी-कभी ताड़ना भी दी जानी चाहिये। जिस प्रकार कुम्हार थप्पड़ लगा कर मटके को बनाता है इसी प्रकार सुधार की दृष्टि से कुछ ताड़ना की जाये तो बहुत उत्तम है।

बच्चे के निर्माण के लिए ताड़ना आवश्यक है परन्तु आज यदि अध्यापक बच्चे को धमका दे तो विपत्ति आ जाती है। बिना ताड़ना के बच्चे बनते नहीं अतः बच्चे मास्टर को बनाते हैं। आज अध्यापक घर जाकर यह कहता है "कि प्रभु का धन्यवाद है कि कुशलतापूर्वक घर आ गये।" आज कल बच्चे अध्यापक के दोष निकालते हैं। परन्तु याद रखो जो गुरुओं का सम्मान नहीं

करता उसमें विद्या का अंकुर नहीं उग सकता। अतः सच्चे कुमार बनो।

घर के वातावरण से ही बच्चों में उद्दण्डता आ रही है। जो हर समय 'यह न करो, यह न करो' ही करते रहते हैं वे माता-पिता गलती पर हैं, इसी लिये वातावरण बिगड़ता जा रहा है। आज अवस्था क्या है? एक ठाकुर साहिब लड़ने लगे। किसी बुद्धिमान् व्यक्ति ने कहा—"ठाकुर साहिब, किसी बात पर लड़ा करो।" ठाकुर ने कहा, "बात पर तो बनिया लड़ते हैं, ठाकुर बिना बात के लड़ते हैं।" आज सब ठाकुर बने हुए हैं।

आर्यकुमारो! ठाकुरपन छोड़ कर सच्चे कुमार बनो। आज से संकल्प कर लो—

१. गुरुओं का आदर करेंगे। उनका अपमान और निरादर कभी नहीं करेंगे। उनकी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

२. माता-पिता ने जिस उद्देश्य के लिए स्कूल भेजा है उसे पूरा करेंगे। अपना पाठ प्रतिदिन याद करेंगे। आज उल्टा हो रहा है। आज यदि अध्यापक पाठ पूछता है तो लड़के कहते हैं—पहले अध्यापक तो पूछते नहीं थे, आप तो पूछते हैं। आप आज यह संकल्प कीजिये कि जो पाठ मिलेगा उसे याद करके ले जायेंगे।

३. समय पर विद्यालय में जाना और समय पर लौट आना। विद्यालय से अवकाश होते ही सीधे घर आ जाना चाहिए। न तो मार्ग में रुको, न व्यर्थ की गप्पबाजी में समय नष्ट करो और न गाली आदि दो, क्योंकि यदि पढ़े-लिखे भी गाली देंगे तो बाजार के और पढ़ने वाले लड़कों में क्या अन्तर रहेगा? कोई असभ्यतासूचक बात और बकवास नहीं करनी चाहिए। नियमपूर्वक चलने वाले बनो।

४. जब अध्यापक पढ़ाने लगे तो अध्यापक की ओर पूरा ध्यान दो। एक-एक बात पर ध्यान दो क्योंकि ध्यान देने से ही ज्ञान उभरेगा।
ज्ञान आपके अन्दर है। वेद में कहा है—

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

यजु० ३४।५॥

अर्थात् जिस मन में ऋग्वेद—यजुर्वेद—सामवेद और उनके अन्तर्गत होने से अथर्ववेद भी ऐसे प्रतिष्ठित है जैसे रथ की नाभि में अरे, वह मेरा मन शुभ संकल्प करने वाला हो।

इससे क्या आया कि ज्ञान मन के अन्दर विद्यमान है। जब अध्यापक मन के ज्ञान को उभार देता है तो मनुष्य ज्ञानवान् बन जाता है परन्तु यह ज्ञान कब उभरता है ? जब ध्यान से सुनें। जब ज्ञान उभर जाता है तो बुद्धि की दासता समाप्त हो जाती है फिर बुरी आदतें छूट जाती हैं। ज्ञान के उभरने पर मनुष्य तुरन्त कह देता है कि अब ऐसा नहीं करूँगा।

मैं रिक्शा में बैठा हुआ अजमेरी गेट की ओर जा रहा था। रिक्शा वाले ने पूछा, 'एक और बैठा लूँ।' मैंने कहा 'बैठा लो' बैठने वाला सज्जन सिगरेट पी रहा था। मैंने पूछा—आपने सिगरेट पीना क्यों आरम्भ किया ? उसने कहा 'यूँ ही'। मैंने कहा—'यूँ ही' भी कोई कारण होता है ? मैं आपको धक्का दे दूँ और कोई पूछे कि आपने धक्का क्यों दिया और मैं कह दूँ यूँ ही तो यह कोई बात हुई ?' वह सज्जन बिचारे लज्जित हुए और भविष्य के लिए धूम्रपान छोड़ने का वचन दिया। इन सबके कहने का तात्पर्य यह कि आप ध्यानपूर्वक सुनें तो आपके ज्ञान का विकास होगा, बुद्धि तीव्र होकर बुराइयों की ओर न फँस कर शुभ मार्ग पर चलेगी।

यह आपके समक्ष कुछ बातें रखी हैं। इनके ऊपर आचरण करेंगे तो आप उन्नति के पथ पर आगे बढ़ेंगे। प्रभु आपको शक्ति दे कि आप सच्चे सदाचारी बन सकें।

ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई ?

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
ओ३म् शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः।

आदरणीया बहिनो व प्यारे भाइयो !

आज का मज़मून (विषय) यह है कि पररमात्मा ने दुनिया क्यों पैदा की ? कई बार यह सवाल मेरे सामने आया है और मैंने हत्तुलवसा (यथा-शक्ति) प्रयत्न किया है कि मैं इस सम्बन्ध में तसल्लीबख़्श उत्तर दूं। आज भी हमारे एक मेहरबान ने कहा कि "दिल में मेरे, यह ख़याल उत्पन्न होता है कि जब वह अपने आप में कोई कमी नहीं रखता, पूर्ण है 'पर्फ़ेक्ट' (Perfeet) है तो वह दुनिया क्यों बनावे ?" मैंने कहा, "यही दलील बनाने की ज़रूरत को साबित करती है यानी उसका हर तरह पूर्ण होना।"

आप कहेंगे "कैसे ?" जिसके अन्दर कोई ख्वाहिश नहीं, कोई इच्छा नहीं, कोई कमी नहीं, लेकिन पूर्णता है हर प्रकार की। इल्म भी उसका पूरा है, शक्ति भी उसमें पूरी है, और व्यापकता भी उसकी पूरी है, तीनों प्रकार से जो पूरा है यानी परमात्मा, तो बतलाइये वह अपनी इस पूर्णता को किस प्रकार सफल करे ? अपने इस कमाल को किस प्रकार से बाकार करे ? क्योंकि किसी शय का होना महज़ होने के लिये हो तो उसका होना न होने के बराबर होता है—ज़रा ग़ौर कीजिये मेरे अल्फ़ाज़ (शब्दों) पर। किसी वस्तु का होना महज़ होने के लिए हो तो उसका होना न होना बराबर होता है। परमात्मा पूर्ण है। अपनी पूर्णता का क्या लाभ ? अपने पूरे आलिम होने का क्या फ़ायदा ? सूरज से प्रकाश हमको मिलता है, इस बल्ब से भी प्रकाश हमें मिलता है। हम पूछते हैं कि इसका इसके अलावा—कोई और लाभ है कि आपको रोशनी दे रहा है ? पूर्णता का होना इसी चीज़ में पूरा होगा कि जितना ज़्यादा फ़ायदा उसकी पूर्णता यानी कमाल से दूसरे को हो जाय उतना ही उसका वजूद सफल है और जितना न पहुँचे उतना ही असफल है। आप कल्पना कीजिये कि कोई एक वजूद है और उसके अलावा और कोई नहीं है, और वही है तो मैं कहूँगा "उसका होना न होने के बराबर है।" मिसाल के तौर पर अगर एक बड़ा हकीम है, लेकिन बीमार कोई नहीं है दुनिया में और न दवाइयाँ हैं तो मुझे बताइये कि उस हकीम के होने का क्या फ़ायदा है ? जब कोई मरीज़ नहीं है और कोई दवा नहीं है तो किसके लिये दवा दे और क्या दे ? यदि मास्टर है (पढ़ाने वाला), परन्तु कोई लड़के पढ़ने वाले नहीं हैं तो मास्टर का जीवन बेकार है, बाकार नहीं है। इसलिये विद्वान् लोगों ने कहा है कि जो अपने

अन्दर कोई गुण रखता है उस गुण की सफलता अन्यों को लाभ पहुँचाने में है। अपनी ग़रज़ तो हम पूरी करते ही हैं लेकिन अपने कमाल से गैरों की ग़रज़ को पूरा करना और उनके लिये सहारा बनना यह ऊँचे दर्जे की चीज़ है। एक अंग्रेजी का बहुत छोटा-सा जुमला है (एवरी अपॉर्चुनिटी टु हेल्प इज़ ए ड्यूटी) Every opportunity to help is a duty—प्रत्येक अवसर जो हमें सहायता को मिल जाए वह हमारा कर्त्तव्य है ; जो मौका भी हमें मिल जाए किसी की मदद करने का वह हमारा फर्ज़ है क्योंकि हम अपने गुण से कुछ तो फ़ायदा पहुँचाएँ, अपने कमाल से उसको लाभान्वित करें। तो वह क्या करेगा ? जहाँ वह अपना होना सफल करेगा वहाँ उसका जीवनमार्ग भी सरल हो जाएगा जिसकी वह मदद करेगा। माता और पिता उसका नमूना हैं। मैं यह पूछता हूँ कि इतने स्कूल्ज़ और कालिजिज़ खुले हैं क्या किसी लड़के ने कोई दर्खास्त दी कि "अब हम तैयार हो गये हैं, होते जा रहे हैं, मेहरबानी करके हमारे लिए अब स्कूल्ज़ और कालिजिज़ खोलिये।" "नहीं न ?" तो कौन सोच रहे हैं ? बुद्धिमान् सोच रहे हैं या दूसरे लफ्ज़ों में यह कहिये कि जिन्होंने इल्म का मज़ा हासिल किया है उन्होंने अपना कर्त्तव्य समझा है। क्या ? कि "वह जो हमारे आधीन हैं, और विद्या से विहीन हैं, उनको हम उसी आनन्द का मज़ा चखाएँ कि जिस आनन्द का मज़ा हम विद्या और इल्म हासिल करने के बाद ले रहे हैं, वे उससे खाली न रहें जो हमारे मातहत हैं।" इसलिये माँ-बाप अपने बच्चों को बगैर दर्खास्त के, स्कूल कायम करने के लिये प्रयत्न कर रहे हैं कि खुलने चाहिएँ, यहाँ खुलने चाहिएँ। क्यों, क्या जरूरत है ? अरे ! वे तो विद्वान् हो ही चुके हैं, उम्र उनकी खत्म होने को है। क्या पता दुनिया से थोड़े ही दिनों में चले जाएँ ? तो भी वह कोशिश क्यों कर रहे हैं कि बच्चों के लिये स्कूल खुलना चाहिए ?

सिर्फ इसलिए कि जिस प्रकार इन्होंने विद्या प्राप्त करके आनन्द उठाया है, उस प्रकार इनकी सन्तान भी विद्या प्राप्त करके आनन्द का भोग करें।

परमात्मा सर्वज्ञ है। बहुत-से लोग इन लफ्ज़ों में कहा करते हैं कि "परमात्मा ने अपने सर पर यह सिरदर्दी क्यों ली है कि दुनिया बना रहा है ? बैठा रहता मौज में ! कुछ करने की जरूरत नहीं थी, कोई चाह नहीं थी। कुछ नहीं थी।" मैं कहता हूँ "सबसे बड़ी चाह यह है कि मेरा अपना होना

सफल हो जाए, बाकार हो जाए, बेकार न रहे। बेकार होने से मैं निकम्मा हो जाता हूँ। मेरा बोलना तब सफल होता है जब सुनने वाले हों। क्यों कहा करते हैं मन्त्री जी अभी और आने दीजिये आदमियों को ? यहाँ आदत पड़ी हुई है दस बजे से आरम्भ करने की। लोग फारिग होकर आते हैं। तो क्या मतलब ? मेरे बोलने को सफल करने के लिये वे चाहते हैं कि श्रोतागण आ जाने चाहिएँ। उनके बगैर वह सफल नहीं होता है। इसी तरह का परमात्मा का वजूद कहाँ सफल होगा ? वह आलिम है, वह आलिमेकुल है। इल्म हमेशा जाहिलों में सफल होता है। ताकत हमेशा कमजोरों की रक्षा में सफल होती है, याद रखिये ! और रोशनी हमेशा अँधेरे में सफल होती है, जहाँ अँधेरा है वहीं उसको ले जाइये वहाँ सफल हो जाएगी। आलिम अपनी ज़िन्दगी को वहाँ सफल कर सकते हैं कि जहाँ जाहिल हैं ताकि उनको इल्म मिल जाए। इल्म के मिलने से वे सफल हो जाएँगे। तो समझ लेना चाहिये कि भगवान् आलिमेकुल है, लिहाजा अपने इल्म की बिना पर ही उसकी ज़िम्मेदारी हो गई है, उसकी 'रिस्पॉन्सिबिलिटी' (Responsibility) का आग़ाज़ अपने आलिमेकुल होने से ही शुरू हो गया है। एक पुरानी मसल चली आती है कि 'जो समझे वही तेल को जाय' मतलब—तेल लेने को जाए। चिराग़ जलाना है, समझ गया है—अँधेरा है ! ! जो जान गया है कि अँधेरा है तो उसी को जाना चाहिये तेल लेने के लिये। इसका अर्थ यह हुआ कि उसी का यह फर्ज़ है कि जरूरत को पूरा करे। इसलिये जब परमात्मा जानता है कि जीवात्मा इल्म में कमज़ोर है, महदूदुल्अक़्ल है, अल्पज्ञ है, कम जानने वाला है और मैं ज़्यादा जानने वाला हूँ तो इससे बेहतर और कौन-सा मौका होगा परमात्मा के लिये कि वह अपने अस्तित्व को सफल करे; अपने इल्म को बाकार करे, बेकार न रहने दे, 'यूज़फुल' (useful) बनाए, (un-useful) 'अन्यूज़फ़ुल' न रहने दे, यों कहिये।

सोचने की बात है इस बिना पर भगवान् ने क्या किया ? कि हमेशा से जीवात्मा उसके साथ है अनादि काल से। तो अनादि काल से उसने क्या समझा ? कि मेरी Duty (ड्यूटी) है अब मेरा यह कर्त्तव्य है Every opportunity to help is a duty (एवरी अपॉर्च्युनिटि टु हेल्प इज़ ए ड्यूटी)—और ये Opportunity (अपॉर्च्युनिटि), और यह मौक़ा पर-

मात्मा को अनादि काल से मिला हुआ है । वह अनादि काल—There is no beginning at all (देअर इज नो बिगिनिंग ऐट ऑल) जहाँ कोई शुरू नहीं है—तब से मिला हुआ है। ऐसा मौका भगवान् को मिला हुआ है। और जीवात्मा उसके पास है लिहाज़ा ईश्वर अपने अस्तित्व को सफल समझता है। क्योंकि ईश्वर जीवात्मा को ज्ञान प्रदान करता है, शक्ति प्रदान करता है।

मैंने आपके सामने मन्त्र पढ़ा था 'य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते', जिस भगवान् ने हमें आत्मज्ञान, अर्थात् अपने-आपे का ज्ञान दिया है। हम अपने-आपको भी नहीं जानते थे। करोड़ों आदमी अभी ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि "हम तो Compound of Elements (कम्पाउँड आफ एलीमेंट्स) हैं।" आग, पानी, हवा, जमीन वग़ैरा के मेल से हमारे अन्दर यह शऊर पैदा हो गया है अथवा यह ज्ञान पैदा हो गया है। वे कहते हैं कि बस 'यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्', जब तक जीवे सुख से जीवे, 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्,' कर्ज करके घी पीवे, 'भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनम् कुतः,' यह जो जल जाएगा शरीर, इस शरीर का फिर आना कैसे सम्भव हो सकता है? खत्म हो जाएगा। बतलाइये ऐसे आदमी जो हैं उनके लिये क्या है? उनके लिये तो कुछ नहीं है। लेकिन जो कहते हैं कि हकीकत में हम हमेशा रहने वाले हैं वे जानते हैं कि हमें दुबारा आना है। यह शरीर जो है वही तो नाशवान् है। बाक़ी जीवात्मा तो नित्य है। तो जिन्होंने जीवात्मा को नित्य नहीं समझा केवल यह समझा कि हम Compound of elements हैं, इन भूतों का संघात हैं उनके लिये पाप-पुण्य की कोई कीमत नहीं। सांख्यदर्शन के रचयिता कपिल मुनि ने कहा है कि 'न भूतचैतन्यं प्रत्येकादृष्टेः सांहत्येपि चासांहत्येपिच'। न भूतचैतन्यं—आग, पानी, हवा, ज़मीन वग़ैरह इनमें चेतनता नहीं है। There is no consciousness in these things (देअर इज नो कान्शियस्नेस् इन दीज़ थिंग्ज)। वह यह कहते हैं कि इनके अन्दर शऊर नहीं है। इसलिये इनके Combination से, इनके मेल से, ज्ञान कैसे उत्पन्न हो जाएगा? कभी नहीं हो सकता।

मैं अब पूछ लूँ जरा, बच्चे भी समझ जाएँगे और मास्टर साहबान भी समझ जाएँगे कि अगर किसी स्कूल के लिये बी० ए० बी० टी० (B. A., B. T.) मास्टर की जरूरत हो तो क्या दस एंट्रेंस पास को भेज देने से कमी पूरी

हो जायगी ? वह कहते हैं, "तन्ख्वाह तो ज्यादा देनी पड़ेगी, कुर्सियाँ ज्यादा मँगवानी पड़ेंगी बैठने के लिये, जगह कम हो जाएगी लड़कों के लिये बैठने की, जो दस आ जाएँगे। लेकिन पढ़ाई में कुछ न होगा, योग उसका वही होगा, एण्ट्रेंस पास। चाहे हज़ार मास्टर हों एण्ट्रेंस पास, सौ हों या दस हों। योग में योग्यता वही आएगी जो एक की है। तो हमें समझ लेना चाहिये कि किस प्रकार से हो सकता है भूत। जिनमें ज्ञान नहीं है, जिनमें शऊर नहीं है, उनके मिलाने से शऊर पैदा हो जायेगा यानि ज्ञान की उत्पत्ति हो जायगी ? कैसे हो सकती है जब किसी में (ज्ञान) है ही नहीं ? यों ज़रा और अच्छा समझ में आ जाएगा कि फ़र्ज़ कीजिये दस-दस रुपए दसवीं क्लास पास दस शख्सों को दे दिये। तो दसदाए सौ। रुपये का योग तो हो गया सौ, लेकिन योग्यता का रहा entrance (एन्ट्रेंस) पास, दसवीं क्लास पास ! इससे ज्यादा नहीं। तो मालूम हुआ कि यह खयाल कि हम भूतों का संघात हैं और भूतों के संघात से हमारे अन्दर शऊर आ गया है that is nonsense, वह बुद्धि के विरुद्ध बात है।

इसलिये भगवान् ने क्या कहा, "तुम नहीं जानते थे, मैंने तुम्हें पैदा करके, तुम्हारा आपे का ज्ञान तुम्हें दिया है।" तो य-आत्मदा' 'आत्मा के माने क्या हैं ? आत्मा अर्थ Self (सेल्फ़) और आत्मा के माने हैं कि जो दूसरे में व्यापक हो सके, अपने-आपे को ग़ैर में बढ़ा सके, दूसरे को अपने जैसा समझे अर्थात् यह समझे कि ग़ैर की तकलीफ़ मेरी तकलीफ़ है, ग़ैर का सुख मेरा सुख है। ऐसा अपने को समझा सके, बता सके। इसे आत्मा कहते हैं। 'अतति व्याप्नोतीति आत्मा' जो व्यापक हो सके। माताएँ हैं, अपनी जितनी सन्तान होंगी उसी में व्यापक हो जाएँगी। दस सन्तान हैं तो दस में उतना ही प्रेम होगा, पाँच हैं तो पाँच में ही उतना प्रेम होगा। वह नहीं चाहती हैं कि उनमें से कोई कम हो जाये। ज्यादा हो जाएँ तो कोई हर्ज नहीं। मैंने एक देवी से पूछ लिया, जो अपनी सन्तान से बहुत परेशान हो रही थी, "क्या आप चाहती हैं कि कोई बच्चा इनमें से कम हो जाए ?" हँस के कहती हैं, "पण्डितजी, यह ख़याल कभी नहीं आता कि कम हो जाए।" मैंने कहा, "कोई एक बढ़ जाये तो, "तो भगवान् की मेहरबानी।" यह कह देती हैं लेकिन कमी नहीं चाहती हैं। क्यों नहीं चाहतीं ? क्योंकि अपने-आपे को उन्होंने बढ़ा करके

बच्चे के अन्दर डाल दिया है।

तो कहते हैं आत्मा का अर्थ है 'अतति व्याप्नोतीति आत्मा' कि जो अपने-आपे को बढ़ा सके एक बात, और दूसरे Self (सेल्फ़) अपने-आपे को जाने कि 'मैं क्या हूँ।'' लोगों ने जाना नहीं कि जीवात्मा परमात्मा के पास हमेशा से हैं और हमेशा से होने की वजह से परमात्मा जानता है कि ये मेरे पुत्रवत् हैं और मैं इनका पितावत् हूँ और मैं मौजूद हूँ। तो क्या मेरी मौजूदगी में बच्चा जाहिल रह जाए और जितनी Capability (कैपेबिलिटी) इसमें तरक्क़ी करने की है, Evolve होने की है, विकसित होने की है अगर न हो मेरी कुरबत से और मेरी नजदीकी से, तो मेरे लिए शर्म की बात होगी कि ईश्वर जैसा वजूद और उसका जीवात्मा, जो पुत्रवत् है, उसके पास रहे और परमात्मा को खबर हो कि यह कमइल्म है, महदूदुल्इल्म है और मैं सर्वज्ञ हूँ, सब कुछ जानने वाला हूँ और फिर भी खाली बैठा रहे और फिर अपने वजूद को सफल न करे और अपने ज्ञान को सफल करके उसको विद्वान् न बनाए, यह कैसे हो सकता है ? खानदान में बाप के लिए भी वड़ा भारी उपालम्भ और उलाहना होता है और लोग शिकायत करते हैं कि आपका बेटा ? आप इतने बड़े विद्वान् हैं, और आपका बच्चा जाहिल रह गया, क्या वजह ? इसका कोई कारण तो होना चाहिये। इसलिए कहते हैं, परमात्मा चूंकि हमेशा से जानता है इस बात को कि मेरा अपना इल्म सफल जीवात्मा के होने से ही है। मैं तो बल्कि इतना कह देता हूँ कि जीवात्मा न हो और प्रकृति न हो तो ईश्वर भी नहीं होगा, बल्कि न होने के बराबर होगा। किस के लिये होगा फिर यह ? अगर प्रकृति नहीं तो अपनी कारीगरी काहे में दिखाए ? यह जगत् गूंनगूं प्रकार का बनाया है, देख-देखकर आदमी आश्चर्य करते हैं। ज़रा चले जाएं मछलियों को ही देख लें बम्बई के अन्दर, उस जगह चले जाएं जहां बहुत-सी चीजें परमात्मा की बनाई हुई उन्होंने इकट्ठा की हुई हैं कारीगरी को दिखाने के लिये। वहां आदमी जान लेगा कि इतनी कारीगरी भगवान् में होते हुए कैसे ज़ाहिर करता वह ? इसलिए अपनी कारीगरी को ज़ाहिर किया प्रकृति के ज़रिये से और इल्म को ज़ाहिर किया जीवात्मा के ज़रिये से। और वह जीवात्मा, जो थोड़ा-सा इल्म ले सका है, जो थोड़ा-सा ज्ञान भगवान् से ले सका है उससे कितने-कितने करिश्मे कर

रहा है ? यह मौजूद है (माइक्रोफ़ोन) और साथ ही यह चीज़ (टेपरिकार्डर) मौजूद है। मैं बोल रहा हूँ और बराबर इसके अन्दर रिकार्ड होता चला जा रहा है। क्या चीज़ है ? ज़रा समझ लीजिए। इन्सान, उसकी हस्ती है ? लेकिन ईश्वर का ज्ञान जिस मिक़दार में इन्सान को प्राप्त हुआ है। कि कितनी बड़ी तरक्की होती चली जा रही है टेलीविज़न अब आ गया है, जिससे आप व्याख्यान देने वाले को हज़ारों मील दूर होते हुए भी देख लेंगे और उसके व्याख्यान को भी सुन लेंगे, चाहे कितने ही फ़ासले पर क्यों न हो। क्या जीज़ है यह ? यह है कि भगवान् से जो कुछ लिया है, (मुस्तआर) उधार माँग कर जो इल्म लिया हुआ है उस इल्म का यह करिश्मा है, जिससे लिया है उसके अन्दर कितना होना चाहिए इसका अनुमान कीजिये। इस वास्ते इस बिना पर कि परमात्मा के पास हमेशा से जीवात्मा है और प्रकृति भी हमेशा से है, यह देखकर वह खाली कैसे बैठा रहे ? खाली बैठने के लिए लोग क्या कहा करते हैं ? 'An idle mind is a devil's workshop.' (एन आइडल माइन्ड इज़ ए डेविल्ज़ वर्कशॉप) खाली बैठना शैतान की दुकान है। इसलिए हमेशा से खुदा खाली नहीं बैठा हुआ। यह सवाल हम मुसलमानों से किया करते हैं "आप यह बताइये कि जब अकेला खुदा ही खुदा था और कोई नहीं था—वह ऐसा मानते हैं कि सिवाय ईश्वर के कोई नहीं था 'कानल्लह व लम् यकुल्लहू शैया' अर्थात् अल्लाह था और उसके साथ कोई नहीं था। जब साथ कोई नहीं था तो खुदा किसके लिए था ? कोई तो कहते हैं "उसने अपनी क़ुदरत को दिखाने के लिए दुनिया पैदा की" "किसको दिखाने के लिए ?" जिसको दिखाना है वह तो पैदा ही नहीं हुआ था। जिसको दिखाना है वह तो पहले होना चाहिये, नहीं है तो किसको दिखाता ? कोई शय मौजूद होनी चाहिये जिसको दिखाना चाहते थे ? जब कोई मौजूद नहीं था तो किसको दिखाने के लिये दुनिया बनाई ? क़ुर्आन में आया है 'माख़लक़तुल्जिन्न वल् इन्सान इल्लालि या बुदून्' हमने जिन्न व इन्सानों को अपनी इबादत के लिये बनाया, अपनी उपासना के लिये बनाया। बात अच्छी है, लेकिन फिर उनसे पूछा कि "अपनी उपासना कराने से पहले उसकी क्या हालत थी ?" क्या वह चाहता था कि मेरी उपासना हो, अगर वह यह चाहता था तो इतने वक़्त तक बग़ैर उपासकों के कैसे रहा ? क्यों नहीं पैदा किबे उसने अपने उपासक ? अपने

आबिद जो उसकी इबादत करते ? क्यों खामोश रहा ? क्या वजह थी जिस-की वजह से बेकार रहा ? क्या चीज़ थी जिसकी वजह से वह असमर्थ रहा ? कोई न कोई कारण होना चाहिये ? क्या करता था वह उससे पहिले ? ऐसे बहुत-से ऐतराज़ पैदा हो जाते हैं। लेकिन यहाँ वैदिक धर्म में नहीं होते। जो पूछेगा "परमात्मा दुनिया बनाने से पहिले क्या कर रहा था ?" उत्तर होगा "प्रलय कर रहा था।" दिन से पहिले क्या है ? बोले "रात" और रात से पहले क्या है ?" "दिन।" अब इस समय रात में क्य कर। रहा है ? ईश्वर ? यह कर रहा है कि रात बढ़ रही है, बारह बजे तक रात बढ़ेगी और बारह बजे के बाद दिन शुरू हो जाएगा। क्या कोई ऐसा वक़्त है इस रात और दिन में जहाँ कोई कम और ज्यादा न हो रहा हो ? रात के बारह बजे दिन बढ़ने लगेगा और दिन के बारह बजे फिर रात शुरू होने लगेगी और रात के बारह बजे तक बढ़ेगी। कोई वक़्त भी घटने और बढ़ने से खाली नहीं है। इसी तरह भगवान् हमेशा से दुनिया को पैदा करता है और फ़ना करता है, और चला आ रहा है। कोई वक़्त उससे खाली नहीं है। उसके काम में कोई शुरू नहीं है क्योंकि वह खुद शुरू वाला नहीं है। वह Beginningless है और वह Endless है, न उसका आरम्भ है और न उसका ख़ातमा है क्योंकि अनादि पदार्थ ऐसे ही हुआ करते हैं। तो इसलिये जब से वह है, जब से प्रकृति है, जब से जीवात्मा है, तभी से बराबर जगत् का सिलसिला चला आ रहा है। यह जो सवाल बीच में मैंने आपके सामने पेश किया था, उसके बारे में बहुत-से आदमी पूछा करते हैं कि "सिरदर्दी ईश्वर ने क्यों मोल ली है ?" मैंने कहा—"सिरदर्दी ईश्वर के लिये नहीं है" इनके तीन वजूहात हैं। वे ये हैं :—

१. ज्ञान की कमी, २. पहुँच की कमी, ३. शक्ति की कमी।

कहीं देख लीजिये, एक आदमी कहता है, महाराज पण्डित जी, मेहरबानी करके हमारी मदद कीजिये, आप विद्वान् हैं और हम विद्वान् नहीं हैं। इस-लिए आप जानते हैं, हम नहीं जानते हैं। इस सम्बन्ध में आप हमारा सहारा बन जाइए। एक बात।

दूसरे कहते हैं हमारी पहुँच नहीं है, वहाँ तक आपकी पहुँच है, आपकी मुलाकात है। हमारी पहुँच नहीं है। पहुँच न होने की वजह से हमारा काम

नहीं हो रहा है। इसलिये कहते हैं कि यह कमी दूसरी है।

तीसरी क्या है ? इतनी शक्ति नहीं है, हममें ताकत नहीं है। तो बोले तीन बातों की वजह से आदमी माजूर है। ताकत न होने की वजह से, इल्म न होने की वजह से, पहुँच न होने की वजह से। परमात्मा में तीनों कमियाँ नहीं है, तीनों पूर्णताएँ हैं। वह हर जगह मौजूद है, कोई जगह उससे खाली नहीं है, हर जगह उसकी पहुँच है, कौन ऐसी जगह है जहाँ उसकी पहुँच नहीं है ? प्रत्येक चीज़ के अन्दर वह व्यापक है, छोटी-से-छोटी चीज़ में व्यापक है, हर जगह पहुँच है, उसे यह परेशानी नहीं। सर्वशक्तिमान् है वह। कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो उसकी पहुँच में न हो। फिर सर्वज्ञ है, सब कुछ जानने वाला है, कोई चीज़ उसके इल्म से छिपी नहीं हैं, चूंकि यह तीनों कमियाँ भगवान् में नहीं हैं, मनुष्य में हैं, इसलिये मनुष्य अपने खयाल से कह देता है कि "यह सिरदर्दी क्यों मोल ली है" वर्ना कोई सिरदर्दी नहीं है। उसके लिये निहायत खुशी की चीज है, क्यों कि उसका होना सफल हो रहा है। कोई उसे मुश्किल नहीं है। इस तरह पर जैसे हम सांस लेते हैं। आप काम करते हैं, सब कुछ करते हैं लेकिन यह बहुत कम खयाल करते हैं कि हम साँस ले रहे हैं। जैसे सहज स्वभाव से हम साँस लेते हैं शास्त्र में लिखा है कि "परमात्मा इसी तरह जगत् की उत्पत्ति करता है।' उसके ऊपर कोई बोझ नहीं है, कोई भार नहीं है, कोई मुश्किल नहीं है, कोई सिरदर्दी नहीं है। इस वास्ते जिन लोगों ने यह सवाल किया, गलती की। भगवान् वजूद को सफल कैसे करे अगर यह चीज न हो तो ? इसलिये कहते हैं अपने वजूद को सफल करता है और अपने इल्म के आधार पर ही कार्य कर रहा है। वही अहमद मसीह साहिब जिनका मैंने ज़िक्र किया था कि ईसाई धर्म के प्रचारक थे, गुज़र गये बेचारे, बड़े लायक आदमी थे। उन्होंने सवाल किया एक दफा मुझसे कि "पण्डित जी ! क्या दर्खास्त की थी जीवात्मा ने खुदा से कि आप हमें दुनिया में भेजिये और हम सुकर्म करेंगे या कुकर्म करेंगे तो आप हमें फल दीजिए ? क्या उसने दर्खास्त की थी ?" मैंने पूछा पादरी साहिब से "दर्खास्त तो तब करे जब उसकी जबान हो ? जबान तो है ही नहीं। दर्खास्त कैसे करे ? यह तो खुदा को खुद ही समझना चाहिये कि अगर खुदा की ख्वाहिश है कि जीवात्मा दर्खास्त करे तो बिना उसकी दर्खास्त

के पहले उसे जबान दे। वह दर्खास्त काहे से करे? वह तो माजूर है, इसलिये बग़ैर उसकी दर्खास्त के पहले उसे जबान देवे और जब जबान दे दे तब इन्तजार करे कि हाँ क्या कहता है वह?" 'मुझे बताइये' पादरी साहिब से मैंने कहा—यह बात ठीक है कि नहीं? मुस्कराने लगे, कहने लगे, हाँ बात ठीक है। इस वास्ते भगवान् ने अपने इल्म की बिना पर यह समझा कि अगर मेरी यह ख्वाहिश है कि जीवात्मा अपनी तमाम बातों के मुताल्लिक मुझ से दर्खास्त करे तो उसको अपने इल्म की बिना पर पहिले इसे जबान देनी चाहिये। पूछने की जरूरत नहीं, उसकी हालत जो तकाजा कर रही है, उसी हिसाब से काम करे।

जीवात्मा की हालत शुरू से यह तक़ाजा कर रही है। क्या कर रही है? 'हे भगवन्!' तुम ज्ञानस्वरूप हो, मुझे ज्ञान प्रदान करो। "हे परमात्मन्! आप तमाम साधनों से युक्त हो और तमाम चीजें आपके पास हैं, प्रकृति आपके पास है। आप मुझे साधन दीजिये जिससे कि मैं आगे उन साधनों से तरक्की कर सकूं।" इसलिए मन्त्र में कहा है—"य आत्मदा बलदा" जो आत्मज्ञान का दाता है और बलप्रदाता है। बल आता है साधनों द्वारा साधन न हों तो बल नहीं आता। इसलिए कहते हैं दोनों प्रकार के बल की प्रार्थना उस मन्त्र में की गई है।

तो ईश्वर ने जगत् क्यों उत्पन्न किया? अब कहना चाहिए कि जीवात्मा के लाभ के लिए जीवात्मा की तरक्की के लिए—अपने लिए नहीं—हाँ अपना होना सफल यों हुआ वर्ना परमात्मा का होना सफल नहीं होता। मेरा व्याख्यान देना और वाक़फ़ियत जो मेरी है वह सफल कब होती है? जब होती है कि जो आदमी नहीं जानते हैं या कम जानते हैं वह जानने लगें। मेरा जानना सफल हो जाता है। सुनने वाले मुझसे सुनें, तो मेरा बोलना सफल हो जाता है। यह दुनिया निहायत माकूल अजजा से बनी हुई है। माकूल अजजा के क्या मायने हैं? कि जितने जुज जरूरी है किसी अच्छे नतीजे को पैदा करने के लिए, वह अनादि काल से चले आ रहे हैं।

(हीगल फिलासोफ़र Hegal Philosopheer) ने कहा था कि—(Whatsoever is, is according to reason and whatever is according to reason, that is." (ह्वाटसोएवर इज, इज एक्कार्डिंग टु

रीज़न एण्ड ह्वाटएवर इज़ एक्कार्डिंग टु रीज़न, दैट इज) जो अक्ल के मुताबिक है वह है और जो है वह अक्ल के मुताबिक हैं। पहले "है" को देख लीजिये अक्ल के मुताबिक है कि नहीं ? क्या जीवात्मा जगत् में मौजूद है, शरीर उनके दिये हुए हैं और वह जीवात्मा कुछ न कुछ रात दिन हासिल करता है। कोई धन हासिल करता है, कोई शोहरत हासिल करता है, कोई इल्म हासिल कर रहा है। हासिल कर रहा है, रात दिन हासिल कर रहा है। और हासिल करने में लगा हुआ है, क्योंकि उसके पास कमी है। एक ओर तो सारे जीवात्माओं को रख लीजिये दूसरी ओर प्रकृति है। प्रकृति उन जीवात्माओं का साधन है, Instrument (इन्स्ट्रुमेंट) है इनका वह औज़ार है। उन औजारों से जीवात्मा आगे काम करता है। एक शख्स बाइसिकल पर चला जा रहा है, बाइसिकल उसका औजार है। किससे बना है ? प्रकृति से, matter (मैटर) से। तो इस वास्ते कहते हैं कि तीन चीजें हैं माद्दा (प्रकृति), जीवात्मा और परमात्मा। परमात्मा ने जीवात्मा के लिये प्रकृति से जगत् बनाया है। फिर सुन लीजिये, परमात्मा ने जीवात्मा के लिये प्रकृति से जगत् बनाया या उत्पन्न किया और कहा कि तुम इस साधन से तरक्की करो जहाँ तक तुम में योग्यता है। मैं तुम्हारा सहारा बनूंगा। और बना हुआ हूँ अनादि काल से अनन्त काल तक बराबर मैं तुम्हारा सहारा रहूँगा और उस सहारे से तरक्की करते चले जाओ। तो क्या बात है ?

यह दुनिया जो है वह तीन चीजों से बनी हुई है और ये तीन चीज़ें वही हैं जैसा कि Hegal Philosopher ने कहा—"Whatsoever is, is according to reason and what is according to reason, that is. वह क्या है ? दुनिया में शुरू से ही अर्थात् शुरू कब से ? जब से दुनिया बनी है—क्या कोई वक्त ऐसा भी था जब दुनिया नहीं थी —नहीं यह मतलब नहीं है। कहने का मतलब यह है कि जबसे यह दुनिया का सिलसिला चला आ रहा है। आप देखेंगे कि ये तीनों ही चीज़ें हैं ईश्वर, जीव और प्रकृति। और इन तीन चीजों को ही आप बराबर देखते चले जाइये। आप बाजार में चले जाइये, तो वहाँ क्या मिलेगा ? दुकानदार, खरीदार और चीज। लेकिन अगर वहाँ ऐसी तीन दुकानें खुली हों, कि दरवाजे तो खुले हों लेकिन उनमें से एक में चीज़ें भी हों, और दुकानदार भी हो लेकिन खरीदार

न हो तो दुकानदार चीज किसे बेचेगा ? ऐसी अवस्था में दुकानदार कहा करते हैं "जी मंदा हो रहा है।" दूसरी दुकान में चीज़ें भी हैं खरीदार भी हैं लेकिन दुकानदार नहीं है तो बेचेगा कौन ? तीसरी में दुकानदार भी है, खरीदार भी है चीज नहीं है तो दुकानदार देगा क्या ? यह दुकानें खुली हुई भी बन्द के समान हैं क्योंकि एक में चीजें बेचने वाला नहीं, दूसरी में चीजें खरीदने वाला नहीं और तीसरी में चीजें नहीं हैं। इसलिए कहते हैं तीन में से किसी एक को निकाल दीजिये बाज़ार बन्द शुमार किया जाएगा। तो वह तीन बराबर चले आ रहे हैं उसी तरह पर। हमारे ऋषि-मुनियों ने हमारे जीवन में इन चीज़ों को रखकर यह यक़ीन दिलाया है कि कहीं भूल मत जाना इस दुनिया की पूर्णता तीन पर है। परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति पर पूर्णता है। वहाँ, जहाँ बाज़ार में नीलाम हो रहा है, चले जाइए। एक मुसलमान साहब, जो हमारे मज़हब के नहीं है, चीज़ें नीलाम कर रहे हैं। क्या नीलाम हो रहा है ? पुरानी चीजें रखी हैं। किसी ने कह दिया दो रुपये। अब आवाज़ लगा रहा है वह 'दो रुपया एक, दो रुपया दो' बोल रहे हैं बार-बार। कोई आगे नहीं बढ़ता। फिर किसी ने कह दिया "तीन रुपये" तो मियाँ जी ने तीन रुपया एक, तीन रुपया दो, की आवाज़ लगानी शुरू कर दी। बहुत देर जब हो गई तो उसने कहा, "साहिब अब जाती है तीन रुपये में" और कह दिया कि तीन रुपया 'तीन' और चीज तीन रुपये में बिकी मान ली गई। 'तीन रुपया तीन' कहते ही खरीदने वाला तीन रुपये देकर और चीज़ लेकर चला गया। कोई पूछता है उस नीलामकर्ता से कि 'तीन पर क्या वबाल है ? यह क्या वजह है कि यह तीन कहकर आप अपनी बोली समाप्त कर देते हैं, क्यों तीन पर ही खत्म करते हैं ? ये चार, पाँच, छः क्यों नहीं बोलते हैं ?" तो मियाँ जी कहने लगे "मैं क्या जवाब दूँ साहब इसका ! यह तो पुराने जमाने से चली आ रही है, किन्हीं बड़ों से पूछिये।" जब रास्ते में आ रहे थे तो क्या देखते हैं कि मास्टर साहब लड़कों को दौड़ा रहे हैं और कह रहे थे देखो जब वन, टू और थ्री कहूँ तो थ्री पर भागना। "अरे आप मैथमैटिक्स (गणित) के अध्यापक हैं, थ्री, फोर, फाइव, सिक्स, सेवन, क्यों नहीं बोलते ?" किसी ने कहा। उन्होंने कहा, "अरे ! ऐसे बोलेंगे तो काम नहीं होगा, लड़के कैसे दौड़ेंगे ?" देखिये वन, टू, थ्री कह कर लड़कों को दौड़ाया जा रहा है। और जो पास होकर आते हैं वे फ़र्स्ट

डिविजन, सेकण्ड डिविजन और थर्ड डिविजन में आते हैं, फोर्थ डिविजन नहीं। रेल में बैठते हैं तो वहाँ भी फर्स्ट क्लास, सेकण्ड क्लास और थर्ड क्लास है। घर में आ जाइये तो क्या देखते हैं कि स्त्री है, पति है और बच्चे हैं। तीन चीजें वहाँ भी हैं। यहाँ देखिये तो मैं (व्याख्याता), व्याख्यान और आप (श्रोता)। इन तीनों में से कोई एक चीज निकाल दीजिये—मैं व्याख्यान देना बन्द कर दूं, चुपचाप बैठ जाऊँ तो लोग कहेंगे कि "इसे ऊपर क्यों बिठा रखा है, और नीचे क्यों बैठे हैं, सब खामोश हैं आखिर बात क्या है ?" आप चले जाइये मैं व्याख्यान देने लगूं तो लोग कहेंगे कि "यह बेवकूफ है या पागल है ? जो बहक रहा है ? गर्मी तो इतनी है नहीं, यहाँ तो हवा चल रही है ; शायद कोई खराबी हो गई है जो व्यर्थ बोल रहा है।"

जरा विचारिये। कोई एक चीज आप इन तीन में से निकाल दीजिये व्याख्याता, श्रोता और व्याख्यान। यह तीन चीजों का नमूना किसी रूप में बराबर चला आ रहा है। कहने का मतलब यह कि दुनिया ऐसे माकूल अजजा से बनी हुई है कि जिसका कोई खण्डन आज तक नहीं कर सका। जिस किसी ने भी इस सम्बन्ध में कोई शङ्का की मैंने यही उत्तर दिया कि तीन के बगैर कोई भी चीज़ पूरी होती ही नहीं। मुसलमानों से पूछा कि खुदा दुनिया किसके लिए बनाता है ? कोई होना चाहिए जिसके लिए खुदा ने यह दुनिया बनाई। ईसाइयों से भी यह बात पूछी। किन्तु वे भी कोई सन्तोषजनक उत्तर न दे सके।

मेरे यहाँ तो इस प्रश्न का सीधा-सा उत्तर है कि जीवात्मा हमेशा से परमात्मा के साथ है और ईश्वर अनादिकाल से जब से जीवात्मा उसके साथ है जानता है कि जीवात्मा महदूदुलअक़्ल है। छोटे से छोटे जानवर के शरीर में भी जीवात्मा है। जीवात्मा अत्यन्त सूक्ष्म है। जैसा गीता में कहा है:—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः॥

जीवात्मा इतना सूक्ष्म है कि 'बालाग्रशतभागस्य शतधाकल्पितस्य च' बाल के अग्र भाग के दस हजारवें हिस्से के समान। शास्त्र ने जीवात्मा को इतना सूक्ष्म बताया है। इस कहने का तात्पर्य यह है कि जो जीवात्मा इतना छोटा है वह सर्वज्ञ कैसे हो सकता है ? वह all-knowledge तो नहीं हो सकता।

परमात्मा जानता है कि जीवात्मा असंख्य हैं और मेरे आधीन हैं तो मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं उन्हें ज्ञान दूं, क्योंकि मैं all-knowledge हूँ, मैं सर्वज्ञ हूँ, सब कुछ जानता हूँ। कितना अच्छा हो यदि मेरे ज्ञान का लाभ मैं भी उठाऊँ और ये जीवात्मा भी उठाएँ। यदि कोई व्यक्ति अपने ज्ञान से दूसरों को लाभ न पहुंचाये तो लोग उसे स्वार्थी कहते हैं। और यदि कोई व्यक्ति अपने ज्ञान से अन्यों को भी लाभान्वित करें तो उसे लोग परोपकारी कहते हैं। तो परमेश्वर भी परोपकारी है। जीवात्मा के भले के लिए, जब से वह है बराबर अपना ज्ञान देता चला आ रहा है। एक लम्हा के लिए भी उसने अपना काम बन्द नहीं किया है। जीवात्मा का वजूद, उसके अन्दर जो योग्यता उन्नति करने की है उसके विकसित होने से है। यह उन्नति ईश्वर के सम्पर्क से हो रही है। जैसे बच्चे के अन्दर जो क़ाबलीयत व योग्यता इल्म के हासिल करने की है वह उस्ताद की क़ुरबत से, अध्यापक के सान्निध्य से, बढ़ती जा रही है। वह इल्म में रात-दिन ऊँचा होता चला जा रहा है इसी प्रकार जीवात्मा ईश्वर के सान्निध्य से, जो उसका उस्ताद है, ऊँचा होता जाता है। उसका ज्ञान उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। ईश्वर अपने ज्ञान को इस प्रकार सफल कर रहा है। प्रकृति, यह कहती है—वास्तव में कहती तो नहीं है—किन्तु ज़बाने हाल से कहती है, क़ौल से नहीं कि मैं भी सफल हो रही हूँ क्योंकि परमात्मा अपनी कारीगरी में मेरी क्षमता को ज़ाहिर करके बता रहा है कि प्रकृति से क्का-क्या लाभ उठाए जा सकते हैं। तो परमात्मा की कारीगरी प्रकृति को ज़ाहिर कर रही है और परमात्मा का इल्म जीवात्मा के गुण को ज़ाहिर कर रहा है। जीवात्मा उस ज्ञान से अपना विकास कर रहा है। भगवान् ने जगत् क्यों बनाया? ऊपर के वर्णन से स्पष्ट हो गया कि भगवान् जीवात्मा और प्रकृति का अस्तित्व सफल हो जाए इसलिए परमात्मा ने दुनिया बनाई।

जीवात्मा अपनी योग्यतानुसार मेरे ज्ञान के बल पर अपना विकास करे, अपनी उन्नति करे। और प्रकृति के अन्दर जितनी भी योग्यता है, उससे विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बन सकती हैं वह मैं सब अपनी कारीगरी से ज़ाहिर कर दूं। तीनों का वजूद सफल हो जाएगा इसीलिए भगवान् ने यह जगत् उत्पन्न किया है। औरों के यहाँ इस प्रश्न का—"ईश्वर ने दुनिया क्यों पैदा की?" कोई माक़ूल उत्तर नहीं है।

मुझे बल है, मैं ५३ वर्ष से इस प्रचार कार्य को कर रहा हूँ, शास्त्रार्थ मैंने किये हैं — मैं यह बात अभिमान से या अपनी योग्यता के आधार पर नहीं कहता हूँ, मैं यह बात सच्चे सिद्धान्त के आधार पर कहता हूँ, कि हमारा हथियार अच्छा है और उसी के आधार पर हम कह सके हैं कि दुनिया में तीन से कम अनादि पदार्थ वालों का सिद्धान्त अधूरा है, पूरा नहीं है। अकेला खाविन्द हो तो क्या परिवार बढ़ेगा ? कदापि नहीं। गृहस्थ को एक छोटा सा जगत् समझ लीजिये। इसमें ब्रह्म की जगह खाविन्द, प्रकृति की जगह स्त्री और जीवात्मा के स्थान पर बच्चे हैं। परिवार इन तीनों के होने से ही पूरा होता है। कोई आदमी अपने घर में अकेला रह रहा था। किसी ने पूछा "क्या बात है भाई, शादी नहीं की ? " कहने लगा 'कोशिश तो बहुत की लेकिन शादी होतीं ही नहीं। और कहीं हो भी गई तो होने के बाद सन्तान न हुई। तो जब तक सन्तान न हो पाए, नामुकम्मल परिवार कहलायेगा। पूरा कब कहलायेगा ? जब बच्चे भी हों, देवी भी हो और स्वयं भी हो। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड में परमात्मा है, वाजीत्मा है और प्रकृति है। इन तीनों से ही जगत् की पूर्णता है। इसलिए Hegal philosopher की यह उक्ति कि Whatsoevr is, is according to reason, and whatever is according to reason, that is. संसार की सभी वस्तुओं के लिए उचित बैठती है। दुनिया में हर चीज अक्ल के मुताबिक है।

यह खयाल या प्रश्न कि 'ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई' यह इसलिए पैदा होता है कि इस दुनियाँ में आदमी जो भी काम करता है अपनी ग़रज़ को लेकर करता है। मनुष्य का यह स्वभाव बन गया है। कोई आदमी इलेक्शन में खड़ा होता है। क्या जनता की भलाई के लिए ? नहीं ! बिल्कुल नहीं स्पष्ट कथन है। उसका अपना स्वार्थ होता है जिसे वह दृष्टि में रख कर चुनाव लड़ता है। चाहे वह इसके द्वारा प्रतिष्ठा चाहता हो, चाहे शोहरत चाहता हो या धन चाहता हो। तो ज्ञात हो गया कि मनुष्य सारे कार्य स्वार्थवश करता है, अपनी ग़रज़ को लेके करता है उसी को मुख्य या मुक़द्दम रखता है। तो लोगों ने इसी आधार पर ईश्वर के बारे में भी सोचा और खयाल किया कि ईश्वर की भी दुनिया की उत्पत्ति में कोई ग़रज़ है। मैं कहता हूँ कि दुनियाँ के बनाने में खुदा की कोई ग़रज़ नहीं है और यदि कोई

Impetus है तो यही है कि अगर मैंने अपने इल्म को, अपनी कारीगरी को दुनिया में ज़ाहिर न किया तो मैं निकम्मा रहूँगा, useless रहूँगा। यही एक कारण है जिसकी वजह से ईश्वर जगत् को अनन्तकाल मे उत्पन्न करता चला आ रहा है। यह सिलसिला अटूट है।

जीवात्मा मौजूद है। परमात्मा ने जगत् बना दिया। जीवात्मा को शरीर प्रदान करके ईश्वर कहता है कि "मैं तुझे मनुष्य का शरीर प्रदान करता हूँ जिससे तू मननशीलता से काम करे। जैसे मैंने मननशीलता से जगत् को बनाया है तू भी मननशीलता से काम कर। तू भी मननशीलता से अपना छोटा जगत् बना सकता है। तेरे को मैं ज्ञान प्रदान करता हूँ (सृष्टि को आदि में भगवान् ने वेदों का ज्ञान दिया) तू इसके द्वारा उन्नति कर"। इस ज्ञान के आधार पर जीवात्मा ने उन्नति और अवनति करनी प्रारम्भ की। दोनों काम कर सकता है न? कहना मान भी सकता है और न भी माने, फ़र्माबरदारी करे, और न भी करे, दोनों बातें हैं। Capricious will है न जीवात्मा की। जीवात्मा स्वतन्त्र है, जीवात्मा चाहे अच्छा करे चाहे बुरा करे, उसकी मर्ज़ी है। और इसी के लिए सज़ा और जज़ा है, बाक़ी और योनियों वाले जीवात्माओं के लिए नहीं है। क्योंकि बाक़ी तो जेलखाने के क़ैदी हैं, वह तो जहाँ हैं तहाँ हैं। वह तो उसी महदूद दायरे में रहते हैं आगे नहीं निकल सकते। इन्सान के लिए ऐसा नहीं है वह स्वतन्त्र है। तो वह अपनी इन्द्रयों को, अपने मन को और अपनी बुद्धि को जिस तरह चाहे वैसे प्रयोग में लावे। चाहे अच्छी तरह काम में लाए, चाहे बुरी तरह काम में लाए। दुनिया में पाप और पुण्य और कुछ नहीं है केवल अपनी ताकत का ग़लत या बेजा इस्तेमाल पाप है और बजा या उचित इस्तेमाल पुण्य है। अतः अपनी शक्ति का उचित उपयोग करें, अनुचित न करें। भगवान् ने सब कुछ जता दिया और जताने के बाद शरीर दे दिया और कह दिया कि अब तो उचित-अनुचित का विचार करके अपना कार्य करता चला जा। यदि वह अपनी शक्तियों का उचित उपयोग करता है तो दुबारा भी मनुष्य-योनि प्राप्त कर लेगा। किन्तु शक्ति का अनुचित प्रयोग करने पर ईश्वर उसको मनुष्य योनि के योग्य नहीं समझता और उसे नीची योनि में भेज देता है क्योंकि उसने दूसरों को नुकसान पहुँचाया है, अपनी स्वतन्त्रता का ग़लत इस्तेमाल किया है। कैसे? एक

मिसाल से आप समझ जायेंगे। एक बच्चा स्कूल में जाता है। लेकिन बच्चा बड़ा उद्दण्ड है—किसी की कापी फाड़ देता है, किसी की किताब फाड़ देता है, किसी की स्याही उंडेल देता है, किसी को मारने लगता है, किसी के कान खींच लेता है, खूब शरारत करता है। मास्टर उसके संरक्षक से शिकायत करते हैं कि 'तुम्हारा बच्चा ठीक नहीं है, उसको मना कीजिये। अगर आगे वह अच्छी तरह बरतेगा तो उसको स्कूल में रखेंगे वर्ना निकाल देंगे।' लेकिन पुरानी आदत है, "जल्दी छूटती नहीं है। इसलिए क्या हुआ कि बच्चा जब दुबारा स्कूल में गया तो उसने वही शरारत करनी शुरू की। मास्टर ने उसके पिता को लिख दिया कि आपका बच्चा स्कूल में नहीं आ सकेगा। इसलिए आप इसे स्कूल न भेजिए, हमने इसे स्कूल से निकाल दिया है, वह अन्य बच्चों पर बुरा प्रभाव डालता है। इस पर बाप बहुत नाराज़ हुआ लड़के पर और कहने लगा कि "मैंने तुझे मना किया था कि तू आगे ऐसा काम न करना और तुझे आज़माइश के लिए स्कूल में भेजा था। लेकिन आज़माइश में भी बाज़ नहीं आया और शरारतें कीं। अब तुम यहीं रहो। तुम्हें हम बाहर नहीं निकलने देंगे। पेशाब और पाखाने के लिए भी पूछ के यहीं जाओ। बाहर बिल्कुल नहीं जाना है। खाने व पानी पीने के लिए भी कर जाना। पूछ जैसे अपने बच्चे को बाप ने क़ैद कर दिया, इसी प्रकार परमात्मा, उन जीवात्माओं को जो उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते हैं, उसकी हिदायतों के बखिलाफ़ चलते हैं उन्हें दूसरी नीची योनियों में गधा, कुत्ता आदि में भेज देता है। यहाँ ये महदूद दायरे में रहते हैं उससे आगे नहीं जा सकते। इस प्रकार उन्हें क़ैद कर देता है।

इन्सानी जिस्म में तो जीवात्मा दोनों जगह एक-सा है। गवर्नमैंट के क़ैद-खाने में भी इन्सानी जिस्म में है और स्वतन्त्र स्थान में भी इन्सानी जिस्म में है। व्याख्यान दे रहा हूँ किन्तु कोई ऐसा काम करूँ जिससे मुझे जेलखाने में जाना पड़े तो इसी जिस्म के साथ चला जाऊँगा लेकिन भगवान् का ऐसा क़ायदा नहीं है। भगवान् जब क़ैद करता है तो जिस्म बदल देता है और अवस्था भी बदल देता है। अब वहाँ जाकर वह आगे नहीं बढ़ सकेगा। गधे को आज तक यह मौका नहीं हुआ कि वह वेद पढ़े, चाहे उस पर हज़ार वेद लाद दीजिये। कहीं शास्त्रार्थ में जाना हो और उस पर वेद लाद कर ले

जायें तो वह पंडित नहीं कहलायेगा। उसको तो वह बोझ ही है। तो भगवान् ने जीवात्मा से वह चीज (उसकी स्वतन्त्रता) छीन ली जिसके वह लायक नहीं है, योग्य नहीं है या जिसका वह अनुचित प्रयोग करता है। तो लड़के का पिता द्वारा क़ैद किया जाना ईश्वर की व्यवस्था की नक़ल है। यह कोई नई चीज नहीं है। हम कोई नई चीज पैदा नहीं कर सकते। Invention कहना बिल्कुल ग़लत है। तमाम नियम मौजूद हैं। इन नियमों के पहचान लेने को और तदनुकूल किसी कार्य को ही तो Invention कहते हैं। परमात्मा की साइन्स के नियम हर जगह pervad करते हैं, कोई जगह उनसे खाली नहीं हैं, हमने केवल उन नियमों को जानकर ही किसी का आविष्कार किया है जिसे Invention कहते हैं। इसलिए दुनिया में हम जो कुछ भी कर रहे हैं वह भगवान् के नियमों को जानकर उनकी नकल कर रहे हैं। भगवान् के तरीक़े से कोई नई चीज हम न करते हैं और न कर सकते हैं। मैंने जो मिसाल दी कि उस्ताद इम्तहान में अपने बेटे को भी नहीं बताता है जो ग़लत जवाब दे रहा है। उसने उसे स्वयं पढ़ाया है। लोगों ने यही मुझ से पूछा था कि "भगवान् हमें बुरे काम से रोकता क्यों नहीं ?" इसलिए नहीं रोकता कि वह इम्तहान का वक़्त है। उसे कैसे रोके ? वह तो आपकी योग्यता की पूरी जाँच करेगा। दूसरे की किसी की नक़ल भी न कर सकोगे। अब पूरे परीक्षण के पश्चात् सज़ा दी गई है। अब उस दोषी जीवात्मा को उसने वहाँ क़ैद कर दिया है। वह अब एक सीमित दायरे में रहे। जो स्वतन्त्र जीवात्मायें हैं वे स्वतन्त्रतापूर्वक अपना कार्य कर रही हैं। परमात्मा ने कहा—"शादी करना चाहते हो तो शादी कर लो। गृहस्थ आश्रम का पालन करो। समाज की व्यवस्था हम करेंगे। तीन फैक्ट्री होंगी जिनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तैयार किये जायेंगे। जिन्होंने ब्राह्मण के गुण हासिल किये हैं वे ब्राह्मण बनेंगे, जिन्होंने क्षत्रिय के वे क्षत्रिय और जिन्होंने वैश्य की योग्यता हासिल की है वे वैश्य बनेंगे। ये तीन फैक्ट्री होंगी जिनके अन्दर ये तीन प्रकार के मनुष्य तैयार होंगे। यह हो सकता है कि उन्नति करके कोई मनुष्य वैश्य से क्षत्रिय या क्षत्रिय से ब्राह्मण बन जाये। यह भी हो सकता है कि अवनति हो जाये और ब्राह्मण से क्षत्रिय बन जाये या क्षत्रिय से वैश्य बन जाये। यह हमारे व्यवहार में भी होता है। मास्टर बच्चों को पढ़ाता है। उन पढ़ाये हुए बच्चों

में कुछ ऐसे होते हैं जो नीची कक्षा के योग्य हों जिन्हें नीची कक्षा में छोड़ना पड़े क्योंकि वे उस कक्षा के योग्य नहीं हैं—मनुष्य की व्यवस्था में भी यह होता ही है, कोई नई बात नहीं है। भगवान् की भी यह व्यवस्था है। ब्राह्मण अधिक से अधिक कोशिश यह करेगा कि उसका बेटा ब्राह्मण बने, क्षत्रिय चाहेगा कि क्षत्रिय बने और वैश्य भी वैश्य ही बनना चाहेगा। किन्तु अगर किसी में अधिक योग्यता है तो वह ऊँचा जा सकेगा। वह रोकने की चीज़ तो नहीं है।

प्रत्येक ख़ानदान में एक दूसरी चीज़ भी हो रही है। तीन पैमाने, वैदिक सभ्यता के बन रहे हैं। माँ, बहिन और बेटी के तीन पैमाने जो बड़े सच्चे व सही पैमाने हैं, आर्य परिवारों के तैयार हो रहे हैं। क्या वहाँ उनकी पवित्रता में कोई शङ्का हो सकती है? अगर भाई अपनी बहिन से बातें कर रहा है, क्या कोई शङ्का करता है? बेटा अपनी माँ से और बाप अपनी बेटी से जब बातें करता है तो क्या कोई शङ्का करता है? क्या किसी को कोई शक होता है? बिल्कुल नहीं होता। वे बिल्कुल पवित्र स्थान हैं। वहाँ रिश्ते की इतनी पवित्रता है कि किसी को शक की गुञ्जाइश ही नहीं है। माँ, बहिन और बेटी के सच्चे पैमाने जो व्यवहार में आते हैं उनका निर्माण हो रहा है परिवारों में।

परिवारों में इन सच्चे पैमानों का निर्माण ईश्वर की ओर से क्यों स्थापित किया गया? इसलिए कि तुम को अपने घर से बाहर जाकर Society (सोसाइटी) में Move (मूव) करना है। वहाँ तुम्हें ग़ैर औरतें मिलेंगी जो तुम्हारे ख़ानदान की न होंगी, न तुम्हारी रिश्तेदार होंगी, न तुम्हारी बिरादरी की होंगी और तुम्हें उनके बीच में काम करना पड़ेगा। वे तुमसे छोटी होंगी, तुम्हारे बराबर की होंगी और तुमसे बड़ी होंगी। इन तीनों के साथ कैसे व्यवहार करना है यह परिवारों में बताया गया है। ये पैमाने ऐसे हैं जिनमें कोई Impurity (इम्प्योरिटी), अपवित्रता नहीं है। ये पैमाने अपने ख़ान-ए-दिल में रखकर के जाओ और बाहर जाकर यदि अपने से बड़ी स्त्री हो तो उसे माता के तुल्य समझो। उन्हीं तीनों पैमानों से उन्हें नाप लो। अपने हृदय को पवित्र रखो और उनके कार्यों में सहायक होकर उनके मार्गों को सुरक्षित बनाओ, उन्हें प्रशस्त करो। आज प्रत्येक पिता अपनी पुत्री को

कहीं अकेला भेजने में शङ्का करता है क्योंकि पैमाने ग़लत होते चले जा रहे हैं। इन पैमानों को बिगाड़ने में सिनेमा मुख्य कारण है। यह मैंने ही अनुभव नहीं किया है, जो सिनेमा-प्रबन्धक हैं और विचारशील पुरुष हैं वे भी यही कहते हैं। मैं एक बार हापुड़ जा रहा था। उसी डिब्बे में एक और साहब भी थे जो सिनेमा का सामान लेकर देहरादून जा रहे थे। वे मेरे वाकिफ़ थे, मुझे कहीं उन्होंने देखा था। मुझे देखने पर उन्होंने नमस्ते की। मैंने पूछा, "कहिये क्या ले जा रहे हैं?" कहने लगे पण्डित जी क्या बतायें, आपसे कहने में शर्म आती है। वे कुछ चल-चित्रों की प्रशंसा कर रहे थे और सिनेमा के बारे में ही बातें हो रही थीं। मैंने उनसे बीच में ही पूछा कि "बताइये सिनेमा द्वारा आपने समाज की क्या सेवा की है?" क्या अच्छा जवाब दिया है उन्होंने! कहने लगे "पण्डित जी आपसे क्या छिपाना है, बिल्कुल सच कहूँगा। हमने आज भाइयों को भी अपने खानदान में ऐतबार के लायक़ नहीं रखा है। सिनेमा का इतना ज़ोरदार प्रचार किया है हम लोगों ने कि मनोवृत्तियाँ लोगों की बिल्कुल बिगाड़ दी हैं, ये अत्यन्त दूषित हो चुकी हैं।" मैं चुप हो गया क्योंकि उन्होंने ठीक बात कह दी। विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं रही है। यही स्थिति है। भाई की वृत्ति भी इतनी बिगड़ चुकी है। पैमाने की वह पवित्रता, जिसका मैंने ज़िक्र किया था, वह समाप्त हो गई है। इस प्रकार की अनेक खराबियाँ आज आप अपने समाज में देख सकते हैं। भगवान् ने इन्हीं खराबियों को रोकने के लिए खानदानों में तीन पैमाने तैयार किये थे। बहन भी होगी, भाई व बाप भी होंगे और धर्मपत्नी भी होगी। और सब साथ रहते हैं। इनकी पवित्रता के बारे में किसी को कोई सन्देह नहीं होता।

एक बार बाजार में भाई-बहन बातें कर रहे थे। उम्र का थोड़ा ही फ़र्क़ था। अन्तर होगा कोई दो या ढाई साल का। किसी ने कहा—"कितने बेहूदे हैं, बातें बाजार में कर रहे हैं खड़े होकर। न जाने कौन हैं कौन नहीं?" उनको वहाँ जानने वाला एक आदमी था, उसने कहा, "तुम्हें मालूम नहीं! ये दोनों भाई-बहिन हैं। अपने स्कूल से दोनों पढ़कर आये हैं और घर को जा रहे हैं।" उसने कहा, "अच्छा यह बात है। तो कोई हर्ज़ की बात नहीं है।" तबीयत से खयाल हट गया। भाई-बहिन कहने का मतलब यह है कि

वहाँ अपवित्रता है ही नहीं। वह तो परिवार का अभिन्न अंग है जो कि आनन्दधाम है। वह ऐसा रिट्रीट (Retreat) आश्रय है जहाँ यदि आदमी के जज़्बात भड़के हुए भी हैं तो घर में आकर शान्त हो जायेंगे या उनको शान्त करना पड़ेगा। इसलिए जीवन में शान्ति बनाए रखने के लिए हमें उन पैमानों को सच्चा रहने देना चाहिए जिससे कि हम जब समाज में कार्य करने निकलें तो हमारे कार्य से या व्यवहार से समाज की शांति भङ्ग न हो जाए। अमन क़ायम रहे। तब यह दुनिया स्वर्ग हो जायेगी।

'य आत्मदा बलदा' इस मन्त्र के अनुसार जिसने अपने को समझ लिया है वह ग़लत काम कर ही नहीं सकता है। 'जोशी अस्पताल' में जहाँ मेरा आपरेशन हुआ था तो डाक्टर ने मुझे वहाँ घूमने के लिए कहा। मैं निकट के अजमल खाँ पार्क में घूमने जाया करता था। लोग प्रश्न पूछा करते थे। एक दिन, एक सज्जन पुरुष ने मुझसे पूछा कि "क्या मांस खानेवाला महात्मा हो सकता है ?" मैंने कहा, "बिल्कुल भी नहीं।" क्योंकि उसने अपनी आत्मा की बेइज्जती की है। अपनी आत्मा क्या कभी चाहती है कि कोई उसे मार दे ? प्रत्येक आदमी अपनी रक्षा करना चाहता है। एक बार किसी नदी के किनारे याद नहीं रहा गङ्गा थी या यमुना—किसी ने शोर मचा दिया कि 'नदी में पानी बढ़ रहा है।' वहाँ हजारों आदमी स्नानार्थ गये थे। वहाँ इतना सुनकर लोगों में कैसी भगदड़ मची। लोग अपनी-अपनी जान के लिए बेतहाशा भागे। कुछ पता ही नहीं चला कौन कहाँ चला गया। कोई दब गया, कोई मर गया। किसी का बच्चा छूट गया, किसी का सामान छूट गया, एक भयंकर स्थिति व दृश्य उपस्थित हो गया ज़रा-सी देर में। यह सब क्या था ? आत्मरक्षा का प्रयत्न था। 'मया ज़ार मोरे कि दाना कशस्त जांदारदो जानशीरीं तर अस्त' इसका अर्थ है चींटी को न सता कि जान रखती है और जान सबसे प्यारी चीज है। जान तो सभी को प्यारी है। तो जिसने यह समझ लिया कि मेरी जान मुझे प्यारी है तो अन्य को भी वैसी ही होगी। फिर क्या वह दूसरी जान को मारेगा ? अगर वह दूसरी जान को मारता है तो स्पष्ट है कि वह अपनी आत्मा की बेइज्जती करता है। इस प्रकार का आदमी महात्मा कैसे हो सकता है ? वह साधारण महात्माओं की कोटि में भी नहीं आता, वह पतितात्मा है क्योंकि वह ऐसा काम करता है जो उसे नहीं करना चाहिए।

किसी को दण्ड देना और चीज़ है। दण्ड सुधार के लिए है। लेकिन जो लोग अपनी ज़बान के ज़ायके के लिए, दूसरों के गोश्त से अपने को मोटा बनाने के लिए जीवों की हत्या कर देते हैं वे पापी हैं। ऐसा उनको नहीं करना चाहिए।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:' यस्य प्रशिषं विश्वे देवा उपासते—जिसके शासन को, जिसकी शिक्षा को सभी विद्वान् लोग स्वीकार करते हैं। कोई ऐसा विद्वान् नहीं है जो उसके नियमों को स्वीकार न करता हो, चाहे वह खुदा को मानता हो या न मानता हो। वह यह कह सकता है कि मैं ईश्वर को नहीं मानता। किन्तु उसके शासन से इन्कार नहीं कर सकता। जो आदमी शासन को मानता है शासक को नहीं मानता, इन्तजाम को मानता है मुन्तज़िम को नहीं मानता उसमें अभी आधी बेवकूफी मौजूद है। क्योंकि दुनिया में क्या कोई इन्तज़ाम बग़ैर मुन्तज़िम के हो सकता है? क्या कोई शासन कभी बग़ैर प्रशासक के हो सकता है? एक सज्जन मुझसे कहने लगे कि 'हमारे जो Prime minister साहब हैं वह गांधी जी की सोहबत में रहकर भी ईश्वर को नहीं मानते हैं। मैंने पूछा "इन्तजाम को मानते हैं कि नहीं?" कहने लगे कि "इन्तज़ाम को मानते है।" तो मैंने कहा "अभी उनका ज्ञान पूरा नहीं हुआ है। इस सम्बन्ध में (ईश्वर के सम्बन्ध में) वे पूरे वाक़िफ़ नहीं कहे जा सकते। इसलिये आधे नावाक़िफ़ कहे जाएंगे। चाहे कितने ही बड़े क्यों न हों।' इस बारे में हमें स्पष्ट कहना पड़ेगा कि जो इन्तज़ाम को माने और मुन्तज़िम को न माने तो वह शख्स पूरे ज्ञान की बात नहीं करता। सूर्य का बराबर बाक़ायदा निकलना, चाँद का धीरे-धीरे घटना-बढ़ना, सब किसी नियामक, शासक या मुन्तज़िम को सिद्ध करते हैं। इसी के आधार पर अपने कार्यक्रम नियत करते हैं। तारीखें मुक़र्रर करते हैं। नहीं तो कैसे वर्ष का अनुमान लगाया जाए। ये कार्यक्रम किस आधार और विश्वास पर आधारित हैं? यह सब बातें प्रभु के अटल नियम के आधार पर कह रहे हैं। उसी के नियम से निश्चित समय पर साल पूरा हो जाता है। तो जो लोग नियम को मानते हैं नियामक को नहीं मानते, इन्तज़ाम को मानते हैं मुन्तज़िम को नहीं मानते, प्रबन्ध को मानते हैं प्रबन्धक को नहीं मानते, वे आधे बेवकूफ़ हैं। यह अज्ञानता, नावाक़फ़ियत लोगों से धीरे-धीरे दूर होगी। तो इस मन्त्र

में प्रभु के शासन के बारे में भी कहा गया है।

एक साहब ने मुझसे पूछा कि, "जब जीवात्मा उल्टे काम करता है, जैसा कहा जाता है वैसा नहीं करता तो भगवान के लिये आवश्यक है कि वह उसे शिक्षा दे।" तो उस शिक्षा देने का विषय बिलकुल अलग है; उसे तनासुख कहते हैं। तनासुख के शाब्दिक अर्थ जायल करना है, पुराना शरीर जायल करके नया शरीर देना है। मुसलमान तनासुख मानते हैं तमासुख नहीं मानते। तमासुख अर्थात् मस्ख कर देना। अंग्रेजी में उसके लिये Transform (ट्रांसफार्म) शब्द आता है। तो वे Transformation तो मानते हैं किन्तु Transmigration (ट्रांसमिगरेशन) नहीं मानते। मैंने उनसे एक बार यह पूछा कि 'क्या जिन लोगों ने खुदा का हुक्म नहीं माना था—कि हफ्ते के रोज मछली का शिकार न करना, कुछ लोगों ने जबान के स्वाद के लालच में किसी न किसी प्रकार शिकार किया; तो खुदा नाराज हो गये थे और उसने उनको बन्दर व सूअर बना दिया। कुर्आन में लिखा हुआ है:—

मल्लअनहुल्लाहु व ग़जिबा अलैह व जअल मिन्हुमुल् क़िरदतवल् खना जीर।

अर्थ:—जिन पर खुदा ने लानत की और उन पर अपना गजब नाजिल किया और बाज को बन्दर और सूअर बना दिया। सूरत पांचवीं। रुकू ६। आयत ६०।

हनफी साहबान तो यही मानते हैं कि जैसी उनकी नौ है, जाति है, Species (स्पीसीज) होती है उसी के मुआफिक खुदा ने उनको बना दिया। लेकिन अब जो अहमदी लोग हैं वे ऐसा नहीं मानते—तो उन्होंने जवाब दिया कि "पण्डित जी नहीं, उनकी सूरतें नहीं बदलीं, रहे तो वे आदमी ही किन्तु उनकी आदतें बन्दर और सूअर जैसी हो गईं। मैंने कहा "यह तो और भी बुरा हुआ" आदमी रहते हुए उनकी आदतें बन्दर और सूअर जैसी हो गईं। जरा ग़ौर कीजिये कि अगर सूअर की आदत वाला आदमी मेरे मकान की ओर आ रहा हो तो वह मेरे पास आयेगा या कहीं और तरफ जाएगा? सूअर की आदत तो गन्दगी खाने की है। तो वह तो गन्दगी की तरफ जायेगा। यह तो अच्छा नहीं मालूम देगा कि शक्ल आदमी जैसी और आदत सूअर जैसी।" यह सुनकर वे शर्माने लगे। आगे मैंने कहा कि "यदि आदमी की शक्ल होती

और आदत बन्दर की होगी तो बिना कारण दरख्त पर चढ़ जायेगा, कभी कोई चीज तोड़ेगा, कोई चीज गिरा देगा। दूसरों का नुकसान करेगा। तो आपका यह सुधार, सुधार नहीं होगा बल्कि बिगाड़ होगा। पुरानी बात ही ठीक है कि खुदा ने उनको बन्दर और सूअर बना दिया। क़ुर्आन के इस लेख से तः हमारी बात सही हो जाती है कि जब इन्सान, इन्सान के योग्य नहीं रहता है तो परमात्मा उसे नीच योनि में भेज देता है।

हमारे एक मित्र हैं। वे एक भजनीक के बारे में कुछ बातें कर रहे थे। कहते हैं कि वे बड़े मज़ाकिया आदमी हैं। जब मज़ाक उड़ाते हैं तो ईश्वर का भी मज़ाक उड़ा देते हैं। कहा करते हैं कि "ईश्वर ने यह क्या किया कि किसी को अमीर बना दिया और किसी को गरीब बना दिया, किसी को लँगड़ा बनाया, किसी को लूला, किसी को एक आँख दी और किसी की दोनों ही फोड़ दीं ? और फिर ऐसी दुनिया बना कर क्या मज़ा ले रहा होगा ? कैसा खुश हो रहा है !" वैदिक सिद्धान्त से ईश्वर के ऊपर यह आक्षेप आ ही नहीं सकता। उसने जो कुछ भी किया है न्यायपूर्वक किया है, उसकी तुला सच्ची है, जिसने जैसा किया है उसी के अनुसार उसे फल मिल रहा है। "अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्" जो कर्म किये हैं उनका फल अवश्य-मेव भोगना पड़ेगा। जो लोग शरीर का दुःख भोग रहे हैं निश्चित रूप से उन्होंने अपने शरीर से दूसरों को कष्ट पहुँचाया है। शरीर से तीन पाप—चोरी, व्यभिचार और हिंसा किये जा सकते हैं। उन पापों के करने के परि-णामस्वरूप मनुष्य को शारीरिक कष्ट होते हैं। दिल्ली में एक मुसलमान फकीर थे जिनकी दोनों टाँगें नहीं थी। पैदाइशी नहीं थी। उनके लिए चलना बड़ा मुश्किल था। क्योंकि वे डगें लम्बी नहीं भर सकते थे क्योंकि उनकी टाँगें बहुत छोटी थीं। जब उन्हें सड़क पार करनी होती थी तो वे किसी की मदद से सड़क पार किया करते थे। तो वे एक दिन मेरे श्वसुर साहब की दुकान पर आए और बोले कि "अल्लाह के नाम पर कुछ दिलवाइये" मैंने कहा उस अल्लाह के नाम पर जिसने बिना वजह आपकी टाँगे ले लीं और दूसरों को दे दीं। देखिए कितने और लोग हैं, उन सबकी टाँगें हैं। वे बड़े अच्छे ढंग से चलते फिरते हैं और आपको चलने फिरने में इतनी तकलीफ़ उठानी पड़ती है। अभी आप इतने मजबूर थे कि दूसरे आदमी की मदद से

सड़क पार कर सके। ऐसे खुदा के नाम पर हम तो आपको कुछ नहीं देना चाहते। "कहिये आपका मज़हब क्या कहता है ?" मज़हब तो कहता है कि "खुदा क़ादिर है जो चाहे सो करे।" मैंने कहा "कुदरत का इतना बेजा इस्तेमाल कि आपकी बिना वजह टाँगें ले लीं और दूसरों को दे दीं।" मैंने आगे कहा, It is excellent to have a giant's strength but it is tyranous to use it like a giant. (इट इज़ एक्सीलेंट टु हैव ए जाइन्ट्स स्ट्रेंग्थ, बट इट इज़ टायरेनस टु यूज इट लाइक ए जाइन्ट) किसी में दानव जैसा शारीरिक बल हो तो यह अच्छी बात बात है किन्तु उसको दानव की तरह प्रयोग में लाएँ यह ज़ालिमाना बात है। खुदा अगर क़ादिर मुतलक है तो इसलिए कि आपकी या किसी की भी टाँगें बिना मतलब छीन ले ? अच्छा अब यह बताइये कि आपका दिल क्या कहता है ?" मियाँ जी ने जवाब दिया कि "हाँ दिल तो कहता है कि कोई न कोई कारण जरूर है। जो मुझे टाँगें न मिलीं और दूसरों को मिल गईं। मैंने जरूर कोई गलती को होगी।" तो मैंने कहा कि "देखिए धर्म तो कहता है कि खुदा कादिर मुतलक़ है वह जो चाहे सो करे और दिल जो खुदा का बनाया हुआ है वह यह कहता है कि नहीं, कोई न कोई वजह जरूर होनी चाहिए। यह साबित हुआ मज़हब खुदा का बनाया हुआ नहीं है और दिल खुदा का बनाया हुआ है। क्योंकि आपने सच्ची बात कही है और आप समझ गए हैं तथा आपने मजहब की बात की ग़लती भी पहचान ली है इसलिए मैं आपको इकन्नी देता हूँ।"

मैं यही अर्ज करना चाहता हूँ कि हमें अच्छी प्रकार से समझ लेना चाहिए कि भगवान् जो कुछ करता है वह हमारे ही कर्मों का फल होता है और मनुष्य-जाति के भले के लिए होता है। कई बार नासमझी और अदूरदर्शिता के कारण बच्चे अपने मां-बाप के कार्यों से रुष्ट हो जाते हैं और उनकी आज्ञाओं के पालन में चूं-चिरा करते हैं।

एक बाबू गौरी शङ्करजी थे। दिल्ली में रहते थे और लाट साहब के दफ्तर में काम करते थे। वह अपने डिपार्टमैंट में सुपरिण्टेण्डेण्ट थे। बहुत अच्छे आदमी थे। वह शुद्धिसभा में भी काम करते थे। वे मेरे यहाँ घर पर आया करते थे और जब-तब अपनी शङ्काओं का समाधान भी किया करते थे। एक बार उन्होंने मुझसे कहा कि "पण्डित जी एक सवाल है। बड़े दिनों

से दिमाग़ में घूम रहा है उसका समाधान होना चाहिए" मैंने कहा "फ़रमाइए क्या प्रश्न है। प्रश्न का उत्तर अगर आता होगा तो दे दूँगा।" उन्होंने कहा कि "मैं समझता हूँ कि भगवान् हमारी इच्छाओं को पूरा करने में पूरी तरह नाकामियाब रहा है। क्योंकि हम बहुत-सी इच्छाएँ करते हैं और वे हमारी मन की मन में ही रह जाती हैं। हम भगवान् से अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना भी करते हैं। पर फिर भी वे पूरी नहीं होतीं। तो क्या मैं इस आधार पर यह नहीं कह सकता हूँ कि भगवान् हमारी इच्छाएँ पूरी करने में Miserably fail हो गया है।" ये उनके शब्द थे। वह हमारी इच्छाएँ पूरी करने में बुरी तरह नाकामयाब रहा है।

प्रश्न मैंने सुन लिया और इसके बाद मैंने कहा कि "मैं आपके समझाने के लिये एक उदाहरण देता हूँ। मान लीजिए आप बाजार जा रहे हैं। आप का बच्चा आपकी अंगुली पकड़े आपके साथ जा रहा है। उसने बाज़ार में क़लमी बड़े देखे। क़लमी बड़े बहुत जायकेदार होते हैं किन्तु तेल में बनाए जाते हैं। बच्चे ने आपसे क़लमी बड़े दिलवाने के लिए कहा। आपने उसको मना कर दिया और कहा कि तुझे कूकर खाँसी Hooping Cough है। यह बड़े तेल के हैं तुझे नुक़सान करेंगे। इसलिए यह नहीं लेने। बच्चा चुप हो गया। आप थोड़ा और आगे बढ़े लेकिन बच्चा पीछे की ओर ही देखता चल रहा है, आपसे फिर बोला—पिता जी दो पैसे के तो दिलवा दो। आपको ज़रा गुस्सा आया कड़क कर कहा नहीं लेने हैं, बेवकूफ़ इतनी बात समझाई तेरी समझ में नहीं आई। खांसी हो रही है यह नहीं खाने। बच्चा फिर चुप हो गया। आपका एक मित्र बाज़ार में मिल गया आप उससे बातें करने लगे। बच्चा बातों के बीच में फिर बोल उठा पिता जी दिलवा दो ना। आपको बहुत गुस्सा आया। अपने बच्चे के एक चाँटा रसीद कर दिया और कहा कि तुझे नुक़सान करेंगे। बच्चा बिल्कुल चुप हो गया और साथ ही कुछ नाराज़ हो गया। आप घर आ गए। बच्चा घर आते ही बाहर निकल गया। उसने मुहल्ले के बच्चों को इकट्ठा किया। उनकी एक सभा की और आपबीती सुनाई। सभी बच्चों ने भी अपनी-अपनी बातें सुनाईं और कहा कि हाँ बात बिल्कुल ठीक है कि हमारे माँ-बाप हमारी इच्छाओं के पूरा करने में पूरी तरह नाकामयाब हुए हैं। सभी ने एक मत होकर एक प्रस्ताव पारित

किया और उसकी एक-एक प्रति सभी के माँ-बाप के पास भेज दी कि आप लोग हमारी इच्छायें पूरी करने में Miserably fail हुये हैं। आपके पास भी एक प्रति उस प्रस्ताव की आई। आपने उसे पढ़ा। पढ़कर रद्दी की टोकरी में डाल दिया।" मैंने पूछा "कहिये उसे रद्दी की टोकरी में डालेंगे कि नहीं ? उत्तर मिला "हाँ डालेंगे।"

वे मुस्कराकर कहने लगे कि "हम क्या भगवान् के सामने ऐसी ही माँगें रखते हैं ?" मैंने कहा हाँ वह यह जानता है कि अमुक माँगें बेवक़ूफ़ाना हैं इसलिए वह पूरी नहीं होतीं चाहे हम हज़ार प्रार्थना करते हैं। वे उचित होंगी तो ही पूरी हो जाएँगी वर्ना नहीं। जब माँ-बाप ही सभी इच्छाएँ पूरी नहीं करते तो ईश्वर जो सर्वज्ञ है वह हमारी सभी उचित-अनुचित माँगें कैसे पूरी कर दे ?

ईश्वर से आप माँगते जाइये। केवल आपकी वे ही माँगें पूरी होंगी जो उचित हैं। तो ईश्वर के बारे में कोई निर्णय तुरन्त या बिना सोचे-समझे दे देना उसका अपमान करना है। ऐसे नहीं कहना चाहिए, बल्कि यों कहना चाहिए कि उसने हमें इस योग्य नहीं समझा कि हमारी सभी इच्छाएँ पूरी की जाएँ। सभी इच्छाएँ सबकी कैसे पूरी की जा सकती हैं। हजारों लोग अनेक दफ्तरों में नौकरी प्राप्त करने के लिए प्रार्थनापत्र देते हैं। क्या सभी रख लिये जाते हैं ? नहीं न, वहाँ लोग क्या कुछ कसर छोड़ते हैं ? पागल हो जाते हैं इतनी कोशिशें करते हैं और अन्त में कह भी देते हैं साहब बहुत कोशिश की लेकिन नौकरी मिलती नहीं है। खैर, यहाँ तो चुनाव में न आने के और भी कारण हो सकते हैं किन्तु वहाँ तो केवल एक ही कारण है और वह है जीवात्मा की अयोग्यता।

इस विषय पर कि ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई, अपनी जानकारी के अनुसार मैंने यह वर्णन किया है। इस सम्बन्ध में यदि आपके कोई प्रश्न हों तो उन्हें मेरे पास लिखित भेज दीजिये। आपके प्रश्नों के उत्तर देने का यत्न करूँगा ॥ ओ३म् शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ॥

ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप

ओ३म् ईशावास्यमिद ँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥
ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ँ समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥

माननीया बहिनो व भाइयो,

आज का विषय 'ईश्वर की पूजा का वैदिक प्रकार, परमात्मा की उपासना का वैदिक प्रकार क्या है' यह आपकी सेवा में वर्णन करूंगा। क्योंकि इसमें कुछ भाग ऐसा है जिसमें ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है इसलिए मेरा यह निवेदन है कि चारों ओर से अपनी तबियत हटाकर मेरी ओर केन्द्रित करलें ताकि बात जल्दी समझ में आए।

मैंने कल बताया था कि ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन अनादि पदार्थ हैं। और इनके अनादि होने का वैज्ञानिक तरीक़ा वर्णन किया था जिससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। आज उसे मैं फिर दुहराता हूँ कि जो चीज़ सबसे छोटी है वह नाक़ाबिले तक़्सीम है, उसका विभाग नहीं हो सकता और जो सबसे बड़ी है उसका भी विभाग नहीं हो सकता। यह दो पैमाने हैं जिनसे किसी वस्तु के अनादित्व को जाना जा सकता है। इन दो पैमानों को, मैंने आपके ज़हन में, ताज़ा करने के लिए दुहरा दिया है। इन दो पैमानों से दुनिया की चीजों को नाप लीजिए। दुनिया में दो प्रकार की चीज़ें हैं, एक जड़ और दूसरी चेतन। जो जड़ हैं वे ज्ञानशून्य हैं उनमें ज्ञान नहीं है। दूसरी चेतन हैं जिनमें ज्ञान है। इन दोनों प्रकार की चीजों को नाप लीजिए। चेतन में सबसे छोटा जीवात्मा है और सबसे बड़ा परमात्मा है। जड़ वस्तुओं में सबसे छोटा परमाणु है और सबसे बड़ा आकाश है। यह वैज्ञानिक तरीक़ा है जिससे मैंने इन तीनों चीजों को (ईश्वर, जीव और प्रकृति) अनादि साबित किया है, क़दीम साबित किया है, नित्य साबित किया है। इन्हीं तीनों के बारे में आज बात आएगी ज़रा ध्यान से सुनिए।

हमारे दुर्भाग्य से या सौभाग्य से भारत में कई मतावलम्बी हैं। उनमें

मुख्य रूप से ईसाई, मुसलमान, आर्यसमाजी व सनातनधर्मी हैं। बाक़ी और जो हैं उनको इतनी मुख्यता नहीं है। मुसलमानों का, ख़ुदा की इबादत का अपना एक तरीक़ा है। ईसाइयों व मुसलमानों में कोई विशेष भेद नहीं है, थोड़ा ही भेद है इसलिए उन्हें मैं मुसलमानों से जुदा नहीं करता हूँ। सनातन धर्म व आर्यसमाज में भी कोई फ़र्क़ नहीं है। हम चाहते हैं कि जो थोड़ा-सा भेद उनमें और हम में है वह न रहे। उनको ख़ास तौर से इस मज़मून में शामिल कर लिया है। मुसलमानों से इस सम्बन्ध में पूछताछ करने पर पता चलता है कि वे ख़ुदा की इबादत करते हैं। इबादत 'अबद' शब्द से बना है जिसके माना ग़ुलाम के हैं, बन्दे के हैं, सेवक के हैं। इबादत का अर्थ हुआ कि हम अपने मालिक के सामने अपने ग़ुलाम और बन्दे होने का इक़रार करते हैं। हम अपनी इबादत में कहते हैं कि ऐ ख़ुदा तू हमारा मालिक है और हम तेरे बन्दे हैं, हम तेरे सेवक हैं, हम तेरे ख़ादिम हैं। यह गोया इबादत में हम इक़रार करते हैं। इस पर मैंने उनसे एक प्रश्न पूछा था। बहुत पुरानी बात है। दीनानगर की बात है। मौलवी अल्लाह दित्ता बहस कर रहे थे। उनसे मैंने पूछा कि "ज़रा यह फ़र्माइए कि जब आप नमाज़ पढ़ते वक़्त खड़े होते हैं, जब आप रुकू करते हैं (घुटनों पर हाथ रखकर झुकते हैं) और जब आप सिजदा करते हैं, अपनी पेशानी को ज़मीन पर रख देते हैं तो इस सबसे आपका क्या मतलब है ?" कहने लगे 'पण्डित जी हम ख़ुदा का आदाब बजा लाते हैं।' "मैंने पूछा इस आदाब बजा लाने से ख़ुदा पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है ?" तो मौलवी साहब ने उत्तर दिया कि 'ख़ुदा इस आदाब बजा लाने से ख़ुश होता है ?' तो मैंने कहा कि आप आदाब बजा लाकर उसमें तब्दीली पैदा करते हैं। पहले वह ख़ुश नहीं था आपके आदाब बजा लाने से वह ख़ुश हो जाता है। आप उसमें तब्दीली करते हैं और वह मुतग़य्यर हो जाता है, बदल जाता है। पहले वह ख़ुश नहीं था, बाद में ख़ुश हो जाता है। इस तरह उसमें हर वक़्त, हर लम्हा 'तब्दीली होती रहती है क्योंकि न जाने कौन-कौन कहाँ-कहाँ नमाज़ पढ़ रहा है, उसका आदाब बजा ला रहा है और उसमें हर वक्त कुछ न कुछ परिवर्तन हो रहा है। ऐसा ख़ुदा प्रतिक्षण परिवर्तनशील है। ऐसा ख़ुदा मुतग़य्यर होगा, परिवर्त्तनशील होगा। मौलवी ज़रा होश में आए और कहने लगे, "पंडित जी ख़ुदा पर इसका कोई असर

नहीं होता इसका असर हम पर ही होता है।" मैंने कहा "आप संभल गए, वर्ना आपका खुदा खुदा न रहकर कुछ और ही हो जाता, तब्दील होकर न जाने क्या बन जाता।" याद रखिए खुदा पर इस आदाब बजा लाने का कोई असर नहीं है।

खुदा से आप फ़ायदा उठाइए। यदि इस बल्ब के सामने आपको कोई पुस्तक पढ़नी है तो आप इस प्रकार खड़े होइए जिससे कि आप अच्छे प्रकार से पढ़ सकें। यह आपका कर्तव्य है, बल्ब का नहीं। इस प्रकार खुदा में कोई तब्दीली नहीं होती। मैंने कहा कि आपके तरीक़े से तो आप एक्टर होंगे और खुदा एक्टेड अपॉन होगा। आप फ़ाइल होंगे और वह मफ़ऊल होगा, आप कर्त्ता होंगे और वह कर्म हो जाएगा। इसलिए यह मानने योग्य बात नहीं है कि खुदा पर आदाब बजा लाने का कोई प्रभाव होता है। ईसाइयों के सम्बन्ध में मैंने आपको पहले ही कहा है कि उनका तरीक़ा मुसलमानों से मिलता-जुलता ही है।

आर्यसमाज कहता है कि हम भगवान् की उपासना करते हैं। उपासना का अर्थ है कि 'हम उसके निकट जाते हैं, उप अर्थात् नज़दीक आसन अर्थात् बैठना We sit near God (वी सिट नीयर गॉड) हम परमात्मा के क़रीब बैठते हैं। To sit near (टु सिट नियर), To abidy by (टु एबाइड बाई) and to reside in (एण्ड टु रिज़ाइड इन) यह तीन अर्थ हैं उपासना के। आर्यों की दृष्टि से उपासना का अर्थ यह हुआ कि हम उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, हम ईश्वर में निवास करते हैं और हम ईश्वर के गुणों को धारण करते हैं और इस प्रकार उसके निकट हो जाते हैं, क़रीब हो जाते हैं। क़रीब होने का यही अर्थ है। एक लड़का अपने उस्ताद के क़रीब हो जाता है अर्थात् जो भी उसने पढ़ाया है उसे अपने दिल में रख लेता है। मेज उसके ज्यादा नज़दीक है लेकिन मेज़ में इल्म को ग्रहण करने की योग्यता नहीं है। कुर्सी भी नज़दीक है लेकिन उसमें भी ग्रहण करने की योग्यता नहीं है। लेकिन मेज व कुर्सी से दूर जो बच्चे हैं उनमें ग्रहण करने की योग्यता है। उस्ताद जो कह रहा है वे उसे समझते हैं, जिनमें समझने की क़ाबलियत नहीं है वह अलग चीज़ है। तो जिन बच्चों ने उस्ताद के पढ़ाये हुए को अधिक से अधिक ग्रहण किया है वे उस अपेक्षा से उतने ही

उस्ताद के नज़दीक हैं। इसलिए आर्यसमाजी लोग कहते हैं कि परमात्मा के गुणों को जिसने ज़्यादा से ज़्यादा ले लिया है वह ईश्वर के अधिक नज़दीक है और इसी के माना उपासना है। इस उपासना के सम्बन्ध में तफ़सील है किन्तु यह मैंने मुख़्तसर आपको अभी बताया है। यह आर्य तरीक़ा है।

सनातनधर्मी भाई इस सम्बन्ध में पूजा और भक्ति दो लफ़्ज़ों का अधिक प्रयोग करते हैं। दोनों शब्द संस्कृत के हैं। पूजा शब्द पूज् धातु से बना है। और पूज् का अर्थ सेवा है पूज् सेवायां, भक्ति शब्द में भज् धातु है, भज् सेवायां, भज् का अर्थ भी सेवा है। दोनों शब्दों के माना सेवा के हैं, ख़िदमत के हैं। लेकिन एक बात इससे पहले समझना आवश्यक है कि तीन चीज़ें हैं ईश्वर, प्रकृति और जीवात्मा। इस नक्शे को ज़रा समझ लीजिए। एक तरफ़ ईश्वर, बीच में जीवात्मा और दूसरी तरफ़ प्रकृति। प्रकृति और परमात्मा दोनों पूर्ण हैं। आप कहेंगे कैसे? प्रकृति कहती है मुझे किसी चीज़ का इल्म नहीं है, मैं ज्ञानशून्य हूँ, मैं बिल्कुल ग़ैर ज़ी शऊर हूँ। मुझे न अपना इल्म है और न ग़ैर का। जैसे यह लकड़ी है। इस लकड़ी को न अपना ज्ञान है कि मैं लकड़ी हूँ और न ग़ैरों के मुताल्लिक़ इल्म है कि लोग यहाँ भाषण सुन रहे हैं। इसे दोनों तरह का इल्म नहीं है। यह एक प्राकृतिक चीज है, प्रकृति से बनी हुई है, Material Object (मेटीरियल ऑबजेक्ट) है जो Matter या प्रकृति के स्थान पर है जिसे न अपना इल्म है न ग़ैर का।

भगवान् क्या कहता है? वह कहता है कि 'मैं अपने-आप को भी जानता हूँ और अपने से अन्य चीज़ों को भी जानता हूँ।' तो जानने में ईश्वर सबसे पूरा और न जानने में प्रकृति सबसे पूरी। हैं यह दोनों पूरे। इन दोनों को किसी अन्य की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर व प्रकृति दोनों ज़रूरत से ख़ाली हैं।

जीवात्मा को आवश्यकता है। बहुत-सी चीज़ें उसकी आवश्यकता की हैं। तो जीवात्मा ईश्वर से लाभ उठाता है या यों कहिए कि ईश्वर अपने अस्तित्व को सफल कर रहा है, उसे Useful (यूज़फुल) बना रहा है। जीवात्मा परमात्मा के संसर्ग से मुक्ति का लाभ प्राप्त कर सकता है। और दूसरी ओर प्रकृति है। प्रकृति से सुख की सिद्धि करे। प्रकृति की मदद से वह साधारण

सुख से लेकर चक्रवर्ती राज्य तक की प्राप्ति करे। प्रकृति से Material Progress (मेटीरियल प्राग्रेस्) करे और ईश्वर से मुक्ति प्राप्त करे। जीवात्मा इन दोनों चीज़ों से फ़ायदा उठाता है। यदि जीवात्मा को मध्य से हटा दिया जाय तो दोनों यूज़लेस हैं। दोनों निकम्मे हैं जैसे बाजा, बजाने वाले की अनुपस्थिति में निकम्मा है, किसी काम का नहीं है। बाजा बजाने वाला यदि है तो बाजे का कोई उपयोग हो सकता है। इसलिए प्रत्येक वस्तु अपने वजूद से अन्यों को लाभ पहुँचाकर ही सफल होती है। मैंने अपने कल के व्याख्यान में यही तो कहा था कि भगवान् all knowledge (आल नॉलिज है) सर्वज्ञ है। सर्वज्ञ होने का क्या लाभ यदि उस ज्ञान से अल्पज्ञ लाभ न उठा सकेंगे ? उसका लाभ जब ही है जब उससे अल्पज्ञों को लाभ पहुँच जाए, कम जानने वालों को फ़ायदा पहुँच जाए। जहाँ कहीं भी आप देखेंगे यही उसूल देखेंगे। एक शख़्स गली में खड़े हुए एक तजस्सुस की निगाह से देख रहे थे, नए आदमी थे, किसी को ढूँढ रहे थे। कोई बुज़ुर्ग़ वहाँ बैठे थे। उन्होंने उनसे पूछा, 'कहिए जनाब किसे ढूँढ रहे हैं ? आपको किसकी तलाश है ?' उस नवागन्तुक को उन्होंने अपेक्षित जानकारी दे दी। कोई पूछने लगे 'क्यों साहब आपको क्या ज़रूरत थी, आपकी क्या कोई रिश्तेदारी थी जो आपने उसे जगह बताई ?' नहीं उसका ज्ञान तक़ाज़ा कर रहा है, वह वाकिफ़ है और जो शख़्स वहाँ आए हैं वे नावाकिफ़ हैं। उसके जानने का फ़ायदा यही है कि वह न जानने वालों को उससे वाकिफ़ कराए।

जीवात्मा मुक्ति भी प्राप्त कर रहा है और दुनिया का सुख भी साथ ही ले रहा है। प्राकृति के द्वारा जीवात्मा ससार में अपनी उन्नति करता जाए। हाँ यह बात अवश्य ध्यान में रखनी है कि सुख में अपने कर्त्तव्य को न भूल जाए और भगवान् से मुक्ति और निजात हासिल करे क्योंकि वह ज्ञान का भण्डार है और नेक है। उसमें यह दोनों चीजें मौजूद हैं।

तो मैं सनातन धर्मी भाइयों की भगवान् की पूजा व भक्ति का जिक्र कर रहा था। वे कहते हैं कि हम परमात्मा की खिदमत करते हैं, पूजा करते हैं'। भगवान की सेवा के लिए क्या चाहिए, जरा यह विचारने की बात है। बहुत सीधे २ तरीके पर सेवक (सेवा करने वाला) सेव्य (जिसकी सेवा की जाए) सेवा (जो क्रिया सेवा के लिए करता है) और सेवा का

सामान ये चार चीजें होनी जरूरी हैं। यहाँ जीवात्मा ख़ादिम या सेवक है, परमात्मा मख़दूम या सेव्य है सेवा की क्रिया और सेवा की सामग्री जो भी उन्होंने (सनातनी भाइयों ने) समझ रखी है। इन सब चीजों से वे ईश्वर की पूजा करते हैं।

भगवान् की पूजा करने से पूर्व अब यह मालूम करना पड़ेगा कि उसकी सेवा कैसे की जाए। भगवान् के लिए हम कौन सी ऐसी चीज़ लायें जिसकी उसे आवश्यकता है। जब उसकी आवश्यकता का हमें ज्ञान हो जायगा तब ही हम उसकी सेवा कर सकेंगे। इससे पहले नहीं।

मैं जब यहाँ आया तो लोगों ने मुझसे पूछा कि "क्या आप चाय पीते हैं ?" मैंने कहा "बिल्कुल नहीं। मैं चाय नहीं पीता हूँ। चाय कोई पीने की चीज है ? इसकी कोई जरूरत नहीं है लोगों ने खामखां चाय पीनी शुरू की मुझे इतनी उम्र हो गई (८० वर्ष की) कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ी।" मैं तो हंसी में कह दिया करता हूँ कि Water and milk both have been spoiled (वाटर एण्ड मिल्क बोथ हैव बीन स्पाँइल्ड)। दूध और पानी दोनों किसी ने बिगाड़ दिए हैं। लोग कई बार और लगभग सभी जगह चाय के लिए पूछते हैं और मैं मना कर देता हूँ।" तो चाय मेरी आवश्यकता में शामिल नहीं है। क्या मेरी सेवा चाय द्वारा ही हो सकती है ? स्पष्ट उत्तर होगा नहीं हो सकती। मेरी इसके जरिए ख़िदमत नहीं हो सकती। फिर कौन मेरे लिए चाय लाएगा ? यदि चाय कोई लाता भी है तो उसका लाना व्यर्थ होगा क्यों कि चाय मेरी ज़रूरत में शामिल ही नहीं है। शादी वग़ैरा में लोग मुझे बुला लेते हैं। तो उनके तरीके बने हुए हैं ? एक थाली में सुपारी होती हैं, इलायची मिश्री, सौंफ, लौंग आदि होती है और कारतूस भी रखे होते हैं जिन्हें लोग सिगरेट कहते हैं। जब मुझे वह थाली दिखाते हैं तो मैं इलायची ले लेता हूँ। शेष चीजें या पान सुपारी व सिगरेट आदि मेरी ज़रूरत में शामिल नहीं है, उन्हें नहीं लेता हूँ क्योंकि मेरी सेवा पान सुपारी से ही नहीं की जा सकती।

यदि कोई मनुष्य मेरी सेवा करना चाहेगा तो पहले मेरी आवश्यकता की चीज़ को मालूम करेगा। तब मेरी सेवा कर सकेगा। मेरे यहां आने पर मेरी आवश्कता की चीजें मालूम कीं गई और फिर वैसी ही वस्तुएं समय पर

मेरे लिए आने लगीं। प्रातःकाल दूध आ जाता है। उन सभी सज्जनों का मैं मशकूर हूँ जो मेरे लिए इतना कष्ट उठाते हैं। वे जानते हैं कि रामचन्द्र को प्रातःकाल दूध की आवश्यकता होती है। वह भी पाव या डेढ़पाव से अधिक नहीं। यदि अधिक होगा तो मुझे हानिकर होगा। मैं जब लोगों के यहाँ खाना खाने जाता हूँ तो कह देता हूँ कि रहने दो मुझे ज्यादा खाना मत दो। यदि अपनी बदनामी करानी है तो दे दो मुझे हज़म नहीं होगा। मैं बीमार पड़ जाऊंगा। लोग कारण पूछेंगे तो मुझे बताना पड़ेगा कि अमुक सज्जन के यहाँ भोजन किया था उन्होंने अधिक खिला दिया। इसलिए बीमार हो गया। तो इस प्रकार खिलाने वाला भी मेरी सेवा न कर सकेगा। जितना मैं खा सकता हूँ और जो मेरे लिए स्वास्थ्यकर भोजन होगा उसी से मेरी सेवा या ख़िदमत की जा सकती है।

मैं अम्बाले में वर्मा जी के यहाँ ठहरा हुआ था। उनके यहाँ एक और भी सज्जन ठहरे हुए थे। वे चाय पीते थे। नौकर को कुछ जल्दी थी। उसने चाय उस वक्त बना कर दी जब वे शौच जाने को तैयार हो रहे थे। उन्होंने पूछा क्या लाए हो? नौकर ने उत्तर दिया चाय लाया हूँ आप चाय पीते हैं न उन्होंने उत्तर दिया हाँ पीता तो हूँ लेकिन यह समय चाय पीने का तो नहीं है। मैं तो शौच जा रहा हूं। इससे मालूम हुआ कि आवश्यकता की चीज़ भी बामौका दी जानी चाहिये।

तो आप और मैं दोनों भगवान् की आवश्यकता को मालूम करें जिससे हम उसकी सेवा कर सकें। आजतक कोई आदमी पता नहीं चला सका है कि यह चीज ईश्वर की जरूरत में दाख़िल है। पानी वह हमें देता है, भोजन वह हमें देता है।, जीवन को बनाए रखने की सारी सामग्री वह हमें देता है, जिसका भंडार अपूर्व है वह हमसे क्या चाहेगा।

मुसलमानों से हमने पूछा तो उन्होंने कुआन की एक आयत पढ़ दी—

या ख़लक्तुलिजन्ना वल् इसा इल्लालियाबुद्दून्।
माउरीदु मिन्हुम् मिर्रिज्किव्व उरीदु एं मुत्वममून।

हमें न किसी ग़िज़ा की ज़रूरत है न ताहम की। यदि किसी चीज़ की ज़रूरत है तो यह है कि 'हमारी पूजा करो'।

किसी ने भी ख़ुदा की ज़रूरत को नहीं बताया। जब किसी को भी ख़ुदा

की जरूरत का पता नहीं है तो बताइए कि अब क्या किया जाए। भगवान् की पूजा कैसे की जाए ?

जरूरत किसे कहते हैं जरा यह समझ लीजिए। जिसके बग़ैर जरूरतमन्द को जरर पहुंच जाए। जैसे मैं कहूँ कि यदि मुझे हवा न मिले, जो मेरी जरूरत में दाखिल है, तो मुझे जरर पहुंच जाएगी, नुक़सान पहुंच जाएगा, पानी अगर मुझे न मिले तो नुकसान होगा, रात को जितना आराम मिलना चाहिए यदि मुझे न मिले तो मुझे परेशानी होगी। क्यों नुक़सान होगा क्योंकि यह मेरी आवश्यकता में शामिल है। भगवान् के लिए ऐसी कौनसी चीज़ है जिसके बग़ैर उसे नुक़सान पहुंच जाएगा या हानि हो जाएगी बुद्धिमानों और अक्लमन्दों ने कभी यह बात सोची है ? जब इतनी तफ़सील से बात बयान की गई तो बात स्पष्ट हुई और यह समझ में आ गया कि भगवान् को तो किसी चीज़ की ज़रूरत है ही नहीं। जिसे किसी वस्तु की आवश्यकता ही नहीं उसकी सेवा, कैसे की जाए, जो ज़रूरत से खाली हो उसकी सेवा कैसे की जाए ? हमें तो कुछ देकर सेवा करने की आदत पड़ी हुई है। यह बहिनें और बेटियाँ बैठी हैं। क्या कहना इनका ? इनका गुण यह है कि सब को खिलाकर खाती हैं। यदि कोई बे वक्त भी आ जाए तो अपना खाना भी उसे दे देती हैं और स्वयं भूखी सो जावेंगी। लेकिन यह भी तो उनकी सेवा करती हैं जिसकी कुछ आवश्यकता है। लेकिन यदि कोई ऐसा मनुष्य आ जाए जिसकी कोई आवश्यकता ही न हो तो उसकी सेवा कैसे कर सकेंगी ?

मेरे पास एक पुस्तक थी जिसका नाम था 'The Age of Reason' (दि एज आफ़ रीजन) Thoms pane (टॉमस पेन) ने उसे लिखा था। अंग्रेज़ी में लिखी हुई पुस्तक है उसने इस सम्बन्ध में बड़ा अच्छा लिखा है We cannot serve God in the manner we serve those who cannot do without such service. (वी कैन नाट सर्व गाड इन दी मैनर वी सर्व दोज़ हू कैन नाट डू विदआउट सच सर्विस !' हम खुदा की खिदमत उस तरह नहीं कर सकते जिस तरह हम उनकी करते हैं जो खिदमत के बग़ैर अपना गुज़ारा नहीं कर सकते। हम अपनी खिदमत करवाए बग़ैर नहीं रह सकते इसलिए जिस तरह हमारी खिदमत होती है इस तरह खुदा की खिदमत नहीं की जा सकती क्योंकि उसकी कोई जरूरत नहीं है। कितना

अच्छा लिखा है टॉमस पेन ने । ली कि ईश्वर की सेवा कुछ
पूजा करने वालों ने जब यह बात समझ आता था तो वे पंडितों
देकर नहीं की जा सकती और उन्हें ये ही तरीक़ा किन्तु अफ़सोस कि पंडित
और पाधाओं से पूछने लगे कि वे कुछ बताएँ । कारण लोगों को सही
और विद्वान् आलस्य, प्रसाद, अज्ञान और स्वार्थ के पूजा करनी थी ।
रास्ता न बता सके । जब न बता सके तो लोगों को तो समाज स्थापित करने की
इन्होंने अपने बना लिए । जैसे आर्य लोगों को आर्य थी इसलिए इन्होंने
आदत है ऐसे ही इन्हें भी पूजा करने की आदत पड़ी
अपना रास्ता निकाल लिया ।

इन्होंने अपनी-अपनी मर्ज़ी और क्षमता अनुसार अपने-अपने ईश्वर बना लिए । किसी ने लकड़ी के बनाए, किसी ने पत्थर के । जिसके पास सोना था उसने सोने के बना लिए, जिसके पास चाँदी थी उसने चाँदी के बनाए । जो भी चीज़ जिसके पास थी उसी के उन्होंने ईश्वर बना लिए और फिर उन्हें खिलाना-पिलाना शुरू किया । लेकिन वे तो खाते नहीं । अब आश्चर्य में खड़े हैं कि हमने इन्हें खिलाने-पिलाने के लिए बनाया था लेकिन वे तो खाते नहीं । कोई हम जैसा आदमी देख रहा था, आकर उसने पूछा, अन्दर क्यों खड़े हो ? क्यों ताज्जुब में खड़े हो, कहने लगे' साहब हमने इनकी सेवा करने के लिए इनको बनाया था । अब इनको खिलाते-पिलाते हैं तो यह खाते नहीं हम इनकी सेवा के सामान लाए थे लेकिन यह तो खाते ही नहीं हैं' वह सज्जन बोले, 'जरा सोचिए, विचार कीजिए । आपने इनको किनकी जगह बनाया है, किनकी जगह मुकर्रिर किया है ?' उन लोगों ने उत्तर दिया, 'भगवान् के स्थान पर ।' प्रश्न किया गया 'क्या भगवान् खाते हैं ?' उत्तर मिला 'नहीं, भगवान् तो नहीं खाते हैं ।' तो उस आदमी ने कहा कि जब भगवान् खाते नहीं हैं और आपने इन्हें भगवान् की जगह नियत किया है और वे खाते नहीं हैं तो इतने बेशर्म तो ये हैं नहीं कि भगवान् जो खाता नहीं है उसकी जगह मुक़र्रर होकर खुद खाने लगें । कैसे खा लें ? They are working instead (दे आर वर्किंग इन्स्टैंड) । उन्होंने कहा हम भी नहीं खाएंगे । इतनी ग़ैरत तो हम में है । इनको समझाना पड़ा ।

बुद्धिवादियों ने इन्हें समझाया कि आपने सारा काम उल्टा कर दिया ।

जिसने सारे जगत् को बनाया उसे तुमने बना दिया। सारा काम उल्टा ही गया जिस बाप ने हमें बनाया था हमने उसे बना दिया। जो सर्वत्र था वह एकत्र हो गया, जो ग़ैर महदूद था वह महदूद हो गया। जो आज़ाद था वह क़ैद हो गया, बन्धन में आ गया। आप पूछेंगे बन्धन में कैसे आ गए ?

आप देखते हैं कि बड़े-बड़े सेठों ने मन्दिर बनवा रखे हैं या उनके बड़े-बड़े मकान हैं। उनमें एक कोने में उन्होंने मन्दिर बनवा दिया है। उन मन्दिरों में देवता रखे हुए हैं अर्थात् परमात्मा सब जगह था। अब एक-एक मकान में मुक़ैयद हो गया। मकान के अन्दर रहता है तो उस मकान से छोटा ही होगा। तो वह सर्वत्र था अब एकत्र हो गया। वह मकान जिसमें स्वयं रहते हैं बड़ा अच्छा है खूब ऊंचा है। उसमें सभी तरह के आराम हैं। भगवान् जी के लिए सेठ जी ने इतना छोटा मकान बनवाया है कि पुजारी जी भली प्रकार खड़े भी नहीं हो सकते हैं, झुके-झुके ही अपने कार्य कर देते हैं। अगर कोई आकर पूछे कि, 'यह किसका मन्दिर है 'To whom this temple belongs ?' तो कहा जाएगा यह मन्दिर सेठ जी का है। और यह देवता ? यह भी उन्हीं के हैं—तो जो मालिक था, सबका स्वामी था अब हम उसके स्वामी हो गए। काम उल्टा हो गया न ? मन्दिर भी सेठ जी का और उसमें जो भगवान् हैं वह भी सेठ जी के। अब सेठ जी अपने भगवान् की पूजा भी करते हैं और उसकी रक्षा भी करते हैं। शाम को हमेशा ताला लगा देते हैं कभी कोई उठाकर न ले जाए—जो सारे जगत् का रक्षक था अब हम उसके रक्षक बन गए—मैंने यह सब बातें इसलिए कही हैं कि एक सही नक्शा आपके सामने आ जाए—अब पुजारी व सेठ जी की मर्ज़ी प्रधान है, जब चाहे मन्दिर खोलें, जब चाहें वन्द कर दें, खाना चाहें एक दिन में एक बार खिलाएँ और चाहे चार बार। भगवान् अब कोई शिकायत नहीं कर सकते क्योंकि सेठ जी की रिआया या प्रजा में शामिल हो गए हैं। वह मालिक के सामने कैसे बोले ? हमारी ना समझी से काम करने पर कितने काम बिगड़ गए ?

मैं दिल्ली में बाबू सुन्दरलाल जी अहलूवालिया के घर में किराये पर रहा करता था। उनका एक मन्दिर भी था। उसमें जो पुजारी जी थे वे मेरे मित्र थे और क़रीब ही रहते थे। आप जानते हैं मित्रों में हँसी की बात हुआ करती है, हमारी भी होती थी तो यह कह दिया करते थे—हाँ आप कह लीजिए हम

सनातनधर्मी हैं और आप आर्यसमाजी हैं। मैंने उनसे एक बार कहा कि आप ईमानदारी से बताइए कि क्या यह ठीक तरीका है ? वह कहने लगे, 'जी' ठीक तरीका क्या है यह तो आप भी जानते हैं और मैं भी जानता हूं, कोई फ़र्क की बात नहीं है।

एक दिन शाम को वह अपने बेटे ऋषि को आवाज़ लगाकर यह पूछ रहे थे कि रात होने वाली है तूने मन्दिर का दरवाज़ा बन्द किया कि नहीं ? उससे नकारात्मक उत्तर सुनकर ज़रा वे नाराज़ हुए और बोले कि तूने अभी तक दरवाजे बन्द नहीं किए, यदि कोई ठाकुर जी को उठाकर ले जाये तो आज तक कभी गए हुए वापस आये हैं ? मैंने ज़रा हंसी कर दी, मैंने कहा 'कभी आपने इनको गली-कूचे में घूमने का मौक़ा दिया है। गली-कूचे में घूमने वाले को अपने घर का पता ज्ञात रहता है। ठाकुर जी बिचारों को क्या पता ? वे तो आज तक कभी बाहर गए ही नहीं। तो उन्हें अपने घर के रास्ते का कैसे पता चले ? इसलिए एक बार जाने के बाद वे आज तक लौटे नहीं। हंसने लगे। हंसते-हंसते कहने लगे पंडित जी खैर और बातें तो छोड़िए जन्माष्टमी आने वाली है ज़रा लाला जी से कह दीजिये कि ठाकुर जी के कपड़े बनवा देवें। मैं कहता हूं तो नाराज़ होने लगते हैं। आप उधर से जब निकलें तो ज़रा कह दीजिये। पड़ोसी का इतना तो लिहाज होना चाहिए।' मैं जब लाला जी के मकान के आगे से गुजरा तो वे बैठे हुए थे। मैंने उनको याद दिलवाया कि आप अपने कपड़े जब बनवाते हैं तो ठाकुर जी का ख्याल रखा कीजिए। कहने लगे आपको पुजारी जी ने कहा होगा। मैंने कहा कि 'हाँ' पुजारी ही कह सकते हैं। ठाकुर जी की क्या मजाल जो वह कह सकें। वे तो आपकी प्रजा में शामिल हैं। मालिक के सामने बन्दा कहीं बोल सकता है ?' कहने लगे अच्छा हो जाएगा इन्तज़ाम। मैंने कहा 'जन्माष्टमी से पहले ही हो जाना चाहिए।' यह घटनाएँ मैं आपको क्यों बता रहा हूं ? केवल इसलिए कि आपको यह पता चल जाये कि ग़लत विश्वासों और ग़लत तरीकों से कितना नुक़सान हो रहा है। जो हमारा रक्षक था, अब हम उसके रक्षक हैं ; वह हमारी क़ैद में है। जो हमारा पोषक था अब खाने के लिये हमारा इन्तज़ार कर रहा है वह हमारा मोहताज हो गया है।

एक भजनीक महाशय थे। अपने भजनों के बीच वह कह रहे थे कि मुसल-

मानों का खुदा खुदावन्द ताअ़ला और हिन्दुओं का जो मन्दिर में रखा हुआ है तालाबन्द खुदा है। मैंने यह बात सुनी थी, मुझे अच्छी लगी इसलिए आपको भी सुना दी। उनकी यह बात सही थी। मन्दिर को अपने ईश्वर की रक्षा के लिए, उसमें ताला लगाना पड़ता है।

देहली में एक बार जाटों के मुहल्ले से गाय निकालने के प्रयत्न में झगड़ा हो गया। कसाई लोग जाटों के मुहल्ले से गाय निकालकर ले जाना चाहते थे। लोटन सिंह वग़ैरा ज़ाट ये लोग लाठियाँ ले-लेकर खड़े हो गए और कह दिया कि हम अपने मुहल्ले से गाय को नहीं निकलने देंगे। झगड़े का इम्कान देखकर डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें अपने जुलूस का रास्ता बदलने के लिए कहा। इस पर वे लोग नाराज़ हो गए और उन्होंने मुहल्लों में घुसकर लूट मार करनी शुरू की। वे एक मन्दिर में घुस गए और जितने भी देवता वहाँ रखे थे सब तोड़ डाले। मन्दिर में पुजारी भी था। वह डर के मारे, कोने में एक लिपटी हुई चटाई थी, उसमें घुस गया। किसी को कुछ भी पता न चला। जब वे लोग सभी मूर्तियाँ तोड़कर चले गए तो पुजारी जी बाहर निकल आए। बाद में जब मैं उनसे मिला तो मैंने पूछा कि भगीरथ जी तुम कहाँ थे जब मन्दिर में वे लोग मूर्तियाँ तोड़ रहे थे? कहने लगे मैं मन्दिर में ही था। कोने में चटाई रखी थी लिपटी हुई। उसमें घुस गया था इसलिए बच गया। नहीं तो वे मुझे मार डालते। वे तो मारने पर तुले हुए थे। गुस्से में थे। मैंने उनसे पूछा कि 'तुम्हें उस समय सबसे ज्यादा चिन्ता किसकी थी? मुझे अपने बेटे की थी कि न जाने कहाँ हैं? (उसका बेटा आजकल अलवर राज्य में मजिस्ट्रेट है) मैंने पूछा कि 'तुम्हें देवताओं के टूटफूट जाने का कोई गम नहीं है?' कहने लगे कि, 'अजी वह तो जयपुर से फिर यहाँ आ जायेंगे, कोई दो रुपए का कोई चार रुपए का कोई आठ का लेकिन मेरा बेटा कहाँ से आ जाता।' अब ज़रा सोचने की बात है असलीयत निकल आई कि नहीं? भगवान् घड़े-घड़ाए पड़े हैं, २) और ४) को बिक रहे हैं। हमने इस प्रकार भगवान् की वेइज्ज़ती की तो आज हमारी भी बेइज्ज़ती हो रही है। यह भगवान् की पूजा का तरीका नहीं है। हमने ग़लत तरीके प्रयुक्त किए हैं। मैं आगे चलकर आपको ईश्वर पूजा का सही प्रकार बताऊँगा।

मैं मेरठ में व्याख्यान दे रहा था तो एक नवयुवक खड़े हो गए और कहने

लगे कि मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। मैंने कहा 'नियमानुसार व्याख्यान के बाद प्रश्न पूछे जाते हैं तभी आप पूछ लीजिये।' वे कहने लगे 'जी तो प्रश्न पूछने को अभी कर रहा है।' मैंने कहा 'अच्छा पूछिए।' पूछने लगे, "आप ईश्वर को हर जगह मानते हैं या नहीं?" मैंने कहा 'हाँ मानते हैं'

प्रश्न—तो मूर्ति के अन्दर भी हुआ कि नहीं?

उत्तर—हाँ मूर्ति के अन्दर भी है और बाहर भी।

प्रश्न—तो आप मूर्ति का खंडन क्यों करते हैं?

उत्तर—हम मूर्ति का खंडन नहीं करते। हम तो ग़लत मूर्ति पूजा का खंडन करते हैं?

प्रश्न—जब भगवान् मूर्ति के अन्दर हैं तो आप मूर्तिपूजा का खंडन क्यों करते हैं?

उत्तर—आपके मूर्ति पूजने का उद्देश्य भगवान् की पूजा करना है। जब भगवान् सब जगह है तो मूर्ति के अन्दर वाले ही भगवान् को आप क्यों पूजते हैं। मूर्ति से बाहर वाले को क्यों नहीं पूजते? भगवान् तो सब जगह हैं। मूर्ति के अन्दर भी और बाहर भी।

मान लीजिए आप मुझसे मिलने आये और मैं आपको अपने दर्वाजे के बाहर ही मिल जाऊँ तो आपको मुझसे मिलने में अधिक सुविधा होगी या मेरे अन्दर होने पर होगी।

क्योंकि भगवान् तो सब जगह है उससे बाहर ही मिल लीजिए। व्यर्थ में अन्दर वाले के क्यों पीछे पड़े हैं। आप मूर्ति में दाखिल नहीं हो सकते और मूर्ति का ख़ुदा बाहर नहीं आ सकता। क्यों मुश्किल में पड़ते हैं सरल काम कीजिए और मूर्ति से बाहर वाले की ही पूजा कर लीजिए।

दूसरी बात यह है कि मूर्ति-पूजा करने से तो मूर्ति की पूजा होती है। भगवान् की पूजा नहीं होती। वह तो सर्वज्ञ है। इसलिए उसे बाहर आने-जाने की आवश्यकता नहीं है। मैं इसके खिलाफ़ नहीं हूँ कि आप ईश्वर की पूजा करें किन्तु आप ईश्वर की पूजा करते कहाँ हैं? आप तो मूर्ति को पूजते हैं, उस पर फूल चढ़ाते हैं, पानी डालते हैं। क्या पानी और फूल में भगवान् नहीं है? प्रश्नकर्त्ता ने उत्तर दिया 'हां है।' और उसको बनाया किसने है?

कि 'भगवान् ने' तो मैंने कहा कि 'फूल की क़ीमत दुगनी हो गई। फूल को बनाया भी भगवान् ने है और उसके अन्दर वह व्यापक भी है किन्तु मूर्ति में व्यापक तो है परन्तु भगवान ने उसे बनाया नहीं है तो मूर्ति से अधिक महत्त्व-पूर्ण फूल है। आप आठ आने पर रुपये को चढ़ा रहे हैं। आपको अपनी मूर्तियाँ जो (आठ आने के समान मूल्य वाली हैं) उन्हें फूलों पर (एक रुपये के समान मूल्य वाले हैं) चढ़ाना चाहिए। आप तो कम क़ीमती चीज़ों पर मँहगी चीज़ें चढ़ा रहे हैं। कहने लगे इससे तो सब उल्टा हो जाएगा। मैंने कहा उल्टा नहीं सुल्टा हो जाएगा। उल्टा तो अब है। क्या यह भगवान् की पूजा हो रही है? मैं कहता हूँ यह पूजा नहीं हो रही बल्कि भगवान् का मज़ाक बनाया जा रहा है।

मैं मानता हूँ कि कृष्णचन्द्र जी ऊँचे दर्जे के आदमी थे। उन्हें अवतार कह लीजिए मुझे इसमें भी ऐतराज़ नहीं है। रामचन्द्र जी के बारे में भी यही बात है। उन्हें भी आप अवतार कहिए। यदि वे ऊँचे और श्रेष्ठ पुरुष थे तो आप उनके गुणों से लाभ उठाइए। लिखा है एक अंग्रेज कवि ने

Lives of great men all remind us,
That we can make our lives sublime.
And departing leaves behind us,
The footprints on the sand of time.

बड़े-बड़े लोगों का जीवन हमें याद दिलाता है कि हम भी अपने जीवन को उच्च बना सकते हैं और दुनिया से रुख़्सत होते वक्त ज़माने की धूलि पर अपने पैरों के निशान छोड़ जाएँ ताकि लोग उस रास्ते पर चल सकें।

तो यदि आप कृष्ण चन्द्र जी की मूर्ति रखते हैं तो दो बनवाइए। एक मुझे दीजिए और एक आप रखिए। देखिए मैं उस मूर्ति को झाड़-पोंछ कर साफ रखूंगा और उनके जीवन से कुछ सीखूंगा जिनकी वह मूर्ति है।

रामचन्द्रजी हैं। उनकी मूर्ति घर में रखने का क्या लाभ! रामचन्द्रजी के चरित्र से वह मोटी पुस्तक रामायण भरी पड़ी हुई है। रामचन्द्रजी ने अपने पिता की आज्ञा मानी। आज्ञा मानकर वन चले गए। तो मैं अपने बच्चों को सिखाऊँगा कि वे अपने माँ-बाप की आज्ञा मानें। मेरे पिता जी

तो मर गये। इसलिए मैं अपने बच्चों को ही सिखाऊँगा। उन्हें यह बताऊँगा कि रामचन्द्र जी के पीछे चलने का क्या अर्थ है। पीछे चलने का यही अर्थ है कि उनके गुणों को धारण करो।

कृष्णचन्द्र जी के लिए भी यही बात है। कितने बड़े विद्वान् थे। कैसे बड़े नीतिवान् और बलवान् थे। तीनों गुण उनमें थे। हमको भी अपने अन्दर यह चीज़ें धारण करनी चाहिए। उन्होंने छोटे-छोटे मांडलिक राजाओं को मिलाकर एक महाभारत बना दिया था। आज भारत के टुकड़े होते चले जा रहे हैं। आप न होने दीजिए इन टुकड़ों को। उनके चरित्रों को सीखिए। पीछे चलने का यह अर्थ नहीं है कि आप नाचने लगें। किसी को राधा बना लें और आप उसके साथ नाचें। यह कृष्ण का चरित्र नहीं था।

यह बात कही जाती है तो लोग नाराज़ हो जाते हैं। क्या यह नाराज़ होने की बात है? कृष्ण जी क्या नचनिए थे? हर्गिज नहीं। वह आप्त पुरुष थे। योगी थे। लोगों ने सोचा-समझा नहीं। उसी का दुष्परिणाम आज देख लीजिए। क्या नाच की कोई कमी है? आज तो हमारी सरकार के बड़े से बड़े नेता नाच के हामी हैं। हमारे नेहरू साहब भी नाचते हैं। लोग कहा करते हैं नचनियों का राज्य हो रहा है। लोग कहते हैं हमें सुनना पड़ता है। प्रत्येक सांस्कृतिक समारोह में नाच पहले होता है। नाच ही सब जगह प्रधान है। यह नाच नहीं, नाश है जो हो ही रहा है।

राज्य नाच से क़ायम नहीं रहते। मैं कहता हूँ, बुद्धिमान् सारे कहते हैं और इतिहास इसकी पुष्टि करता हैं। राज्य बलवान् और नीतिमान् पुरुष किया करते हैं। तो कृष्ण जी के चरित्र के अनुसार अपना चरित्र बनाइए।

चित्र के बारे में एक बात यह विशेष कहनी है कि किसी के भी चित्र में उनके सारे चरित्र नहीं आते। क्या जो चित्र कृष्ण जी का घर में लगा है उसमें कृष्ण जी के सारे चरित्र चित्रित हैं या क्या किए जा सकते हैं? क्या स्वामी दयानन्द जी का सारा चरित्र एक चित्र में आ जाता है? नहीं न! कोई भी चित्र ऐसा नहीं है जिसमें चित्रित व्यक्ति का सारा चरित्र आ जाए। तो चित्र से व्यक्ति को याद करके उसके चरित्र जानने की उत्कंठा होती है और फिर चरित्र जानकर अपने को वैसा बनाने की इच्छा। तो कृष्णचन्द्र

जी के जीवन से शिक्षा लेकर भारत की उन्नति करें। रामचन्द्र जी के चरित्र को भी ध्यान में रखें। आज भाई-भाई आपस में छोटी-छोटी बातों के लिए लड़ते फिरते हैं किन्तु राम ने अपने छोटे भाई भरत के लिए सारे अयोध्या के राज्य को ठोकर लगा दी। तो आप राम की तरह से भाई के लिये त्याग करना सीखें। अगर राम के चरित्र का हम पर इतना भी प्रभाव न पड़ा तो रामायण के पाठ का क्या लाभ ?

इन सभी बातों से आप अन्दाज़ा लगाइए कि मैं कहाँ तक आपके साथ हूँ। जितनी बात बुद्धिपूर्वक होगी मैं आपके साथ-साथ वहाँ तक मानूंगा। आगे मैं नहीं मानूंगा। तो राम और कृष्ण की सच्ची सेवा यह है कि आप उनके चारित्रिक गुणों को जानकर अपने गुण भी वैसे ही बनाने का प्रयत्न करें, वैसे ही गुण धारण करें। यदि आप उनके ऊपर जलेबी रखने लगें, लड्डू रखने लगें या उन पर पानी डालने लगें तो यह उनकी पूजा नहीं है, न यह उनकी सेवा है। गुणों को धारण करना ही उनकी सेवा है।

मैं आपको अपने जन्म स्थान (नीमछ छावनी) की बात सुनाता हूँ। वहाँ जब लोग मन्दिरों में जाते हैं तो मन्दिर में घुसने से पहले वहाँ लटका हुआ घण्टा बड़ी जोर बजाते हैं और घण्टा बजाकर बोलते हैं 'भेज छप्पन की चौथाई (अर्थात् १४ करोड़ भेज) मैंने उनसे पूछा 'भाई तुम सीधे से १४ करोड़ क्यों नहीं माँगते ? छप्पन करोड़ की चौथाई क्यों कहते हो ? बोले— अजी घण्टा तो यों बजाते हैं कि महादेव जी नशे में रहते हैं ज़रा जाग जाएँ, नशा कम हो जाए और वे हमारी बात सुन लें। छप्पन करोड़ की चौथाई यों कहते हैं कि वे भोले हैं उन्हें याद तो कुछ रहता नहीं है। छप्पन करोड़ ही याद रहेगा चौथाई याद नहीं रहेगी तो छप्पन करोड़ ही दे देंगे।'

देखा आपने इन भक्तों को ? अपने भगवान् को भी धोखा दे रहे हैं।

एक शख़्स है जिसका कोई रिश्तेदार है और वह गुज़र गया है। डाक्टर की दवाई जो उनके लिए लाई गई थी वह भी रखी हुई है। आप जानते हैं लोग यथाशक्ति अपने मरीज़ को बचाने की सारी कोशिशें करते हैं। डाक्टर के यहाँ से लाई हुई दवा में से खुराक बाक़ी थी। वह रखी। मरीज़ गुज़र गया। मुहल्ले में सूचना भिजवा दी गई कि हमारे अमुक रिश्तेदार गुज़र गए हैं। श्मशानभूमि में उन्हें उठाने के लोग इकठ्ठा हो गए। जब उनको अर्थी

पर रखा गया तो वे दवा ले आए और दवा लाकर उनके मुँह में डालने लगे। तमाम लोग चिल्ला उठे कि, 'बेवकूफ़ तेरी अक्ल मारी गई है ? अब तो ये मर गए, मुर्दा हैं अब दवाई पिलाने का क्या लाभ ?' बोला 'मैं लाया तो इन्हीं के लिए था।' लोगों ने कहा 'लाया तो इन्हीं के लिए था लेकिन अब तो मर गए। ज़िन्दा तो है नहीं तू इन्हें अब क्या दवाई पिलाता है ? अब क्या ये दवाई पी लेंगे ? फिर वह बोला 'यदि ये नहीं पीते तो आप पी लीजिए दवा के पैसे तो वसूल होने ही चाहिए।' लोग कहने लगे तू बड़ा मूर्ख आदमी है हम दवाई क्यों पी लें हम कोई बीमार हैं जो दवाई पीवें' तो उसने कहा इसीलिए तो पिला रहा हूँ। आप पिलाने क्यों नहीं देते ? इन सब बातों को मान लीजिए कोई आर्य पुरुष सुनले और यह कह दे कि जो दो चार घण्टे पहले ज़िदा था और अब मर गया है उसे दवाई पिलाने वाले को तो आप बेवकूफ़ बता रहे हैं तो जो कभी ज़िदा थे ही नहीं, प्रारम्भ से ही मन्दिर में पत्थर के रखे हैं। उन्हें जो लोग खिलाते-पिलाते हैं, और लड्डू-पेड़े चढ़ाते हैं वे कितने बड़े बेवकूफ़ होंगे। इसको Rule of three से समझदार लोग लगा लें। अक्ल व हिसाब वाले ही सोचें और विचारें। भगवान् की उपासना क्या लड्डू और जलेबी चढ़ाने से होती है ? नहीं ! बिल्कुल नहीं !! यह उपासना का तरीका नहीं है !!!

मूर्ति के रखने में कोई हर्ज नहीं। मैंने पहले भी कहा था कि आप दो मूर्तियाँ बनावाएँ एक स्वयं रखें और एक मुझे दें। कह दीजिए लोगों को कि "एक मूर्ति रामचन्द्र ले गया" लोग मुझसे पूछेंगे कि क्या करते हैं आप कृष्ण की मूर्ति का ?" मैं उत्तर दूंगा कि मूर्ति देखकर मैं उनके चरित्र याद करता हूँ कि उन्होंने कितना बड़ा काम किया, कितने बड़े विद्वान् और नीतिमान् पुरुष थे जो सारी सभा में वे ही प्रधान चुने गए। इसलिए हमको भी ऐसा ही बनना चाहिए। मैं यह नहीं सीखूंगा कि उनके ऊपर लड्डू-जलेबी चढ़ाने लगूँ कि चिड़ियाएं आएँ और उन्हें खा जाएँ, सारी मूर्ति को खराब कर जाएँ। जिन लोगों ने यह तरीका अख्तियार कर रखा है कितना ग़लत काम किया है इसका कोई अन्दाज़ा हो सकता है ? यह सरासर लोग भूल किए जा रहे हैं। ईश्वर की ऐसे पूजा नहीं होती।

एक साहब ने मुझसे पूछ लिया कि, 'पण्डित जी आप अपने वालिद

साहब की तस्वीर को क्या समझते हैं मैंने कहा 'इतना इसमें और जोड़ दीजिए कि जिसको मैंने ही खींचा हो। मैंने उत्तर दिया, 'क्योंकि तस्वीर मैंने बनाई है इसलिए मैं तस्वीर का बाप हूँ और जिनकी तस्वीर मैंने बनाई है वे मेरे बाप थे। तस्वीर का कर्त्ता मैं हूँ इसलिए मैं तस्वीर का बाप हूँ। जो चीज़ मुझसे उत्पन्न हुई है वह मेरे बच्चे की जगह तो है ही। उत्तर को सुनकर कहने लगे कि 'हाँ उत्तर तो ठीक हो गया।'

तो मैंने निवेदन किया कि आप मूर्तियाँ रखें यदि रखना चाहें तो। किन्तु ऐसे रखें जैसे मैंने बताया है। कोई हर्ज नहीं है। मैं तो इनकी आवश्यकता नहीं समझता। यदि आप समझते हैं तो अवश्य रखें और अपना चरित्र उन जैसा बनाएँ तभी कुछ लाभ होगा। वैसे कभी भी एक ही चित्र से सारे चरित्र प्रकट नहीं किए जा सकते। आज तक इस प्रकार के चित्रण में कोई सफल नहीं हुआ है। तो चित्र को देखकर जिनका वह चित्र है उनके शुभ गुणों को धारण करने का प्रयत्न करने का प्रयत्न करें।

बहुत-से लोग मूर्तियों के सामने नाचते हैं, गाते हैं, उनके सामने हाथ जोड़ते हैं। मूर्तियों में ज्ञान कोई नहीं हैं तब भी वे करते है। मान लीजिए कक्षा में कोई मास्टर सो रहा हो और कुछ लड़के उनसे सोते हुओं से छुट्टी माँगकर चले जाते हैं, कोई पेशाब करने चला गया, कोई पानी पीने। जब लड़के लौट आए मास्टर ने पूछा तुम कहाँ गए थे? लड़के बोले, 'जी आपसे पूछकर पानी पीने गए थे कोई बोला पेशाब करने गए थे।' मास्टर ने पूछा, 'कब पूछकर गए थे?' लड़कों ने उत्तर दिया, 'जब आप सोए हुए थे।' मास्टर ने सभी की ताड़ना की और कहा कि, बेवकूफ़ो वह इजाज़त लेने का समय था? हम तो सोए हुए थे हमें क्या पता क्या हो रहा है। ख़बरदार अब कभी भी ऐसे मत जाना। तब वे मूर्ति जो बेजानदार हैं उनके ऊपर हाथ जोड़ने या नाचने का क्या असर हो सकता है? उनके सामने यह क्रियाएँ करना फ़िज़ूल है, निरर्थक है उसका कोई लाभ नहीं है।

सच्ची उपासना क्या है यह अब मैं आपकी सेवा में वर्णन करूँगा। ज़रा ध्यान से सुनिए।

मैंने आपको अपने व्याख्यान के पूर्व भाग में बताया था (चेतनों) में परमेश्वर और (जड़ पदार्थों में) प्रकृति दोनों बिल्कुल पूरे हैं इन्हें किसी

चीज़ की आवश्यकता नहीं है।

प्रकृति कहती है यदि तुम मुझसे फायदा उठाना चाहो तो उठा लो। मेरा सही प्रयोग करोगे तुम्हें लाभ होगा। यदि गलत तरीके से मेरा प्रयोग किया तो हानि होगी। मान लीजिए चूल्हे के पास कोई देवी खाना बना रही है। यदि वह देवी फूहड़पने से काम करेगी उसके कपड़े फैले होंगे तो आग लग जाएगी और वह खाना बनाने वाली जल जाएगी या जल कर मर जाएगी क्योंकि आग जरा भी लिहाज नहीं करेगी और जला देगी। अग्नि एक प्राकृतिक पदार्थ है और उसका ठीक प्रयोग नहीं किया गया इसलिए उससे हानि हुई। प्राकृतिक पदार्थ न अपने को जानते हैं तो वे जीवात्मा से कहते हैं कि तुम्हीं सोच समझकर लाभ उठालो हमें कुछ पता नहीं है।

अब भगवान् के बारे में भी विचार कर लीजिए। वह भी पूर्ण है। उसे भी किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है He needs nothing for himself वह तो आवश्यकता से खाली है He is perfect वह पूर्ण है। तो अब प्रश्न यह है कि पूजा कैसे की जाए, उसकी खिदमत या सेवा कैसे की जाए ?

भगवान् की पूजा, सेवा या खिदमत का तरीका यह है कि जो ईश्वर के गुण हैं, जिनके धारण करने से आदमी का उत्थान हो सकता है, उन्नति हो सकती है अथवा परमात्मा से मिलकर श्रेष्ठ हो सकती है, उन गुणों को अपने अन्दर धारण करे और अपने को को ईश्वर-सा अर्थात् ईश्वर के गुणों से युक्त बनाने का प्रयास करें।

ईश्वर के गुणों का वर्णन विस्तार से वेदों और शास्त्रों में किया हुआ है उन्हें वहां से जानकर अपनाएं। यहां उनके वर्णन की आवश्यकता नहीं है।

जीवात्मा के अन्दर ग्रहण करने की योग्यता विद्यमान है। जीवात्मा ईश्वर के गुणों को ग्रहण करने की क्षमता रखता है। वह दयालु बन सकता है, न्यायकारी भी बन सकता है। प्रातः और सायं सन्ध्या करके, बनने की चेष्टा करें। और अमल भी वैसा ही करें।

सन्ध्या क्या है ? Introspection है। आत्म-निरीक्षण है। प्रातः और सायं अपना आत्म-निरीक्षण करिए, देखिये कि जीवन के दैनिक व्यवहार में कहां-कहां कमी है, उन्हें निकालिये और ईश्वर के गुणों को धारण कीजिये।

लोग कहा करते हैं 'जी ! बग़ैर मूर्ति या चित्र के गुणों को कैसे याद करें ? यही तो विचारणीय चीज़ है। गुणों को याद करने के लिए चित्र की आवश्यकता नहीं है अभी आपकी समझ में यह बात एक उदाहरण से आ जायेगी। आप जितने भी यहां बैठे हैं भली प्रकार जानते हैं। आजकल बेईमानी, बदमाशी, छली का अत्यन्त ज़ोर है। प्रत्येक आदमी दूसरे को ठग करके अपना मतलब सिद्ध करना चाहता है। इससे किसी को भी इन्कार नहीं। सब लोग इन बुराइयों से परिचित हैं। जब खूब परिचित हैं तो क्या बेईमानी का या चोरी का चित्र खींच सकते हैं ? नहीं खींच सकेंगे। दुनिया का बड़े से बड़ा चित्रकार भी चोरी या बेईमानी का चित्र नहीं खींच सकता है और न बना सकता है ! ! जब इनकी तस्वीरें नहीं खींची जा सकतीं और बिना तस्वीरों के आप इन्हें जानते हैं। क्योंकि यह ज़हनी चीजें हैं, बुद्धि से जानने की चीजें हैं। बुद्धि से सोची और विचारीं जाती हैं। किसी के माल को बग़ैर उसकी इजाज़त के अपने तसर्रुफ़ में लाना चोरी है। इसकी तस्वीर नहीं खींची जा सकती है। इसकी कागज़ पर कोई तस्वीर नहीं खींची जा सकती। किन्तु दिमाग़ में तो खिची हुई है आपने समझ लिया है चोरी को, कि चोरी यह है। अर्थात् गुणों को बग़ैर तस्वीर के जान लेने की जीवात्मा में योग्यता है। गुणों को हम ज़हनी नक्शे से जान लेते हैं। बेईमानी या ईमानदारी, बदकारी और ज़िनाकारी सब पहिचानी जाती हैं। तो इसी तरह पर परमात्मा के गुणों को भी ज़हनी नक्शे से जाना और पहिचाना जा सकता है। परमात्मा कैसा है ? न्यायकारी है। किसी के साथ रिआयत नहीं करता चाहे कोई कितना ही बड़ा शख्स क्यों न हो There is no respect of persons with God परमात्मा किसी भी शख्सियत से प्रभावित नहीं होता चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है। वह तो जैसा कर्म कोई करेगा उसको वैसा ही दण्ड देगा।

भगवान् के इस गुण को आप धारण करे। जहां इन्साफ़ का मुआमिला आ जाए डरें नहीं, घबरायें नहीं, अभियुक्त की शख्सियत से प्रभावित न हों बल्कि साफ़ कहें कि अमुकव्यक्ति दोषी है। नौशेरवां आदिल अपने न्याय के लिए प्रसिद्ध थे क्योंकि उसने अपने बेटे को भी नहीं छोड़ा, फांसी पर लटका दिया। यहां पर क़ौम का सवाल नहीं है। यहां पर तो नेकी और गुणों से

मतलब है। चाहे किसी भी धर्म का हो। भलाई सब जगह भलाई ही है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ईश्वर के गुणों का ध्यान करने के लिए मूर्ति की आवश्यकता नहीं है। और यदि मूर्ति से ध्यान एकाग्र करने की आदत पड़ी हुई है तो अपने पुत्र या पुत्री को सामने बिठाकर उनके द्वारा ध्यान क्यों नहीं एकाग्र करते? वह तो बड़ी कीमती चीज़ है उसमें ध्यान एकाग्र कीजिये। ईश्वर का बनाया हुआ है आपका पुत्र जिसके लिए आपको प्रत्येक क्षण चिन्ता बनी रहती है कि रोगी न हो जाए, अस्वस्थ न हो जाए। तो उसी में अपने मन को केन्द्रित कर लीजिये। यदि आप उस बच्चे के एक अंग के बारे में भी सोचेंगे तो भगवान् की कारीगरी की थाह न पा सकेंगे। मूर्ति में ध्यान केन्द्रित नहीं होता। बल्कि ख़याल मुन्तशिर हो जाता है। कभी आंख में, कभी कान में, कभी कहीं और-कभी कहीं। तो मूर्ति में मनुष्य का ध्यान केन्द्रित हो हो नहीं सकता।

ध्यान का लक्षण करते हुए लिखा है 'ध्यानं निर्विषयं मनः' मन के निर्विषय होने को ही ध्यान कहते हैं अर्थात् ध्यान जभी होता है जब मन में कोई विषय न हो। रात को सोते समय यदि चिन्ताएं होती हैं तो नींद नहीं आती और चिन्ताएँ दूर होते ही नींद आ जाती है। यह पता भी नहीं चलता कि नींद कब आ गई। इसी प्रकार ध्यान भी तभी होता है जब मन विषय हीन हो जाये। मैं नहीं कह रहा हूँ। सांख्य के रचयिता कपिल मुनि ने लिखा है। यदि मन में विषय आ गये तो मनुष्य विषयों के विचार में फंस जाएगा। जैसे मनुष्य किसी खूबसूरत शक्ल को देखने के बाद कभी उसकी आंख के बारे में सोचता है कभी नाक के बारे में, कभी बालों आदि के बारे में। इस प्रकार विचारों की एक श्रृङ्खला चल पड़ती है। तो मन के में मूर्ति का ध्यान करने से मन उसमें केन्द्रित नहीं होता बल्कि अस्थिर हो जाता है. ध्यान बहुत-सी चीजों में बट जाता है। इसलिए मूर्ति को सामने रखने से भगवान् का ध्यान कभी नहीं हो सकता।

अपना मन भगवान् के गुणों पर केन्द्रित करो, खूब गहराई से विचार करो उन पर, और फिर उनके जैसा अपने को बनाने का यत्न करो। उपर्युक्त उदाहरणों व स्पस्टीकरणों से मैंने ईश्वर-पूजा के लिए मूर्ति की अनावश्यकता प्रकट की है।

सेवा कैसे की जाए ? कोई चीज उसे देकर उसकी पूजा हो सकती है ? मैंने आपको अपने व्याख्यान में बताया है कि ईश्वर और प्रकृति दोनों पूरे हैं। इन्हें किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं है। तो इन दोनों की सेवा इन्हें कोई चीज देकर नहीं होगी बल्कि अपने लाभार्थ वस्तुएँ इनसे प्राप्त करके इनकी सेवा होगी। अपूर्ण की सेवा, उससे कुछ लेकर व उसे कुछ देकर, होती है और पूर्ण की सेवा उससे कुछ (अपने लाभ के लिए व उन्नति के लिए जितना ज़रूरी है) लेकर हुआ करती है।

मुझसे, जो मेरे पास ज्यादा है उसमें से ले लीजिए। और जो मेरे पास नहीं है, आपके पास है, वह मुझे दे दीजिए। मेरा काम तो ऐसे ही चल रहा है क्यों कि मैं अपूर्ण हूँ, पूर्ण नहीं हूँ। तो मुझ में जो ज्यादा है लोग मुझसे ले लेते हैं और जो अन्यों में ज्यादा है मैं अपनी आवश्यकतानुसार ले लेता हूँ। अभी मैंने एक गाना इन भजनीक महाशय से ले लिया क्योंकि इनके पास था और मेरे पास नहीं था। यदि मेरे पास कोई चीज हो और उनके पास न हो तो वे मुझसे ले लें। तो मेरा काम लेन-देन से चलेगा। किन्तु भगवान् का काम लेन-देन से नहीं बल्कि केवल उससे लेने ही लेन से चलेगा। क्योंकि वह पूर्ण है। और उसके पूरेपन में कोई फ़र्क नहीं आता। वह सब को दिए जा रहा है। क्यों दे रहा है। वजूद को सफल कर रहा है। यदि उसका वजूद निरर्थक हो तो वह निकम्मा साबित होगा। इसलिए परमात्मा कैसा है वह बाकार है। तो परमात्मा की सेवा हम उससे कुछ लेकर करेंगे।

यदि हम उसे कुछ देना चाहें तो भी क्या दें ? उसके पास तो सारी चीजें हैं। वह अपार भण्डार (प्रकृति) का स्वामी है। यदि चाहें तो भी हम उसे कुछ दे नहीं सकते क्योंकि हमारे पास अपना है क्या जो देंगे ? इसलिए भगवान् से उसके गुण ग्रहण करके हम ईश्वर की पूजा कर सकते हैं।

प्रकृति से भी हम ले रहें हैं, लेते आए हैं और लेतें रहेंगे। क्योंकि वह भी पूर्ण है। आज की आधुनिक साज-सज्जा की सामग्री, रेडियो, ग्रामोफ़ोन टेलीविज़न, रेलगाड़ी, हवाई जहाज़ आदि सभी प्राकृतिक पदार्थ हैं जो हमने प्रकृति से प्राप्त किए हैं।

प्राकृतिक वस्तुओं के दो प्रकार के प्रयोग या उपयोग किए जा सकते हैं। सही उपयोग (Right-use) और ग़लत उपयोग (Wrong use) यदि हम

सही उपयोग करेंगे, हमारे लिए वस्तुएँ लाभकारी होंगी यदि ग़लत इस्तेमाल करेंगे तो हमें हानि हो जाएगी ।

ग़लत प्रयोग के घातक परिणाम होते हैं। ज़हर शब्द के लिए संस्कृत साहित्य में 'विष' विप्रयोगे शब्द का प्रयोग होता है। और विष शब्द का अर्थ है ग़लत इस्तेमाल, अनुचित उपयोग, Wrong use। किसी भी चीज़ का ग़लत इस्तेमाल घातक हो सकता है। तो वस्तुओं का ग़लत इस्तेमाल उनको हलाहल या ज़हर बना देता है ।

जिस चीज़ का भी ग़लत इस्तेमाल किया जायगा वह हमारे लिये ज़हर होगा। इसी प्रकार यदि भगवान् को ठीक प्रकार हमने न समझा तो वह हमारे लिए बजाय लाभदायक होने के अत्यन्त हानिप्रद हो जायेगा। लोगों ने ईश्वर के समझने में बड़ी ग़लती की है। और किए जा रहे हैं। इस ग़लत विश्वास और नासमझी ने ऐसों को ही हानि पहुँचाई है। लोग धर्म के नाम पर अब तक ठगे जा रहे हैं और हानि उठा रहे हैं।

आचार एक शब्द है। उससे पहले अति लगाने से वह अत्याचार बन जाता है। जिस चीज़ के साथ भी अति होगी वह बिगड़ जाएगी ।

टॉमसपेन का यह वाक्य कि We can not serve God in the manner we serve those who can not do without such service ईश्वर की उपासना का जो ढंग मैंने बताया है यह उसी ओर संकेत करता है। मनुष्य की सेवा जैसे की जाती है वैसे भगवान् या ईश्वर की नहीं की जा सकती । जो लोग ईश्वर की भी मनुष्य की तरह सेवा करना चाहते हैं वह ग़लत रास्ते पर जा रहे हैं। उन्हें उससे कुछ लाभ न होगा। ऋषि दयानन्द ने जब शिव पर चूहे चढ़ते देखे तो उन्हें यही तो ख़याल हुआ कि जो शिव चूहे को अपने ऊपर से नहीं हटा सकता वह जगत् की कैसे रक्षा कर सकेगा। इस ख़याल से सारी आगे की घटनाएं सम्बद्ध हैं ।

तो मैं आपको बता रहा हूँ कि मूर्तियों का सही उपयोग कीजिए, ग़लत इस्तेमाल छोड़ दीजिए ।

मान लीजिये आपका एक बच्चा है। आपके पास एक घड़ी भी है। आपका बच्चा घड़ी पर चावल रखने लगे, दाल डालने लगे, लड्डू रखने लगे,

जलेबियां चढ़ाने लगे, रायता उस पर डाल दे। सब चीज उस पर डालने लगे तो आप उसे ऐसा करते देखकर क्या करेंगे ? क्या आप उसे डाँटेंगे नहीं ? मना नहीं करेंगे ? अरे बेवकूफ़ घड़ी बिगाड़ेगा ? क्यों इस पर यह चीजें डाल रहा है ? बच्चा उत्तर दे 'पिताजी यह चलती है।' तो मैं इसे खिला व पिला रहा हूं। क्या हर्ज है ? क्या यह कोई खाती है ? क्या यह रायता व पानी पीती है जो तू इस पर डाल रहा है ?"

आप घड़ी के बारे में तो इतना तर्क कर रहे हैं लेकिन मूर्ति के बारे में यह तर्क क्यों नहीं करते। बुद्धि का प्रयोग हमें दोनों जगह करना चाहिये। जैसे घड़ी के ऊपर जलेबी चढ़ाना बेकार है वैसे ही मूर्ति के ऊपर भी कोई चीज चढ़ाना बेकार है। तो मूर्ति के ऊपर कोई चीज़ चढ़ाने या उसके सामने हाथ जोड़ने, लेट जाने या नाचने से न भगवान् की पूजा होती है और न धर्म की रक्षा।

हमको ईश्वर व प्रकृति दोनों का ही सही उपयोग करना चाहिये। ईश्वर के गुणों को हम धारण करें और श्रेष्ठ बनें। प्रकृति के पदार्थों का मनुष्यमात्र के भले के लिए प्रयोग करें। प्रकृति का ग़लत प्रयोग हमें नुक्सान पहुंचाएगा। किसी फ़ारसी के शायर ने लिखा है :

अगर सदसाल गब्र आतिश फ़रोज़द,
चूंयकदम अन्दराँ उफ़तद बिसोज़द।

गब्र कहते हैं आग के पुजारी को। यदि आग का पुजारी सौ साल तक आग को रोशन रखता रहे और एकदम उसमें कूद पड़े तो आग उसे फ़ौरन जला देगी। आग वहाँ ज़रा भी लिहाज़ नहीं करेगी। आग प्राकृतिक पदार्थ है। उसका ग़लत प्रयोग किया गया तो उसने नतीजा दे दिया।

प्रतिदिन लोग अन्धविश्वास या यूं कहिए कि ना समझी से काम करने के कारण अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं। क्या ऐसे लोग गंगा और यमुना मैया की जय बोलते हुए नहीं चले जाते हैं जो तैरने की विद्या सीखे भी नहीं हैं और नदियों के पानी में घुस जाते हैं, बड़े ज़ोर-ज़ोर से गंगा मैया की जय, जमुना मैया की जय चिल्लाते हुए लोग चले जाते हैं ? कोई नहीं रोकेगा ऐसे नासमझ लोगों को। गंगा मैया और जमना मैया ऐसे नासमझ लोगों की प्रतीक्षा में है कि वे आवें और बिना तैरने की विद्या सीखे

मुझमें घुसें। वह उन्हें पानी में ही दबोच लेगी और अपने बेटों, जल-जन्तुओं, मछली, कछुवों आदि को खिला देगी। अपने नादान व नासमझ बेटों का वह थोड़ा-सा भी लिहाज़ नहीं करेगी, उन्हें छोड़ेगी नहीं। सैकड़ों बार ऐसे दुखद समाचार सुने जाते हैं कि अमुक युवक डूब गया, इस मुहल्ले का इकलौता बच्चा डूब गया। प्राकृतिक चीजों के दुरुपयोग या नासमझी से किए उपयोगों का यह फल है।

इसके विपरीत यदि कोई क़स्साब पशुओं का वध करके आया है खून में सना हुआ है, जमना को मैया भी नहीं कहता है बल्कि उसे कुछ और ही नाम से पुकारता है, किन्तु तैरने की विद्या जानता है और उसे जानकर पानी में घुसता है तो उसको जमना या गंगा मैया अपनी छाती पर तैरा देगी और वह बखूबी पानी में अपने करतब दिखाता रहेगा। कभी चित तैरेगा, कभी पट। गंगा या यमुना उसका कुछ न बिगाड़ सकेंगी। क्यों? क्योंकि वह तैरने की विद्या सीखकर पानी में घुसा है। वह उसका भक्त नहीं है तो भी नदी उसका लिहाज़ करती है। परन्तु जो नासमझ श्रद्धालु हैं, चाहे वे दशाब्दियों से उसके भक्त हों उनके साथ कोई लिहाज़ नहीं करेगी और उन्हें डुबो देगी।

इसी प्रकार जो ईश्वर की उपासना, बिना उसके गुण, कर्म व स्वभाव जाने, अन्धाधुन्ध करते हैं उनको किञ्चिन्मात्र भी ईश्वर से लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। कहा भी है बेइल्म नतवां खुदारा शनाख्त। इसलिए ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव से परिचित होकर अपने को लाभान्वित करना चाहिये। यही उसकी सच्ची उपासना है, पूजा है और यही उसकी भक्ति है।

जड़ मूर्ति को पूजने से तो जड़ता के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त नहीं हो सकता।

॥ ओ३म्-शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ॥

वेद का इस्लाम पर प्रभाव

ओ३म् ! द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वादवत्यनश्ननन्यो अभिचाकशीति ॥

माननीया बहिनो व प्यारे भाइयो,

विषय तो आपने विज्ञापन में देख ही लिया होगा कि वेद का क़ुर्आन पर या मुसलमानों पर या इस्लाम पर क्या प्रभाव पड़ा है ? हम ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों को अनादि मानते हैं। यह हमारा मौलिक सिद्धान्त है। और इन्हीं तीनों से सृष्टि का बनना सम्भव है।

यदि किसी धर्म या सम्प्रदाय वाला इन तीन से कम मानता है तो न तो दुनिया बन सकती है और न उसका सिलसिला आगे चल सकता है। इसलिए उन लोगों ने (मुसलमानों ने) यह सोचकर कि धर्म के मैदान में, जबकि बुद्धि इतनी उन्नति कर रही है और वे मसले, जिनकी तरफ़ लोगों की तबीयत रुजू नहीं होती थी, अब वह सामने आ रहे हैं और उनके सम्बन्ध में लोग विचार करने लगे हैं कि जब परमात्मा की दुनिया में ही ऐसा नियम चल रहा है कि कोई चीज़ किसी चीज़ के बग़ैर पैदा नहीं होती है तो यह मसला फ़रामोशी की हालत में छोड़ा नहीं जा सकता। कल्पना कर लीजिए किसी चीज़ की भी। क्या वह अपने आप पैदा होती है ? क्या उसके लिए किसी प्राकृतिक पदार्थ की आवश्यकता नहीं होती है ? होती है। तो यह देखकर ही जनाब मौलवी शिबली नो अमानी ने अपनी किताब "अल्कलाम" में लिखा हुआ है कि 'माद्दा क़दीम है' अर्थात् प्रकृति अनादि है। इसके बग़ैर जगत् बन नहीं सकता। प्रकृति के मायने भी यही हैं कि 'प्रक्रियते अनयाः' जिससे सबसे पहले कोई चीज़ बनाई जाए। उसे प्रकृति कहते हैं, उसी को माद्दा कहते हैं। हमारी सदाक़त ने इतना ज़ोर मारा कि उन्होंने यह मंजूर किया कि 'हयूला' (उपादान कारण) अर्थात् माद्दा, वह हमेशा से होना चाहिए और उसके अन्दर उसकी सिफ़ात और हरकात भी जाती होनी चाहिए। यानी उसमें हमेशा से होनी चाहिए। मैंने तो उन्हें क़ुर्आन में भी दिखा दिया कि आपने बिना देखे अपना यह अक़ीदा बना लिया कि नेस्ती से हस्ती हो सकती है।

इम्मिन् शैइन इल्ला इन्दना खज़ाइनुहू वमानुनज़्ज़िलुहू इल्ला बिक़दरिम्मालूम् ॥ सूरत १५ । रु० कू० २ । आयत २१ ॥

अर्थ:—जितनी चीजें हैं हमारे यहाँ सबके खजाने हैं, मगर हम एक निश्चित परिणाम और ज्ञान के साथ उनको भेजते रहते हैं।

कहते हैं कि जो चीज भी है वह सब हमारे खज़ाने में मौजूद है। कौन कह रहा है यह? क़ुरान का अल्लाह कह रहा है कि 'हमारे खज़ाने में तमाम चीजें मौजूद हैं और जिस क़दर हम जानते हैं कि उनमें से लेनी चाहिए उतनी हम अपनी प्रजा के लिए ले लेते हैं। तो बताइए यह कहना कि 'कोई चीज नहीं थी, दुनिया बन गई, ग़लत बात है। हम तो इसे ऐसे मानते हैं—कि जैसे बाज़ीगर जामामस्जिद के पास खड़ा होकर जब टिकरी के रुपये बनाता है तो हम समझ लेते हैं कि वैसे ही उसने भी (खुदा ने भी बिना माद्दा के दुनिया) बनाई होगी अगर सचमुच रुपए बन जाते तो पीछे पैसे क्यों माँगता? जब पीछे हरेक से पैसा-पैसा माँगता है तो मालूम हुआ कि यह सिर्फ हाथ की चालाकी है। तो इसी तरीके पर उन लोगों ने मान लिया कि 'खुदा कहता है हो जा' और हो जाता है—कुरान में एक आयत आई हुई है "इज़ा अरादा शै इन् इन्नमायकूलुहू कुन, फ़यकून्" जब अल्लाह किसी काम के करने का इरादा करता है तो कह देता है कि 'हो जा' और हो जाता है। तो भला ऐसा कहीं होता है? बहुत पुरानी बात है। सबसे पहले मैंने इसे स्वर्गीय श्री लेखराम जी की किताब में पढ़ा था कि उन्होंने 'यह ऐतराज़ किया था।' बहुत ठीक ऐतराज़ है अगर कोई चीज़ नहीं थी तो कहा किससे कि हो जा? और यदि कोई चीज़ थी तो यह कहना कि सिवाय खुदा के कुछ नहीं था ग़लत बात है। दोनों बातों में से कोई एक बात सही और एक बात ग़लत है। पण्डित गुरुदत्त जी विद्यार्थी ने बड़ा अच्छा लिखा है। कहते हैं कि—

'अगर आप मानते हैं कि एक कोई ऐसी नफ़ी है, (नेस्ती है) जिससे कोई चीज़ पैदा हो जाती है और दूसरी कोई ऐसी है जिससे पैदा नहीं होती तो कहते हैं कि There must be two kinds of no thing, one ordinary nothing and the other peculiar nothing. (दो प्रकार की नेस्ती होनी चाहिए एक साधारण नेस्ती और दूसर खास नेस्ती)? होगी जो कई किस्म की होगी जो कोई चीज होनी चाहिए, ना चीज नहीं होनी चाहिए।

कितनी अच्छी बात उन्होंने कही।

तो यही बात मैंने एक बार फ़तहपुर हसुवा में जो कानपुर से आगे है एक मौलवी साहब से पूछी थी। वे वहाँ इलाहाबाद से तशरीफ़ लाए थे। मैंने उनसे पूछा था—ज़रा लफ़्ज़ सख्त हैं, मैं उन्हें बाद में हिन्दी में आपको समझा दूंगा—"पैदाइशे दुनिया से पहले मुम्किनात का भी अदम था और मुम्तनियात का भी। क्या वजह है कि मुम्किनात का अदम तो दुनिया की पैदाइश होने पर खत्म हो गया लेकिन मुम्तनेआत का अदम बाक़ी रहा" आप नहीं समझे होंगे। इसलिए मैं आपको ज़रा समझा दूं। मुम्किन शब्द के अर्थ हैं संभव, कि जो चीज़ पैदा हो सकती है। दुनिया पैदा हुई है, सम्भव है, और असम्भव, जो न पैदा हो सके वह असम्भव है, जैसे गधे के सिर पर सींग। गधे के सींग पैदा नहीं हुए। न पहले थे और न अब हैं। जब गधा पैदा नहीं हुआ था तब भी गधे के सींग नहीं थे और उसके पैदा हो जाने के बाद भी नहीं हैं। तो गधे के सींग न होना असम्भव चीज़ है, जो कभी नहीं हो सकती Impractciable तो दुनिया से पहले गधा नहीं था और गधे के सींग भी नहीं थे अर्थात् मुम्किनात व मुस्तनियात दोनों का अदम था। दुनिया की पैदाइश से पहले न गधा था और न गधे के सींग। लेकिन जब दुनिया पैदा हुई तो गधे का 'न होना' होने में बदल गया अर्थात् जो गधे का न होना था खत्म हो गया। लेकिन सींग वैसे के वैसे ही रहे। न तो सींग गधे के न होने से पहले थे और न गधे के होने के बाद हैं। इस प्रकार जो मैंने प्रश्न किया कि—

"दुनिया की पैदाइश से पहले मुम्किनात का भी अदम था और मुम्तनिआत का भी। क्या वजह है कि दुनिया की पैदाइश के बाद मुम्किनात का अदम तो ख़त्म हो गया और मुम्तनेआत का बाकी रहा ?"

मौलाना क्या जवाब देते हैं कि, "पण्डित जी एक में सलाहियत थी और दूसरे में नहीं थी।"

मैंने कहा, "बस जहाँ सलाहियत होगी वह शय होगी लाशय नहीं रहेगी," वह कोई चीज़ हो जायगी, वह Something होगी Nothing नहीं हो सकती।" खैर यह एक लतीफ़ चीज थी जो मैंने आपको सुना दी। यह चीज़ देखकर उन्होंने मान लिया कि हाँ हकीक़त में माद्दा था, प्रकृति थी और

ख़ुदा ने माद्दे से दुनिया बनाई ।

अब दूसरा प्रश्न यह उठता है कि दुनिया किसके लिए बनाई ? यदि वह न हो तो दुनिया का बनाना बेकार ? इसलिए उसका (जीवात्मा का) मानना भी अनिवार्य है, जरूरी है। दुनिया में हम देखते ही हैं कि तीन से कम के अन्दर कोई काम पूर्ण नहीं होता है। पूर्ण हो नहीं सकता है। "तीन" पूर्णता का द्योतक है। यहाँ भी, इस समय, मैं (व्याख्यान देने वाला), आप (श्रोता, सुनने वाले) और मेरा व्याख्यान (जो मैं बोल रहा हूँ)। तीन हैं। इन तीनों में से किसी एक को निकाल दीजिए तो यहाँ का जल्सा ख़त्म। बाजार में भी तीन चीज़ें हैं (दूकानदार, ख़रीददार और चीज़)। इन तीनों में से एक चीज़ निकाल दीजिए फिर बाज़ार चलता है क्या ? एक जगह दूकानदार नहीं है, दूसरी जगह ख़रीदार नहीं है। अब चलाइए बाज़ार ? बाज़ार कभी नहीं चलेगा। वह खुला हुआ भी बन्द होगा। बस इस सदाक़त को देखकर मौलाना शिबली नौ अमानी ने यह बयान किया था कि माद्दा क़दीम है और उससे दुनिया बनती है।

एक बार मिर्जा हैरत साहब देहलवी जो बड़े दरीबे में रहते थे उनसे एक दिन मेरी बात हुई। उनसे पूछा कि "कहिए जनाब अगर आप यह मानते हैं कि रूह पैदा हुई है तो ज़रा फ़रमाइए कि इसके (आत्मा) अजज़ा क्या हैं कि जिनसे यह बनी है ?" कहने लगे, "पण्डित जी यह बात नहीं है—क़ुर्आन में आया हुआ है "फइज़ा सव्वैतुहूवनफ़क्तुफ़ीहिमिर्रूही"। अल्लाह कहता है जब हमने तैयार कर लिया, किसको ? आदम के पुतले को, (न फ़क्तु) तो उसमें अपनी रूह फूंक दी (मिर्रूही) अपनी रूह में से ? तो क्या ख़ुदा की रूह पैदा हुई थी ? मुझसे उलाहना देते हुए कहने लगे, 'नहीं' इसलिए रूह पैदा नहीं होती, वह हमेशा से है।" इस प्रकार उन्होंने रूह और माद्दे का होना हमेशा से मान लिया। ख़ुदा को वे मानते ही थे।

क्यों हुआ यह परिवर्त्तन ? क्या वजह है यह तब्दीली वाक़ै हुई ? कोई तो कारण होना चाहिए ? मैं कहता हूँ कि यह सृष्टि इतनी जोरदार है, इतनी Predominent (प्रीडामीनेण्ट) है, इतनी शक्तिशाली है कि जो चीज़ें ग़लत हैं उन्हें भुलवा देती है और जो सही हैं उन्हें मनवा देती है। लेकिन ज़रा ग़ौर करने वाला होना चाहिए। जिन लोगों ने ग़ौर किया उन लोगों ने

हक़ीक़त का बयान कर दिया।

अब इससे आगे बयान करता हूं मिर्ज़ा साहब, मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी, अहमदी जमात। उन्होंने क्या लिखा है? क़ुदरती बात है, जब तीनों चीजें हैं तो खाली नहीं रह सकता (ख़ुदा)। यह ख्याल कि बेकार रहता है भला कैसे हो सकता है? अकेला रहे तो ज़रूर बेकार रहेगा। इन तीनों चीज़ों में से (ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति) कोई चीज़ अकेली मान लीजिए बाक़ी चीज़ें बेकार रह जाएँगी मोटे तौर पर उपदेशक बेकार यदि सुनने वाले न हों, राजा बेकार यदि प्रजा न हो, डाक्टर बेकार यदि मरीज़ न हों, मास्टर बेकार यदि पढ़ने वाले न हों। इसलिए खुदा भी बेकार है (जीवात्मा और प्रकृति के अभाव में)। यह सोचकर उन्होंने क्या किया? उन्होंने सिलसिला बयान किया, जो हमने अपनी उम्र में जबसे न जाने कितने मुबाहसे किए हैं उनमें बीसियों मौलानाओं से बातचीत करने का मौक़ा हुआ वे इस दुनिया या सृष्टि को सबसे पहली सृष्टि मानते हैं। कहते हैं, "यह सबसे पहली दुनिया है। इससे पहले कोई दुनिया नहीं थी।" लेकिन जब उन्होंने यह देखा कि उससे पहले इतना बड़ा जमाना, जिसका न कोई शुरू है और न कोई ख़ातिमा, Interminable Period, और इतने वक्त तक परमात्मा बैठा रहा खाली। अच्छा नहीं मालूम होता। आजकल Unemployment है क्या हालत हो रही है? क्या ख़ुदा भी इतने लम्बे समय तक Unemployed रहा? यह ख्याल करके उन्होंने यह परिवर्त्तन किया कि जबसे खुदा है तबसे दुनिया का सिलसिला चला आ रहा है और यह चलना भी तभी से चाहिए। तो मिर्ज़ा साहब ने खुदा के अन्दर दो ताकतें मानी हैं। एक दुनिया के पैदा करने की और दूसरी नाश करने की जिसको उन्होंने इफ़ना (नाश) और ईजाद (उत्पन्न) नाम दिया है। उत्पन्न करने की व नाश करने की शक्ति। यह दोनों शक्तियाँ भगवान् में हमेशा से हैं वह ऐसा मानते हैं। जब एक का दौर समाप्त हो जाता है तो दूसरी का दौर शुरू हो जाता है। यह बराबर चलता रहता है और हम नहीं कह सकते हैं कि इसका कोई शुरू है कि नहीं और इसी सम्बन्ध में उन्होंने क़ुर्आन की एक आयत पेश कर दी "कुल्ला यौमिन् हुव फ़ीशान्"।

खुदा हर एक दिन किसी न किसी शान में रहता है। यह एक क़ुर्आन

की आयत लेकर इसी के आधार पर उन्होंने यह माना। उन्होंने कहा कि यह हमारी तराश या इख्तरा नहीं है, क़ुरान के आधार पर ही यह हमारा अक़ीदा है। हमने कोई नई चीज नहीं निकाली है यह क़ुरान में मौजूद है। अब इससे आप क्या अन्दाजा लगाते हैं। वेद के कितने नजदीक आ गए हैं। वेद में लिखा है "पादोऽस्येहाभवत् पुनः।"

वेद में आया हुआ है कि यह क्रम हमेशा से है। दुनिया के बाद सृष्टि और सृष्टि के बाद प्रलय, प्रलय के बाद सृष्टि। रात के बाद दिन और दिन के बाद रात होते चले आ रहे हैं।

स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज के आग्रह पर मैं एक बार उनके गाँव में गया। वह गाँव मुसलमानों के आधिक्य वाला है। स्वामी जी ने कहा था कि वहाँ के निवासी क्योंकि मुसलमान हैं इसलिए आपका व्याख्यान सुनने वे जरूर आयेंगे। तो वहाँ मेरा व्याख्यान तनासुख पर हो रहा था मैंने क़ुरान की आयतों से यह बताया कि उसमें तनासुख मौजूद है। चाहे आप न मानें यह और बात है। वैसे आपके यहाँ मुतनातकिया नामक एक बहुत बड़ा सम्प्रदाय भी था जो आवागमन अर्थात् तनासुख को मानता था। यहाँ देहली सदर में दारूल्फ़लां नाम की एक जगह है। उसके एक बड़े बुजुर्ग व अन्य बहुत-से उनके साथी यहाँ एक कांफ्रेंस में आए थे। मैं उसमें प्रधान था (एक सम्मेलन का) वहाँ उन्होंने तनासुख अर्थात् आवागमन को स्वीकार किया था वह कहते थे कि क़ुरान में आवागमन है और वे आयत वही पेश करते थे जो मैं किया करता हूँ और कहते थे कि इस बिना पर तनासुख जरूर होता है और होना चाहिए। एक जोरदार बात उन्होंने और कही जो हम भी कहा करते हैं क्योंकि सीधी-सी बात है, "सौ स्याने एक मत।"

उन्होंने यह कहा कि, "दुनिया में आप देखिये कि बहुत से आदमी पागल रहते हैं, वे सारी उम्र पागल ही रहते हैं, और बड़ी भारी संख्या ऐसे लोगों की है जो मूर्ख हैं, समझते कुछ नहीं अपनी रोजी कमाते हैं और सारा दिन गुजार देते हैं, रात को सो जाते हैं. बहुत से ऐसे बच्चे हैं जो थोड़ी उम्रमें मर जाते हैं, बहुत से ऐसे हैं जो माता के गर्भ में ही समाप्त हो जाते हैं, बहुत-से ऐसे हैं जो नास्तिक हैं परमात्मा को मानते ही नहीं हैं।" तो कहते हैं कि जब दुनिया में ऐसे आदमी भी है और खुदा ने दुनिया क्यों बनाई है ? ताकि लोग

इबादत करें "माखलक्तुल्जिन्न वलिसा इल्लालियाबुदून्" हमने जिन और इंसान इबादत के लिये पैदा किये हैं। दुनियाँ में लोगों के पैदा करनी की खुदा की ग़रज़ है कि लोग उसकी इबादत करें। कैसे पूरी होगी? पागल, मूर्ख व नास्तिक हैं ये सब कैसे इबादत करेंगे? जो बच्चे थोड़ी अवस्था में, या माता के गर्भ में ही मर गये हैं, वे खुदा की इबादत कैसे करेंगे? तो इन सभी लोगों का दुनिया में फिर आना जरूरी है। बगैर दुबारा आए वे दुनिया में आने का मक़्सद अर्थात् खुदा की इबादत कैसे कर सकेंगे? इसलिए अहमदी लोगों ने दुनिया के सिलसिले को माना है और अब दूसरी जमात वाले भी मानने लगे हैं और अब कहने लगे हैं कि हम नहीं कह सकते हैं कि खुदा ने आज तक कितनी बार दुनिया पैदा की है क्योंकि पैदाइश के बाद फ़ना और फ़ना के बाद पैदाइश यह सिलसिला चला आ रहा है। यह परिवर्तन हो गया है।

तो वहाँ लखनौती में, स्वामी ब्रह्ममुनि जी के गाँव में जो व्याख्यान हो रहा था। उसे सुनने बड़ी तादाद में मुसलमान लोग आये थे। वहाँ मैंने एक क़ुर्आन की आयत पढ़ी। तूलिजुल्लैल फ़िन्नहारि व तूलि जुन्नहारा फ़िल्लैल व तुख्रिजुल्हैयामिनल् मैय्यति व तुख्रुजुल्लमैयतमिनल्है। इसका अर्थ यह है कि अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है और मुर्दा से जिन्दा को और जिन्दा से मुर्दा को निकालता है। मैंने यह कहा कि, "यह स्पष्ट है और रात के बाद दिन होता ही है इसमें कोई शंका की बात नहीं है तो इसी सचाई की बिना पर उन्होंने नीचे लिखा है कि जैसे दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होता है और यह सिलसिला बराबर जारी है"—एक बार मुबाहसे के बीच एक खास मज़ेदार बात आई थी। मैंने अपने मद्दे मुकाबिल मौलाना से पूछा था "बताइए यहाँ जो बयान है यह महज़ एक दिन और एक रात का है या ज्यादा का?" तो कहने लगे कि "आप भोले बनते हैं-- नहीं! यह सिलसिले को बयान किया है, अल्लाह जल्लाह शानऊ ने, परमात्मा ने, खुदा ने इस सिलसिले को बयान किया है कि रात के बाद दिन और दिन के बाद रात बराबर होता चला आ रहा है।" "सिलसिला है?" "कि जी हाँ" "तो इससे आगे वाली आयत के बारे में क्या कहेंगे आप कि वतुख्रुजुल्लहैयामिनलमैयता व तुख्रिजुल्लमैयतामिनल्है मुर्दा से ज़िन्दा को निकालता है और ज़िन्दा को मुर्दा से?" तो मौलवी साहब बोले कि, "इससे

आप तनासुख साबित कर रहे हैं" मैंने कहा कि, "मैं साबित नहीं कर रहा हूँ जो साबित है उसे दिखा रहा हूँ। अब कहिए आप क्या मानते हैं ?"

इस बयान को सुनकर एक मुसलमान साहब बड़े प्रभावित हुए। तो उन्होंने कहा कि आप हमारी दावत क़ूबूल करें कल सुबह आठ बजे। मैंने कहा "बहुत अच्छा।" मैं, स्वामी जी व श्री जगदीश भूषण भजनीक, हम तीनों अगले दिन प्रातः ८ बजे उन साहब के घर पहुँच गए। उन्होंने वहाँ बड़े साफ़ बर्तन में अपनी भैंस का दूध निकाला, हमारे सामने गर्म किया और निहायत साफ़ गिलासों में हमें वह पीने के लिये दिया। जब हम दूध पी चुके तो वह मुझे एक अलग कमरे में ले गये और कहा, "पंडित जी, रात के व्याख्यान से मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा है।" मैंने कहा "क्या ?" तो बोले कि, "मैं बेवकूफ़ नहीं हूँ, मैं अरबी जानता हूँ, क़ुर्आन पढ़ता हूँ। आपने जो हवाला दिया है। उस हवाले से मुझ पर असर पड़ा है। मैं आज से तनासुख का मानने वाला बन गया हूँ, क़ुर्आन में यह चीज़ मौजूद है।" इससे आप अंदाज़ा लगाइये कि वैदिक सचाई कितनी ज़ोरदार रही है कि वह मसले जो पहले नही माने जाते थे वह माने जाने लगे हैं। कहते हैं हक़ीक़त में यह बात ठीक है कि खुदा दुनिया पैदा करता है और फ़ना करता है और यह सिलसिला बराबर जारी रहता है और अगर वह ऐसा न करे तो उसका ख़ाली बैठना साबित होता है। रूह भी मौजूद है। प्रकृति भी मौजूद है। तीनों मौजूद हैं ऐसी अवस्था में वह ख़ाली नही बैठ सकता।

अगर कोई यह मान ले कि खुदा सारी दुनियाँ को बिल्कुल फ़ना कर देता है, फिर नए सिरे से बनाता है तो यह चीज़ लाज़िम आयेगी कि जो जीवात्मा दोज़ख़ और बहिश्त में जाने चाहिये वह भी ख़त्म हो जायेंगे कैसे वे दोज़क़ व बहिश्त में जा सकेंगे ? वे तो फ़ना हो जायेंगी। तो वे मानते हैं, 'नहीं आत्माएँ रहती हैं।' वे कहते हैं कि यह दोज़क़ और बहिश्त में रहेंगे। Eternal Condemination and Eternal Reward ऐसा इनाम जो हमेशा रहेगा, ऐसा Condemination जो हमेशा रहेगा। ये दोनों बातें वहाँ उन्होंने बयान की। अब इसमें भी कुछ परिवर्तन हो गया है।

यहीं पैरेड के मैदान में शास्त्रार्थ तो नहीं हो रहा था, ख्वाजा कमालुद्दीन साहब व्याख्यान दे रहे थे। वे अहमदी जमात के एक बहुत बड़े वकील थे

ओर वह व्याख्यान दे रहे थे। उस व्याख्यान में उन्होंने कहा था कि "हमारे यहाँ दोज़ख हमेशा का नहीं है, क्या कभी जेलख़ाना हमेशा के लिए हुआ करता है ? जितनी सज़ा है उससे ज्यादा नहीं हो सकती, क्या कभी जेलखाना हमेशा के लिए हुआ करता है ? इसलिए दोज़क हमेशा के लिए नहीं हो सकता। क़ुआॅन में यह चीज़ मौजूद है। जब लोग अपने पाप को भोग लेंगे तो खुदा उन्हें वहां से (दोज़ख से) निकाल देगा। क़ुआॅन में साफ लिखा है क़ालन्नारुमस्वाकुम् ख़ालिदी ने फ़ीहा इल्लामाशा अल्लाह—कहा कि आग तुम्हारा ठिकाना होगा, जिसमें हमेशा-हमेशा रहोगे जो अल्लाह चाहे।

आग तुम्हारा घर होगा, आग तुम्हारा ठिकाना होगा जिसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। मगर जो अल्लाह चाहे। अगर अल्लाह चाहे तो उन्हें निकाल सकता है। इसलिए दोज़ख से निकाल लिए जायेंगे। यह सब अस्पताल की कोठरियाँ हैं। इनमें से निकल आयेंगे और इनको निकालकर जन्नत में भेज देगा। वहाँ वे अपने अच्छे कर्मों का फल भोगेंगे।" जब वह यह व्याख्यान दे रहे थे तो मैंने कहा कि, "मौलाना मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ ?" उन्होंने कहा, "क्या ?" मैंने कहा, वे लोग बहिश्त में हमेशा कैसे रहेंगे ? अभी आपने दलील यह दी है कि कर्म (पाप) ख़त्म होने पर (भोगने से) खुदा उन्हें दोज़ख से निकालकर जन्नत में भेज देता है। तो जन्नत भी तो शुभ कर्मों का फल है वे कर्म भी तो भोगने से ख़त्म हो ज़येंगे तो जन्नत या बहिश्त हमेशा के लिए कैसे हो सकती है ? मैं आपसे यह पूछता हूँ कि, "दुनिया में लोग ज़्यादा बुरे काम करते हैं कि ज्यादा अच्छे ?" उन्हें बोलना पड़ा क्योंकि कुआॅन के बख़िलाफ़ तो बोल नहीं सकते थे। अगर बोलते कि, 'लोग अच्छे काम करते हैं," तो वहाँ मैं पढ़ देता कलीलुम्मिन् इबादियश्शकूर।

हमारे बन्दों में शुक्र करने वाले बन्दे बहुत कम हैं—"कि हाँ पाप तो लोग ज़्यादा करते हैं और पुण्य कम।" तो मैंने कहा कि पाप ज़्यादा होते हुए भोगने से समाप्त हो जाते हैं और उसके परिणामस्वरूप उन्हें मिली दोज़ख से निकालकर ईश्वर उन्हें जन्नत में डाल देगा तो जो पुण्य कर्म हैं वे समाप्त नहीं होंगे क्या ? और उनके परिणामस्वरूप मिली जन्नत में से क्या निकालना नहीं होगा ? याद रखिए यदि आप वहाँ से न निकलेंगे तो मैं आपको वहाँ से निकाल लाऊँगा क्योंकि पुण्य समाप्त होने पर बहिश्त में कोई नहीं रह

सकता।" तो इस पर मौलाना बोले कि जन्नत या बहिश्त तो खुदा की रहमत से मिलती है, तो मैंने कहा कि, ये दोज़ख खूदा के गज़ब से नहीं मिलती है क्या ? खुदा में ग़ज़ब भी है और रहमत भी है।" तो कहने लगे, "ग़ज़ब पर रहमत ग़ालिब रहती है" तो मैंने कहा, "खुदा सिफ़त में अपने ऊपर ग़ालिब और मग़लूब भी रहता है। उसकी सिफ़त एक दूसरे के ऊपर गालिब है क्या कह रहे हैं आप ? बड़ी मुश्किल में रहता होगा ? ऐसा नहीं हो सकता। मैं आपको वहाँ रहने न दूँगा।" वहाँ क़ुर्आन में ऐसा लिखा हुआ है 'अत्वा अन् ग़ैरामज़ जूज़' यह देन है जो गंडेदार नहीं है, एकरस होती है यानि उसमें जुज़ नहीं है।

अभी इतना और अभी इतना ऐसा नहीं है, गंडेदार नहीं है। एक मियादे मुअय्यना तक, एक नियत समय तक जन्नत या बहिश्त या स्वर्ग का आनन्द लगातार भोगता है। यों कहिए कि वह सुख गंडेदार नहीं है बल्कि लगातार एक निश्चित समय तक मिलता रहता है। आगे लिखा है जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम रहेंगे ?" तो मैंने कहा कि क्या आसमान और ज़मीन हमेशा कायम रहेंगे ? "नहीं ! हमेशा तो नहीं रहेंगे" मौलाना बोले। तो मैंने कहा, कि बस साफ़ बता दिया कि जब तक आसमान और ज़मीन रहेंगे तभी तक वह सुख प्राप्त होगा।" साफ़ हो गया कि न जन्नत हमेशा की है और न दोज़क हमेशा की है। यह साफ बात है कि लोग आराम की जगह से नहीं निकलते। इस प्रकार आज वेद का यह असर उन पर पड़ा कि वह अपने पुराने और ग़लत विश्वासों को छोड़ने के लिए विवश हुए।

आगे जो अन्य विवादास्पद बात है वह है कि हम वेद का इल्हाम सबसे पहला मानते हैं कि सृष्टि की आदि में वेद आया। जब इन्होंने (मुसलमानों ने) यह देखा कि क़ुर्आन से पहले और भी किताबें थीं (तौरात, जबूर और इंजील) तो पहले और भी कोई ज़माना रहा होगा या होना चाहिए। तो क्या कहते हैं, "हाँ इब्तदा में वेद आया है। यह पहली जमात का है जैसे Primary जमात होती है और उसकी किताबें होती हैं इस तरह पर वेद आया है हमारा M.A. का Course है। क़ुर्आन मजीद M.A. का Course और वेद, वह Primary Class की किताब है। मैंने कहा, "ख़ैर आपने (वेद को) किसी क्लास की किताब तो माना।" लेकिन हम आपसे पूछ लेते

हैं" ज़रा यह तो बताइए कि ऐसा कौन-सा मसला है कि जो ज़रूरी है इंसान को इंसान बनाने के लिए, मुक्ति प्राप्त कराने के लिए, महान् से महान्तम उन्नति के लिए आवश्यक है और वह वेद में नहीं है और क़ुरआन में है। कोई आप बता सकते हैं कि जिससे ऊँची से ऊँची तरक्क़ी इंसान कर सके वह चीज़ क़ुरआन में हो और वेद में नहीं हो वह आप ज़रा फ़र्मा दीजिए।" इस पर वह कुछ न बोले। उस मजमे में एक पागल से साहब बैठे थे बोले कि, जनाब एक चीज़ नहीं है वेद में मांस खाना यह क़ुरआन में है और वेद में नहीं है।' मैंने कहा, " बहुत बड़ी चीज़ के लिए क़ुरआन आया है। इनको तो हम भेड़ियों से, कुत्तों से, गीदड़ों से सीख सकते थे। इस काम के लिए क़ुरआन के आने की क्या ज़रूरत थी ? उसने जानवर ऐसे पैदा कर दिए थे जो हमें यह बात सिखा सकते थे। एक समझदार शख्स वहाँ बैठे थे कहने लगे, "पण्डित जी साहब आप किसकी तरफ लग रहे हैं ये तो बे समझ आदमी हैं, इनका दिमाग फिरा हुआ है (उनके कहने पर मुझे ज्ञात हुआ कि वेपागल है) आप सोचें मेरा कहने का मतलब यह है कि वेद के सिद्धान्त जाकर इतना जोर पकड़ गए हैं कि उनका कोई जवाब नहीं बन पाता। मैं क़ुरआन की बिना पर ही हमेशा उनका जवाब दिया करता हूँ। वह कहते हैं पहले कमइल्म लोग थे। धीरे-धीरे, धीरे-धीरे इल्म बढ़ता हुआ चला गया है और इसलिए खुदा ने क़ुरआन को पीछे भेजा। बरेली की बात है। वहाँ शास्त्रार्थ था। बरेली के शास्त्रार्थ में मुसलमानों ने दावत दी थी। गुफ़्तगूका समय दिया था इसलिए हमें पहुँचना ही था। मैं यहाँ दिल्ली से बरेली पहुँचा। स्टेशन पर एक आर्य भाई आए हुए थे आर्य समाज से। वह कहने लगे 'कहाँ चलेंगे पण्डित जी ?" मैंने कहा सीधे वहीं मस्जिद में जहाँ जलसा हो रहा है।" तो हम वहीं चले गये। जब हम वहाँ पहुँच गये तो हमने उनसे कहा कि, "आपका जलसा शुरू होने वाला है आपने दावत दी है, हम हाज़िर हो गये हैं, कृपया हमको मौक़ा दिया जाये। मन्त्री जी—आप जानते हैं—उनका कहना मानना ही पड़ता है। वह कहने लगे, "पण्डित जी साहब, आप देखिये ज़रा, रात का वक्त है, देर हो गई है।" मैंने कहा, देर क्या है ? जलसा तो आपका शुरू नहीं हुआ है अभी, इसलिये मौक़ा दीजिये।" एक मौलाना जो पटना से आये हुये थे खड़े हो गये और कहने लगे, क्यों नहीं वक्त देते हैं नाज़िम साहब इन्हें, यह माँग रहे हैं।" तो नाज़िम ज़रा नाराज़ हो

गये कि इन्तजाम के बीच में दखल दे रहे हैं आप। तो उन्होंने कहा कि "आप ही खड़े हो जाइये, पण्डित जी सवाल करेंगे और आप जवाब दीजिये" विचारों को खड़ा होना पड़ा।

मैंने उनसे पूछा कि, "देखिए आपके यहाँ तौरात, जबूर और इंजील ये किताबें आईं। अल्लाह की तरफ़ से आईं। खुदा क़ादिर मुतलक है, सर्वज्ञ भी है, और शक्तिमान् भी है।" मानते हैं आप? "कि, हाँ जुरूर" तो बताइये जो उसने अपना इल्म ज़ाहिर किया था तौरात में, ज़बूर में उस इल्म को तब्दील करने की क्या जरूरत पड़ी? क्या उसने अपने अनुभव Experience के साथ तब्दीली की है? कौनसी बात भूल गया था? स्वामी दर्शनानन्द जी ने अपनी किताब में यही लिखा है—कौनसी बात भूल गया था तौरात में जो जबूर में ठीक कर दी? और फिर ज़बूर के बाद इंजील आई। तो कौनसी गलती रह गई थी ज़बूर में जो इंजील में ठीक की गई? और इंजील में कौनसी रह गई जो क़ुर्आन में ठीक की है? और यह सिलसिला कहाँ तक चलेगा? आगे अब और कौनसी चीज आएगी अगर क़ुर्आन में भी कोई कमी रह गई हो?"

तो मौलाना खड़े हुये मुस्कराते हुये और क्या कहते हैं? "पण्डित जी साहब आपका किसी हकीम से वास्ता नहीं पड़ा।" मैंने कहा "किसी बीमार को पड़ा करता है तन्दुरुस्त को क्या मतलब पड़ा है "मैंने आगे कहा, "फ़रमाइये क्या कहते हैं" आप कहने लगे, "हकीम का यह तरीक़ा होता है कि अगर किसी को कोई तकलीफ़ होती है और पेट की खराबी हो तो पहले वह दवाई देता है जिससे मेदा नर्म हो जाये और जब मेदा नर्म हो जाता है तब ऐसी दवा देता है कि जिससे जुल्लाब होकर पाखाना हो जाये और मेदा साफ़ हो जाये। तो यह जितनी किताबें हैं (तौरात जबूर व इंजील) यह वह थीं कि जिससे खुदा ने उन लोगों के अन्दर जो माद्दा था सचाई के बखिलाफ़, वहदानियत के बखिलाफ़ उस तमाम को नर्म कर दिया और जब क़ुर्आन मजीद आया तो जुल्लाब से कतई सबको निकाल कर बाहर फैंक दिया।" मैंने कहा, "बहुत ठीक" अब मैं आपसे पूछता हूँ, "वह लोग जो पहले चले गये (तौरात, ज़बूर व इंजील के वक्त के) उनका मेदा नर्म हो गया लेकिन जुल्लाब नहीं हुआ वह चिल्ला रहे हैं कि अल्लाह मियाँ ये दुनिया के जो हकीम हैं उनके तरीक़े के भी बखिलाफ़ है वह जिसका मेदा नर्म करते हैं उसी को जुल्लाब भी

देते हैं। आपने हमारा मेदा नर्म करके हमें जुल्लाब नहीं दिया हम यों गुल मचा रहे हैं और इनको बिना मेदा नर्म किये जुल्लाब दे रहे हैं जो क़ुर्आन वाले हैं यह इधर गुल मचा रहे हैं यह क्या किया ? सोचना चाहिए क्या होगा ?" जब नाज़िम ने देखा कि गड़बड़ हो रही है तब वह मेरे पास आये और बोले पण्डित जी साहब अब कल। मैंने कहा, "हाँ। कल के लिए मैं बेकल नहीं हूँ। अब कल के लिये कह दीजिये लेकिन सोच विचार कर रखिए। कौन आदमी रखना चाहिये। तब उन्होंने दूसरे दिन एक और मौलाना को रखा। उन्हें कह दिया कि आप रहने दीजिए।

अगले दिन वहाँ मुबाहसे में जीवात्मा के मुताल्लिक़ बात आई। मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि यह लोग (मुसलमान) क्या मानते हैं। वह मानते हैं इंसान की रूह अलग होती है और जानवरों की रूह अलग होती है, इन सबकी रूहें अलग अलग होती हैं। ऐसा ये मानते हैं।

तो कहने लगे, पंडित जी तनासुख मानने से इबताले नौईयत लाज़िम आती है यानि जाति की विशेषता भंग हो जावेगी जो जिस योनि की है उसी योनि में दाख़िल हो सकती है— अन्य योनि में दाख़िल नहीं हो सकती। ज़रा लफ़्ज़ सख्त हैं, लेकिन मैं हिन्दी में कर दूंगा —क्योंकि नौ यह हैं कि तमाम जितनी रूहें हैं, इंसानों (की) के शरीर में वह सब एक प्रकार की हैं 'समान प्रसवात्मिका: जाति: ।' यह जाति का लक्षण किया है। यानि जितने भी Individuals किसी भी जाति के हैं वह सब यकता होने चाहिए। अगर आदमी गधा बन जाए तो यह समझिए कि उसकी रूह की असलियत बदल गई (नौईयत तब्दील हो गई) उसकी (आत्मा की) असलियत जो है वह परिवर्तित हो गई इसलिए इब्ताले नौईयत लाज़िम आता है। "कैसे मानते हैं आप इस चीज़ को ?" मैंने कहा कि इब्ताले नौईयत का उसूल अगर सही है तो मैं आपसे पूछता हूँ कि खुदा ने बहुत-सों को बंदर और सूअर बना दिया था कि नहीं ? जब उन्होंने खुदा का हुक्म नहीं माना था 'कि हफ़्ते के दिन मछली का शिकार न करना। तो बन्दर और सूअर बना दिया कि नहीं बना दिया था। अब ग़ौर करना चाहिए कि यह कैसे हो गया ? कुर्आन फर्माता है मल्लानहुल्लाहु व ग़ज़िबा अलैहि व ज़िअला मिन्हुमुल्किरदता वल्खना ज़ीर। साफ़ है कि नहीं लिखा हुआ ?" कि, "हाँ यह तो है।" तो बताइए आपके फ़र्माने

के मुताबिक़ इब्ताले नौईयत लाज़िम आ गई क्या ? जो इन्सान थे उन्हें बन्दर और सूअर बना दिया। अहमदी लोग कुछ और मानते हैं लेकिन उनकी वह बात चलती नहीं है। मौलाना ने यह मान लिया है कि हक़ीक़त में इंसान नीची योनियों में जा सकता है। इसको तमासुख़ माना है, मस्ख़ हो गये हैं। यानी उनकी शक्ल-सूरत तब्दील हो गई इस तरह पर कि कुछ आदमियों को बन्दर बना दिया है और कुछ आदमियों को सूअर बना दिया। यह तनासुख क्या है ? जो नस्ख़ करके शरीर को बर्बाद करके, जलाकर, फूंककर, कुछ करके दूसरा नया बनाया जाये यह तनासुख है। तो कहने लगे कि नहीं उन इंसानों की शक्लो सूरत नहीं बदली बल्कि उन इंसानों की हालत ही ऐसी हो गई। यह बात अहमदी लोगों ने कही है। कैसी बन गई ? कि वे सूअर और बन्दर मिज़ाज के हो गये लेकिन शक्ल नहीं बदलीं वे वैसी की वैसी रहीं। मैंने कहा ज़रा ग़ौर करें यह उस अक़ीदे से बेहतर नहीं है बल्कि बदतर है। अगर यह मान ले कि एक आदमी हक़ीक़त में सूअर की शक्ल अख़्तियार करके भाग जाता है पाख़ाने की तरफ़ तो बुरा नहीं लगेगा। लेकिन, अगर वह आदमी की तो शक्ल का हो और आदत यह पड़ गई हो कि बजाय सीधा मेरे पास आने के वह उधर पाख़ाने की तरफ़ चला जाये तो आप ग़ौर कीजिये कि क्या अच्छा लगेगा ? इसलिये अपनी इस तावील को इस Interpretation को जो आप कर रहे हैं इसको ज़रा हटा दीजिये और सीधी हमारी बात मानिये। क्या मानिये ? कि जब हक़ीक़त में इंसान अपने को मनुष्य योनि में ही ऐसा बना लेता है तो भगवान् कहता है That is not a fit place for you go therc. तुम्हारे लिए यह वाजिब जगह नहीं है तुम वहाँ चले जाओ। इसलिए फिर वह वहाँ चला जाता है और उसको वहाँ भेज दिया जाता है। वहाँ बुरा नहीं लगता। इसलिए परमात्मा का तरीक़ा बड़ा साफ़ है और उसकी मिसाल तो आपके पास भी मौजूद है। इस तरह उन लोगों को ख़ुदा ने बना दिया और आदमी थे वह बन्दर और सूअर बन गये। जब इतना स्पष्ट है तो हमारा अक़ीदा इतना ज़बरदस्त है कि ख़ुदा को भी मंज़ूर करना पड़ा। आप चाहे न मानें यह और बात है। लेकिन ख़ुशी है कि आप इस चीज़ को मान गये हैं।

अब आगे रहा थोड़ा-सा यह कि गुनाहों की माफ़ी होती है या नहीं ?

हम मानते हैं कि गुनाहों की माफ़ी नहीं होती। "अवश्यमेवभोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।" क़ुरआन में लिखी है यह बात 'मन्अमिला स्वालिहन् मिन्ज़करिन् औउन्साफ़उलाइका यद्खुलुनल्जन्नता व युर्ज़क़ूना फ़ीहा बिग़ैरि' हिसाब कि जो मर्द हो या औरत कोई हो, अगर शुभ कर्म करे तो जन्नत में भेजे जायेंगे और उनको वहाँ रोज़ी बेहिसाब दी जायगी। यह ठीक है। जब यह चीज़ है तो मैं मालूम करना चाहता हूँ कि जब उनको बेहिसाब दी जायेगी तो क्या बात बाक़ी रह गई। क्या ख़ुदा उनके कर्म का फल देता है! तो एक नौजवान मौलवी शौक़तअली सब्ज़बारी मेरठ में बहस कर रहे थे। वहाँ मेरठ में, टाउन हाल के सामने जल्सा हो रहा था, उन्होंने बड़ी अच्छी तरह मुझसे फ़र्माया, "पण्डित जी सज़ा का मंशा क्या है?"—(बड़ी अच्छी गुफ़्तगू करने वाले थे) मैंने कहा—"सज़ा का मंशा यह है कि जो काम हमने ग़लत किया है फिर न करें, दुबारा मौक़ा दिया जाय हमें करने का। यह नहीं कि दुबारा मौक़ा न दिया जाय तो वह सज़ा नहीं है। वह तो बदला है। ऐसा न होना चाहिये। लेकिन क़ुरआन में तो ऐसी चीज़ मौजूद हैं।" बोले—"वह क्या है?" मैंने कहा—"देखिये साफ़ लिखा हुआ है 'क़ालु रब्बना ग़लबत् अलैना शिक़वतुनाव कुन्ना क़ौमज़्ज़वाल्लीन् रब्बना अख़्रिज्नामिनहा फ़इन्उदना फ़इन्ना ज़्वालिमून्' लोग पूछते हैं ख़ुदा से कि ऐ रब हमारी बदबख़्ती ने ग़ल्बा किया······और हमारे रब हमें दोज़ख़ से निकाल ले अगर हम दुबारा करें तो हमारा क़ुसूर। कितनी सीधी बात है (कि ऐ रब हमारी बदबख़्ती ने हम पर ग़लबा किया है इस वजह से हमने पाप कर्म कर लिया। अब तू मेहरबानी करके हमें इसमें से (दोज़ख़ से) निकाल दे। अगर हम हुक्मउदूली करें, दुबारा करें तो हमारा क़ुसूर। तो अल्लाह क्या कहता है 'क़ालख़्सऊ फ़ीहावला-तुकल्लिमून्' इसमें धिटकारे पड़े रहो और हमसे बात मत करो। मैंने कहा—"यह तो आपके यहाँ हैं। और मेरे यहाँ यह चीज़ नहीं है। मेरे यहाँ तो ख़ुदा आदमी को फल देता है और फल देकर यह कहता है कि जा तू पवित्र हो गया है अब फिर शुभ कर्म कर।' तो फिर वह मुझसे पूछने लगे—"कि पण्डित जी सज़ा की ग़रज़ तो यही है कि हम गुनाह दुबारा न करें" मैंने कहा कि "जी हाँ"। तो मौलाना बोले कि ख़ुदा क़ादिर मुतलक़ होने से, ज्ञानी होने से दिल के हाल को जानता है कि यह शख़्स दुबारा पाप नहीं करेगा। तो

मानो ऐसा शख्स है जिसने सच्ची तौबा की है और दुबारा नहीं करेगा", मुझ-से उन्होंने कहा कि खुदा सर्वज्ञ है, सब कुछ जानता है, कि अमुक आदमी ने सच्ची तौबा की है वह आगे नहीं करेगा क्योंकि वह दिल के हाल से वाकिफ़ है तो सज़ा का मंशा पूरा हो गया—आगे पाप न करे जिसे पहले कर चुका है—तो यह चीज खुदा जानता है फ़िर तो सज़ा न होनी चाहिये और तौबा क़ुबूल हो जानी चाहिये। फिर क्यों कहते हैं कि कर्मों को भोगना पड़ेगा ?"

मैंने कहा—"आपने उसका सिर्फ़ एक जुज लिया है। दूसरे जुज की तरफ़ ख्याल नहीं किया।" "क्या दूसरा भी है ?" फ़र्ज कीजिये किसी शख्स ने किसी जगह आग लगा दी कि जिससे बहुत-से छोटे-छोटे बच्चे वगैरा, गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि जल गये। अब फिर उसके दिल में ख्याल पैदा हुआ कि हाँ हक़ीक़त में मैंने अच्छा काम नहीं किया। मैंने किसी दुश्मनी की वजह से यह काम किया था लेकिन इसके परिणाम को देखकर मुझे भी बुरा लगा है। इस वास्ते वह खुदा से दुआ कर रहा है कि ऐ खुदा तू मुझे मुआफ़ कर, मेरे से ग़लती हो गई है, मैं दुबारा ऐसा नहीं करूँगा। तो खुदा क्या कहता है, ठीक है तू आगे नहीं करेगा तो मैं आगे तुझे सज़ा नहीं दूंगा। लेकिन अब क्या हो रहा है ? अब यह जुरूर हो रहा है कि जिनका तूने नुक्सान किया है तुझको दुनिया में आना होगा और दुनिया में आकर उस नुक्सान को Make good (मेक गुड) करना होगा। पूरा करना होगा। तूने जो दुनिया का नुक्सान किया है उसे पूरा करना पड़ेगा, जरूर भोगना पड़ेगा। यह जो मैंने शौकतअली साहब से कहा तो ज़रा उनकी गर्दन नीची हो गई। मैंने कहा, "बताइये यह नुक़सान हुआ है कि नहीं।" एक आदमी होली के दिन अपने हाथों में कालौस लगाकर किसी के पीछे भागता है और उसका मुंह काला करना चाहता है, वह उसके पीछे भागा लेकिन वह हाथ न आ सका तो उसका हाथ तो काला हो ही गया लेकिन अगर वहाँ लगा पाता तो उसका मुंह भी काला हो जाता। तो दो जगह असर हुआ कि नहीं ? इसी तरह दो जगह है इस चीज को याद रखिये कि जिस आदमी ने पाप कर्म किया है। पाप करने से आन्तरिक तौर से उसका हृदय जो काला हुआ है और दूसरों के लिये उसने जो उल्टा सोचा है या नुक़सान किया है उस नुक़सान का फल भी उसको भोगना पड़ेगा। इसी-लिए कहा जाता है 'असतो मा सद्गमय, तमसोमा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं

गमय' यह परमात्मा से इसीलिए प्रार्थना की गई है कि आदमी कभी गलत रास्ते की तरफ़ न चला जाये। इसलिये यह जितने भी गलत अक़ीदे हैं जब हमारे साथ मिलाये गये तो लोगों ने उनमें तब्दीली पैदा कर ली।

मैं ज़रा-सा हाल आपको हैदराबाद का सुना दूं कि वहां क्या हुआ था। जिस वक्त मैं वहां गया तो मेरा व्याख्यान तनासुख पर हो रहा था—एक चीज़ बाकी रह गई। वह बताकर फिर हैदराबाद का हाल सुनाऊंगा और फिर अपने वक्तमुअय्यन में समाप्त कर दूंगा।

पिलखुवे में शास्त्रार्थ हो रहा था। यहीं के (दिल्ली के) एक मौलवी थे। वहां शास्त्रार्थ के लिए गये थे। नौजवान ही थे, मेरे सामने लड़के ही थे वहां शास्त्रार्थ के लिए गये हुए थे। मजमा तैयार था। दावत दी गई थी। ऐसी सूरत थी जैसी यहां हो रही है। मैं जब वहां पहुँचा तो उन्होंने कहा—"पण्डित जी वक्त हो गया है आप शुरू कीजिये।" मैंने कहा—"बहुत अच्छा।"

मैंने इस तरह कहना शुरू किया कि, "इतने बड़े मजमे में क्या कोई शख्स ऐसा बहादुर है जो अपनी जबान से यह कह दे कि मेरी बीवी मुझसे पैदा हुई है ?" किसी ने जवाब नहीं दिया तो मैंने कहा कि, "मैं आदम-अलै-सलाम की तारीफ़ किये बगैर नहीं रहता हूं कि वह यह कहते हैं कि मेरी बीवी मुझसे पैदा हुई है। कहिये क्या कहते हैं आप ?" अब मौलाना साहब और.........मैंने क़ुरआन की एक आयत पढ़ दी कि 'खलक़ा मिनहा ज़ौजहा' उससे बीवी को पैदा किया। तो उन्होंने तब्दीली की और बड़ी अच्छी तब्दीली की। मैं बहुत खुश हुआ। मैंने उनकी तारीफ़ की। कहने लगे कि "मिनहा की ज़मीर इसलिये है कि उसकी जाति में से बनाई गई। मनुष्य जिस जाति का है उसी की जाति की उसको बीवी को बनाया, उसके अन्दर से पैदा नहीं किया।" मैंने कहा किताबों में तो यही लिखा है।" बेशक लिखा जुरूर है। लेकिन हमारा यह ख्याल है जो आपके सामने पेश कर रहे हैं।" मैंने कहा, "इन लोगों को पहले तो क़ाफिर कहा करते थे जो ऐसा मानते थे" आप तो एक आदम और एक हव्वा की पैदाइश मानते हैं न ?" नहीं पण्डित जी बहुत से आदम और बहुत-सी हव्वायें पैदा हुई थीं। एक आदम और एक हव्वा नहीं हुई थी। "यदि आप एक मानें तो ऐतराज पैदा होता है" मैंने

कहा। एक अब्दुल हकीम खाँ नाम के साहब हुए हैं पटियाले में। वे हकीम थे। इन्होंने क़ुर्आन का तर्जुमा अंग्रेजी में किया था। उन्होंने लिखा है कि यह कानून कुदरत के बखिलाफ़ है कि आदमी (मर्द) के पेट से औरत पैदा हो। क़ुर्आन के अल्फ़ाज़ हैं 'ख़लक़ा मिनहा ज़ौजहा।' इससे इसके जोड़े को पैदा किया ज़ौजा के माने जोड़े के हैं। इसलिये आदमी के लिये ज़ौजा औरत है और औरत के लिये ज़ौजा मर्द है। इसलिये यह जोड़े के लिये आया हुआ है कोई बात नहीं। आदम से हौवा पैदा नहीं हुई। बल्कि हव्वा से आदम पैदा हुआ। "ठीक है मैंने कहा, एक बात तो आपने साफ कर दी कि आदम से हव्वा पैदा नहीं हुई और वह (आदम की बेटी) नहीं हुई, लेकिन हव्वा से आदम के पैदा होने पर माँ-बेटे का सम्बन्ध बना रहा। यह तो आपने कर दिया है। लेकिन मेरा ऐतराज़ एक अभी बाकी है। आपकी तावील से ऐतराज़ तो क़ायम रहा चाहे उसकी सूरत तब्दील हो गई तो मौलाना कहने लगे, "पण्डित जी हम यह मानते हैं।" मैंने कहा, "जिसने पहले यह माना था उसे आप काफ़िर कहते थे लेकिन आज मंजूर कर रहे हैं कि आदम बहुत हुए और हौवायें भी बहुत हुईं और इस तरह पर जो पैदा हुईं उन्हीं के नौ की हुईं, उन्हीं की जाति की हुईं, उन्हीं की Spicies की हुईं। उनसे पैदा नहीं हुईं। लोग तो यह कहते चले आये हैं कि आदम की एक पसली से निकालकर हव्वा तैयार की थी। अभी तक तो यही अक़ीदा आ रहा है। लेकिन यह तब्दीली हमारे मुआफ़िक़ है हम इसकी तारीफ़ करते हैं। आप इस पर क़ायम रहें।" लोगों ने जहाँ भी यह चीज़ सुनी अचम्भा किया, ताज्जुब किया। मैंने कहा, "यदि कोई शक हो तो देहली में मौलवी साहब से दर्याफ़्त कर लीजियेगा कि उन्होंने यह जवाब दिया था कि नहीं।" यह परिवर्त्तन क्यों हुए ? यह इसलिये हुए कि वैदिक सिद्धान्त इतने शुद्ध, पवित्र व इतने बुद्धिपूर्वक हैं कि ज़रूर मानने ही पड़ते हैं इसमें कोई शक नहीं है।

हैदराबाद की बात क्या है ? मैं हैदराबाद में व्याख्यान तनासुख पर दे रहा था। किसी शख़्स ने वहाँ Prime Minister कृष्ण प्रसाद जी के पास जाकर मेरी तारीफ़ कर दी। जब तारीफ़ की कि वे तनासुख क़ुर्आन से साबित करते हैं तो वे कहने लगे कि, मियाँ क़ुर्आन तो मैंने पढ़ी है लेकिन

हमें तो कहीं भी ऐसा मालूम नहीं दिया कि वह कौन-सी आयत है इसलिये उन्हें ज़रा बुलाइये और हमसे मिलाइये।" वे बड़े सादा मिज़ाज के आदमी थे। दिन मुक़र्रर हो गया। वे कार लेकर आ गये। जब वहाँ पहुँचे तो उनका एडीकाँग खड़ा ही था। इजाज़त मिलने पर हम लोग अन्दर दाखिल हुए। क्या देखा कि एक हुक्का रखा था, दूर रखा था। उसमें नै लगी हुई थी, वे हुक्का पी रहे थे। जैसे ही मैं वहाँ पहुँचा वे खड़े हो गये। हाथ मिलाया। कुर्सी पर बैठाया, कहा 'बैठिये।" कहने लगे मैंने आपकी तारीफ़ सुनी है। मेरे एक दोस्त मुझसे मिला करते हैं, उन्होंने मुझसे कहा था, कि कल रात लेक्चर हुआ था, क़ुरान की आयतों से आपने तनासुख साबित किया था तो मैं मालूम करना चाहता हूँ कि वह कौन-सी आयत हैं।" मैंने आयत सुनानी प्रारम्भ की और उनका अर्थ करना शुरू किया। तो क्या बोलते हैं, "जज़ाक अल्लाह, मर्हबा, जज़ाक अल्लाह। ऐसा कहते रहे। तारीफ़ करते रहे, अल्लाह आपको अच्छा फल दे इत्यादि।" कहने लगे "मैंने पढ़ा जरूर लेकिन मुझे यह ख्याल ही नहीं आया कि इन आयात से तनासुख साबित होता है। लेकिन जनाब के फ़र्माने से वह ख्याल बदल गया।" मैंने कहा, "जनाब हमें तो टोह रहती है, ढूंढ रहती है। इसलिये हमने इसमें से निकाल लिया। आपको इसका क्या ख्याल?" कि "हाँ, बेशक यही बात हो सकती है।"

आगे मैंने कहा कि, "जनाब से एक बात पूछना चाहता हूँ और माफ़ी चाहता हूँ" कि "नहीं-नहीं, आप खुले दिल से पूछें" (मैंने पूछा) कि "क्या कोई ऐसा जमाना भी था जब आपकी तबियत इस्लाम की तरफ रुजू कर रही थी?" कि "हाँ, लेकिन अब नहीं है।" मैंने कहा "क्या वजह थी जिसकी वजह से आप इस्लाम की तरफ रुजू कर रहे थे?" कहने लगे," मैंने देखा कि वहाँ हिन्दू, जिनको मैं जानता हूँ, जो मेरी सल्तनत में हैं सिवाय पानी, पत्थर और दरख्त के और कुछ नहीं पूजते। कोई दरख्त पूज रहा है, कोई पानी डाल रहा है। जब मैंने यह देखा कि इनका ख़ुदा यह है तो मुझे नफ़रत हो गई। क़ुरान में मैंने पढ़ा है कि 'क़ुल्हुवल्लाहु अद् अल्लाहुद् समद्। कह दो कि वह अल्लाह एक है, बेनियाज़ है। देखिये इस आयत में तो एक वाहिद ख़ुदा का ज़िक्र किया गया है कि जिस ख़ुदा से यह दुनिया पैदा हुई है। ऐसा बयान किया गया है कितना अच्छा बयान किया है। आप ज़रा

सोचिये। इन सब बातों को देखकर मेरी ज़रा तबीयत इस्लाम की तरफ़ रुजू हुई थी मगर अब बिल्कुल नहीं है। तो मैंने कहा कि, "जगतप्रसाद जी इतने बड़े पण्डित हैं, आपके यहाँ मौजूद हैं और आपको उन्होंने नहीं समझाया। मेरे वेद में तो इससे बहुत ऊँची चीज़ लिखी हुई है—इसके सुबूत में वेद का मंत्र पेश करता हूँ।

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते,
न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते।
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते,
तमिदं निगतं सह स एष एक एकवृदेक एव।

मैंने कहा, "न वह दो है, न तीन है, न चौथा है, न पाँचवाँ है, न छठा है न सातवाँ कहा जाता है। न आठवाँ है, न नवाँ है न दसवाँ कहलाता है और सबके ऊपर ग़ालिब है वह एक है (गिनती में) वह एक है (लासानी है) वह है एक है बसीत है अर्थात् एक रस है उसमें किसी ग़ैर चीज़ का मेल नहीं है। "यह वेद की बात है ?" जी हाँ यह वेद की बात है। कुर्आन का बयान इस दर्जे का नहीं है तो बोले उसमें क्या नुक्स है ? कुर्आन में उसे कैसा बयान किया ?" मैंने कहा, "उसमें नुक्स यह है कि 'वलम्यकुल्लहू कुफ़ुवन् अहद' उसका सानी कोई नहीं है तो कोई उससे छोटा या बड़ा हो यह मुम्किन है कि नहीं (Logically Speaking) ? तो मुस्कराकर कहने लगे कि "हाँ यह बात तो निकलती है। तो छोटा-बड़ा कौन हो सकता है ?" मैंने कहा कि छोटा तो जीवात्मा है ही। 'आगे की बात मुबाहिसे की है, हम कह दिया करते हैं कि खुदा से बड़ा शैतान है जो उसका कहना नहीं मानता। हमेशा उनके कहने का उल्टा करता है। लेकिन मेरे यहाँ है 'न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते' कि न कोई उसके बराबर है और न कोई उससे अधिक है। देखिये कितना मुकम्मल कलाम है। यहाँ शक की ज़रा भी गुंजाइश नहीं है।

इस प्रकार मैंने, वेद के सच्चे व बुद्धिपूर्वक सिद्धान्तों का इस्लाम पर जो प्रभाव पड़ा है उसकी कुछ बातें आपकी सेवा में इस थोड़े से समय में अर्ज़ की हैं। इनको अगर आप समझ गये हैं तो समझ लीजिये कि यह सिद्धान्त सबके लिये अनुकरणीय व मानने योग्य हैं। समय हो गया है बिल्कुल, Exact इसलिए मैं अब समय के मुताबिक समाप्त करता हूँ,

ओ३म् शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः।

आर्यसमाज और उसके मन्तव्य

आर्य—श्रेष्ठ, कुलीन और सदाचारी मनुष्य को कहते हैं।

समाज—मनुष्यों के समूह और सभा को कहते हैं, अर्थात् ऐसा स्थान या सभा जिसका उद्देश्य स्वयं सदाचारी बनना और अन्यों को बनाना है।

इसकी स्थापना पाँच अप्रैल सन् १८७५ को मुम्बई में हुई थी जो हिन्दुस्तान का एक बहुत बड़ा नगर है।

इसके संस्थापक व प्रवर्त्तक का शुभ नाम श्री दयानन्द सरस्वती है, जो आदित्य ब्रह्मचारी थे। सत्यमानी, सत्यकारी व सत्योपदेशक थे। वेद और शास्त्रों के महान् विद्वान् थे।

इनके जीवन का उद्देश्य संसार को मिथ्या ज्ञान, मिथ्या विचार और मिथ्या विश्वास से मुक्त करके बुद्धि और सत्य के पथ पर लाना था। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये इन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की और कई ग्रन्थ लिखे, जिनमें मुख्य सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और संस्कार विधि हैं। ऋग्वेद और सम्पूर्ण यजुर्वेद का भाष्य संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में किया है।

इस समाज के स्वामी जी ने ये दस नियम बनाये :—

(१) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

(२) ईश्वर, सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तिर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है—उसी की उपासना करनी योग्य है।

(३) वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(४) सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

(५) सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहियें।

(६) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

(७) सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिए।

(८) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

(९) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

(१०) सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

इन नियमों को मानने वाला आर्यसमाज का सदस्य हो सकता है।

अनादि पदार्थ और उनके गुण, कर्म व स्वभाव

ईश्वर, जीव और प्रकृति इन तीन पदार्थों को आर्यसमाज अनादि मानता है।

ईश्वर—वह है जिसके ब्रह्म परमात्मादि नाम हैं, वह सच्चिदादि लक्षण-युक्त है, उसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता-धर्त्ता-हर्त्ता, सब जीवों को सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है। वह एक ही है अनेक नहीं।

जीव—ईश्वर से नितान्त भिन्न एक परिछिन्न चेतन पदार्थ है। कुछ गुणों में साधर्म्य और कुछ गुणों में वैधर्म्य भी है। अल्पज्ञ, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख दुःख और ज्ञान गुण वाला है।

प्रकृति—जड़ पदार्थ है और जगत् बनाने की सामग्री है।

प्रत्येक वस्तु को बनाने से पूर्व उसके लिये तीन कारणों की आवश्यकता होती है। उनके नाम और उनकी परिभाषा यह है:—

(१) निमित्तकारण (मुख्य व साधारण दो प्रकार के हैं)

(२) उपादान कारण।

(३) साधारण कारण।

निमित्तकारण—उसे कहते हैं जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने, आप स्वयं बने नहीं, दूसरे को प्रकारान्तर बना देवे।

उपादान कारण—उसे कहते हैं जिसके बिना कुछ न बने, वही अवस्थान्तर रूप होकर बने और बिगड़े भी।

साधारण कारण—उसे कहते हैं जो बनाने में साधन हो और साधारण निमित्त हो।

(१) मुख्य निमित्त कारण परमात्मा है जो सब सृष्टि को कारण (प्रकृति) से बनाने, धारण और प्रलय करने तथा सब की व्यवस्था रखने वाला है।

साधारण निमित्त कारण जीव है, जो परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेक विध कार्यान्तर बनाने वाला है इसी के लिये परमेश्वर ने सृष्टि का रचन किया है।

(२) उपादान कारण प्रकृति है जिसको सब संसार के बनाने की सामग्री कहते हैं। वह जड़ होने से आप से आप न बन सकती है न बिगड़ सकती है किन्तु किसी चेतनकर्त्ता के बनाने से नियमपूर्वक बनती व बिगाड़ने नियम-पूर्वक बिगड़ती है।

(३) साधारण कारण वे उपकरण (औजार) हैं जिनसे कोई वस्तु बनाई जाती है। देश और काल भी इसमें सम्मिलित हैं।

पदार्थों के प्रकार

पदार्थ दो ही प्रकार के होते हैं:—नित्य और अनित्य।

नित्य—जिनका न आदि हो और न अन्त हो।

अनित्य—जिनका आदि भी हो और अन्त भी हो।

तीसरी प्रकार के पदार्थों का होना ही असम्भव है। जैसे 'अनादि सान्त' या 'सादि अनन्त।'

ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों नित्य पदार्थ हैं। इनका न आदि है और न अन्त है।

परन्तु जगत् स्वरूप से अनित्य है। यह उत्पन्न होकर नियत काल तक स्थित रहकर विनष्ट हो जाता है। ईश्वर में उत्पादक और विनाशक दोनों

शक्तियाँ अनादि काल से (अर्थात् स्वाभाविक) हैं। इनके प्रभाव से जगत् की उत्पत्ति और विनाश अनादि काल से एक के पीछे दूसरा होता रहता है। ऐसे होते रहने को 'प्रवाह से अनादि' कहते हैं।

जगत् को उत्पन्न करने का उद्देश्य

जीवात्मा की शक्तियों के पूर्ण विकास अर्थात् किये हुये कर्मों के फल-भोग और परमानन्द (मुक्ति) की प्राप्ति के लिये जगत् का निर्माण हुआ।

अथवा

प्रकृति से परमात्मा पर्यन्त ज्ञान प्राप्त करके लाभान्वित होने के अर्थ जगत् उत्पन्न किया गया है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भगवान् ने सृष्टिके आरम्भ में ४ ऋषियों के द्वारा वेद ज्ञान का प्रकाश किया। ऋषियों के नाम यह हैं :—अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा। यह देहधारी मनुष्य थे और सब जीवों से अधिक पवित्र आत्मा थे, यह पवित्रता उन्होंने पूर्व सृष्टि में किये हुए कर्मों से प्राप्त की थी।

ऋषि:— उसे कहते हैं जो वेद मन्त्रों के अर्थों के सूक्ष्म द्रष्टा हों या जिनमें ऐसी योग्यता हो।

वेद चार यह हैं:— ऋग्वेद,यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

वेदों के चार विभाग का कारण

(१) ऋग्वेद में सब पदार्थों के गुणों का प्रकाश किया है जिससे उनमें प्रीति बढ़कर उपकार लेने की प्रवृति हो सके।

(२) यजुर्वेद में गुण ज्ञान के अनन्तर क्रियारूप उपकार करके सब जगत् का अच्छे प्रकार से हित सिद्ध हो सके, इस विद्या को जनाया है।

(३) सामवेद में ज्ञान, कर्म और उपासना कांड की वृद्धि का फल कितना और कहाँ तक होना चाहिए, इसका विधान किया है।

(४) अथर्ववेद—तीन वेदों में जो-जो विद्या हैं उन सबके शेष भाग की पूर्ति, विधान, रक्षा और संशय-निवृत्ति के लिए है।

मनुष्य समाज और मनुष्य जीवन के चार विभाग

वेदों के उपदेश और मनुष्य शरीर की रचना के आधार पर मनुष्य

समाज का विभाग चार भागों में किया गया है जिनको वर्ण नाम से कहते हैं और वे ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं, और मनुष्य जीवन का विभाग चार आश्रमों में किया गया है। वे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यासाश्रम हैं।

ब्राह्मण वर्ण—अविद्या के नाश, विद्या की वृद्धि और सदाचार की शिक्षा के लिए। शम, दम, तप, शौच, आस्तिक्य, ज्ञान और विज्ञान इनके विशेष गुण होंगे।

क्षत्रियवर्ण—अन्याय के नाश, देश और जाति, पतित और दुःखित जनों की रक्षा के लिए। शौर्य, तेज, धृति, दक्षता और युद्ध से पलायन न करना और ईश्वर भावादि क्षत्रिय के विशेष गुण होंगे।

वैश्य वर्ण—जीवन यापन की आवश्यक सामग्री को उत्पन्न करना और इधर-उधर से लाकर जुटाना वैश्य कर्म है।

शूद्र वर्ण—जिसको-पढ़ने पढ़ाने से कुछ भी न आवे, वह निर्बुद्धि व मूर्ख होने से शारीरिक श्रम द्वारा उपर्युक्त तीनों वर्णों की सेवा और सहायता करने के लिए शूद्र है।

यह वर्ण गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर होते है, जन्म के आधार पर नहीं।

आर्य समाज मनुष्य मात्र के बालकों व बालिकाओं को बिना किसी भेद-भाव के समान रूप से विद्या प्राप्त करने का अधिकारी मानता है और विद्यालय में पढ़ाई की समाप्ति पर जिस-जिस विद्यार्थी का जो-जो वर्ण उनकी योग्यतानुसार इनका आचार्य निश्चित करे वह-वह उनका वर्ण मानता है चाहे उनके पिता का वर्ण कुछ भी हो।

धर्माचरण से नीच वर्ण उच्च वर्ण को और अधर्माचरण से उच्च वर्ण नीच वर्ण को प्राप्त हो सकता है।

आश्रम

पहला आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम है। यह विद्या पढ़ने, सुशिक्षा लेने और बलवान् होने के लिये है। जब बच्चा पैदा होता है तो सबसे पहले माँ-बाप उसकी देखभाल रखते हैं और अभ्यास के साथ उसका पालन करते हैं। जब कुछ बड़ा हो जाता है तब उसको गुरु के पास पढ़ने के लिये बैठा देते हैं। इसी का नाम ब्रह्मचर्य आश्रम है। इसकी अवधि लड़के के लिये कम-से-कम २५ साल और लड़की के लिये १६ साल रखी गई। इस आश्रम की जिम्मेदारी तीन व्यक्तियों पर होती है। पहली माता, जो पांच वर्ष तक उसे आवश्यक बातों का अभ्यास कराती है, यदि माता योग्य हो तो वह अपने बच्चे को अच्छी-अच्छी बातें सिखाती है और बच्चा बिना परिश्रम के बहुत-सी ज्ञान की बातें सीख लेता है। यदि माता कुलक्षणी हो तो उसका बच्चा आरम्भ से ही बुरी बातें सीख लेता है और उसका सुधारना कठिन हो जाता है।

पाँच वर्ष के पीछे बच्चा पिता के साथ रहने लगता है। बाप यदि बुरा है तो बच्चा बुरा और यदि अच्छा है तो अच्छा हो जाता है।

तीसरा आचार्य—जब बच्चा आठ साल का होता है तब उसका उपनयन कराके गुरु के पास विद्या-प्राप्ति के लिये भेज देते हैं। यह नियम लड़के और लड़की दोनों के लिये समान है। परन्तु भेद यह है कि लड़के और लड़की इस अवस्था के पश्चात् अलग-अलग पाठशालाओं में भेज दिये जाते हैं। सहशिक्षा इस काल के पश्चात् नहीं दी जाती, जो सदाचार की बाधक है।

दूसरा गृहस्थाश्रम—यह सब प्रकार के उत्तम व्यवहार सिद्ध करने के लिये है अर्थात् सन्तान उत्पन्न करना और उसको योग्य बनाना, धर्म से धन कमाना और धर्म में व्यय करना और अन्य आश्रमियों का पालन। इसीलिये इसको ज्येष्ठ आश्रम भी कहते हैं। जो सदाचार से रहता हुआ आजन्म ब्रह्मचारी रहना चाहे वह रह सकता है। परन्तु जो न रह सके वह अपने-अपने वर्ण में विवाह कर सकता है। ऐसे पुरुष के लिए भी कम-से-कम २५ वर्ष और कन्या के लिये १६ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहना अनिवार्य है। विवाह

करने वाले पुरुष और स्त्री यदि २५ वर्ष से भी दीर्घकाल तक ब्रह्मचर्य रखना चाहें तो रख सकते हैं। परन्तु ४८ वर्ष के पश्चात् ब्रह्मचर्य नहीं रखना चाहिये।

कुमार और कुमारी का धर्मशास्त्रानुसार दाम्पत्य सम्बन्ध वैदिक परिभाषा में विवाह कहलाता है। विधुर से विधवा के सम्बन्ध को पुनर्विवाह कहते हैं। यह शूद्र कर्म है, द्विज कर्म नहीं है परन्तु पापकर्म भी नहीं है।

विधुर का कन्या से विवाह अवैदिक कर्म है। इसके करने से बहुत-से बिगाड़ उत्पन्न हो जाते हैं, और इससे एक कुमार और एक विधवा के अधिकार का हनन होता है।

विधुर और विधवा यदि द्विज हों और ब्रह्मचर्य न रख सकें तो उनके लिये 'नियोग' का विधान है। उससे सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं। यदि ब्रह्मचर्य रख सकें तो अपने कुल की परम्परा रखने के लिये किसी अपने स्वजाति का लड़का ले सकते हैं। उससे कुल चलेगा। परन्तु वेश्यागमन का का व्यभिचार कभी न करें।

'नियोग' भी 'विवाह' की भाँति नियमानुसार प्रसिद्धि से किया जाता है। भेद केवल इतना है कि विवाह में पत्नी पति के साथ उसके घर जाती है और वहाँ रहती है परन्तु नियोग में पति और पत्नी अपने-अपने घर पर ही रहते हैं। केवल गर्भाधान के लिये नियुक्त पुरुष नियुक्ता स्त्री के घर जाता है।

नियुक्त पुरुष अपने कुल का और नियुक्ता स्त्री अपने मृत पति के कुल का नाम चलाने के लिये प्रत्येक अपने लिये केवल दो-दो सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं विशेष नहीं। इसके पश्चात् सम्बन्ध-विच्छेद हो जावेगा।

तीसरा वानप्रस्थ आश्रम है—यह विज्ञान बढ़ाने और तपश्चर्या करने के लिये है। यह गृहस्थ का मोह छोड़कर बाहर वन में जाकर रहने का आश्रम है। वर्तमान काल में वैदिक राज्य न होने के कारण वानप्रस्थियों को बन जाने की पर्याप्त सुविधायें नहीं हैं।

चौथा संन्यासाश्रम है—यह वेदादि शास्त्रों का प्रचार, धर्म-व्यवहार का ग्रहण, दुष्ट व्यवहार का त्याग, सत्योपदेश और सबको निस्सन्देह करने के लिये है।

राज्य व्यवस्था

जैसा परम विद्वान् ब्राह्मण होता है वैसा ही विद्वान् सुशिक्षित क्षत्रिय को भी होना योग्य है कि जिससे सब राज्य की रक्षा न्याय से यथावत् करे।

एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिये। राजा सभापति हो, उसके आधीन सभा हो, सभा के आधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन हो। इसलिये तीन सभाओं का निर्माण किया जावे :—

(१) विद्यार्य सभा।
(२) धर्मार्य सभा।
(३) राजार्य सभा।

महाविद्वानों को विद्या सभाधिकारी।

धार्मिक विद्वानों को धर्म सभाधिकारी।

प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राजसभा के सभासद और जो उन सब में सर्वोत्तम गुण, कर्म, स्वभाव युक्त महा पुरुष हो उसको राजसभा का पतिरूप माना जावे।

उपर्युक्त सभाओं के सभासद् सदा विद्वान् और धार्मिक पुरुष होने चाहियें, मूर्खों को कभी भर्ती न करना चाहिये। क्योंकि ऐसे पुरुषों के पीछे चलने से सैकड़ों प्रकार के पाप लग जाते हैं। काम और क्रोध से उत्पन्न हुए व्यसनों में राजा को नहीं फंसना चाहिये।

काम से उत्पन्न हुए व्यसन दस हैं

(१) शिकार खेलना।
(२) जूआ खेलना।
(३) दिन में सोना।
(४) काम-कथा या दूसरे की निन्दा किया करना।
(५) स्त्रियों का अति संग।
(६) मद्यपान।
(७) गाना।
(८) बजाना।

(९) नाचना, नाच कराना और देखना ।

(१०) वृथा इधर-उधर घूमना ।

इनमें फंसने से अर्थ अर्थात् राज्य, धनादि और धर्म से रहित हो जाता है।

क्रोध से उत्पन्न हुए ८ व्यसन

(१) चुगली करना ।

(२) बिना विचारे किसी स्त्री से बलात्कार बुरा काम करना ।

(३) द्रोह करना ।

(४) ईर्ष्या करना ।

(५) दोषों में गुण और गुणों में दोषारोपण करना ।

(६) अधर्मयुक्त बुरे कामों में धनादि का व्यय करना ।

(७) कठोर वचन बोलना ।

(८) बिना अपराध कड़ा वचन या विशेष दंड देना । इनके करने से राजा शरीर से भी रहित हो जाता है ।

युद्ध में योद्धा लोग किन-किन लोगों पर शस्त्र का प्रहार न करें :—

न इधर-उधर खड़े, न नपुंसक, न हाथ जोड़े, न जिसके सिर के बाल खुले हुए हों, न बैठे हुए, न "मैं तेरे शरण हूँ" ऐसे पर, न सोते हुए, न मूर्छित न नग्न हुये, न आयुध से रहित, न युद्ध करते हुओं को देखने वालों, न आयुध के प्रहार से पीड़ा को प्राप्त हुए, न दुःखी, न अत्यन्त घायल, न डरे हुए, न न पलायन करते हुए पुरुष पर ।

विशेष इस पर ध्यान रखें कि स्त्री, बालक, वृद्ध और आतुर तथा शोक-युक्त पुरुषों पर शस्त्र कभी न चलावे । उनके लड़के-बालों को अपने सन्तानवत् पालें और स्त्रियों को भी पालें, उनको अपनी बहिन और कन्या के समान समझें, कभी विषयासक्ति की दृष्टि से भी न देखें । जब राज्य अच्छे प्रकार जम जाय और जिनसे पुनः-पुनः युद्ध करने की शंका न हो उनको सत्कारपूर्वक छोड़कर अपने घर व देश को भेजे देवे ।

सभापति राजा कैसा होना चाहिये । अथर्ववेद का प्रमाण—

इन्द्रो जयाति न पराजयाता अधिराजो राजसु राजयातै ।
चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह ॥

इह=इस मनुष्य समुदाय में जो।
इन्द्रः=परम ऐश्वर्य का कर्त्ता। शत्रुओं को।
जयाति=जीत सके।
न पराजयातै=जो शत्रुओं से पराजित न हो।
राजसु=राजाओं में।
अधिराजः=सर्वोपरि विराजमान।
राजयातै=प्रकाशमान हो।
चर्कृत्यः=सभापति होने को अत्यन्त योग्य।
ईड्यः=प्रशंसनीय गुण कर्म स्वभाव युक्त।
वन्द्यः=सत्करणीय।
चोपसद्यः=और समीप जाने और शरण लेने योग्य।
नमस्यः=सबका माननीय।
भव=होवे (उसी को सभापति राजा करे)

राजा और प्रजा के परस्पर सम्बन्ध और उनके कर्तव्यों को विशेष रूप से जानने के लिये मनुस्मृति को देख सकते हैं। यहाँ केवल इतना ही लिखना पर्याप्त है।

विदेश यात्रा

आर्य समाज विदेश यात्रा का और देश देशान्तरों के उत्तम पुरुषों के साथ समागम और व्यवहार करने का विरोधी नहीं है। उनके मांस भक्षण और मद्यपानादि दोषों को छोड़कर गुणों को ग्रहण करें तो कुछ हानि नहीं।

धर्म आत्मा और कर्तव्य के साथ है। जब हम अच्छे काम करते हैं तो हमको देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नहीं लग सकता। दोष तो पाप के काम करने में लगता है। मांस का और मादक द्रव्यों का, जैसे मद्य, गांजा, भांग और अफीम आदि जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी भूल कर भी न करें।

भक्ष्याभक्ष्य

जो पशु पक्षी आदि अपनी मौत मर जाते हैं उनका मांस भी न खावें। क्योंकि खाने वाले का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है। जितना

हिंसा, चोरी, विश्वासघात, छल कपटादि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य और जो अहिंसा धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना है वह भक्ष्य है।

जिन पदार्थों से स्वास्थ्य रोगनाश, बुद्धि बल, पराक्रम वृद्धि और आयु वृद्धि होवे उन तण्डुलादि, गोधूम, फल, मूल, कन्द, दूध घी, मिष्टादि पदार्थों का सेवन यथायोग्य पाक मेल करके, यथोचित समय पर मिताहार भोजन करना सब भक्ष्य कहाता है। जितने पदार्थ अपनी प्रकृति से विरुद्ध विकार करने वाले हैं। उन-उन का सर्वथा त्याग करना और जो-जो जिन-जिन के लिए विहित हैं उन-उन पदार्थों का ग्रहण करना यह भी भक्ष्य है।

एक ही थाल में साथ बैठ कर खाने व पीने को आर्यसमाज निषिद्ध समझता है। उच्छिष्ट किसी का भी न खाना चाहिये।

यदि कोई हिंसारहित शुद्ध भोजन पानादि करने वाला शुद्ध थाली में स्वच्छता से भोजन बनावे तो उसके हाथ का, चाहे वह किसी वर्ण का हो, खाने में कोई दोष नहीं है।

मलिनता से रहने वाला अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण करने वाला उच्च वर्ण नामधारी मनुष्य भी मलिन व अपवित्र ही समझा जाता है।

युद्धादि असाधारणावस्था में उसके उद्देश्य के विघातक कार्य न करने चाहियें। उस समय शायद घोड़े पर चढ़े-चढ़े ही खाना खाना पड़े।

मूर्ति पूजा

आर्यसमाज केवल एक ईश्वर को ही उपासना के योग्य मानता है। मूर्ति-पूजा को पाप और अनेक बुराइयों की जड़ समझता है।

यदि कोई मूर्तियां पूजने (अर्थात् सेवा करने के) योग्य हैं तो वे माता, पिता, आचार्य अतिथि और पति के लिए पत्नी और पत्नी के लिये उसका पति है। इनकी तन, मन और धन से यथायोग्य सेवा करना ही इनकी पूजा है। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना द्वारा उसके गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल अपने गुण कर्म स्वभाव को करते जाना और बड़े यश अर्थात् धर्म-युक्त कामों का करना और निष्काम भाव से संसार की सेवा करना ही परमेश्वर का नाम स्मरण है।

विभिन्न मन्तव्य

जो पक्षपातरहित, न्यायाचरण सत्यभाषणादि युक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है उसको "धर्म" और जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण मिथ्या-भाषणादि ईश्वराज्ञा भंग वेद विरुद्ध है उसको "अधर्म" कहते हैं।

बन्ध—सनिमित्तक अर्थात् अविद्या निमित्त से है जो-जो पाप कर्म ईश्वर भिन्नोपासना अज्ञानादि सब दुःख फल करने वाले हैं इसलिए यह "बंध" है कि जिसकी इच्छा नहीं और भोगना पड़ता है।

मुक्ति—सर्व दुःखों से छूटकर बन्धनरहित सर्वव्यापक ईश्वर और उसकी सृष्टि में स्वेच्छा से विचरना, नियत समय पर्यन्त मुक्ति के आनन्द को भोग के पुनः संसार में आना।

मुक्ति के साधन—ईश्वरोपासना अर्थात् योगाभ्यास धर्मानुष्ठान, ब्रह्म-चर्य से विद्या प्राप्ति, आप्त विद्वानों का संग, सत्यविद्या, सुविचार और पुरुषार्थ आदि हैं।

"देव" विद्वानों को और अविद्वानों को "असुर" पापियों को "राक्षस" और अनाचारियों को "पिशाच" कहते हैं।

शिक्षा—जिससे विद्या सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको "शिक्षा" कहते हैं।

पुराण—जो ब्रह्मादि के बनाये ऐतरेयादि ब्राह्मण पुस्तक है उन्हीं को पुराण, इतिहास, कल्प, गाथा और नाराशंसी नाम से मानता है अन्य भागव-तादि को नहीं।

तीर्थ—जिससे दुःखसागर से पार उतरें कि जो सत्यभाषण, विद्या, सत्सङ्ग, यमादि, योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्म हैं उन्हीं को "तीर्थ" समझता है इतर जलस्थलादि को नहीं।

पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा—इसलिये है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते, जिसके सुधारने से सब सुधरते और जिसके बिगाड़ने से सब बिगड़ते हैं।

मनुष्य—जो सुख, दुःख, हानि, लाभ में सब से यथायोग्य स्वात्मवत् वर्ते।

संस्कार—उसको कहते हैं कि जिससे शरीर, मन और आत्मा उत्तम

होवें। वह निषेकादि श्मशानान्त सोलह प्रकार के हैं। वे कर्तव्य हैं, करने चाहियें और दाह के पश्चात् मृतक के लिये कुछ भी न करना चाहिये।

यज्ञ—उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार, यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभ गुणों का दान, अग्निहोत्रादि जिन से वायु, वृष्टि, जल ओषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाया जाता है यह हिंसारहित होता है।

आर्य—श्रेष्ठ और दस्यु दुष्ट मनुष्यों को कहते हैं।

आर्यावर्त्त—इस भूमि का नाम इसलिये है कि इसमें सृष्टि के आदि से आर्य लोग निवास करते हैं, परन्तु इसकी अवधि उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पश्चिम में अटक और पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी है, इन चारों के बीच में जितना देश है उसको आर्यावर्त्त कहते हैं और जो इनमें सदा रहते हैं उनको आर्य कहते हैं।

आचार्य—जो सांगोपांग वेद विद्याओं का अध्ययन, सत्य शिक्षा का ग्रहण और मिथ्याचार का त्याग करावे वह आचार्य कहाता है।

शिष्य—उसको कहते हैं कि जो सत्य शिक्षा और विद्या को ग्रहण करने योग्य धर्मात्मा, विद्या ग्रहण की इच्छा और आचार्य का प्रिय करने वाला है।

गुरु—माता-पिता और जो सत्य का ग्रहण करावे और असत्य को छुड़ावे वह भी गुरु कहाता है।

पुरोहित—जो यजमान का हितकारी सत्योपदेष्टा होवे।

उपाध्याय—जो वेदों का एक देश व अंगों को पढ़ाता हो।

आप्त—जो यथार्थ वक्ता, धर्मात्मा, सबके सुख के लिये प्रयत्न करता है उसी को आप्त कहते हैं।

परोपकार—जिससे सब मनुष्यों के दुराचार दुःख छूटें, श्रेष्ठाचार और सुख बढ़ें उसके करने को परोपकार कहते हैं।

स्वर्ग—नाम सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है।

नरक—को दुःख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है।

जन्म—जो जीव का शरीर धारण करके प्रकट होना है। वह पूर्व, पर

और मध्य भेद से तीन प्रकार का है। जीव का शरीर से संयोग "जन्म" है और वियोग "मृत्यु" है।

विवाह—जो नियम पूर्वक प्रसिद्धि से अपनी इच्छा करके पाणिग्रहण करना है अर्थात् पुरुष का स्त्री और स्त्री का पुरुष से।

नियोग—विवाह के पश्चात् पति के मर जाने आदि वियोग में अथवा नपुंसकत्वादि स्थिर रोगों में स्त्री का स्ववर्ण वा अपने से उत्तम वर्णस्थ पुरुष के साथ और आपत्काल में पुरुष का स्ववर्ण स्त्री के साथ सन्तानोत्पत्ति करना। यह संस्कार भी विवाह की भाँति नियमपूर्वक प्रसिद्धि से किया जाता है।

स्तुति—गुण कीर्तन श्रवण और ज्ञान होना, इसका फल प्रीति आदि होते हैं।

प्रार्थना—अपने सामर्थ्य व पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त ईश्वर के सम्बन्ध से जो विज्ञानादि प्राप्त होते हैं उनके लिए ईश्वर से याचना करना। इसका फल अभिमान का नाश, उत्साह की वृद्धि और सहाय का मिलना है।

उपासना—जैसे ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव पवित्र हैं वैसे अपने करना, ईश्वर को सर्वव्यापक अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है ऐसा निश्चय करके योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहाती है। इसका फल ज्ञानादि की उन्नति आदि है। साथ ही आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि पर्वत के समान दुःख आने पर भी न घबरावेगा।

सगुण निर्गुण स्तुति प्रार्थनोपासना—जो-जो गुण परमेश्वर में हैं उनसे युक्त और जो-जो गुण नहीं हैं उनसे पृथक् मान कर प्रशंसा करना "सगुण निर्गुण स्तुति" है।

शुभ गुणों के ग्रहण की इच्छा और दोष छुड़ाने के लिए परमात्मा की सहाय चाहना "सगुण निर्गुण प्रार्थना" है और सब गुणों से सहित, सब दोषों से रहित परमेश्वर को मान कर अपने आत्मा को उसके और उसकी आज्ञा के अर्पण कर देना सगुण निर्गुणोपासना कहाती है।

पुण्य—जिसका स्वरूप विद्यादि शुभ गुणों का दान और सत्यभाषणादि सत्याचार का करना है उसको "पुण्य" कहते हैं। इससे उल्टे को "पाप" कहते हैं।

परलोक—जिसमें सत्य विद्या से परमेश्वर की प्राप्ति हो और उस प्राप्ति से इस जन्म वा पुनर्जन्म और मोक्ष में परम सुख प्राप्त होता है उसको परलोक कहते हैं। इससे उल्टे को अपरलोक कहते हैं।

विद्या—जिससे ईश्वर से लेके पृथ्वी पर्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है उसको विद्या कहते हैं। इससे उलटी का नाम अविद्या है।

जाति—जो जन्म से लेकर मरण पर्यन्त बनी रहे जो अनेक व्यक्तियों में एक रूप से प्राप्त हो, जो ईश्वरकृत हो जैसे मनुष्य, गाय और वृक्षादि समूह हैं वे जाति शब्दार्थ से लिए जाते हैं।

क्रियमाण—वह कर्म है जो वर्तमान में किया जाता है।

संचित—क्रियमाण के उस संस्कार को कहते हैं जो ज्ञान में जमा होता है।

प्रारब्ध—पूर्व किये हुए कर्मों के सुख दुःख-रूप फल को प्रारब्ध कहते हैं।

शिष्टाचार—जिसमें शुभ गुण का ग्रहण और अशुभ गुणों का त्याग किया जाता है वह शिष्टाचार कहाता है।

अतिथि—जिसकी आने और जाने में कोई भी निश्चित तिथि न हो तथा जो विद्वान् होकर सर्वत्र भ्रमण करके प्रश्नोत्तर के उपदेश से सब जीवों का उपकार करता है।

पूजा—जो ज्ञानादि गुण वाले का यथायोग्य सत्कार करना है उसको पूजा कहते हैं।

अपूजा—जो ज्ञानादि रहित जड़ पदार्थ है और जो सत्कार के योग्य नहीं है उसका सत्कार करना अपूजा है।

———

शंका समाधान

प्रश्न

१—ईश्वर ने सृष्टि की रचना कैसे की ? विशेषकर एकदम से युवा स्त्री पुरुष कैसे और कहाँ से बना दिये हैं ? कृपाकर स्पष्टतः विश्लेषण करें।

२—'नासदीय सूक्त' में बताया है कि मूल में प्रकृति भी नहीं थी। प्रजापति ने इच्छा की कि मैं प्रजा के साथ हो जाऊँ और उसने संसार की रचना की। तो जब मूल में प्रकृति भी नहीं थी तो त्रैतवाद कहाँ रहा ? प्रकृति अनादि कहाँ रही ? प्रजापति ने इच्छा क्यों की, क्योंकि इच्छा तो अपूर्ण को होती हैं तो क्या ईश्वर अपूर्ण है जो उसे ऐसी इच्छा हुई ?

३—वेद तीन हैं या चार ? यदि चार थे तो फिर शतपथ ब्राह्मण, तथा मनुस्मृति में अनेकों स्थलों पर तीन वेद क्यों लिखे हैं ? चार ही लिखना था। वेदों को तीन कई बार लिखा है चार एक ही बार, यह क्यों ?

४—वेदों के मन्त्रदृष्टा चार ऋषि हैं या वे अनेक ऋषि जिनके नाम मन्त्रों के साथ आये हैं। अनेक ऋचाओं के साथ स्त्रियों के नाम क्यों आये हैं ?

५—भूकम्प या बाढ़ आना ईश्वरीय व्यवस्थानुसार कही जाती है तो क्या वे समस्त लोग ही पापी हैं जो बाढ़ या भूकम्प के शिकार होकर मर जाते हैं और लाखों बेघरबार हो जाते हैं ?

६—प्राकृतिक नियम न तो ईश्वर तोड़ सकता है न जीव ? इस विषय में क्या अन्तर रहा ?

७—हम किसी व्यक्ति से यदि कोई प्रार्थना करते, माँगते या कुछ कहते हैं तो वह सुन लेता है, माँगी हुई वस्तु दे देता या अस्वीकार कर देता है पर ईश्वर तो उत्तर भी नहीं देता !

८—क्या ईश्वर को यह ज्ञान रहता है कि अमुक जीव का भावी जीवन इस प्रकार गुजरेगा ? क्या ईश्वर को यह विदित है कि इस मृत्युलोक में तृतीय विश्वयुद्ध होगा ? यदि नहीं मालूम तो सर्वज्ञ और त्रिकालज्ञ कैसे हुआ ? यदि मालूम रहता है तो जीव कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं रहेगा क्योंकि यदि जीव

ईश्वर के ज्ञान के अनुसार ही जीवन नहीं गुजारता तो ईश्वर का ज्ञान मिथ्या सिद्ध हुआ और ईश्वर की व्यवस्थानुसार ही जीवन बिताए तो वह स्वतन्त्र नहीं हुआ। यदि ईश्वर जानता है कि तृतीय विश्वयुद्ध नहीं होगा तो संसार वाले कितना ही चाहें विश्व युद्ध नहीं होना चाहिये और यदि ईश्वर जानता है कि तृतीय विश्व युद्ध होगा ही तो फिर हम सब का विश्व शान्ति के लिये प्रयत्न करना ही बेकार हुआ। कृपया स्पष्टतः विवेचना करें।

९—यदि संसार की सभी वस्तु इसीलिये क्रियाशील हैं कि उसमें एक चेतन शक्ति (ईश्वर) व्यापक होकर उन्हें क्रिया दे रही है तो जब वही चेतन सत्ता, कागज, कलम, खाट, टेबिल, किताब आदि में भी व्यापक है तो ये भी स्वयं क्रियाशील क्यों नहीं हो जाते ?

१०—शब्द आकाश का गुण कैसे हुआ ? रिकार्ड में आवाज भरी होती है जो उससे पैदा होती है आकाश से शब्द पैदा नहीं होता। शब्द मूर्तिक है या अमूर्तिक ?

१२—इन्द्रिय तो पहले बन गई और अन्त में शरीर, स्वामी दयानन्द जी की सृष्टि उत्पत्ति प्रकरण सम्बन्धी यह उक्ति कैसे युक्तियुक्त है ?

१२—एक स्थान पर स्वामी जी ने लिखा है कि जड़ का निमित्त पाकर कभी-कभी जड़ भी गतिशील हो जाता है। क्या यह गलत है ? और क्या यह भी गलत है कि जड़ पदार्थ जब जैसा संयोग पाते हैं तब वैसी ही आकृति में बदल जाते हैं। यह संयोग कभी-कभी स्वयं या कभी-कभी मनुष्य द्वारा होता है।

१ —हर कर्त्ता में कार्य से पहले इच्छा और प्रयोजन आवश्यक होता है। क्या ईश्वर में भी सृष्टि रचना में कोई इच्छा या प्रयोजन है ? यदि हाँ, तो फिर ईश्वर निर्विकार, निरंजन और राग रहित कैसे हुआ ? वह सृष्टि रचने पर मजबूर क्यों है ?

१४—४ अरब ३२ करोड़ वर्ष की लम्बी प्रलय सभी प्रकार के जीवों के लिये मोक्ष के समान हो गई। चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष तक सभी सुषुप्ति में क्यों रहें ? पृथ्वी के सभी अणु परमाणु इतने लम्बे समय तक क्यों कर अलग रहते हैं ? तब तक ईश्वर और जीव क्या करते रहते हैं ?

१५—जब ईश्वर हमारे पापों को क्षमा नहीं कर सकता और पुण्यों का फल अधिक नहीं दे सकता तब फिर उससे प्रार्थना करना ही बेकार है। जैसा हम करते हैं वैसा ही भोगते हैं फिर इसमें ईश्वर की क्या जरूरत ? क्या वह स्वयं अपनी स्तुति करवाना चाहता है ?

१६—वेद ईश्वरीय ज्ञान है। उसमें अनेक मन्त्र ऐसे हैं जिनमें ईश्वर की महिमा और स्तुति है। ईश्वर ने खुद की उपासना करने का ज्ञान क्यों दिया ?

१७—यदि वेद ही सब ज्ञान का भण्डार है तो तीन शंकायें होती हैं (१) जो व्यक्ति चारों वेदों का पूर्ण अध्ययन करके पण्डित बन जाये क्या उसे पूर्ण ज्ञान हो जावेगा ? (२) यदि चारों वेदों में ही पूर्ण ज्ञान उपस्थित है तो वह ज्ञान भी सीमित हुआ। अनन्त ईश्वर का ज्ञान सीमित कैसे हुआ ? (३) सम्पूर्ण ज्ञान वेदों का सहारा लेकर आर्य विद्वान् अमेरिका, जर्मनी और इंग-लैण्ड आदि की तरह कोई अभूतपूर्व आविष्कार क्यों नहीं करते ?

—एक अधीर जिज्ञासु

उत्तर

१—सर्वव्यापक ईश्वर ने अपने कौशल और शक्ति से प्रत्येक पदार्थ को उसके भीतर रहते हुए उत्पन्न किया है। जिस प्रकार माता के गर्भ में बालक क्रमशः बढ़ता है और पूर्णता को प्राप्त होकर बाहर आता है उसी प्रकार धरती माता के गर्भ से सब मनुष्यादि सृष्टि उत्पन्न हुई। ये सब साँचे थे जिनको अपनी शक्ति और सामर्थ्य से सृष्टि की आदि में ईश्वर ने उत्पन्न किये थे। इन्हीं साँचों से मनुष्यादि की सृष्टि उत्पन्न होती चली आ रही है।

२—'नासदीय सूक्त' में जगत् बनाने की सामग्री का अभाव वर्णन नहीं किया है। भाव ही वर्णन किया है। सिर्फ सापेक्ष नामों (निस्बती नामों) के व्यवहाराभाव को बताया है। अत्यन्त सूक्ष्म कणों का 'परमाणु' नाम उस समय

व्यवहृत हुआ जब ६० (साठ) कणों के मिलने से 'अणु' बनाये गये। 'अणुओं' के बनने से पूर्व, कणों का नाम 'परमाणु' व्यवहार में नहीं आया हुआ था। अर्थात्—जब ६० अवयवों से बने हुए अवयवी का नाम 'अणु' हुआ तो उसके अवयवों का नाम 'परम+अणु' हुआ। इसी कारण स्वामी जी महाराज ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में सापेक्ष नामों के व्यवहार का अभाव तो बताया है न कि जगत् के कारण अर्थात् उपादान कारण का, जिसको सामर्थ्य नाम से वर्णन किया है। शब्द ये हैं:—

किंतु पर ब्रह्मणः सामर्थ्याख्यमतीव सूक्ष्मं सर्वस्यास्य परम कारण संज्ञकमेव तदानीं समवर्त्तत।

अर्थ—परन्तु उस समय परब्रह्म की सामर्थ्य नाम का अति सूक्ष्म, इन सब का परम कारण वर्तमान था।

जगत् की उत्पत्ति से पूर्व उसके उपादान कारण का 'सामर्थ्य' नाम ही अत्यन्त उपयुक्त है, क्योंकि ईश्वर की जगत् रचने की 'सामर्थ्य' के साथ इसकी संगति लग जाती है।

एक में जगत् बनाने की सामर्थ्य और दूसरी में जगत् की सामर्थ्य।

'प्रकृति' शब्द भी विकृति की अपेक्षा रखता है। जब प्रकृति विकृत हुई तब उसका नाम 'प्रकृति' व्यवहार में आया। जब 'पुत्र' उत्पन्न हो जाय तब उस अवस्था में ही 'पिता' शब्द व्यवहार में आ सकता है। यहाँ 'पिता' नाम वाले व्यक्ति का अभाव नहीं है, केवल पितात्व का अभाव है।

प्रजापति ने अपनी किसी कमी को पूरा करने की 'इच्छा' नहीं की क्योंकि पूर्ण होने से उसमें कमी की कल्पना करना ही भूल है। उसने अपनी पूर्णता से जीव की अपूर्णता को पूरा करने के लिये इच्छा की। पूर्ण के होने की सफलता अपूर्णों की सहायता करने में ही है। ऐसी सहायता की इच्छा सर्वथा निर्दोष है।

३—तीन तो विद्यायें हैं परन्तु वेद चार हैं। त्रयी विद्या से चारों वेदों का ग्रहण होता है। क्योंकि उनमें कर्म, उपासना और ज्ञान का विधान किया है। इसके अतिरिक्त चारों वेदों की रचना गद्य, पद्य और गानात्मक होने से भी वेदों को वेदत्रयी कहते हैं।

ऋक्, यजु, साम जहाँ वेदों के नाम हैं वहाँ वेदों के मन्त्रों की बनावट के

भी नाम हैं ।

मनुस्मृति में 'ऋग्यजुसाम लक्षणम्' कह कर वेद मन्त्रों की तीन प्रकार की रचना की ओर ही संकेत किया है ।

४—मन्त्रद्रष्टा पुरुष और स्त्री दोनों हुए हैं ।

५—मृत्यु पाप के कारण नहीं होती है । दुःख पाप के कारण होता है । जन्म और मृत्यु का अनिवार्य सम्बन्ध है । यदि मरने वाले थोड़ी-थोड़ी संख्या में भिन्न-भिन्न स्थानों में मर जाते तो आपको आश्चर्य न होता । आश्चर्य तो इकट्ठा कई संख्या में मर जाने से हुआ है । ऐसी दुर्घटना के स्थान में जीव अपने कर्मों के कारण और ईश्वरीय व्यवस्था से सामूहिक रूप में भी पहुँच जाते हैं । कीट पतंगादि नीच योनि के जीव तो प्रतिदिन करोड़ों की संख्या में मरते और उत्पन्न होते रहते हैं । उनकी ओर हमारा ध्यान बहुत कम जाता है ।

भूकम्प और बाढ़ादि के मुख्य कारण तो प्राकृतिक ही होते हैं परन्तु वे मनुष्यादि प्राणी के कर्म फल भुगाने का कारण भी बन जाते हैं ।

यदि कोई पुरुष किसी आवश्यक निज कार्य के लिये अपनी मोटर में तेजी से जा रहा हो, और उस समय दैवात् उसके नीचे किसी की मृत्यु हो जाय तो यह नहीं कहा जायगा कि इस जीव को मारने के लिये वह पुरुष मोटर चला रहा था । वह तो अपने निज के काम के लिये ही कहीं जा रहा था, मार्ग में वह किसी की मौत का भी साधन बन गई ।

६—अन्तर यह है कि जीव अपनी मूर्खता अथवा स्वार्थ वश प्राकृतिक नियम तोड़ना चाहता है पर वह तोड़ नहीं सकता, और ईश्वर सर्वज्ञ होने से और नियमों का स्वयं नियामक होने से तोड़ने का विचार ही नहीं करता ।

यदि किसी अंश में जीव और ईश्वर की समानता भी हो तो भी दोनों एक नहीं हो सकते । कितना ही प्रयत्न करे जीव तीन काल में ईश्वर के समान नहीं हो सकता । अर्थात् सर्वत्र, सर्वज्ञ और सर्व शक्तिमान् कभी भी नहीं हो सकता ।

प्रकृति के परमाणुओं में जो स्वाभाविक गुण हैं उनको न ईश्वर बदल सका है और न जीव बदल सकता है, इस समानता से ईश्वर के ईश्वरत्व में कोई

दोष नहीं आता। यह तो अनादि पदार्थों के अपरिवर्तन शील होने का प्रमाण है।

ईश्वर भी नहीं मर सकता और न जीव मर सकता है। इसमें दोनों समान हैं। अजन्मा होने में दोनों समान हैं। ४ की संख्या को ईश्वर भी ४ ही जानता है और जीव भी, तो इस समानता से क्या हानि अथवा क्या लाभ ?

७—आपने शरीरी और अशरीरी के भेद को भुला कर प्रश्न किया है सो युक्त नहीं है। किसी बात को स्वीकार करने या अस्वीकार करने का प्रकार दोनों का भिन्न होगा। समान न होगा।

चूंकि पूर्व जन्मों में किये हुए भिन्न-भिन्न कर्मों के अनुसार जीवों को फल देना ईश्वर के आधीन है, जिन कर्मों का और उनकी राशि का जीव को वर्तमान में जरा भी ज्ञान नहीं है, तो यह कैसे हो सकता है कि जीव उन कर्मों के अनुसार अपनी माँग प्रस्तुत करे, वह तो अपनी वर्तमानावस्था के अनुसार ही माँग पेश करेगा जिसको न्यायानुसार ईश्वर कभी भी मंजूर नहीं करेगा। इस पर सन्तुष्ट न होकर वह स्वार्थी दुनियादारों की भाँति झिक-झिक करता ही रहेगा, खुशामद पर खुशामद, देवी-देवताओं द्वारा सिफारिश का ताँता बाँध कर ईश्वर को परेशान और उसका बहुमूल्य समय नष्ट करता रहेगा। परन्तु ईश्वर अपने फैसले को जो उसके सर्वज्ञतापूर्ण न्याय पर निर्भर है किसी अवस्था में भी नहीं बदलेगा। इसलिये ईश्वर का अशरीरी होना और शरीरी की भाँति व्यवहार न करना ही उचित और युक्त है। यह सब जीव के ही लाभ के लिये है परन्तु बालक की भाँति वह अपने सीमित ज्ञान से ईश्वर के निर्णय के मूल्य और लाभ को नहीं जानता है।

८—मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है चाहे अच्छा करे चाहे बुरा। जैसा स्वतन्त्रता से जीव करता है वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है। न तो पूर्व-काल में जीव करता है और न उत्तर-काल में ईश्वर जानता है, और न पूर्व-काल में ईश्वर जानता है और न उत्तर काल में जीव करता है। जीव का करना और ईश्वर का जानना साथ-साथ है, आगे-पीछे नहीं है।

पिछले कर्मों के फलस्वरूप जीव की क्या अवस्था होगी उसको ईश्वर पहले से ही जानता है, क्योंकि किये हुए कर्मों का फल ईश्वर ही की व्यवस्था

के आधीन होता है। यदि यह माना जाय कि क्रियमाण (स्वतन्त्र) कर्मों को भी ईश्वर पहले से जानता है और उसी के अनुसार जीव कर्म करता है, अपनी स्वतन्त्र इच्छानुसार नहीं करता, तो जीव परतन्त्र हो जायगा और ऐसे कर्मों का उत्तरदाता व भोक्ता ईश्वर ही होगा, जीव नहीं होगा।

यदि मनुष्यों के स्वतन्त्र कर्मों से ऐसे कारण उपस्थित हो जायें कि जिनसे विश्व युद्ध होना अनिवार्य हो जाय तो युद्ध अवश्य होगा और यदि ऐसे कारण उत्पन्न न हुए हों तो युद्ध न होगा। ईश्वर इन दोनों कारणों को देखता है।

विश्व शान्ति के लिये प्रयत्न प्रत्येक अवस्था में शुभ है क्योंकि वह कर्त्ता की शुभ भावना का द्योतक है जिसका शुभ फल ही उसके कर्त्ता को मिलेगा।

कभी-कभी शान्ति की स्थापना के लिये क्रान्ति की भी आवश्यकता होती है।

९—ईश्वर चेतन होने से अपने में जानने और करने रूपी दोनों शक्ति रखता है। जड़ पदार्थ तो क्रिया को ग्रहण करते हैं, ज्ञान को ग्रहण करने की उनमें योग्यता नहीं है। जिस प्रकार अध्यापक का प्रदान किया हुआ ज्ञान चेतन बालक तो ग्रहण कर लेते हैं परन्तु मेज कुर्सी आदि ग्रहण नहीं करतीं क्योंकि उनमें ज्ञान के ग्रहण करने की योग्यता नहीं है।

ईश्वर की क्रिया-शक्ति दो प्रकार से कार्य करती है। उगते हुए पेड़ में और प्रकार से और सूखे हुए या काटे हुए पेड़ में और प्रकार से। उगते हुए में वृद्धि होती और कटे हुए में क्षय होता है। कुर्सी और मेज वग़ैरह काटे हुए पेड़ की लकड़ी से बनाई जाती हैं इसलिये उनमें जो क्रिया होती है वह उगते हुए पेड़ से भिन्न होती है। यह भिन्नता पदार्थों की अवस्था भेद से है। सूर्य का ताप, लगे हुए पौधे को बढ़ाता है और उखड़े हुए को सुखाता है यह दोनों फल पदार्थ की अवस्था भेद से हैं।

(१०) जब एक स्थान पर बोला हुआ शब्द आकाश में सर्वत्र सुना जा सकता है तो इससे यह सिद्ध हो गया कि "शब्द" आकाश का गुण है और वह बोलने की क्रिया से प्रकट हो सकता है।

(११) यह प्रश्न आपका स्पष्ट नहीं है। यदि प्रमाण सहित लिखते या

उदाहरण से स्पष्ट करते तो उत्तर देने में सुविधा व सरलता होती। फिर भी अपनी समझ के अनुसार लिखता हूँ शायद आपकी इच्छा के अनुसार हो। न्याय दर्शन में शरीर का लक्षण किया है:—

"चेष्टेन्द्रियार्थाश्रयः शरीरम्"

अर्थः—इन्द्रियों का अपने अर्थ के लिए चेष्टा करने का आश्रय शरीर है। इस हिसाब से इन्द्रियों का शरीर से पहले मानना अयुक्त नहीं है।

(१२) स्वामीजी महाराज के शब्दों को जैसे हैं वैसे आपने नहीं लिखा। उन्होंने उदाहरण सहित लिखा है। आगे यह भी लिखा है कि "उनका नियम पूर्वक बनना व बिगड़ना परमेश्वर और जीव के आधीन है।"

ईश्वर रचित बीजादि का हवा से उड़कर या किसी और प्रकार से खेत्त के अतिरिक्त किसी स्थान में गिरजाना और जल के मिल जाने से वृक्षाकार हो जाना ईश्वर की सामान्य क्रिया के प्रभाव से तो माना जा सकता है जो अग्नि जलादि में व्याप्त रहती है, परन्तु नियमानुसार नहीं माना जा सकता क्योंकि जहाँ वह वृक्षाकार हुआ है वह न तो खेत है न बगीचा है। न वह उद्दिष्ट स्थान जीव का है और न ईश्वर का है। इसी तरह अग्नि के मेल से बिगड़ जाने को भी समझ लीजिये। एक मिसाल से और स्पष्ट करता हूँ।

वेद द्वारा ई·वर ने उपदेश दिया है कि समाज की अवस्था को साम्य रखने के लिये प्रतिषिद्ध मैथुन से सन्तान उत्पन्न न की जावे, इसके विरुद्ध यदि कोई पुरुष सन्तान उत्पन्न करे तो वह व्यभिचारज सन्तान होगी। ऐसी सन्तान ईश्वर की क्रिया शक्ति से उत्पन्न तो हो जायगी पर उसके बताये हुए सामाजिक नियम के विरुद्ध होगी क्योंकि सामाजिक नियम को उल्लंघन मनुष्य ने किया है इसलिए उसने पाप किया है। ईश्वर की सामान्य क्रिया तो प्रतिषिद्ध और अप्रतिषिद्ध मैथुन में समान ही रहती है।

(१३) इसका उत्तर दूसरे प्रश्न के उत्तर में आ चुका है। उसे देख लें। इतना विशेष कहता हूँ कि ईश्वर सर्वज्ञ होने से पूर्ण ज्ञानी हैं। पूर्णता में कम ज्यादा होना असम्भव है। अतः ईश्वर में जगत् के उत्पन्न करने का उद्देश्य और उत्पन्न करने की इच्छा स्वाभाविक है जिसको इक्षा कहते हैं और यह सब जीव के लाभार्थ है।

(१४) प्रलय का लम्बा काल सब जीवों के लिये समान नहीं है। जैसे गाढ़ निद्रा में सोये हुए मनुष्य को समय के परिमाण का भान नहीं रहता उसी तरह बद्ध जीवों को सुषुप्ति अवस्था में रहने से प्रलय के लम्बे काल का भान नहीं होता है। मुक्त जीव ज्ञानसहित मुक्ति के आनन्द को भोगते हैं, और ज्ञानरहित गाढ़ निद्रा के आनन्द को भोगा करते हैं।

जिस प्रकार क्रमशः जगत् उत्पन्न होता है उसी प्रकार क्रमशः प्रलय को प्राप्त होता है। एक क्षण भी क्रियारहित नही रहता।

(१५) प्रार्थना वगैरः कर्मों के फल को बदलने या पाप क्षमा कराने के लिये नहीं की जाती है। इनका फल तो अन्य ही होता है। स्तुति से गुण-ग्रहण में प्रीति, प्रार्थना से अभिमान का नाश, उत्साह में वृद्धि और सहायका मिलना उपासनासे ईश्वर के गुण कर्मानुसार अपने गुण कर्म बनाना।

ईश्वर की स्तुति ईश्वर को जान कर उस जैसा बनने के लिये है उसकी खुशामद करके उसको खुश करने के लिये या उससे अनुचित लाभ उठाने के लिये नहीं है।

(१६) ईश्वर ने अपनी खुद की उपासना करने का ज्ञान इसलिए दिया है कि जीव उस जैसा होने का यत्न करे। गुरु के पास जाने और पढ़ने का यही लाभ है कि शिष्य गुरु जैसे बनें। ईश्वर से मुक्ति का आनन्द और गुरु से ज्ञान का आनन्द भोगें।

(१७) [१] चारों वेदों का अध्यन करने वाला जिसने अर्थ ज्ञान सहित पढ़ा है पूर्ण पण्डित हो जावेगा।

(२) जितना जीवों को मुक्ति प्राप्त करने के लिये ज्ञान अपेक्षित है इतना सारा वेदों में मौजूद है। जीव की योग्यता से अधिक होना व्यर्थ है ईश्वर का सारा ज्ञान असीम है।

(३) पूर्व काल में हस्तक्रिया के सम्पूर्ण साधन और राज्य की ओर से सहायता मिलने के कारण बड़े-बड़े आविष्कार हुए अब वेदों की विद्या का लोप होने से जिसका कारण भारत वासियों का प्रमाद और आपस की फूट है यह अवस्था हो गई है। लोगों का कुछ-कुछ प्रयत्न इस ओर होने लगा है राज्याधिकारियों ने प्रोत्साहन दिया और सहायता दी तो पूर्वावस्था को हमारा

देश पुनः प्राप्त हो जावेगा। हस्तक्रिया को शूद्र काम मान लेना भी देश की विज्ञान सम्बन्धी गिरावट का बहुत बड़ा कारण है।

इञ्जील के परस्पर विरोधी वचन आध्यात्मिक सिद्धान्त

१. परमेश्वर अपने कार्यों से सन्तुष्ट है

और खुदा ने सब पर जो उसने बनाया था नजर की और देखा कि बहुत अच्छा है। (पैदाइश[1] १। ३१ पृ० ६)

परमेश्वर अपने कार्यों से असन्तुष्ट है

तब खुदावन्द जमीन पर इन्सान के पैदा करने से पछताया और निहायत दिलगीर हुआ। (पैदाइश ६। ६ पृ० ११)

२. परमात्मा चुने हुए मन्दिरों में निवास करता है

तब खुदाबन्द रात के वक्त सुलेमान पर ज़ाहिर हुआ और उसने कहा कि मैंने तेरी दुआ सुनी और इस मकान को अपने वास्ते चुन लिया है कि वह कुरबानगाह होवे……क्योंकि मैंने इस घर को पसन्द किया और मुकद्दस ठहराया कि उसमें मेरा नाम अबद तक रहे और मेरी आँखें और मेरा दिल हर वक्त उस पर ठहरे। (२ तवारीख ७।१२-६ पृ० ५५६ व ५५७)

परमात्मा मन्दिरों में नहीं रहता

लेकिन बारी ताअला हाथ के बनाये हुए घरों में नहीं रहता। (अमाल ७।४८ पृ० ८०)

३. ईश्वर प्रकाश में रहता है

और वह उस नूर में रहता है जिस तक किसी की गुजर नहीं हो सकती (१ तिमुथियस ६। १६ पृ० ३०८)

---

[1] अध्याय १ आयत ३१ है इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये।

ईश्वर अन्धकार में रहता है

खुदाबन्द ने फर्माया था कि मैं घटा की तारीकी में रहूँगा।

(१ सलातीन ८। १२ पृ० ४४१)

उसने तारीकी को अपना पर्दा किया। (ज़बूर १८। ११)

बदलियाँ और काली घटाएँ उसके आस-पास हैं।

(ज़बूर ९७। २ पृ० ७३३)

४. परमात्मा को देखा व सुना जा सकता है

और फिर अपनी हथेली उठाऊँगा और तू मेरा पीछा देखेगा

(खुरूज ३३। २३ पृ० ११६)

और खुदावन्द ने मूसा से रूबरू हमकलाम हुआ जिस तरह कोई अपने दोस्त से कलाम करता है। (खुरूज ३३। ११ पृ० ११६)

तब खुदावन्द खुदा ने आदम को पुकारा और उससे कहा कि तू कहाँ है……वह बोला कि मैंने बाग में तेरी आवाज़ सुनी और डरा।

(पैदाइश ३। ९-१०)

और कहा कि मैंने खुदा को रूबरू देखा और मेरी जान बच रही है।

(पैदाइश ३२। ३० पृ० ४६)

जिस वर्ष कि उजिया बादशाह मर गया मैंने खुदावन्द को एक बड़ी बुलन्दी पर उनके तख़्त के ऊपर बैठे देखा। (यसायाह ६। १)

तब मूसा और हरून और नदब और एबिहू और सत्तर बुजुर्ग इज्राइली ………और उन्होंने इसरील के खुदा को देखा।

(खुरूज २४। ९-१०-११ पृ० १३९)

प्रभु अदृश्य है और सुना भी नहीं जा सकता

खुदा को किसी ने भी देखा नहीं। (युहन्ना १। १८ पृ० १३१)

तुमने न कभी उसकी आवाज़ सुनी है और न कभी उसकी सूरत देखी।

(युहन्ना ५। ३७ पृ० १३९)

और बोला तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता इसलिये कि कोई इन्सान नहीं कि मुझे देखे और जिन्दा रहे। (खुरूज ३३। २० पृ० ११६)

न उसे किसी इन्सान ने देखा और न देख सकता है।

(१ तिमुथियस ३ । १६ पृ० ३०६)

५. परमेश्वर थक जाता है और विश्राम करता है

इसलिये कि छः दिन में खुदावन्द ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया और सातवें दिन आराम किया और ताज़ादम हुआ।

(खुरूज ३१।१७ पृ० ११३)

पछताता-पछताता मैं थक गया। (यरेनिया १५ । ६)

लेकिन तूने अपने गुनाहों से बारबरदार कराया और अपनी ख़ताओं से मुझे थकाया। (यसायाह ४३ । २४ पृ० ८५५)

प्रभु न कभी थकता है और न कभी विश्राम करता है

क्या तूने नहीं जाना ? क्या तूने नहीं सुना ? खुदावन्द, सो अबदी खुदा है, ज़मीन के किनारों का पैदा करने वाला, वह थक नहीं जाता और माँदा नहीं होता। (यसायाह ४० । २८ पृ० ८५१)

६. ईश्वर सर्वव्यापक है और सब वस्तुओं को देखता और जानता है।

खुदावन्द की आँखें सब मकानों में है। (अम्साल १५ । ३ पृ० ७७९)

तेरी रूह से मैं किधर जाऊँ ? और तेरी हुज़ूरी से मैं कहाँ भागूं ? अगर मैं आसमान के ऊपर चढ़ जाऊँ तो तू वहाँ है, अगर मैं पाताल में अपना बिस्तर बिछाऊँ, तो देख तू वहाँ भी है।

अगर सुबह के पंख लेके मैं समन्दर की इन्तहा में जा रहूँ तो वहाँ भी तेरा हाथ मुझे ले चलेगा और तेरा दाहिना हाथ मुझे सँभालेगा।

(ज़बूर १३९ । ७-१० पृ० ७५९)

कोई तारीक नहीं है न मौत का साया है, जहाँ बदकारी करने वाले आपको छिपा सकें क्योंकि उसकी आँखें इन्सान की राहों पर लगी हैं, और वह उनकी सारी रविशों पर नज़र रखता है।

(अयूब ३४ । २२-२१ पृ० ६६६)

ईश्वर सर्वव्यापक नहीं है न तमाम वस्तुओं को देखता है और न जानता है।

और खुदावन्द उस शहर और बुर्ज को जिसे बनी आदम बनाते थे, देखने उतरा।

(पैदाइश ११ । ५ पृ० १५)

मैं अब उतर के देखूंगा, कि उन्होंने सरासर उस चिल्लाने के मुताबिक, जो मुझ तक पहुँचा, किया है या नहीं और अगर नहीं तो मैं दर्याफ्त करूंगा।

(पैदाइश १८ । २०-२१ पृ० २३)

और आदम और उसकी जोरू ने आपको खुदावन्द खुदा के सामने से बाग के दरख्तों में छिपाया।

(पैदाइश ३ । ८ पृ० ७८)

७. ईश्वर मनुष्यों के हृदय को जानता है

ऐ खुदा तू सब के दिलों को जानता है। (आमाल १ । २४ पृ० १७०)

वह तो दिलों के राज़ों से भी आगाह है। (ज़बूर ४४।२१ पृ० ७००)

तू मेरा बैठना और तू मेरा उठना जानता है, तू मेरे अन्देशे को दूर से दर्याफ्त करता है। तू मेरा चलना, मेरा लेटना खूब जानता है, बल्कि तू मेरी सारी रविशों को जानता है। (ज़बूर १३९ । २-३ पृ० ७५९)

ईश्वर लोगों के दिलों की बात जानने के लिये उनकी जाँच करता है

खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हें आज़माता है, तो दर्याफ्त करे, कि तुम खुदावन्द अपने खुदा अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से दोस्त रखते हो कि नहीं। (इस्तिस्ना १३ । ३, पृ० २४४)

खुदावन्द तेरा खुदा बयाबान के बीच इन चालीस वर्ष तुमको लिये फिरा, ताकि तुझें आजिज़ करे, और तुझे आज़मावे, और तेरे दिल की बात दर्याफ्त करे कि तू उसके अहकाम मानेगा कि नहीं।

(इस्तिस्ना ८ । २ पृ० २३७)

कि अब मैंने जाना कि तू खुदा से डरता है; इसलिये तूने अपने बेटे, हाँ अपने इकलौते को मुझसे दरेग़ न किया।

(पैदाइश २२ । १२ । पृ० २८)

८. ईश्वर सर्वशक्तिमान् है

कि देख, मैं खुदावन्द हूँ, और सारे बशर का खुदा ; क्या मेरे आगे कोई काम दुश्वार है । (यरेनिया ३२ । २७ पृ० ८२४)

और तेरे आगे कोई काम मुश्किल नहीं है ।

(यरेनिया ३२ । १७ पृ० ९२३)

खुदा से सब कुछ हो सकता है । (मत्ती १९ । २६ पृ० ३१)

ईश्वर सर्वशक्तिमान् नहीं है

और खुदावन्द यहूदा के साथ था ; और उसने कोहिस्तानियों को खारिज किया, पर नशेब के रहने वालों को खारिज न कर सका, क्योंकि उनके पास लोहे की रथें थीं । (काज़ियों १ । १९ पृ० ३०९)

९. ईश्वर अपरिवर्त्तनशील है

जिसमें न कोई तब्दीली हो सकती है, और न गर्दिश के सबब उस पर साया पड़ता है । (याकूब १ । १७ पृ० ३३०)

क्योंकि मैं खुदावन्द हूँ, मैं बदलता नहीं हूँ ।

(माला की ३ । ६ पृ० ११०९)

मुझ खुदावन्द ने यह कहा यह हो जायगा और मैं उसे करूँगा ; मैं न हटूंगा, न छोड़ूंगा, न पछताऊँगा । (हेज़ेकियल २४ । १४ पृ० ९९५)

खुदा इन्सान नहीं, जो झूठ बोले, ना आदमज़ाद है, कि पशेमान होवे ।

(गिनती २३ । १९ पृ० २०५)

ईश्वर परिवर्त्तनशील है

तब खुदावन्द ज़मीन पर इन्सान के पैदा करने से पछताया और निहायत दिलगीर हुआ । (पैदाइश ६ । ६ पृ० ११)

और खुदा ने उनके कामों को देखा कि अपनी बुरी-बुरी राह से बाज़ आये तब खुदा उस बदी से जो उसने कही थी कि मैं उनसे करूँगा पछताके बाज़ आया और उसने वह बदी न की । (यूना ३ । १० पृ० १०७७)

सो खुदावन्द इसराइल का खुदा फ़र्माता है कि मैंने तो कहा था कि तेरा घराना और तेरे बाप का घराना हमेशा मेरे हुजूर में चलें, पर अब खुदावन्द फ़र्माता है कि वे मुझसे दूर होवें । (१ सेमुअल २ । ३० पृ० ३४८)

उन्हीं दिनों में हिज़किया को मौत की बीमारी हुई तब आमूस का बेटा यसायाह उसके पास आया और उसे कहा खुदावन्द यों फ़र्माता है कि तू अपने घर की बाबत वसीयत कर इसलिये तू मर जायेगा और न जियेगा।

और पेश्तर इसके कि यसायाह घर के दर्म्यानी सहन में निकले ऐसा हुआ कि खुदावन्द का कलाम उस पर नाज़िल हुआ और उसने कहा कि तू फिर जा और हिज़क़िया को, जो मेरे लोगों में सर्दार है कह कि खुदावन्द तेरी बाप-दादों का खुदा यों फ़र्माता है कि मैंने तेरी दुआ सुनी और मैं तेरी उम्र १५ वर्ष बढ़ा दूँगा। (२ सलातीन २२। १-४-५-६ पृ० ५०२)

१०. ईश्वर न्यायी व पक्षपातरहित हैं

ताकि ज़ाहिर करे कि खुदावन्द सीधा है और उसमें नारास्ती नहीं है।

(ज़बूर ९२। १५ पृ० ७३१)

क्या तमाम दुनिया का इन्साफ़ करने वाला इन्साफ़ न करेगा।

(पैदाइश १८। २५ पृ० २३)

खुदा सच्चा है और बदी से मुबर्रा है वह सादिक़ और बहक़ है।

(इस्तिस्ना २३। ४ पृ० २७०)

क्योंकि खुदा के यहाँ किसी की तरफ़दारी नहीं है।

(रोमियो २। ११ पृ० २१८)

ईश्वर अन्यायी व पक्षपाती है

क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा ग़य्यूर खुदा हूँ और बाप-दादों की बद-कारियों की औलाद पर जो मुझसे अदावत रखती हैं तीसरी और चौथी पुश्त तक पहुँचाता हूँ। (खुरूज २०। ५ पृ० ९७)

और अभी तक न तो लड़के पैदा हुए थे और न उन्होंने नेकी या बदी की थी ताकि खुदा का इरादा जो बरगुज़ीदगी पर मौक़ूफ़ है आमाल पर मबनी न ठहरे और उससे कहा गया कि बड़ा छोटे की खिदमत करेगा चुनांचे लिखता है कि मैंने याकूब से तो मुहब्बत की लेकिन इसाऊ से नफ़रत की।

(रोमियो ९। ११-१२-१३ पृ० २२८)

क्योंकि जिसके पास है उसे दिया जाएगा और उसके पास ज्यादह हो

जायेगा और जिसके पास नहीं है उससे वह भी ले लिया जायेगा जो उसके पास है। (मत्ती १३। १२ पृ० २०)

११. ईश्वर बुराई का निर्माता नहीं है

क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ का कर्त्ता नहीं है। (कुरन्थियों १४। ३३)

खुदा सच्चा है और बदी से मुबर्रा है वह सादिक व बरहक है।

(इस्तिस्ना ३२। ४ पृ० २७०)

न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा होती है और न वह दूसरों की परीक्षा लेता है। (याकूब १। १३)

ईश्वर बुराई कर्त्ता है

क्या अल्लाह ताला के मुंह से भला और बुरा नहीं निकलता।

(यरेनिया का नौहा ३। ३८ पृ० ६५६)

मैं सलामती को बनाता हूं और बला को पैदा करता हूं।

(यसायाह ४५। ७ पृ० ८५८)

१२. जो मांगते हैं उन्हें ईश्वर उदारता से देता है

पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से मांगे जो उलाहने दिए बिना सबको उदारता से देता है और सबको दी जायेगी।

(याकूब १। ५)

क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढता है वह पाता है और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा। (याकूब ११। १०)

ईश्वर अपनी देन रोक लेता है और उसकी प्राप्ति में रुकावट पैदा करता है

उसने उनकी आंखें अन्धी व उनका मन कठोर किया है ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें व मन से समझें और फिर मैं उन्हें चंगा करूं।

(युहन्ना १२। ४०)

क्योंकि वह खुदावन्द की तरफ से था कि उनके दिल सख्त हो गए थे ताकि वे जंग के लिए इसराइल से मुकाबला करें और ताकि वे उनको हरम करें और फिर वे मौरिदरहम के न रहें। (जोशुआ ११। २० पृ० २९०)

ऐ खुदावन्द क्यों तूने हमें अपनी राह से गुमराह किया ? क्यों तूने हमारे दिल को सख्त किया ।

(यसायाह ६३ । १७ पृ० ८७०)

१३. ईश्वर जो उसे ढूँढते हैं उन्हें मिल जाता है

क्योंकि जो माँगता है उसे मिलता है और जो ढूंढता है वह पाता है ।

(मती ८ । ७)

जो मुझको सवेरे ढूंढते हैं मुझको पावेंगे (अम्साल ८ । १७ । पृ० ७७२)

ईश्वर, जो उन्हें ढूंढते हैं उन्हें नहीं मिलता

तब वे मुझे पुकारेंगे, पर मैं जवाब न दूँगा । वह सवेरे मुझको ढूंढेंगे पर मुझको न पावेंगे ।

(अम्साल १ । २८ पृ० ७६६)

जब तुम अपना हाथ (बढ़ाओगे) फैलाओगे तो मैं तुमसे चश्मपोशी करूँगा, हाँ जब तुम दुआ पर दुआ माँगोगे तो मैं न सुनूंगा ।

(यसायाह १ । १५ पृ० ८१३)

वे चिल्लाए पर कोई बचाने वाला न था, हाँ खुदावन्द को पुकारा, उसने उन्हें जवाब न दिया । (ज़बूर १८ । ४१ पृ० ६८३)

१४. ईश्वर शान्तिप्रिय है

शान्ति का परमेश्वर । (रोमियो १५ । ३३)

क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ का नहीं पर शान्ति का कर्त्ता है ।

(कुरिन्थियो १४ । ३३)

ईश्वर लड़ाकू है

खुदावन्द साहिबे जंग है । (खुरूज १५ । ३ पृ० ६१)

उसका नाम रबुल अफ़वाज है । (यसायाह ५१ । १५ पृ० ८६४)

खुदावन्द मेरी चट्टान मुबारक हो जो मेरे हाथों को जंग करना और मेरी उँगलियों को लड़ना सिखाता । (ज़बूर १४४ । १ पृ० ७६१)

१५. ईश्वर कृपालु दयालु व नेक है

प्रभु बहुत तरस खाता और दया करता है । (याकूब ५ । ११)

क्योंकि वह खुशी से मुसीबत नहीं भेजता और न बनी आदम को दुख देता है ।

(यरेनिया के नौहा ३ । ३३ पृ० ६५६)

क्योंकि उसकी रहमत अबदी है। (१ तवारीख १६ । ३४)

कि खुदावन्द यहोवा कहता है कि मुझे उसके मरने से जो मरता है कोई शादमानी नहीं। (हेजेकियल १८ । ३२ पृ० ६८५)

खुदावन्द सब के लिये भला है और उसकी रहमतें उसकी सारी सनअतों पर हैं। (ज़बूर १४५ । ६ पृ० ७६२)

वह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो और वे सत्य को भली-भाँति पहिचानें। (१ तिमोथी २-४)

परमेश्वर प्रेम है। (१ योहन्ना ४ । ६)

खुदावन्द भला और सीधा है। (ज़बूर २५ । ८ पृ० ६८७)

ईश्वर निर्दयी घातक व क्रूर है

मैं शफ़क़तन करूँगा और हरगिज़ रियायत न करूँगा और रहम न दिखाऊँगा बल्कि उन्हें हलाक करूँगा। (यरेनिया १३ । १४ पृ० ८६७)

तुम लोगों को जिन्हें खुदावन्द तेरा खुदा तेरे हवाले करेगा, निगल जायेगा उन पर मुतलक़ तेरी शफ़क़त की नज़र न होगी।

(इस्तिस्ना ७ । १६ पृ० २२६)

सो अब तू जा और अमालिक को मार और सब जो कुछ कि उनका है हरम कर और उन पर रहम मत कर बल्कि मर्द और औरत नन्हें बच्चे और शीरख्वार और बैल, भेड़ और ऊँट और गधे तक सब को क़त्ल कर।

(१ सेमुअल १५ । ३ पृ० ३६४)

खुदावन्द के सन्दूक़ के भीतर देखा सो उसने ५० हजार और ७० आदमी उनमें के मार डाले। (१ सेमुअल ६ । १६ पृ० ३५३)

खुदावन्द ने आजिका तक आसमान से उन पर बड़े पत्थर गिराए और वे मुये। (याशुआ १० । ११ पृ० २८७)

ईश्वर का कोप क्षणिक व मंद है

खुदावन्द रहीम और करीम है गुस्सा होने में धीमा और शफ़क़त में बढ़कर। (ज़बूर १०३ । ८ पृ० ७३६)

कि उसका गुस्सा एकदम का है। (ज़बूर ३० । ५ पृ० ६६०)

ईश्वर का कोप बड़ा भयानक, बार-बार होने वाला और चिरकालीन है

तब खुदावन्द का कहर इसराइल पर बरखा और उसने उन्हें मैदान में चालीस वर्ष आवारा रखा, जब तक कि वह सारी पुश्त जिसने खुदावन्द के रूबरू गुनाह किया था नाबूद न हुई। (गिन्ती ३२। १३ पृ० २१७)

और खुदावन्द ने मूसा को फर्माया, कौम के सारे सरदारों को पकड़ और उनको खुदावन्द के लिये आफ़ताब के मुकाबले लटका दे ताकि खुदावन्द के ग़ज़ब का भड़कना इसराइल पर से टल जाये। (गिन्ती २५।४ पृ० २०७)

खुदा उससे मिला और चाहा कि उसे हलाक करे।
(खुरूज ४। २४ पृ० ७६)

१७. ईश्वर जली हुई भेंटों की और पवित्र दिनों की आज्ञा देता है और प्रसन्न होता है

और तू हर रोज़ एक बैल को ख़ता को कुर्बानी के लिये कफ़ारे के वास्ते ज़िबाह कर। (खुरूज २९। ३६ पृ० ११०)

सातवें महीने में भी और उसके दसवें रोज़ कफ़ारा देने का दिन होगा तुम्हारी मुकद्दस जमाअत होगी तुम उस दिन आपको ग़मज़दा बनाओ और खुदावन्द के लिये आग से कुर्बानी गुजरानो। (एहबार २२३। २७ पृ० १५९)

और यह उसके आंझ और पावों को पानी से धोवे और कहीं सबको मज़हब पर जलावे कि सोख़तनी कुर्बानी यानि खुशबू आग से खुदावन्द के लिये है। (अहबार १। ९ पृ० १२७)

और तू उस मेंढ़े को कुर्बानगाह पर जला यह खुदावन्द के लिए सोख़तनी कुर्बानी है यह खुशनूदी की बू आग से खुदा के लिये है। (खुरूज २९। १८ पृ० १०९)

ईश्वर पवित्र दिनों को व भेंटों को नापसन्द करता है

तेरी सोख़तनी कुर्बानी मुझे पसन्द नहीं है और तेरे ज़बीहे खुश नहीं आते। (यरेनिया ६। २० पृ० ८८८)

क्योंकि जिस दिन मैं तुम्हारे बाप-दादों को मिस्र की ज़मीन से निकाल

लाया उस दिन सोख़तनी कुर्बानी और ज़बीहे की बाबत कुछ नहीं कहा और हुक्म नहीं दिया।

(यरेनिया २२ पृ० ८८६)

क्या मैं बैलों का गोश्त खाता हूँ या बकरों का लहू पीता हूँ, तू शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ खुदा के गुज़रान और हक़्क़ ताला के हुज़ूर में अपनी नज़रे अदा कर।

(ज़बूर ५० । १३-१४ पृ० ७०४)

१८. ईश्वर मनुष्यों की बलि वर्जता है

तू तो अपने से होशियार रह, न हो कि तेरे सामने उनके नाबूद होने के बाद, तू उनकी पैरवी करके फन्दे में फँसे....क्योंकि उन्होंने हरेक मकरू हुक़ाम जिससे खुदावन्द अदावत रखता है अपने माबूदों के लिये किया यहाँ तक कि अपने बेटों और बेटियों को भी अपने माबूदों के लिये आग में डालकर जला दिया।

(इस्तिस्ना १२ । ३०-३१ पृ० २४४)

ईश्वर मनुष्यों की भेंट की आज्ञा देता है और स्वीकार करता है

तब उसने कहा कि तू अपने बेटे, हाँ अपने इकलौते बेटे को, जिसे तू प्यार करता है इज़हक़ को ले और ज़मीने मीरियाह में जा, और उसे वहाँ पहाड़ों में से एक पहाड़ पर, जो मैं बताऊँगा सोख़तनी कुर्बानी के लिये चढ़ा।

(पैदाइश २२ । २ । पृ० २८)

१९. ईश्वर किसी को परखता नहीं है

जब कोई आज़माया जाय तो यह न कहे कि मेरी आज़माइश खुदा की तरफ़ से होती है क्योंकि न तो खुदा बदी से आज़माया जा सकता है और न वह किसी को आज़माता है। (याकूब १ । १३)

ईश्वर मनुष्यों को परखता है

उन बातों के बाद यूं हुआ कि खुदा ने, इब्राहीम को आज़माया।

(पैदायश २२ । १ पृ० २७)

बाद उसके खुदावन्द का गुस्सा इसराइल पर बड़ा भड़का कि उसने दाऊद के दिल में डाला कि उनका मुख़ालिफ़ होके कहे कि जा और इसरासल और यहूदा को गिन। (२ सेमुअल २४ । १ । पृ० ४२५)

ऐ खुदावन्द तूने मुझे तरग़ीब (device) दी और मैंने तरग़ीब पाई।

तू मुझसे तवानातर है।

(यरेनिया २०।७ पृ० ६०५)

२०. ईश्वर झूठ नहीं बोल सकता

खुदा इंसान नहीं जो झूठ बोले। (गिन्ती २३।१६ पृ० १०५)

परमेश्वर का झूठ बोलना अनहोना है। (इब्रानियां ६।१२)

ईश्वर झूठ बोलता है और झूठ बोलने वाली रूहों को धोखा देने के लिए भेजता है

ऐ खुदावन्द खुदा यक़ीनन तूने इस क़ौम को और येरूशलम को यह कहके दग़ा दी।

(यरेनिया ४।१० पृ० ८८४)

और इसी कारण परमेश्वर उनमें एक भटकने वाली सामर्थ्य भेजेगा कि वह झूठ की प्रतीति करे। (थेसिलोनिया २। ११)

(इसी सबब से खुदा उनके पास गुमराह करने वाली तासीर भेजेगा ताकि वे झूठ को सच जानें)

सो खुदावन्द ने इन सब नबियों के मुँह में झूठी रूह डाली है और खुदावन्द ही ने तेरी बाबत बुरी खबर दी है।

(१ सलातीन २२।२३ पृ० ४६८)

तब खुदावन्द ने अबिमालिक और सिकम के लोगों के दर्म्यान एक बदरूह को भेजा। (काजियों ६।२३।पृ० ३२२)

और वह नबी जो है कि दग़ा खाके कुछ कहे, तो मैं खुदावन्द ने उस नबी को दग़ा दी है। (हेज़ेकियल १४।६ पृ० ६७७)

२१. ईश्वर मनुष्य को उसकी दुष्टता से उसे नष्ट करता है

और खुदा ने देखा कि ज़मीन पर इंसान की बदी बहुत बढ़ गई और उसके दिल के तसव्वुर और ख़याल रोज़-बरोज़ सिर्फ बद ही होते हैं......... और खुदावन्द ने कहा कि मैंने इंसान को जिसे मैं पैदा किया रूए ज़मीन पर से मिटा दूंगा।

(पैदाइश ६।५-७ पृ० ११)

ईश्वर मनुष्य को उसकी दुष्टता के लिए नष्ट नहीं करेगा

और खुदा ने अपने दिल में कहा कि इंसान के लिए मैंने ज़मीन को फिर कभी लानत न करूँगा इसलिए कि इन्सान के दिल का खयाल लड़कपन से बुरा

है और जैसा कि मैंने कहा कि फिर सारे जानदारों को न मारूंगा।
(पैदाइश ८। २१। पृ० १३)

२२. ईश्वर केवल एक ही है

सुनले ऐ इसराइल, खुदावन्द हमारा खुदा अकेला खुदावन्द है।
(इस्तिस्ना ६। ४)

और एक को छोड़कर और कोई परमेश्वर नहीं। (१ कुरन्थियों ८। ४)

ईश्वर अनेक हैं

तब खुदा ने कहा कि हम इन्सान को अपनी सूरत और अपने मानिंद बनावें। (पैदाइश १। २६। पृ० ६)

और खुदावन्द खुदा ने कहा कि देखें इन्सान नेक और बद की पहिचान में हम में से एक की मानिंद हो गया। (पैदाइश ३। २२। पृ० ८)

और स्वर्ग में गवाही देने वाले तीन हैं। (१ योहन्ना ५। ८७)

धार्मिक सिद्धान्त

२३. चोरी की आज्ञा

कि जब तुम जाओगे तो खाली हाथ न जाओगे.........बल्कि हर एक औरत अपनी पड़ोसिन से, और उसके घर में रहती है, रुपए और सोने के बर्त्तन और लिबास आरयत लेगी, और तुम अपने बेटों और अपनी बेटियों को पहनाओगे और मिस्र को ग़रत करोगे। (खुरूज ३। २१ पृ० ७५)

और उन्होंने मिस्त्रियों से (चाँदी) रुपये के बर्त्तन और सोने के बर्त्तन और कपड़े एरियत लिए.........और उन्होंने मिस्र को लूट लिया।
(खुरूज १२। ३५-३६ पृ० ८७)

चोरी का निषेध

तू अपने पड़ौसी से दग़ाबाज़ी न कर, न उससे कुछ छीन ले।
(अहबार १९। १२ पृ० १५३)

तू चोरी मत कर।

(खुरूज २० । १५ । पृ० ६७)

२४. झूठ बोलने की आज्ञा

और खुदावन्द ने सेमुअल को कहा.........मैं तुझे बैथलमीयसी के पास भेजता हूँ कि मैंने उसके बेटों में से एक को अपने लिए बादशाह ठहराया है... कि अगर साइल सुनेगा तो मुझे मार ही देगा। खुदावन्द ने फ़र्माया एक बछिया अपने साथ ले जा और कह कि मैं खुदावन्द के लिए कुर्बानी करने को आया हूँ

(१ सेमुअल १६ । १-२ पृ० ३६६)

तब उस औरत ने उन दोनों मर्दों को लिया और उन्हें छिपा दिया और यूं कहा कि मर्द तो मेरे पास आये थे पर मैं नहीं जानती हूँ कि कहाँ के थे। सो ऐसा हुआ कि फाठक बन्द करते वक्त जब अन्धेरा था, वे मर्द निकल गए और मैं नहीं जानता हूँ कि वे मर्द कहाँ गए, सो जल्द उनका पीछा करो कि तुम उन तक पहुंचोगे।.........पर वह उन्हें अपनी छत पर चढ़ा ले गई थी, और सन की लकड़ियों के नीचे, जो छत पर तरतीब से धरी थीं छिपा दिया था।

(याशुआ २ । ४-५-६ । पृ० २७६)

वैसे ही राहाब वेश्या भी जब उसने दूतों को अपने घर में उतारा और दूसरे मार्ग से विदा किया तो क्या कामों से धर्मी न ठहरी। (याकूब २ । २५)

फिर मिस्र के बादशाह ने दाइयों को बुलवाया और उन्हें कहा, तुमने ऐसा क्यों किया और लड़कों को क्यों जीता रहने दिया ?......दाइयों ने फिर उनको कहा कि इसलिए कि इब्रानी औरतें मिस्र की औरतों के मानिन्द नहीं, कि वे मजबूत हैं और पेश्तर उससे कि दाइयाँ उन तक पहुंचे, जान डालती हैं.........पास एहसान किया खुदा के दाइयों के साथ और लोग फिरावां हुए और बड़ा जोर पैदा किया।

(खुरूज १ । १८-२०)

उस वक्त एक रूह निकली, खुदावन्द के सामने खड़ी हुई और बोली कि मैं उसे तरगीब दूंगी, फिर खुदावन्द ने फर्माया कि किस तरह से ? वह बोली मैं रवाना होऊंगी और झूठी रूह बनके उसके सारे नबियों के मुंह में पड़ूंगी और यह बोला तू तरगीब देगी और गालिब भी होगी, रवाना हो और ऐसा कर

(१ सलातीन २२ । २१-२२ पृ० ४६८)

यदि मेरे झूठ के कारण परमेश्वर सच्चाई उसकी महिमा के लिए अधिक

करके प्रकट हुई तो फिर क्यों मैं पापी की नाई दण्ड के योग्य ठहराया जाता हूँ ? (रोमियों ३ । ७)

तब तुम मेरी अहद शिकनी को जान लोगे ।
(गिन्ती १४ । ३४ पृ० १६१)

सो ऐसा हो सकता है कि मैंने तुम पर बोझ नहीं डाला पर चतुराई से तुम्हें धोखा देकर फंसा लिया । (२ करेन्थियन १२ । १६)

झूंठ बोलने का निषेध

तू अपने पड़ौसी पर झूंठी गवाही मत दे ।
(खुरूज २० । १६ पृ० ६७)

झूंठे लाबों से खुदावन्द को नफ़रत है ।
(अम्साल १२ । २२ पृ० ७७६)

सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती है । (प्रकाशित वाक्य २१ । ८)

२५. वध की आज्ञा

इसराइल के खुदा ने फर्माया है कि तुम में से हर मर्द अपनी कमर पर तलवार बाँध और एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे तक तमाम लश्करगाह में गुजरे फिरो, और हर मर्द तुम में से अपने भाई को और हरेक आदमी अपने दोस्त को और हरेक आदमी अपने क़रीब को क़त्ल करे ।

(खुरूज ३२ । २७ पृ० ११५)

सो याहू ने उन सब को जो अक़याब के घेरे से यज़राइल में बचे रहे थे क़त्ल कर दिये·········सो खुदावन्द ने याहू को कहा, अजबस कि तूने नेकी की कि उसे जो मेरी निगाह में भला था, अंजाम दिया है और सब कुछ कि मेरे दिल में था तूने अक़याब के घराने से किया, सो तेरे बेटे चौथी पुश्त तक इज़राइल के तख्त पर बैठेंगे । (२ सलातीन १० । ११-३० यु० ४८७)

वध का निषेध

तू खून मत कर ।
(खुरूज २० । १३ । पृ० ६७)

किसी खूनी में अनन्त जीवन नहीं रहता । (१ युहन्ना ३ । १५)

२६. खून बहाने वाला जरूर मारा जाएगा

और हर एक आदमी के हाथ से उसका बदला लूँगा-आदमी की जान का बदला हर एक आदमी के हाथ से कि उसका भाई है लूँगा, जो कोई आदमी का लहू बहावे, आदमी ही से उसका लहू बहाया जावे।

(पैदाइश ६। ५-६ पृ० १३)

खून बहाने वाला न मारा जाएगा

और खुदावन्द ने क़ाइन पर एक निशान लगाया कि जो कोई उसे पावे, मार न डाले।

(पैदायश ४। १५ १० ६)

२७. मूर्तियों के बनाने का निषेध

तू अपने लिए कोई मूरत या किसी चीज की सूरत, जो ऊपर आसमान पर, या नीचे जमीन पर या पानी में जमीन के नीचे है, मत बना।

(खुरूज २०। ४ पृ० ९७)

मूर्तियां बनाने की आज्ञा

और तू सोने की दो करबी बनाइयो·····और वे क़रबी पर फैलाए हुए हों, ऐसा कि कफारगाह उनके परों तले ढाँप जाए और उनके मुँह आमने सामने कफ़ारगाह की तरफ होवें। (खुरूज १५। १८-२० पृ० १०३)

२८. दासता और अत्याचार की आज्ञा

तब वह बोला, कि कैनन मलऊन हो, वह अपने भाइयों के गुलामों का गुलाम होगा। (पैदायश ९। २५ पृ० १४)

और तुम्हारे बेटों और बेटियों को भी बनी यहूदा के हाथ बेचूंगा और वह उनको सबाइयों के हाथ जो दूर मुल्क में रहते हैं बेचूंगा क्योंकि खुदावन्द ने यह फर्माया है। (यूएल ३। ८ पृ० १०६५)

दासता और अत्याचार का निषेध

तू मुसाफिर को हर्गिज न सता और उससे बदसुलूक न कर, इसलिए कि तुम जमीन-ए-मिस्र में मुसाफिर थे।

(खुरूज २२। १। पृ० १००)

और ज़ो कोई आदमी को चुरा ले जावे और उसे बेच डाले या वह

उसके पास से पकड़ा जावे, तो वह मार डाला जावेगा।

(खुरूज २१ । १६ पृ० ६८)

२९. क्रोध का अनुमोदन

गुस्सा तो करो, मगर गुनाह न करो : सूरज के डूबने तक तुम्हारी खफगी न रहे। (इफिसिअन ४ । २६ १० २८२)

तब उसने पीछे फिर उन पर निगाह की और खुदावन्द का नाम ले के उन पर लानत भेजी। सो वहीं बन से दो रीछिनियाँ निकली और उन्होंने उनमें से बयालीस छोकरे फाड़ डाले। (२ सलातान २ । २४ । पृ० ४७२)

क्रोध का अननुमोदन

तू अपने जी में जल्द गुस्सावर मत बन कि इसलिए कि गुस्सा बेदानिशों के सीने में पड़ा रहता है। (वाइज ७ । ९ पृ० ८०२)

गुस्सावर आदमी से दोस्ती मत कर। (अम्साल २२ । २४ पृ० ७८६)

३०. मनुष्यों के अच्छे कर्म दिखाई देने चाहिएं

इसी तरह तुम्हारी रोशनी आदमियों के सामने चमके ताकि वह तुम्हारे नेक कामों को देखें। (मती ५ । १६ पृ० ६)

मनुष्यों के अच्छे काम दिखाई न दें

खबरदार अपने रास्तबाजी के काम आदमियों के सामने दिखाने के लिए न करो। (मती ६ । १ । पृ० ८)

३१. यीशु ने सहिष्णता की शिक्षा दी

बल्कि जो कोई तेरे दाहिने गाल पर तमाचा मारे दूसरा भी उसकी तरफ फेर दे।

(मती ५ । ३९ पृ० ७)

क्योंकि जो तलवार खींचते हैं वह सब तलवार से हलाक किये जायेगे।

(मती २३ । ५२ पृ० ४५)

यीशु ने असहिष्णता सिखाई और स्वयं उसका प्रदर्शन किया

और जिसके पास (तलवार) नहीं है वह अपनी पौशाक बेचकर तलवार खरीदे।

(लूका २२ । ३६ पृ० १२५)

और रस्सियों का कोड़ा बनाकर सबको यानि भेड़ों और बैलों को हैकल से निकाल दिया।

(युहन्ना २ । १५ पृ० १२३)

३२. यीशु ने अपने अनुयाइयों को चिताया कि मरने से न डरो।

मगर तुम दोस्तों से मैं कहता हूँ कि इनसे न डरो जो बदन को कत्ल करते हैं।

(लूका १२ । ४ पृ० १०६)

यीशु मारे जाने के डर से स्वयं यहूदियों से बचता फिरा।

इन बातों के बाद यीशु गलिल में फिरता रहा क्योंकि यहूदियों में फिरना ना चाहता था इसलिए कि यहूदी उसके कत्ल की कोशिश में थे।

(युहन्ना ७ । १ पृ० १०६)

३३. (सातवें रोज़) सबथ के रोज़ मृत्युदण्ड के भय से कोई काम न किया जावे

पसजो कोई रोज़े सब्त को काम करे वह ज़रूर मार डाला जाए।

(खुरूज ३१ । १५ । पृ० ११३)

उसने एक शख्स को देखा कि वह सब्त के दिन लकड़ियां जमा करता था·········चुनाचे सारी जमाअत इसे खेमे के बहार ले गई और इसे संगसार किया कि वह मर गया जैसा खुदावन्द ने मूसा को फ़र्माया था।

(गिन्ती १५ । ३२ ।३६ पृ० १६३)

यीशु ने सबथ को तोड़ा और अपने कर्य को उचित बताया

इसलिए यहूदी यीशु को सताने लगे और उसके मारने की ताक में थे क्योंकि वह ऐसे काम सबथ के दिन करता था।

(युहन्ना ५ । १६ पृ० १३८)

इस वक्त यीशु सबथ के दिन खेतों में होकर गया और उस के शागिर्दों को भूख लगी और बालें तोड़ तोड़ कर खाने लगे, फ़रीशियों ने देखकर उससे कहा कि देख तेरे शागिर्द वह काम करते हैं जो सबथ दिन करना रवा नहीं इसने उससे कहा कि क्या तुमने यह नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और उसके साथी भूखे थे तो उसने क्या किया या तुमने तौरेत में नहीं पढ़ा कि कहीं सबथ के दिन हैकल में सबथ की बेहुर्मति करते हैं और बेकुसूर रहते हैं

(मती १२ । १-२-३-५ पृ० १७)

३४. बप्तिस्में की आज्ञा

पस तुम जाकर सब कौमों को शागिर्द बनाओ और उन्हें बाप और बेटा और रूहुल कुद्स के नाम पर बप्तिस्मा दो। (मती २८। १९ पृ० ४९)

बप्तिस्में का निषेध

क्योंकि मसीह ने मुझे बप्तिस्मा देने को नहीं भेजा बल्कि खुशख़बरी सुनाने को……खुदा का शुक्र करता हूँ कि किस्पस् और गयस् के सिवाय मैंने तुममें से किसी को बप्तिस्मा नहीं दिया। (१ कुरन्थियों १। १७-१४ पृ० २३८)

३५. हर प्रकार के जानवर को खाने की आज्ञा

सब जीते चलते जानवर तुम्हारे खाने के वास्ते हैं।

(पैदाइश ९। ३ पृ० १३)

जो कुछ कसायबों की दुकान में बिकता है वह खाओ।

(१ कुरन्थियों १०। २५ पृ० २४८)

कुछ जाति के जानवरों को ख़ाने का निषेध है

लेकिन उनमें से कि जुगाली करते हैं या उनके खुर चिरे हैं तुम इन्हें मत खाइयो, इसलिए कि ये जुगाली करते हैं, लेकिन उनके खुर चिरे हुए नहीं हैं सो वे तुम्हारे लिए नापाक हैं……और सूअर भी कि जिसके खुर चिरे हुए हैं पर जुगाली नहीं करता वह तुम्हारे लिए नापाक है, तुम उसका गोश्त न खाइयो न उसकी लाश को हाथ लगाइयो। (इस्तिरना १५। ७-८ पृ० २४६)

३६. शपथ खाने की आज्ञा

अगर कोई मर्द खुदावन्द की मिन्नत माने या क़सम खा के अपनी जान पर कोई खास फ़र्ज ठहरावे तो वह अपनी बात न टाले बल्कि सब जो कुछ उसके मुँह से निकला है अमल करे।

(गिन्ती ३०। २ पृ० २१४)

और जो कोई क़सम ज़मीन में क़सम खाए सच्चे ख़ुदा के नाम से क़सम खाएगा।

(यसायाह ६५। १६ पृ० ८७७)

चुनांचे जब ख़ुदा ने इब्राहीम से वादा करते वक्त क़सम खाने को अपने से बड़ा न पाया तो अपनी ही क़सम खाकर कहा।

(इब्रानियों ६। १३ पृ० ३१६)

शपथ खाने का निषेध

लेकिन मैं तुमसे यह कहता हूँ कि बिल्कुल कसम न खाओ न तो आसमान की क्योंकि यह खुदा का तख्त है ना जमीन की क्योंकि वह उसके पावों के नीचे की चौकी है।

(मती ५ । ३४ पृ० ७)

३७. विवाह का अनुमोदन व आज्ञा

और खुदावन्द खुदा ने कहा कि अच्छा नहीं कि आदम अकेला रहे, मैं उसके लिये एक साथी उसकी मानिन्द बनाऊँगा। (पैदाइश २ । १८ पृ० ३)

और खुदा ने इनको बरक़त दी और खुदा ने उन्हें कहा कि फलो और बढ़ो और ज़मीन को मामूर करो और उसको महकूम करो।

(पैदाइस १ । २८ पृ० ६)

इस सबब से मर्द, बाप से और माँ से जुदा होकर अपनी बीवी के साथ रहेगा। (मती १९ । ५ पृ० ३०)

ब्याह करना सब में इज्ज़त की बात समझी जावे।

(इब्रानियों १३ । ४ पृ० ३२८)

विवाह का अननुमोदन

जो बातें तुमने लिखीं थीं उनकी बाबत यह है कि मर्द के लिए अच्छा है कि औरत को न छुए............और मैं तो यही चाहता हूँ कि जैसा मैं हूँ वैसे ही सब आदमी रहें।............पस में बीवियों और बेवा औरतों के हक़ में यह कहता हूँ कि उनके लिए ऐसा ही रहना अच्छा है जैसा मैं हूँ।

(करिन्थियों ७ । १-७-८ पृ० २४४)

३८. स्त्री के त्याग की आज्ञा

अगर कोई मर्द कोई औरत लेके उससे ब्याह करे और बाद उसके ऐसा हो कि वह उसकी निगाह में अजीज न हो तो वह उसका तलाकनामा लिख उसके हाथ में दे और उसे अपने घर से बाहर करे।

(इस्तिसना २४ । १ पृ० २५७)

और जब तू लड़ाई के लिए अपने दुश्मनों पर खुरूज करे खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे हाथों में गिरफ्तार करे और तू उन्हें असीर कर लाए

और उन आसिरों में खूबसूरत औरत देखे और तेरा जी उसे चाहे कि तू उसे अपनी जोरू बनाए तो तू उसे अपने घर में ला, बाद उसके तू उसके साथ खलवत कर और उसका खसम बन और वह तेरी जोरू बने, बाद उसके अगर तू इससे खुशबख्त न होवे तो जहाँ चाहे वहाँ जाने दे पर तू उसे नकदी के एवज़ हरगिज़ बेच नहीं सकता, न तू उससे नफ़ा पैदा कर सकता है क्योंकि तूने उसे रुसवा किया। (इस्तिस्ना २१ । १०-१४ पृ० २५४)

स्त्री के त्याग का विरोध

लेकिन मैं तुमसे यह कहता हूँ कि जो कोई अपनी बीवी को हरामकारी के सिवाय किसी और सबब से छोड़ दे वह उससे ज़िना कराता है। (मत ५।३२)

३९. व्यभिचार की आज्ञा

लेकिन वे लड़कियाँ जो मर्द की सोहबत से वाकिफ़ नहीं है उन्हें अपने लिए जिन्दा रखो। (गिन्ती ३१ । १८ पृ० २१६)

खुदावन्द ने हूसिया को फ़र्माया कि जा और एक ज़िनाकार की औरत अपने लिए ले। खुदावन्द ने मुझे फ़र्माया कि फिर जा और एक औरत से जो उसके दोस्त की प्यारी है पर ज़िना करती है। सो मैंने उसको लिया...... और उसको कहा कि तू मेरे लिये बहुत दिन तक बैठी रहेगी, तू हरामकारी न करेगी, न किसी मर्द की होगी, और मैं भी तेरे लिये यूँ ही रहूँगा।

(हूसिया १ । २ (३) १-२-३ पृ० १०५४)

व्यभिचार का निषेध

तू ज़िना मत कर। (खुरूज २० । १४ पृ० ६७)

इसलिए कि खुदा हरामकारों और जानियों की अदालत करेगा।

(इब्रानियों १३ । ४ पृ० ३२८)

४०. अपनी बहिन से शादी व सम्भोग की निंदा

जो कि अपनी बहिन के साथ, जो अपनी माँ की बेटी या अपने बाप की बेटो हो तो हम-बिस्तर होवे उस पर लानत।

(इस्तिस्ना २७ । २२ पृ० २६१)

और अगर कोई मर्द अपनी बहिन को या अपने बाप की बेटी या अपनी

माँ की बेटी............यह निहायत बुरा है।

(एहबार २० । १७ पृ० १५५)

इब्राहीम ने बहिन से शादी की और ईश्वर ने जोड़े को आशीर्वाद दिया।

और इब्राहीम बोला.........और वह तो सच मेरी बहिन है; मेरे बाप की बेटी, पर मेरी माँ की बेटी नहीं, सो मेरी जोरू हुई।

(पैदायश २० । ११-१२ पृ० २६)

और खुदा ने इब्राहीम से कहा कि तेरी जोरू सरी जो है............ और मैं उसे बरकत दूँगा और उससे भी तुझे एक बेटा बख़्शूंगा।

(पैदायश १७ । १५-१६ पृ० २१)

४१. अपने भाई की विधवा से विवाह की आज्ञा

अगर कई भाई एक जगह रहते हों और एक उनमें से बेऔलाद मर जाये तो उस मरहूम की जोरू का ब्याह किसी अजनबी से न किया जावे बल्कि उसके शौहर का भाई खल्वत करे और उसे अपनी जोरू कर ले।

(इस्तिस्ना २५ । ५ पृ० २५८)

अपने भाई की विधवा से विवाह का निषेध

और जो शख्स अपने भाई की जोरू को लेवे तो यह मकरूब है वे लाऔलाद होंगे। (एहबार २० । २१ पृ० १५५)

४२. कुटुम्बियों से नफ़रत करने की आज्ञा

अगर कोई मेरे पास आये और अपने बाप अपनी माँ और बीवी और बच्चों और भाइयों और बहिनों बल्कि अपनी जान से भी दुश्मनी न करे तो मेरा शागिर्द नहीं हो सकता। (लूका १४ । २६ पृ० १११)

कुटुम्बियों से घृणा का विरोध

अपने बाप और माँ की इज्ज़त कर। (इफ़िसियन ६ । २ पृ० २८३)

अय शौहरो अपनी बीवियों से मुहब्बत करो क्योंकि कभी किसी ने अपने जिस्म से दुश्मनी नहीं की। (इफ़िसियन ५ । २६-२९ पृ० २८३)

जो कोई अपने भाई से अदावत रखता है वह खूनी है।

(१ युहन्ना ३ । १५ पृ० ३४६)

४३. नशा पीने की आज्ञा

अम्साल ३१ । ६७ पृ० ७६६
इस्तिस्ना २४ । २६ ,, २४६
१ तिमुथियस ५ । २३ ,, ३०५
ज़बूर १०४ । १५ ,, ७३७
काज़ियो ६ । १३ ,, ३२१

नशा पीने का विरोध

अम्साल २० । १ पृ० ७८३
अम्साल २३ । ३१-३२ पृ० ७८७ व ७८८

४४. राजा की आज्ञा मानना कर्त्तव्य है

रोमियो १३ । १-२-३-६ पृ० २३२ व २३३
मती २३ । २-३ पृ० ३७
१ पटरस २ । १३-१४ पृ० २२७
वाइज २ । ५ पृ० ८०३

राजा की अवज्ञा (कर्त्तव्य है) की आज्ञा

खुरूज १ । १७-२० पृ० ७२ व ७३
डेनियल ६ । ६-७-१० ,, १०४१
डेनियल ३ । १६-१८ ,, १०३६
आमाल ४ । २६-२७ ,, १७५
मरकुस १२ । ३८-३६-४० पृ० ७२
लूका २३ । ११-२४-३३-३५ पृ० १२७ व १२८

४५. स्त्री के अधिकार का निषेध

और अपने खसम की तरफ़ तेरा शौक़ होगा, और वह तुझ पर हुकूमत करेगा।

(पैदाइश ३ । १६ पृ० ८)

और मैं इजाजत नहीं देता कि औरत सिखाए, या मर्द पर हुकूमत चलाए बल्कि चुपचाप रहे।

(१ तिमुथियस २ । १२ पृ० ३०३)

बल्कि ताबे रहे, जैसा कि तौत में भी लिखा है।

(१ कुरन्थियों १४। ३४ पृ० २५३)

चुनांचे साराह इब्राहीम के हुक्म में रहती और उसे खुदावन्द कहती थीं।

(पतरस ३। ६ पृ० ३३७)

स्त्री के अधिकार का समर्थन

उस वक्त लफ़ीदोत की जोरू दबूरा नबिया बनी इसराइल की हाकिम थी……तब दबूरा ने बरक को कहा कि उठ; क्योंकि यह वह दिन है, कि जिसमें खुदावन्द ने सिसारा को तेरे हाथ में कर दिया है……तब खुदावन्द ने सिसारा को, और उसकी सारी रथों और उसके लश्कर को तलवार की धार से बरक़ के सामने शिकस्त दी। (क़ाज़ियो ४। ४-१४-१५ पृ० ३१३)

सरगुरोह इसराइल में बाक़ी न रहे, वे बाक़ी न रहे जब तक मैं दबुरा बरपा न हुई, जब तक कि मैं इसराइल में माँ होने को न उठी।

(क़ाजियों ५। ७ पृ० ३१४)

और अपनी बन्दियों पर भी उन दिनों में अपनी रूह में से डालूंगा और वह नबव्वत करेंगी।

(आमाल २। १८ पृ० १७१)

उसकी चार बेटियाँ थीं जो नबव्वत करती थीं।

(आमाल २१। ६ पृ० २०४)

४६. स्वामी की आज्ञा का आदेश

ऐ नौकरो, जो जिस्म के रू से तुम्हारे मालिक हैं, सब बातों में उनके फ़र्माबर्दार रहो। जो काम करो जी से करो यह जान कर कि खुदावन्द के लिए करते हो।

(कलस्सियों ३। २२-२३ पृ० २६३)

ऐ नौकरो बड़े ख़ौफ़ से अपने मालिकों के ताबे रहो न सिर्फ़ नेकों व हलीमों के बल्कि बदमिज़ाजों के भी।

(१ पटरस १८। पृ० ३३७)

केवल ईश्वर ही की आज्ञा माननी चाहिए

कि तू खुदावन्द अपने खुदा को सिजदा कर, और सिर्फ़ उसी की इबादत कर।

(मती ४। १० पृ० ४)

आदमियों के गुलाम न बनो। (१ करन्थियों ७ । २३ पृ० २४४)

और न तुम हादी कहलाओ क्योंकि तुम्हारी हादी एक ही है।

(मती २३ । १० पृ० ३७)

४५. अक्षम्य पाप

लेकिन जो कोई रूहुल-कुद्स के हक़ में कुफ्त बके वह अबद तक मुआफ़ी न पाएगा। (मरकूस ३ । २१ पृ० ५४)

कोई पाप अक्षम्य नहीं है

उन सबसे हरेक ईमान लाने वाला उसके बायस बरी होता है।

(आमला १३ । ३९ पृ० १९१)

ऐतिहासिक घटनाएँ

४८. मनुष्य अन्य जानवरों के पश्चात् उत्पन्न हुआ

और खुदा ने जंगली जानवरों को उनकी जिसके मुवाफ़िक और मवेशियों का, उनकी जिसके मुवाफ़िक बनाया तब खुदा ने कहा कि हम इन्सान को अपनी मानिन्द बनावें........और खुदाने इन्सान को अपनी सूरत पर पैदा किया। (पैदाइश १ । १५-२६-२७ पृ० ६)

मनुष्य अन्य जानवरों से पूर्व उत्पन्न हुआ

और खुदावन्द ने कहा कि अच्छा नहीं कि आदम अकेला रहे, मैं उसके लिए एक साथी उसकी मानिन्द बनाऊँगा और खुदावन्द खुदा ने मैदान के हर-एक जानवर और आसमान के परिन्दों को ज़मीन से बनाकर आदम के पास पहुँचाया ताकि देखे कि वो उनके क्या नाम रखे।

(पैदाइश २ । १८-१९ पृ० ७)

४९. नूह ने ईश्वर की आज्ञा से नाव में पवित्र जानवरों के सात-सात के जोड़े लिए

और खुदावन्द ने नूह से कहा.....सब पाक जानदारों में से सात-सात नर और उनकी मादा ले.....और नूह ने उन सब के मुताबिक जा खुदावन्द ने फ़र्माया था, किया। (पैदाइश ७ । १-२-५ पृ० ११ व १२)

नूह ने केवल दो दो जोड़े लिए

और पाक चारपायों में से······दो-दो नर और मादा नूह के पास किश्ती में दाखिल हुए जैसा कि खुदावन्द ने नूह को फर्माया था।

(पैदाइश ७। ८-९ पृ० १२)

५०. बोना और काटना बन्द न होगा

बल्कि जब तक ज़मीन है, बोना और लौना······मौकूफ़ न होंगे।

(पैदाइश ८। २२ पृ० १३)

बोना और काटना सात वर्ष तक बन्द रहा

और सब ज़मीन में गिरानी हुई, और तमाम रूए ज़मीन पर काल था।

(पैदाइश ४१। ५४-५६ पृ० ५८)

इसलिये कि दो बरस से ज़मीन पर काल है, और भी और पाँच बरस तक न ज़मीन की हलवाही होगी, न खेती काटी जायेगी।

(पैदाइश ४५। ६ पृ० ६४)

५१. ईश्वर ने फ़ऊ़न का हृदय कठोर कर दिया

लेकिन मैं उसके दिल को सख्त कर दूँगा कि वह उन लोगों को जाने न देगा।

(खुरूज ४। २१ पृ० ७६)

और खुदावन्द ने फऊ़न के दिल को सख्त कर दिया।

(खुरूज ९।१२ पृ० ८२)

फ़ऊ़न ने अपना हृदय स्वयं कोठर किया

पर जब फ़ऊ़न ने देखा कि मुहलत मिली तो उसने अपना दिल सख्त किया और जैसा खुदावन्द ने कहा था उनकी न सुनी। (खुरूज ८। १५ पृ० ८०)

५२. मिस्र में तमाम घोड़े और मवेशी मर गए

तू देख कि खुदावन्द का हाथ तेरे मवेशी पर जो दश्त में हैं घोड़ों, गधों, ऊँटों, बैलों और भेड़ों पर होगा······और मिस्र के सब मवेशी मर गए।

(खुरूज ९। ३-६ पृ० ८२)

मिस्त्र के सारे घोड़े नहीं मरे

और मिस्त्र उनका पीछा किए चला गया और फ़ऊन के सारे घोड़ों और उसकी घोड़ियों और उसके सवारों और उसके लश्कर ने उनको खेमा खड़ा करते हुए दरिया पर······जा ही लिया। (खुरूज १४ । ६ पृ० ८६)

५३. युहन्ना ने यसू को मसीह मान लिया

दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देख कर कहा, देखो यह खुदा का बर्रं है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है······चुनांचे मैंने देखा और गवाही दी है कि यह खुदा का बेटा है। (युहन्ना १ । २९-३४ पृ० १३२)

युहन्ना ने यसू को मसीह नहीं माना

और युहन्ना ने कैदखाने में मसीह के कामों का हाल सुनकर अपने शागिर्दों की मार्फत उससे पुछवा भेजा कि आने वाला तू ही है या हम दूसरे की राह देखें। (मती ११ । २-३ पृ० १६)

५४. युहन्ना ही इलियाह था

इलियाह जो आने वाला था यही है। (मती ११ । १४ पृ० १६)

युहन्ना इलियाह नहीं था

उन्होंने उससे पूछा फिर कौन है ? क्या तू इलिया है ? उसने कहा मैं नहीं हूँ। (युहन्ना १ । २१ पृ० १३१)

५५. मर्यम के पति जोसफ का पिता याकूब था

और याकूब से यूसुफ पैदा हुआ वह इस मर्यम का शौहर था जिससे यीशु पैदा हुआ (मती १ । १६ पृ० १)

मर्यम के पति का बाप हेली था

और यूसुफ का बेटा था और वह एलीका। (लूका ३ । २३ पृ० ८६)

५६. बालक यीशु को मिस्त्र ले गए

बस वह उठा और रात के वक्त बच्चे और उसकी माँ को साथ लेकर मिस्त्र को रवाना हो गया और हेरोदस के मरने तक वहीं रहा ······जब हेरोदस मर गया······पस वह उठा और बच्चे और उसकी माँ को साथ

लेकर इसराइल मुल्क में आ गया……और नासरत नाम एक शहर में जा बसा

(मती २ । १४-१५-१९-२३ पृ० ३)

बालक यीशू को मिस्र नहीं ले गए

फिर जब मूसा के शरियत के मुबाफिक उनके पाक होने के दिन पूरे हो गए तो वह उसको येरुशेलम में लाए ताकि खुदावन्द के आगे हाजिर करें… और जब वह खुदावन्द शरिअत सब कुछ कर चुके……तो अपने शहर नसरत को फिर गए

(लूका २ । २२-३९ पृ० ८४ व ८५)

५७. यीशू को जंगल में बहकाया गया

और फिलफौर रूह ने उसे बियाबान में भेज दिया और वह बियाबान में ४० दिन तक शैतान से आजमाया गया। (मरकूस १ । १२, १३ पृ० ५०)

यीशू जंगल में न बहकाया गया

फिर तीसरे दिन काना एगलिल में एक शादी हुई और यीशू की माँ वहाँ थी और यीशू और उसके शागिर्दों की भी उस शादी में दावत दी।

(युहन्ना १ । १-२ पृ० १३३)

५८. यीशू ने अपना पहिला उपदेश पहाड़ पर बैठकर दिया

वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया, और जब बैठ गया तो उसके शागिर्द उसके पास आए और वह अपनी जबान खोलकर उन्हें यूँ तालीम देने लगा। (मती ५ । १-२ पृ० ५)

उसने अपना पहिला उपदेश मैदान में खड़े होके दिया

और वह उनके साथ उतर कर हमवार जगह पर खड़े हुए, और उसके शागिर्दों की बड़ी जमाअत और लोगों की बड़ी भीड़……उसकी सुनने… ……फिर उसने अपने शागिर्दों की तरफ नजर करके कहा।

(लूका ६ । १७-२० पृ० ९२)

५९. जब यीशू गलिल में गया तो युहन्ना जेल में था

फिर युहन्ना के पकड़वाये जाने के बाद यीशू ने गलिल में आकर खुदा की खुशखबरी की मनादी की। (मरकूस १ । १४ पृ० ५०)

युहन्ना जेल में नहीं था

दूसरे दिन यीशु ने गलिल में जाना चाहा। (युहन्ना १।४३ पृ० १६२)

इन बातों के बाद यीशु और उसके शागिर्द यहूदिया के मुल्क में आए...
और युहन्ना भी शालेम के नजदीक ऐनन में बप्तिस्मा देता था......क्योंकि युहन्ना उस वक्त तक कैदख़ाने में न डाला गया था।

(युहन्ना ३ । २२-२३-२४ पृ० १३१)

६०. दो अन्धों ने यीशू से विनती की

और देखो दो अन्धों ने जो राह के किनारे बैठे हुए थे यह सुनकर कि यीशु जा रहा है चिल्लाकर कहा ऐ ख़ुदावन्द इब्ने दाऊद हम पर रहम कर।

(मती २० । ३० पृ० ६२)

एक अन्धे ने ही विनती की

एक अन्धा राह के किनारे बैठा हुआ भीख माँग रहा था......उसने चिल्लाकर कहा, अली यीशु इब्ने दाऊद मुझ पर रहम कर।

(लूका १८ । ३५-३८ पृ० ११८)

६१. दो मनुष्य कब्रों से निकल कर यीशू को मिले

तो दो आदमी जिनमें बद रूहें थीं क़ब्रों से निकल कर उसे मिले।

(मरकूस ८ । २८ पृ० १२)

सिर्फ एक आदमी ही कब्र से निकल कर यीशू को मिला

एक आदमी जिसमें बद रूह थीं क़ब्रों से निकल कर उसे मिला।

(मती ५ । २ पृ० ५६)

६२. एक सूबेदार ने यीशू से अपने नौकर को नीरोग करने की प्रार्थना की

तो एक सूबेदार उसके पास आया और उसकी मिन्नत करके कहा अली ख़ुदावन्द मेरा ख़दिम फ़ालिज का मारा घर में पड़ा है और निहायत तकलीफ़ में है।

(मती ८ । ५-६ पृ० ११)

सूबेदार ने नहीं बल्कि उसके नौकरों ने प्रार्थना की

उसने यहूदियों के कई बुजुर्गों को उसके पास भेजा और उससे दर्ख्वास्त

की कि आकर मेरे नौकर को अच्छा कर वह यीशू के पास आये और उसकी बड़ी मिन्नत करके उसे ले गए।

(लूका ७ । ३-४ पृ० ९३)

६३. यीशु को तीसरे घंटे फाँसी दी गई

और पहर दिन चढ़ा था, जब उन्होंने उसको सलीब पर चढ़ाया।

(मरकूस १५ । २५ पृ० ७८)

यीशू को छठे घंटे तक फाँसी न दी गई

यह फसह की तैयारी का दिन और छठे घंटे के करीब था.........क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब दूं।

(युहन्ना १९ । १४-१५ पृ० १६४)

६४. उन दो चोरों ने यीशू को लान-तान की

इसी तरह डाकू भी, जो उसके साथ सलीब पर चढ़ाए गए थे, उस पर लान-तान करते हैं। (७ । ४४ । पृ० ४७)

और जो उसके साथ सलीब पर चढ़ाए गए थे, वह उस पर लान तान करते थे। (मरकूस १५ । ३२ पृ० ७८)

केवल एक ने यीशू-को लान तान की

फिर जो बदकार सलीब पर चढ़ाए गए थे, उनमें से एक उसे यूं ताना देने लगा......मगर दूसरे ने उसे झिड़क कर जवाब दिया क्या तू खुदा से भी नहीं डरता हालाँकि उसी सजा में गिरफ्तार है।

(लूका २२ । ३९-४० पृ० १२८)

६५. यहूदा ने चाँदी के रुपये वापिस कर दिये

जब उसके पकड़वाने वाले यहूदा ने यह देखा कि वह मुजरिम ठहराया गया तो पछताया और वह तीस रुपए सर्दार काहिनो और बुजुर्गों के पास फेर लाया। (लूका २७ । ३ पृ० ४६)

यहूदा ने रुपये वापिस नहीं किये

उसने बदकारी की कमाई से एक खेत हासिल किया।

(आमाल १ । १८ । पृ० १७०)

६६. यहूदा ने अपने को आप ही फाँसी दी

और वह रुपयों को मक़दिस में फेंक कर चला गया और आकर अपने आपको फांसी दी ।
(मती २७ । ५ पृ० ४६)

अपने आपको फाँसी नहीं दी किन्तु अन्य ढंग से मरा

और सिर के बल गिरा और उसका पेट फट गया और उसकी सारी अन्तड़ियां निकल पड़ीं ।

६७. कुम्हार के खेत को यहूदा ने खरीदा था

उसने बदकारी की कमाई से एक खेत हासिल किया ।
(आमाल १ । १८ पृ० १७०)

सर्दार काहिनों ने कुम्हार के खेत को ख़रीदा

सर्दार काहिनों ने रुपया लेकर······कुम्हार के खेत को खरीदा ।
(मती २७ । ६ । ७ पृ० ४६)

६८. केवल एव स्त्री क़ब्र पर आई

हफ़्ते के पहले दिन मर्यम मकदालीन ऐसे तड़के कि अभी अन्धेरा ही था क़ब्र पर आई ।
(युहन्ना २० । १ पृ० १६६)

दो स्त्रियां क़ब्र पर आईं

और सबत के बाद हफ़्ते के पहले दिन पौ फटे वक़्त मर्यम मक़दालीन और दूसरी मर्यम क़ब्र को देखने आईं ।
(मती २८ । १ पृ० ४८)

६९. तीन स्त्रियां क़ब्र पर आईं

जब सबत का दिन गुजर गया तो मर्यम, मकदालीन और याकूब की मां मर्यम और सलोम ने खुशबूदार चीज मोल ली ताकि आकर उस पर मलें
(मरकुस १६ । १ पृ० ७९)

तीन औरतों से ज्यादा क़ब्र पर आईं

वह मर्यम मक़दालिया और युहन्ना, याकूब की मां मर्यम और उनके साथ की बाकी औरतें थीं ।
(लूका १४।१० पृ० १२९)

७०. सूर्योदय के समय पर आईं

वह हफ़्ते के पहले दिन बहुत सवेरे जब सूरज निकला ही था कब्र पर आईं।

(मरकूस १६ । २ पृ० ७६)

सूर्योदय से कुछ पूर्व का समय था जब वे आईं

हफ़्ते के पहले दिन मर्यम मकदालीन ऐसे तड़के कि अभी अन्धेरा ही था कब्र पर आईं।

(युहन्ना २० । १ पृ० १ ६६)

७१. क़ब्र के निकट दो फरिश्ते खड़े हुए दिखाई दिए

और ऐसा हुआ कि जब वह इस बात से हैरान थीं तो देखो दो शख्स बरकी पौशाक पहिने उनके पास आ खड़े हुए। (लूका २४ । ४ पृ० १२६)

केवल एक फ़रिश्ता दिखाई दिया और वह बैठा हुआ था

क्योंकि-खुदा का फरिश्ता आसमान से उतरा और पास आकर पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया……फरिश्ते ने औरतों से कहा कि तुम मत डरो। (मती २८ । २-५ पृ० ४६)

७२. दो फ़रिश्ते क़ब्र के अन्दर दिखाई दिए

और जब रोती-रोती कब्र की तरफ झुकी और अन्दर नजर की तो दो फरिश्तों को सफेद पौशाक पहिने हुए देखा।

(युहन्ना २० । ११-१२ पृ० १६६)

केवल एक फ़रिश्ता क़ब्र के अन्दर दिखाई दिया

और कब्र के अन्दर जाके उन्होंने एक जवान को सफेद जामा पहिने हुए दाहिनी तरफ बैठा देखा। (मरकूस १६ । ५ पृ० ७६)

जो एक फरिश्ता दिखाई दिया वह क़ब्र से बाहिर था

क्योंकि खुदावन्द का फरिश्ता आसमान से उतरा और पास आकर पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। (मती २८ । २ पृ० ४८)

७३. स्त्रियाँ गईं और उन्होंने यीशू के शागिर्दों को उसके मर कर जी उठने के बारे में कहा

और बेखौफ और बड़ी खुशी के साथ कब्र से जल्द रवाना होकर उसके

शागिर्दों को खबर देने दौड़ीं । (मती २८ । ८ । पृ० ४६)

और कब्र से लौट कर उन्होंने उन ग्यारह और बाकी सब लोगों को इन सब बातों की खबर दी । (लूका २४ । ६ पृ० १२६)

स्त्रियाँ न गईं और शागिर्दों को नहीं कहा

और वह निकलकर कब्र से भाग गयीं, क्योंकि लर्जिश और हैब उन पर गालिब आई थी और उन्होंने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती थीं ।

(मरकूस १६ । ८ पृ० ७६)

७४. पतरस और युहन्ना के क़ब्र को देखने के बाद फ़रिश्ते दिखाई दिए

पस पतरस और वह दूसरा शागिर्द निकल कर कब्र की तरफ़ चले…… और उसने कब्र के अन्दर जाकर देखा कि सूती कपड़े पड़े हैं………पस यह शागिर्द अपने घर को वापस गए लेकिन मर्यम बाहर क़ब्र के पास खड़ी रोती रही और जब रोती-रोती कब्र की तरफ़ झाँकी, अन्दर नज़र की तो दो फरिश्तों को सफेद पौशाक पहिने हुए देखा । (युहन्ना २० । ३-६-१०-१२ पृ० १६६)

फ़रिश्ते दिखाई दिए पूर्व इसके कि पतरस अकेले ने कब्र को देखा

तो देखो दो शख्स बरक़ी पौशाक पहिने उनके पास आ खड़े हुए…… और (वे) कब्र से लौटकर उन्होंने ग्यारह और बाकी सब लोगों को इन बातों की खबर दी……इस पर पतरस उठकर कब्र तक दौड़ा गया और झाँक कर नज़र की और देखा कि सिर्फ़ कफ़न ही कफ़न है और इस माजरे से ताज्जुब करता हुआ अपने घर चला गया ।

(लूका २४ । ४-८-९-१२ पृ० १२९)

७५. केवल मर्यम मकदालीन को यीशू पहले दिखाई दिया

यह कह वह पीछे फिरी और यीशू को खड़े देखा और न पहिचाना कि यह यीशू है । (युहन्ना २० । १४ पृ० १६६)

हफ्ते के पहले रोज जब वह सवेरे जी उठा तो पहले मर्यम मकदालीन दिखाई दी । (मरकूस १६ । ६ पृ० ७६)

दो मर्यमों को यीशू पहले दिखाई दिया

और देखो, यीशू उन्हें मिला और कहा सलाम। उन्होंने पास आकर कदम पकड़े और उसे सिजदा किया। (मती २८। ६ पृ० ४६)

वह किसी भी मर्यम को दिखाई नहीं दिया

(लूक़ा ४। ४० पृ० १३०)।

७६. यीशू को कब्र में तीन रात और तीन दिन रहना था

वैसे ही इब्ने आदम तीन रात तीन दिन ज़मीन के अन्दर रहेगा।

(मती १२। ४० पृ० १८)

वह कब्र में केवल दो दिन और दो रात था

और पहर दिन चढ़ा था जब उन्होंने उसे सलीब पर चढ़ाया........ तो इसलिए कि तैयारी का दिन था जो सबद से एक दिन पहिले होता है... और पीलाटस ने......लाश यूसुफ़ को दिला दी......और उसने उसे एक कब्र में रखा......हफ्ते के पहले रोज़ जब वह सवेरे जी उठा तो पहले मर्यम मक़दलिनी कोदेखा।

(मरकूस २५। ४२-४४-४५-४६ व १६। की ६ पृ० ७६)

७७. रूहुल-कुद्स पिन्ते कुस्त पर अर्पण किया गया

लेकिन जब रूहुल-कुद्स तुम पर नाज़िल होगा, तो तुम कूवत पाओगे... मगर तुम थोड़े दिनों के बाद रूहुल कुद्स से बप्तिस्मा पाओगे।

(आमाल १। ८-५ पृ० १६६)

जब ईदे पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वह सब एक जगह इकट्ठे जमा थे और वे सब रूहुल-कुद्स से भर गए। (आमाल २। १-४ पृ० १७०)

रुहुल कुद्स पिन्ते कुस्त से पहले अर्पण किया गया

और यह कह कर उन पर फूंका और उनसे कहा कि रूहुल कुद्स लो

(युहन्ना २०। २२ पृ० ६७)

७८. कब्र से निकल आने के तुरन्त बाद शागिर्दों को गलिल में जाने का आदेश दिया गया

इस पर यीशू ने उनसे कहा, डरो नहीं, जाओ मेरे भाइयों को खबर दो

ताकि गलिल को चले जाएं वहाँ मुझे देखेंगे।

(मती २८। १० पृ० ४९)

कब्र से निकल आने के तुरन्त बाद येरूशलम में रुकने का आदेश दिया

जब तक आलम-ए-वाला पर से तुम को कूवत का लिबास न मिले, इस शहर में ठहरे रहो।

(लूक़ा २४। ४९ पृ० १३०)

७९. येरूशलम के कमरे में ११ शागिर्दों को पहले दिखाई दिया

पस वह उसी घड़ी उठकर येरूशलम को लौट गए, और उन ग्यारह और उनके साथियों को इकट्ठा पाया......वह यह बातें कर ही रहे थे कि यीशू आप उनके बीच में आ खड़ा हुआ...... मगर उन्होंने घबराकर और खौफ़ खाकर यह समझा कि किसी रूह को देखते हैं।

(लूका २४। ३३-३६-३७ पृ० १३०)

फिर उसी दिन जो हफ्ते का पहला दिन था, शाम के वक्त जब वहाँ के दरवाजे जहाँ शागिर्द थे यहूदियों के डर से बन्द थे......यीशू आकर बीच में खड़ा हुआ।

(युहन्ना २०। १९ पृ० १६७)

गेलिल के पहाड़ पर उन्हें पहले दिखाई दिया

और ग्यारह शागिर्द गेलिल के उस पहाड़ पर गए, जो यीशू ने उनके लिए मुकर्रर किया था, और उसे देखकर सिजदा किया, मगर बाज़ ने शक किया।

(मती २८। १६-१७ पृ० ४९)

८०. ओलिवेट पहाड़ से यीशू ऊपर चढ़ा

यह कह कर वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया। और बदली ने उसे उनकी नजरों से छिपा लिया......तब वह उस पहाड़ से जो जैतून का कहलाता है और येरूशलम के नजदीक, सबद की मंज़िल के फ़ासिले पर है देरूशलम को फिराये।

(आमाल १। ९-१२ पृतु १६९)

वह बेथिनी से चढ़ा

फिर वह उन्हें बैतनयाह के सामने तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें बरकत दी जब वह उन्हें बरकत दे रहा था तो ऐसा हुआ कि

उनसे जुदा हो गया और आसमान पर उठाया गया।

(लूका २४। ५०-५१ पृ० १३०)

क्या वह किसी भी स्थान से ऊपर चढ़ा पौलूस

फिर पीछे वह उन ग्यारह को भी, जब खाना खाने बैठे थे, दिखाई दिया और उनकी बेइतक़ादी और सख़्तदिली पर मलामत की……ग़रज़ खुदावन्द यीशु उनसे कलाम करने के बाद आसमान पर उठाया गया।

(मरक़ूस १६। १४-१९ पृ० ८०)

८१. पौलूस के साथियों ने आवाज सुनी और खामोश खड़े रहे

जो आदमी उसके हमराह थे, वह खामोश खड़े रह गए, क्योंकि आवाज तो सुनते थे मगर किसी को देखते नहीं थे। (आमाल ९। २० पृ० १८३

उसके साथियों ने आवाज़ नहीं सुनी और वे दण्डवत् कर रहे थे

और मेरे साथियों ने नूर तो देखा और डर गए लेकिन जो मुझसे बोलता था उसकी आवाज़ न सुनी। (आमाल २२। ९ पृ० २०६)

जब हम सब ज़मीन पर गिर पड़े तो मैंने इब्रानी ज़बान में यह सुना।

(आमाल २६। १४ पृ० २१२)

८२. इब्राहीम कैनान में जाने को विदा हुआ

और इब्राहीम अपनी जोरू सरी और अपने भतीजे लूत…… कैनान के मुल्क में जाने के लिए निकला। (पैदाइश २। ५। पृ० १७)

इब्राहीम जानता नहीं था कि कहाँ जाए

ईमान ही के सबब से इब्राहीम जब बुलाया गया तो हुक्म मान कर उस जगह चला गया, जिसे निरास में लेने वाला था, और अगरचे न जानता था कि मैं कहाँ जाता हूँ ताहम रवाना हो गया।

(इब्रानियों ११। ८ पृ० ३२५)

८३. इब्राहीम के दो बेटे थे

यह लिखा है कि इब्राहीम के दो बेटे थे, एक लौंडी से और दूसरा आज़ाद से। (ग़लतियों ४। १२ पृ० २७५)

इब्राहीम के केवल एक बेटा था

ईमान ही से इब्राहीम ने आजमाइश के वक्त इजहाक की नजर गुजराना और जिसने वादों को सच मान लिया था, वह उस इकलौते को नजर करने लगा।
(इब्रानियों ११ । १७ । ३२६)

८४. कतूरा इब्राहीम की पत्नी थी

इब्राहीम ने एक और जोरू की जिसका नाम क़तूरा था।
(पैदाइश २५ । १ पृ० ३३)

क़तूरा इब्राहीम की औरत नहीं थी

और इब्राहीम की हरम क़तूरा के बेटे ये हैं।
(१ तवारीख १ । ३२ पृ० ५२)

८५. अख़ंजिया २१ वर्ष का था जब उसने राज्य करना प्रारम्भ किया और अपने बाप जेहोरम से १८ साल छोटा था

(२ सलातीन ८ । ७-२४-२६ पृ० ४८२)

अख़ंजिया ४२ वर्ष का था जब उसने राज्य करना प्रारम्भ किया अपने बाप से दो वर्ष बड़ा

(२ सलातीन २१ । २० पृ० ५०४ व २२ । बाब १ । २ आयत पृ० ५०५)

८६. मिकेल निस्सन्तान थी

सो साऊल की बेटी मिकेल मरते दम तक ला औलाद रही।
(२ सेमुअल ६ । २३ पृ० ३६८)

मिकेल के पांच बच्चे थे

और सऊल की बेटी मिकेल के पांच बेटे थे।

(२ सेमुअल २१ । ८ पृ० ४२०)

८७. दाऊद को लोगों की गिनती के लिए ईश्वर ने प्रेरणा की

(२ सेमुअल २४ । १ पृ० ४२५)

दाऊद को, शैतान ने, लोगों के गिनने की प्रेरणा दी

(१ तवारीख २१ । १ पृ० ५३७)

८८. इसराइल के आठ लाख लड़ाका थे और यहूदा के पाँच लाख

(२ सेमुअल २४ । ९ पृ० ४२५)

इसराइल के ११ लाख व यहूदा के ४ लाख ७० हज़ार लड़ाके थे

(१ तवारीख २१ । ५ पृ० ५३७)

८९. दाऊद ने ७०० सीरिया के रथियों को ४०००० सवारों को क़त्ल किया

(२ सेमुअल १० । १८ पृ० ४०२)

सीरिया के ७००० गाड़ीवानों और ४०००० पैदलों को दाऊद ने मारा

(१ तवारीख १९ । १८ पृ० ५३६)

९०. दाऊद ने खलिहान के लिए ५० चाँदी के सिक्के दिए

तब बादशाह ने अरोनाह से कहा, यूं नहीं, बल्कि मैं कीमत दे के उसको तुझसे मोल लूंगा, और मैं उन चीजों को ले के कि जिन पर मेरा कुछ खर्च न हो, खदावन्द अपने खुदा को सोखतनी कुर्बानी न चढ़ाऊँगा सो दाऊद ने वह खलिहान और वे बैल पचास मिसकाल चाँदी दे के मोल लिया।

(२ सेमुअल २४ । २४ पृ० ४२६)

दाऊद ने ६ हज़ार सोने के सिक्के खलिहान के लिए दिए

सो दाऊद ने उरना को उस जगह के लिए छः सौ मिसकाल सोना दिया।

(१ तवारीख २१ । २५ पृ० ५३८)

९१. गोलियथ दाऊद से क़त्ल किया गया

(१ सेमुअल १७ । ४-५० पृ० ३६८ और ३७०)

गोलियथ इलहानन से क़त्ल किया गया

(२ सेमुअल २१ । १९ पृ० ४२१)

काल्पनिक सिद्धान्त

९२. यीशू ईश्वर के समान है

मैं और बाप एक हैं। (युहन्ना १० । ३ पृ० १५०)

उसने अगरचे खुदा की सूरत पर था, खुदा के बराबर होने को कब्जे में रखने की चीज़ न समझा। (फिलिपियों २ । ६ पृ० २८६)

यीशू ईश्वर के समान नहीं है

क्योंकि बाप मुझसे बड़ा है। (युहन्ना १४ । २८ । पृ० १५८)

लेकिन उस दिन और उस घड़ी की बाबत कोई नहीं जानता, न आसमान के फरिश्ते, न बेटा, मगर सिर्फ बाप ! (मती ३४ । ३६ पृ० ४०)

९३. यीशू ने मनुष्य की जाँच की

क्योंकि बाप किसी की अदालत भी नहीं करता, बल्कि उसने अदालत का सारा काम बेटे के सुपुर्द किया है......जैसा सुनता हूँ अदालत करता हूँ।

(युहन्ना ५ । २२-२३ । पृ० १३८ व १३९)

यीशू ने मनुष्य की जाँच नहीं की

मैं किसी का फैसला नहीं करता। (युहन्ना ८ । १५ पृ० १४५)

अगर कोई मेरी बातें सुनकर उन पर अमल न करे तो मैं उसको मुजरिम नहीं ठहराता क्योंकि मैं दुनिया को मुजरिम ठहराने नहीं बल्कि दुनिया को निजात देने आया हूँ। (युहन्ना १२ । ४७ । पृ० १५५)

९४. यीशू सर्वशक्तिमान है

आसमान और जमीन का कुल अख्त्यार मुझे दिया गया है।

(मती २८ । १८ पृ० ४९)

बाप बेटे से मुहब्बत रखता है और उसने सब चीजें उसके हाथ में दे दी हैं।

(युहन्ना ३ । ३५ पृ० ३५)

यीशू सर्वशक्तिमान नहीं है

और वह कोई मौजजा वहाँ न दिखा सका, सिवा इसके कि थोड़े-से

बीमारों पर हाथ रख कर उन्हें अच्छा कर दिया।

(मरकुस ६ । ५ पृ० ५८)

९५. ईस्वी प्रबन्ध से शरियत रद्द की गई

शरियत और अम्बिया युहन्ना तक रहे ; उस वक्त से खुदा की बादशाहत की खुशखबरी दी जाती है। (लूका १६ । १६ पृ० ११४)

चुनांचे उसने अपने जिस्म के ज़रिये से, दुश्मनी यानि वह शरियत जिसके हुक्म से ज़ाबितों के तौर पर थे मौकूफ़ कर दी।

(एफिसियन २ । ४५ पृ २७९)

लेकिन अब हम शरियत से छुट गए। (रोमियों ७ । ६ पृ० २२४)

ईस्वी प्रबन्ध से शरियत रद्द न की गई

यह न समझो कि मैं तौरेत या नबियों की किताबों को मन्सूख करने आया हूँ, मन्सूख करने नहीं बल्कि पूरा करने आया हूँ क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब तक आसमान और ज़मीन टल न जाएँ एक शोशा तौरेत से हर्गिज़ न टलेगा, जब तक सब कुछ पूरा न हो जाये, पस जो कोई इन छोटे-से-छोटे हुक्मों में से भी किसी को तोड़ेगा और यही आदमियों को सिखलायेगा वह आसमान की बादशाहत में सबसे छोटा कहलायेगा।

(मती १ । १७-१८-१९ पृ० ६)

९६. यीशू का उद्देश्य शान्ति था

और यकायक उस फ़रिश्ते के साथ आसमानी लश्कर का एक गिरोह खुदा की हमद करता और यह कहता ज़ाहिर हुआ कि आलमेबाला पर खुदा की तमजीद हो और ज़मीन पर उन आदमियों में जिन से वह वह राज़ी है, सुलह। (लूका २ । ९३-१४ पृ० ८४)

और ऐ लड़के तू खुदा ताला का नबी कहलाएगा……ताकि उनको जो अंधेरे और मौत के साए में बैठे हैं, रोशनी बख्शे।

(लूका १ । ७६-७९ पृ० ८३)

और वह इस नाम से कहलाता है………सलामती का शहज़ादा।

(यसायाह ९ । ६ पृ० ८२१)

यीशू का उद्देश्य शान्ति नहीं था

यह न समझो कि मैं ज़मीन पर सुलह करने आया, सुलह करने नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया हूँ। (मती १० । ३४ पृ० १५)

मैं ज़मीन पर आग डालने आया हूँ। (लूका २ । ४६ पृ० १०८)

६७. यीशु ने मनुष्य से प्रमाण प्राप्त नहीं किया

तुमने युहन्ना के पास पयाम भेजा और उसने सचाई की गवाही दी है।
(युहन्ना ५ । ३३-३४ पृ० १३६)

यीशु ने मनुष्य से प्रमाण प्राप्त किया

और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि शुरू से मेरे साथ हो।
(युहन्ना १५ । २७ पृ० १५६)

६८. यीशू की अपने लिए गवाही अच्छी है

एक तो मैं खुद अपनी गवाही देता हूँ·········अगरचे मैं अपनी गवाही आप देता हूँ तो भी मेरी गवाही सच्ची है।
(युहन्ना ८ । १८-२४ पृ० १४५)

यीशू की अपने लिए गवाही सच्ची नहीं

अगर मैं खुद अपनी गवाही दूँ तो मेरी गवाही सच्ची नहीं।
(युहन्ना ५ । ३१ पृ० १३६)

६६. यीशू का मारना यहूदियों के लिए रवां था

यहूदियों ने उसे जवाब दिया, कि हम अहलेशरअत है और शरअत के मुवाफ़िक वह क़त्ल के लायक़ है। (युहन्ना १६ । ७ पृ० १६४)

यहूदियों के लिए रवां नहीं था कि वे यीशू को मारें

यहूदियों ने उससे कहा, कि हमें यह रवां नहीं कि किसी को जान से मारें।
(युहन्ना १८ । ३१ पृ० १६१)

१००. बच्चे अपने माता-पिता के कर्मों का दण्ड भोगेंगे

क्योंकि खुदावन्द मैं तेरा खुदा गय्यूर खुदा हूँ और बाप-दादों की बद-

कारियाँ उनकी औलाद पर जो मुझसे अदावत रखते हैं, तीसरी और चौथी पुश्त तक पहुँचाता हूँ।

(खुरूज २०। ५ पृ० ९७)

लेकिन बेसबब इसके कि तेरे इस काम के करने से खुदावन्द के दुश्मनों ने कुफ्र बकने का बड़ा दाव पाया, यह लड़का भी जो तेरे लिए पैदा होगा मर जायेगा।

(२ सेमुअल १२। १४ पृ० ४०४)

बच्चे अपने माता-पिता के लिए दण्ड नहीं भोगेंगे

बेटा बाप की बदकारी का बोझ नहीं उठायेगा।

(हैजेकियल १८। २० पृ० ८४९)

न बाप-दादों के बदले औलाद क़त्ल की जाएं।

(इस्तिस्ना २८। १६ पृ० २५८)

१०१. मनुष्य केवल विश्वास से जांचा जाएगा

क्योंकि शरियत के आमाल से कोई बशर उसके हुज़ूर रास्त-बाज़ नहीं ठहरेगा।

(रोमियों ३। २० पृ० २२०)

ताहम यह जानकर कि आदमी शरियत के आमाल से नहीं बल्कि सिर्फ यीशू मसीह पर ईमान लाने से रास्तबाज़ ठहरता है।

(ग़लतियों २। १६ पृ० २७३)

और यह बात ज़ाहिर है कि शरियत के वसीले से कोई शख्स खुदा के नज़दीक रास्ताबाज़ नहीं ठहरता क्योंकि लिखा है कि रास्तबाज़ ईमान से जीता रहेगा।

(ग़लतियों ३। ११ पृ० २७३)

क्योंकि अगर इब्राहीम अमल से रास्तबाज ठहराया जाता तो उसको फ़ख़्र की जगह होती।

(रोमियो ४। २ पृ० २२१)

मनुष्य केवल विश्वास से न जांचा जाएगा

तो क्या इब्राहीम आमाल रास्तबाज न ठहरा······पस तुमने देख लिया कि इन्सान सिर्फ़ ईमान ही से नहीं बल्कि अमल से रास्तबाज ठहरता है।

(याकूब २। २१-२४ पृ० ३३२)

बल्कि शरियत पर अम्ल करने वाले रास्तबाज़ ठहराये जायेंगे।

(रोमियों २। १३ पृ० २१८)

१०२. ईश्वर की कृपा से गिर जाना असम्भव है

और मैं उन्हें हमेशा की जिन्दगी बख्शता हूँ और वे अबद तक कभी हलाक़ न होंगी और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।

(युहन्ना १०। २८ पृ० १५०)

उससे हमको न मौत जुदा कर सकेगी, न जिन्दगी, न फ़रिश्ते, न हुकूमतें न हाल की, न इस्तक़बाल की चीज़ें, न कुदरतें, न बलन्दी, न पस्ती, न कोई और मखलूक़। (रोमियों ८। ३८-३९ पृ० २२७)

ईश्वर की कृपा से गिर जाना सम्भव है

फिर अगर सादिक़ अपनी सदाक़त से बाज़ आवे, और गुनाह करे, और उन सारे घिनौने कामों के मुताबिक़, जो शरीर करता है करे। तो क्या वह जियेगा ? उसकी सारी सदाकत जो उसने की याद न होगी। वह अपने गुनाहों में जो उसने किये और उसकी खेतों में जो उसने किये उन्हीं में वह मरेगा। (हैजेकियल १८। २४)

क्योंकि जिन लोगों के दिल में एक बार रोशन हो गये और वह आसमानी बख्शीश का मज़ा चख चुके और रूहुल-कुद्स में शरीक हो गये और खुदा के उम्दा कलाम, और आयन्दा जहाँ कि कुव्वतों का जायका ले चुके अगर वह बर्गश्ता हो जायें तो उन्हें तौबा के लिये नया बनाना नामुमकिन है, इसलिए कि वह खुदा के बेटे को अपनी तरफ से दुबारा सलीब देकर एलानिया जलील करते हैं। (इब्रानियों ६। ४-५-६ पृ० ३१९)

और जब वे खुदावन्द और मुंजी यीशू मसीह की पहचान के सबब दुनिया की······छुट कर, फिर उनमें फँसे, और उनसे मगलूब हुए तो उनका पिछला हाल पहले से भी बदतर हुआ। क्योंकि रास्तबाजी की राह का न जानना उनके लिए इससे बेहतर होता कि उसे जानकर उस पाक हुक्म से फिर जाते जो उन्हें सौंपा गया था। (२ पटरस २। २०-२१ पृ० ३४२)

१०३. कोई आदमी बेगुनाह नहीं है

कौन कह सकता है कि मैंने अपने दिल को साफ किया है, मैं गुनाह से पाक हूँ।

(अम्साल २०। ९ पृ० ७८४)

क्योंकि कोई ऐसा आदमी नहीं जो खताकार न हो।

(१ सलातीन ८ । ४६ पृ० ४४३)

इसलिये कि कोई इन्सान जमीन पर ऐसा सादिक़ नहीं, कि नेकी करे और खता न करे।

(वाइज ७ । २० पृ० ८०२)

कोई रास्तबाज नहीं है एक भी नहीं है।

(रोमियों ३ । १० पृ० २२०)

ईसाई बेगुनाह हैं

जो कोई खुदा से पैदा हुआ है वह गुनाह नहीं करता···जो कोई उसमें क़ायम रहता है वह गुनाह नहीं करता·········जो शख्स गुनाह करता है वह इब्लीस से है।

(१ युहन्ना ३ । ६-८-६ पृ० ३४६)

१०४. मुर्दे क़ब्र से उठाए जाएँगे

नरसिंगा फुकेगा और मुर्दे गैरफ़ानी हालत में उठेंगे।

(१ करन्थियों १५ । ५२ पृ० २५६)

फिर मैंने छोटे बड़े सब मुर्दों को उस तख्त के सामने खड़े हुए देखा·········और उनमें से हर एक के अमाल के मुताबिक़ मर्दों का इन्साफ़ किया गया।

(मुकाश्फ़ा २० । १२-१३ पृ० ३७२)

इससे ताज्जुब न करो, क्योंकि वह वक्त आता है कि जितने क़ब्रों में हैं उसकी आवाज़ सुनकर निकलेंगे।

(युहन्ना ५ । २८ पृ० १३६)

और अगर मर्दे नहीं जी उठें तो मसीह भी नहीं जी उठा।

(१ कुरन्थियों १५ । १६ पृ० २५४)

मुर्दे क़ब्र से नहीं उठाए जाएँगे

पर मुर्दे कुछ भी नहीं जानते क्योंकि उनकी यादगारी जाती रहती है।

(वाइज़ ६ । ५ पृ० ८०४)

जिस प्रकार बदली जाती रहती और ग़ायब हो जाती है इसी तरह जो गोर में उतरा फिर ऊपर न आवेगा।

(अयूब ७ । ६ पृ० ६४३)

वे मर गये फिर न जिएँगे, वे रिहलत कर गये, फिर न उठेंगे।

(यसायाह २८ । १४ पृ० ८३६)

१०६. सजा और जजा यहीं दी जाएगी

देख सादिक को जमीन पर बदला दिया जाएगा, तो कितना ज्यादा शरीर और गुनाहगार को। (अम्साल ११ । ३१ पृ० ७७५)

सजा और जजा दूसरी दुनिया में दी जाएगी

और जिस तरह उन किताबों में लिखा हुआ था उनके आमाल के मुताबिक मर्दों का इंसाफ किया गया। (मुकाश्फ २० । १२)

उस वक्त हर एक को उसके कामों के मुवाफिक बदला दिया जाएगा।
(मत्ती १६ । २७ पृ० २७)

ताकि हर शख्स अपने कामों का बदला पाये जो उसने बदन के वसीले से किए हों, ख्वाह भले हों ख्वाह बुरे। (२ कुरन्थियों ५ । १० पृ० २६१)

१०७. तमाम मनुष्यों के भाग्य में नष्ट होना है।

मैं रहिम ही में मर क्यूँ न गया पेट से निकलते ही मैंने जान क्यों न दी ……कि अब तो मैं चुपचाप पड़ा रहता और चैन में होता, मैं सोया रहता और आराम करता बादशाहों और मुल्क के मशीरों के साथ जिन्होंने वे मकान जो कि वीरान है, अपने लिए बनाए, या उन अमीरों के साथ जो सोने का माल रखते थे और चांदी से अपने घरों को भरते थे या मैं हुआ न होता, उस हमल की मानिन्द, जो छिप के गिरा है या उन बच्चों की मानिन्द जिन्होंने उजाला नहीं देखा वहाँ शरीर सताने से बाज आते और थके मांदे चैन में हैं। छोटे-बड़े वहां एक साथ हैं और गुलाम अपने आक़ा से आजाद है। रोशनी उसको जो परेशानी में है क्यों बख्शी जाती, और जिन्दगी उनको जो शिकस्त खातिर हों? वे मौत की राह देखते हैं पर वह नहीं आती और गड़े हुए खजाने की बनिस्बत ज्यादा आरजू के साथ उसके लिए खोदते हैं। वे तो गोर में जाते हुए निहायत खुशवक्त होते हैं और बारावार होते जाते। (अयूब ३ । ११-१३ से १७-१९ से २२ पृ० ५४०)

पर मरे कुछ भी नहीं जानते………क्योंकि वहाँ गोर में जहाँ तू जाता है न काम है, न मन्सूबा न आगाही, न हिकमत है।

(वाइज ९ । ५-६ पृ० ८०४)

क्योंकि जो बनी आदम पर गुजरता सो हैवान पर गुजरता, एक ही हादसा दोनों पर गुजरता है। जिस तरह यह मरता है उस ही तरह वह मरता है हाँ सब में एक ही साँस है और इन्सान को हैवान पर फाकियत नहीं क्योंकि सब..........है......सबके सब एक ही जगह जाते हैं।

(वाइज़ ३। १६-२० पृ० ७६६)

कुछ मनुष्यों के भाग में अनन्त दुःख है

और यह हमेशा की सजा पाएंगे। (मत्ती २५।४६ पृ० ४२)

और उनको गुमराह करने वाला इबलीस आग और गंधक की उस झील में डाला जाएगा जहाँ वह हैवान और झूठा नबी भी होगा और वह रात-दिन अब्दुल आबाद अज़ाब में रहेंगे......और जिस किसी का नाम किताबें हयात में लिखा हुआ न मिला वह आग की झील में डाला गया।

(मुखश्फा २०।१०-१५ पृ० ३७१ और ३७२)

और उनके अज़ाब का धुआँ अबदुल आबाद उठा रहेगा।

(मुखश्फा १४। ११ पृ० ३६५)

और उनमें से ब तेरे जो जमीन पर खाक में सो रहे हैं, जाग उठेंगे बाजे हयाते अबदी के लिए और बाजे रूसवाई और ज़िल्लते अबदी के लिए।

(दानियल १२।२ पृ० १०५१)

१०८. पृथ्वी नष्ट की जाएगी :

और जमीन और उस पर के काम जल जायेगे।

(२ पतरस ३। १० पृ०३४३)

(इब्रानियों १। ११ पृ० ३१५)

(मुकाश्फा २०। ११ पृ० ३७२)

पृथ्वी कभी नष्ट नहीं होगी

उसने जमीन को उसकी बुनियादों पर बनवाया कि उसे कभी अबदुल आबाद जुम्बिस नहीं।

(जबूर १०४। ५ पृ० ७३७)

पर जमीन हमेशा कायम रही है। (जबूर १। ४ पृ० ७६६)

(१०९) नेक लोगों को कोई हानि नहीं पहुँचेगी

सादिक पर कोई बुरा हादसा न पड़ेगा। (अम्साल १२ । २१ पृ० ७७६)
(१ पतरस ३।१३ पृ० ३३८)

नेक लोगों को हानि पहुँचेगी

क्योंकि जिससे खुदावन्द मुहब्बत करता है उसे तम्बीह भी करता है।
(इब्रानियों १२ । ६ पृ० ३२७)

(११०) सांसारिक समृद्धि और देन नेकी का फल है

खुदावन्द की सतायस करो, मुबारक वह आदमी है जो खुदावन्द से खौफ रखता है, और उसके फर्मानों से निहायत खुश है......उसके घर में माल और दौलत होगी और उसकी सदाकत अबद तक कायम है।
(जबूर ११२ । १।३ पृ० ७४४)
(जबूर ३७ । २५ पृ० ६९६)

सांसारिक समृद्धि अभिशाप है

मुबारक हो तुम जो गरीब हो। (लूका ६ । २० पृ० ९२)

और फिर तुमसे कहता हूँ कि ऊंट का सुई के नाके से निकल जाना इस से आसान है कि दौलतमन्द खुदा बादशाहत में दाखिल हो।
(मती १९ । २४ पृ० ३१) (मती ६।१९ । २१ पृ० ८)

(१११) रूह का फल मुहब्बत और मिहरबानी है

मगर रूह का फल मुहब्बत, खुशी, इतमीनान, तहम्मुल, मिहरबानी, नेकी ईमानदारी है (गलतियों ५ । २२ पृ० २७६)

उपर्युक्त से विपरीत

खुदावन्द की रूह उस पर नाज़िल हुई और वे रस्से, जिनसे उसके बालू बंध थे ऐसे हो गए जैसे सन जो आग से जल जाए और उसके हाथों पर की बन्दें खुल गई उस वक्त उसने एक गधे के जेवरे की नाई हड्डी पाई और अपना हाथ बढ़ा के उसे लिया और उससे उसने एक हजार आदमी को मारा
(काजियों १५ । १४-१५ पृ० ३३०)

११२. दुष्ट लोग समृद्धि और लम्बी आयु का आनन्द उठाते हैं

शरीर क्योंकर जीते रहते हैं, उम्र दराज भी होते और जोर में भरते जाते हैं उनके देखते हुए उनके फर्जन्द उनके साथ बरकरार होते हैं और उनकीनस्ल उनकी आँखों के सामने उनके घर सलामत रहते हैं और बेखौफ हैं।

(अयूब २१ । ७-८-९ पृ० ६५५)

(और एक रास्तकार है जो अपनी रास्तकारी में मरता है) और एक बदकार है जो अपनी बदकारी में उम्र दराज होता है।

(वाइज ७ । १५ पृ० ८०२)

खबीस लोग अपनी राह में क्यूं कामयाब होते हैं ? वे सब क्यों चैन से रहते हैं जो बर्मला बेवफाई से चलते। (यरेनिया १२ । १ पृ० ८६५)

कि मैं नादान घमंडियों पर हसद करता था जब कि मैंने शरीरों की कामयाबी देखी। और आदमियों की तरह उन पर विपत नहीं पड़ती और न और लोगों की तरह उन पर आफत आती। देखो यह शरीर जो सदा इकबालमन्द रहते हैं, वे अपनी दौलत बढ़ाते जाते हैं।

(अम्साल ७३, ३ । ५-१२ पृ० ७१७)

समृद्धि और लम्बी आयु बदमाशों की नहीं होगी

हाँ शरीर का चिराग़ जरूर बुझाया जाएगा। और हलाकत उसके पास मुस्तैद रहेगी। वह उजाले से अँधेरे में ढकेला जाएगा और दुनिया में से रगेदा जाएगा। उसका न बेटा, न भतीजा उसके लोगों में होगा, और उसके मकानों में कोई बाकी न रहेगा।

(अयूब १८ ५ । १२ । १८-१९ पृ० ६५२)

लेकिन गुनहगार का भला कभी न होगा और न वह अपने दिनों को साया की मानिन्द बढ़ाएगा, इसलिए कि वह खुदा के हुजूर डरता नहीं।

(वाइज़ ८-१३ पृ० ८०३)

खूनी और दग़ाबाज़ लोग अपनी आधी उम्र तक न पहुँचेंगे।

(जबूग ५५ । २३ पृ० ७०६)

पर शरीरों की जिन्दगी घटाई जाती है।

(अम्साल १० । २७ पृ० ७७४)

(फिर जो वे दिल में वेदीन हैं) उनकी जान जवानी में जाती है ।
(अयूब ३६ । १४ पृ० ६६८)

११३. निर्धनता ईश्वर की देन है

मुबारक हो जो तुम गरीब हो··· ··मगर अफसोस तुम पर जो दौलतमन्द हो ।
(लूका ६ । २०-२४ पृ० ६२)

ऐ मेरे प्यारे भाइयो, सुनो, क्या खुदा ने इस जहान के ग़रीबों को ईमान में दौलतमन्द और उस बादशाहत का वारिस होने के लिए बर्मुजीदा नहीं किया ।
(याकूब २ । ५ पृ० ३३१)

धन ईश्वर की देन है

मालदार आदमी की दौलत उसका हसीन शहर है, कंगालों की हलाकत उनकी तंग दस्ती है ।
(अम्साल १० । १५ पृ० ७७४)

न निर्धनता न धन ईश्वर की देन है

और मुझको न कंगाल कर न दौलतमन्द पर मेरे हाल के लायक मुझे खुराक दे । इत्ता होवे कि मैं सैर हो जाऊँ और इन्कार करके कहूँ कि खुदावन्द कौन है ? या मोहताज होके चोरी करूँ और अपने खुदा का नाम नाहक लूँ ।
(अम्साल ३० । ८६ पृ० ७६०)

११४. बुद्धि प्रसन्नता का स्रोत है

क्या ही मुबारिक है वह इन्सान जिसने दानाई को पाया है और वह आदमी जिसने अक्लमन्दी को हासिल किया । उसकी राहें खुशी की राहें हैं और उसकी सारी रविशें सलामती की हैं ।
(अम्साल ३ । १३-१७ पृ० ७६७)

बुद्धि शोक और क्लेश का कारण है

लेकिन जब मैंने हिकमत के जानने को और हिमाकत और जहालत के समझने को दिल लगाया तो मालूम किया कि यह भी हवा पर चढ़ना है ।

क्योंकि बहुत हिकमत में बहुत दिक्कत है और जिसका इर्फ़ान फ़र्वान होता है उसका दुःख ज्यादा होता है ।
(वाइज १ । १७-१८ पृ० ७६७)

११५. नेक नाम ईश्वर की देन है

नेकनामी बहुमूल्य इत्र से भी बिहतर है । (वाइज़ ७ । १ पृ० ८०२)

नेकनामी बेक़यास खजाने से ज्यादातर पसन्द किया जावे।

(अम्साल २२ । १ पृ० ७८६)

नेक नाम अभिशाप है

अफ़सोस तुम पर जब सब लोग तुम्हें भला कहें।

(लूका ६ । २६ पृ० ६२)

११६. सुधार का डंडा मूर्खता की औषधि है

जहालत लड़के के दिल से वाबस्ता है, पर तरबियत की छड़ी उसे उसमें से दूर कर देगी।

(अम्साल २२ । १५ पृ० ७८६)

मूर्खता की कोई औषधि नहीं है

अगरचे तू अहमक़ को पिसे हुए गेहूँ के साथ ओखली में डाल के मूसल से कूटे पर उसकी हिमाक़त उससे कभी दूर न होगी।

(अम्साल २७ । २२ पृ० २६२)

११७. परीक्षा वाँछनीय है

अली मेरे भाइयो, जब तुम तरह-तरह की आज़माइशों में पड़ो तो इसको यह जानकर कमाल खुशी की बात समझना। (याकूब १ । २-३ पृ० ३३०)

परीक्षा अवाँछनीय है

और हमें आज़माइश में न ला। (मत्ती ६ । १३ पृ० ८)

११८. पेशीनगोई यक़ीनी है

और हमारे पास नबियों का वह कलाम है जो ज्यादा मौतबर ठहरा और तुम अच्छा करते हो, जो यह समझ कर उस पर ग़ौर करते हो, कि वह एक चिराग़ है, जो अँधेरी जगह पर रोशनी बख्शता है।

(२ पतरस १ । १६ पृ० ३४१)

पेशीनगोई यक़ीनी नहीं

अगर किसी वक्त मैं किसी क़ौम और किसी बादशाहत के हक़ में कहूँ, कि उसे उखाड़ूं और तोड़ डालूं, और वीरान करूँ, अगर वह कौम, जिसके हक़ में मैंने यह कहा, अपनी बुराई से बाज़ आवे, तो मैं भी उस बदी से पछताऊँगा जो उसके साथ करना ठहराया था।

और फिर अगर मैं किसी क़ौम और किसी बादशाहत की बाबत कहूँ, कि उसे बनाऊँ और लगाऊँ, और वह उसे, जो मेरी नज़र में बुरा है, करे, और मेरी आवाज़ को न सुने, तो मैं भी उस नेकी से पछताऊँगा जो उसके साथ करने को कहा था। (यरेनिया १८ । ७ से १० पृ० ६०३)

अम्बिया आयन्दे की झूठी खबरें देते हैं, और काहिन उनके वसीले हुक्मरानी करते हैं। (यरेनिया ५ । ३१ पृ० ८८७)

और नबी से काहिन तक हरेक झूठा मामला करता है। (यरेनिया ६ । १३ पृ० ८८७)

१२०. मनुष्य की आयु १२० वर्ष की होनी थी

उसके दिन एक सौ बीस वर्ष होंगे। (पैदायश ६ । ३ पृ० १०)

मनुष्य की आयु केवल ७० वर्ष है

हमारी ज़िन्दगी के दिन सत्तर वर्ष हैं। (जबूर ९० । १० पृ० ७३०)

१२१. चमत्कार ईश्वर से भेजे हुए मनुष्य का प्रमाण है

और युहन्ना ने कैदखाने में मसीह के कामों का हाल सुनकर, अपने शागिर्दों की मार्फत उससे पुछवा भेजा, कि आने वाला तू ही है, या हम दूसरे की राह देखें ? यीशु ने जवाब में उनसे कहा, कि जो तुम सुनते और देखते हो, जाकर युहन्ना से बयान कर दो, कि अन्धे देखते, और लंगड़े चलते-फिरते हैं। कोढ़ी पाक-साफ किये जाते हैं, और बहरे सुनते हैं, और मुर्दे ज़िन्दा किए जाते हैं। (मती ११ । २ से ५ पृ० १६)

ऐ रब्बे हम जानते हैं कि तू खुदा की तरफ से उस्ताद होकर आया है, क्योंकि जो मौजजे तू दिखाता है, कोई शख्स नहीं दिखा सकता जब तक खुदा उसके साथ न हो। (युहन्ना ३ । २ पृ० १३४)

और इसराइलियों ने बड़ी कुदरत, जो खुदावन्द ने मिस्रियों पर ज़ाहिर की देखी : और लोग खुदावन्द से डरे : तब खुदावन्द पर, और उसके बन्दे मूसा पर, ईमान लाए।

चमत्कार ईश्वर की ओर से भेजे हुए का प्रमाण नहीं

हारून ने अपना आसा फिर्ऊन और उसके खादिमों के आगे फेंका, और

वह साँप हो गया। तब फिर्ऊन ने भी दानाओं और जादूगरों को तलब किया : चुनांचे मिस्र के जादूगरों ने भी अपने जादुओं से ऐसा ही किया कि उनमें से हरेक ने अपना-अपना आसा फेंका और वह साँप हो गया।

(खुरूज ७। १० से १२ पृ० ७९)

अगर तुम्हारे दर्म्यान कोई नबी या ख्वाब देखने वाला जाहिर हो, और तुम्हें कोई निशान या मौजजा दिखाए, और उस निशान या मौजिजे के मुताबिक, जो उसने तुम्हें दिखाया, बात वाके हो, और वह तुम्हें कहे, आओ, हम गैरमाबूदों की, जिन्हें तुमने नहीं जाना, पैरवी करें और उनकी बन्दगी करें : तू हर्गिज उस नबी या ख्वाब देखने वाले की बात पर कान मत धरियो।

(खुरूज १३। १ से ३ पृ० २४४)

१२३. मूसा बड़ा नर्म मनुष्य था

पर वह मर्द मूसा सारे लोगों से जो रूए ज़मीन पर था ज्यादा हलीम था।

(गिन्ती १२। ३ पृ० १८८)

मूसा बड़ा क्रूर मनुष्य था

और उनको कहा कि क्या तुमने सब औरतों को जीता रखा ?······सो तुम उन बच्चों को जितने लड़के हैं सबको क़त्ल करो और हर एक औरत को, जो मर्द की सोहबत से वाक़िफ़ थीं जान से मारो।

(गिन्ती ३१। १५ व १७ पृ० २१५ व २१६)

१२४. इलीजा आसमान को उड़ गया

और इलिया बबूले में होके आसमान में जाता रहा।

(२ सलातीन २। ११)

यीशू के अतिरिक्त आसमान पर कोई नहीं चढ़ा

और आसमान पर कोई नहीं चढ़ा सिवा उसके जो आसमान से उतरा यानि इब्नेआदम।

(युहन्ना ३। १३ पृ० १३४)

१२५. सारी धर्म पुस्तक ईश्वरप्रेरित हैं

हरेक सहीफा खुदा के इल्हाम से है।

(२ तिमुथियस ३। १६ पृ० ३०६)

धर्म पुस्तक का कुछ भाग ईश्वर प्रेरित नहीं है

जो कुछ मैं कहता हूँ वह खुदा के तौर पर नहीं।

(२ कुरन्थियों ११। १७ पृ० २६७)

लेकिन यह मैं इजाज़त के तौर पर कहता हूँ, न हुक्म के तौर पर...... वाक़ियों से मैं ही कहता हूँ न कि खुदावन्द।

(१ कुरन्थियों ७। ६ व १२ पृ० २४४)

महर्षि दयानन्द कृत पुस्तकें

पुस्तक		मूल्य
सत्यार्थ प्रकाश	सजिल्द	५-००
आत्म कथा		०-४०
स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश		०-१०
वेदान्तिध्वान्त निवारण		०-१९
वेद विरुद्ध मत खण्डन		०-३७
शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण		०-३७
आर्याभिविनय		०-७५
आर्योद्देश्यरत्नमाला		०-१०
ऋग्वेद भाष्य का प्रथम सूक्त		०-२५
भ्रान्ति निवारण		०-२७
व्यवहारभानु		०-२५
भ्रमोच्छेदन		०-२५
गोकरुणानिधि		०-२०
गृहस्थाश्रम		०-६२
काशी शास्त्रार्थ		०-२०
सत्यधर्म विचार		०-२५
आर्यसमाज के नियमोपनियम		०-१०
ईशोपनिषद्		०-२५
बालशिक्षक		०-३७
यजुर्वेदमूल संहिता	सजिल्द	२-५०

जगदीश विद्यार्थी की पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
वैदिक प्रश्नोत्तरी	२-००
वेद सौरभ	२-००
ईशोपनिषद्	२-००
वैदिक उदात्त भावनाएँ	२-००
कुछ करो कुछ बनो	२-००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१-५०
विद्यार्थियों की दिनचर्या	१-५०
दिव्य दयानन्द	१-२५
प्रार्थना प्रकाश	१-२५
प्रभात वन्दना	१-२५
हास्य विनोद	१-००
ब्रह्मचर्य गौरव	०-६०
राधास्वामी मत दर्पण	०-५०
भारत की अवनति के कारण	०-२०
विष्णु पुराण की आलोचना	०-४०

संकलित

पुस्तक	मूल्य
ऋग्वेद शतकम्	१-००
यजुर्वेद शतकम्	१-००
सामवेद शतकम्	१-००
अथर्ववेद शतकम्	१-००

अन्य विद्वानों की पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
ईश, केन, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय तैतरीय	४-२५
वैदिक सिद्धान्त व्याख्यान माला	२-००
व्याख्यानमाला (अच्युतानन्द)	३-५०
अष्टाध्यायी प्रकाशिका	८-००
आर्य राजनीति के तत्त्व	०-३०
बृहदारण्यक उपनिषद् कथा	३-००
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह उत्तरार्द्ध	२-५०
दयानन्द चित्रावली	२-५०
स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग	३-००
विवाह और विवाहित जीवन	२-५०
आर्य समाज क्या है ?	०-७५
वैदिक सन्ध्या रहस्य	०-३७
आर्य सिद्धान्त दीप	१-२५
महर्षि दयानन्द	०-७५
स्वामी श्रद्धानन्द	०-३७

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-६

दो नये प्रकाशन

पूर्व और पश्चिम

[दोनों की वर्तमान संस्कृतियों की चर्चा करते कतिपय निबन्ध]

लेखक—नित्यानन्द पटेल वेदालंकार

प्रस्तावना लेखक—काका साहब कालेलकर

प्रस्तुत पुस्तक में पूर्व और पश्चिम के तत्वज्ञान, धर्म, कला व संस्कृति का इन निबन्धों में सूक्ष्म एवं क्रमबद्ध विश्लेषण विवेचन हुआ है। भारत के मूर्धन्य विद्वानों ने इस पुस्तक की भूरि भूरि प्रशंसा की है।

मूल्य ७-५०

गीत भण्डार

रचयिता—पं० नन्दलाल वैदिक मिशनरी

[परिवर्धित एवं संवर्धित संस्करण]

गीत भण्डार के इस संस्करण में जहाँ नई से नई फिल्मी तर्जों पर धार्मिक गीत व भजन हैं वहाँ आर्य-समाज के प्रत्येक पर्व और संस्कारों पर तथा स्त्री शिक्षा, समाज सुधार आदि विषयों पर गीत व भजन हैं। प्रत्येक परिवार में रखने योग्य आवश्यक पुस्तक।

मूल्य [illegible]-००

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-६

मुद्रक, प्रकाशक, विजयकुमार ने सम्पादित कर बदलिया प्रिंटिंग प्रेस, दाईवाड़ा में मुद्रित कर वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली से प्रकाशित किया।